६१ कुकण
६२ टक्क
६३ तटक्क
६४ कान्यकुब्ज
६५ काबोज
६६ भाडेज
६७ श्रीरज
६८ मगध
६९ मध्य
७० अव्य (दे० १३६)
७१ वध्य
७२ पारसकूल
७३ शककूल
७४ चेलाकूल
७५ खस
७६ खास
७७ काछ
७८ सिंधु
७९ सवालख
८० सूरसेन
८१ पोकाण
८२ गधहार
८३ वहलीक
८४ जल्ल
८५ राम
८६ मोष
८७ मलय
८८ चूलिका
८९ स्वर्णभूमिका
९० मोग्गार
९१ उड्डीयाण
९२ गुडीयाण
९३ वगलाण
९४ खान
९५ चद्रकुमार
९६ मलवार
९७ समुद्रपार
९८ छुप्पर
९९ सक्खर
१०० मक्खर
१०१ काय
१०२ गोट
१०३ पकण
१०४ आख्यक
१०५ हूण
१०६ रौमक
१०७ पारस
१०८ द्रुमिल
१०९ लकुस
११० वक्कुस
१११ आमाषक
११२ अनद्य
११३ लास
११४ मेदर
११५ मठ
११६ मौण्ड्रिक
११७ आरव
११८ कुहण
११९ केकय
१२० रौरव
१२१ मिल्लिन्द्र
१२२ पुल्लिन्द्र
१२३ क्रौंच
१२४ भ्रमरक
१२५ कोय
१२६ चंचका
१२७ शक
१२८ यवन
१२९ उड
१३० मरुंड
१३१ ओड
१३२ मेडक
१३३ भित्तक
१३४ कुलाद्य
१३५’ क्रोथ
१३६ अंन्ध्रय
१३७ द्रविड
१३८ चि (वि?) ल्लल
१३९ आरोप
१४० डोब
१४१ मरुक
१४२ साल्व
१४३ काणव
१४४ तायिक (तासिक)
१४५ सारस्वत
१४६ वाल्हीक (दे० ८३)
१४७ तुरुष्क
१४८ कारुष
१४९ कुंतल
१५० फिरग
१५१ सौराष्ट्र इत्यादि सू.प.

बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला—१०

सभा शृंगार

संकलनकर्ता तथा संपादक

अगरचंद नाहटा
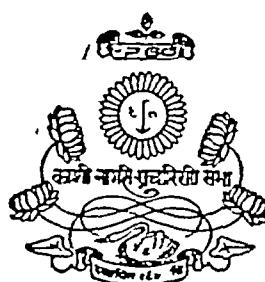
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

मुद्रक : शंभुनाथ वाजपेयी, राष्ट्रभाषा मुद्रण, काशी

प्रथम संस्करण, ११०० प्रतियाँ, संवत् २०१६

मूल्य ६)

ग्रंथमाला का परिचय

जयपुर राज्य के अंतर्गत इणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट नृसिंहदासजी के पुत्र बारहट बालाबख्शजी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायँ जिससे हिंदी साहित्य के भाडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १९२२ में ५०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

प्रकाशकीय वक्तव्य

नागरीप्रचारिणी सभा काशी की बारहट बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला ने अपने क्षेत्र में जो सेवा की है उसका मूल्य हिंदी जगत् जानता है। इस ग्रंथमाला के अतर्गत अब तक निम्नलिखित नव ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

१. बाँकीदास ग्रंथावली भाग १ संपादक—श्री पं० रामकर्ण जी
२. बीसलदेवरासो—संपादक—श्री सत्यजीवन वर्मा
३. शिखरवंशोत्पत्ति—संपादक—श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा
४. बाँकीदास ग्रंथावली भाग २—संपादक श्री रामनारायण दूगड़
५. ब्रजनिधि ग्रंथावली—संपादक श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा
६. ढोलामारू रा दूहा—संपादक श्री रामसिंह जी
७. बाँकीदास ग्रंथावली भाग ३—संपादक श्री मुरारिदान
८. रघुनाथ रूपक गीतारो—संपादक महतावचंद खारैड
९. राजरूपक—संपादक श्री० रामकर्ण जी

इस ग्रंथमाला का यह दसवाँ ग्रंथ है।

यद्यपि आरंभ में इस पुस्तक का आयोजन सभा की बिड़ला ग्रंथमाला के अंतर्गत किया गया था तो भी इस ग्रंथमाला के अधिक उपयुक्त होने के कारण सभा ने इसका प्रकाशन इसी ग्रंथमाला के अंतर्गत करना अधिक उपादेय समझा।

श्री अगरचंद जी नाहटा की साहित्यसेवा से हिंदी जगत् परिचित है। उन्होंने विशेष श्रम तथा धैर्यपूर्वक इस ग्रंथ का संपादन कर इस ग्रंथमाला को श्रीमय करने का सद्प्रयत्न किया है। सभाशृंगार वर्णक ग्रंथ है जो निम्नांकित दस विभागों में संकलित है :—

विभाग १—देश, नगर, वन, पशुपक्षी, जलाशय, नदी, समुद्र वर्णन।

विभाग २—राजा, राजपरिवार, मंत्री, चक्रवर्ती, रावण, राजसभा, आस्थान मंडप, गज, अश्व, शस्त्र, युद्ध आदि का वर्णन।

विभाग ३—स्त्री पुरुष वर्णन।
विभाग ४—प्रकृति वर्णन।
विभाग ५—कलाएँ और विद्याएँ।
विभाग ६—जातियाँ और धंधे।
विभाग ७—देव वेतालादि।
विभाग ८—जैन धर्म संबंधी।
विभाग ९—सामान्य नीति वर्णन।
विभाग १०—भोजनादि वर्णन।

इस वर्णक में न केवल भेद प्रभेदों एवं नामावलियों का विस्तारपूर्वक उपयोगी वर्णनमात्र है अपितु इसमें साहित्यिक सौंदर्य की अलंकृत शैली का भी यत्र-तत्र दर्शन होता है। साथ ही परिशिष्ट के रूप में 'रत्नकोष' और 'राजनीति निरूपण, नामक दो संस्कृत ग्रंथों को देकर संपादक ने इसकी उपयोगिता का विस्तार किया है। इस विशिष्ट उपयोगी वर्णक संग्रह के प्रकाशन में कुछ अनावश्यक विलंब अनेक कारणों से हुआ तो भी यह व्यवधान इसे इस रूप में प्रकाशित करने में कुछ अंशों तक सहायक भी सिद्ध हुआ है। आशा है इस उपयोगी ग्रंथ का आदर होगा।

सुधाकर पांडेय
प्रकाशन मंत्री

आषाढ़ १, २०१९

—०—

भूमिका

श्री अगरचन्द जी नाहटा विख्यात शोधकर्ता विद्वान् हैं। उनके द्वारा संपादित सभा-शृंगार ग्रन्थ सास्कृतिक शब्दावली की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। सभा-शृंगार के नाम से कई हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं जिनका उल्लेख सपादक ने प्रति-परिचय शीर्षक के अ तर्गत किया है। श्री भोगीलाल साडेसरा ने स्व-संपादित वर्णक-समुच्चय नामक ग्रन्थ में सभा-शृंगार की एक प्रति का प्रकाशन किया है [1]। उसकी सामग्री का समावेश भी यहाँ हुआ है।

सभा-शृंगार उस प्रकार का साहित्य है जिसे वर्णक-साहित्य का नाम दिया गया है और जो अभी कुछ ही वर्ष पूर्व से साहित्यको के दृष्टि-पथ मे विशेष रूप से आया है। इस साहित्य का सम्बन्ध किसी वस्तु के उस परिनिष्ठित वर्णन से है जिसे सार्वजनिक रीति से आदर्श वर्णन के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था। इस प्रकार के वर्णन कवि और कलाकार दोनों के लिये सहायक होते हैं, एवं श्रोता और वक्ता दोनों को इस प्रकार के वर्णनो में वस्तु का ज्वलन्त चित्र प्राप्त हो जाता है। अतएव दोनों ही उसमें रुचि लेते हैं; जैसे किसी राजा और उसकी राजसभा का वर्णन अथवा सोलह शृंगारों से सजी किसी रूपवती नायिका का वर्णन, अथवा वृक्ष, पुष्प, फल, सरोवर, पक्षी आदि की समृद्धि से रमणीय किसी उद्यान का वर्णन। इस प्रकार की वस्तुओं का वर्णन अनेक व्यक्ति अपनी अपनी रुचि के अनुसार भी कर सकते हैं जिनका एक दूसरे से भिन्न होना संभव है। किन्तु यदि कई वर्णनों की तुलना की जाय तो उनमें एक सदृश परिपाटी का विकास होता हुए दिखाई पड़ेगा। ऐसे ही पल्लवित वर्णनो को यदि एक आदर्श वर्णन के रूप में ढाल दिया जाय तो उसका वह परिनिष्ठित रूप कालान्तर में रूढिगत बन जाता है। यही इस प्रकार के वर्णनो की पृष्ठभूमि है जिसका भारतीय साहित्य की सस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश एव देशी भाषाओं की कृतियों में प्राचीन काल से ही प्रमाण उपलब्ध होने लगता है।

इस प्रकार के वर्णन के लिए वर्णक शब्द प्राचीन जैन आगम शास्त्र में पाया जाता है जिसे प्राकृत भाषा में 'वण्णओ' कहा गया है। उदाहरण के लिए—

१—भोगीलाल जी साडेसरा, वर्णक-समुच्चय, भाग १ पृ० १०५-१५६, प्राचीन गुर्जर ग्रथमाला, महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

तेणं कालेणं तेणं समयेणं राया होत्था (वरणओ)। धारिणी नाम देवी होत्था (वरणओ) । चम्पा नाम नयरी होत्था (वरणओ) इत्यादि ।[१] यहां कोष्ठक में वरणओ लिख देने से राजा रानी या नगरी का जो आदर्श वर्णन प्रचलित था उसी को ग्रहण किया जाता था और ग्रन्थों की प्रतिलिपि करते समय उसे बार बार दोहराने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी । यह प्रथा कुछ उस प्रकार की थी जिसे वैदिक मन्त्रों का पाठ करते समय गलन्त कहा जाता था । ऋक् प्रातिशाख्य (१०।१६) के अनुसार ऐसे शब्दों या वाक्यों की संज्ञा जो कई बार दोहराए जाँय 'समय' थी । इस प्रकार के संगठित वर्णन या समय वाची शब्द पदपाठ मे छोड दिए जाते थे और एक गोल बिन्दु से उनका संकेत बना दिया जाता था जिसके कारण उन्हें गलन्त कहने लगे । किन्तु गलन्त पाठ में उन सब शब्दों को यथावत् दोहराना आवश्यक होता था[२] । श्वेताम्बर जैन आगम अपने वर्णकों के लिए प्रसिद्ध है। उन सबका एक अच्छा संग्रह अलग पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाए तो वह भी इस प्रकार के साहित्य की रोचक कड़ी सिद्ध होगी । देवर्धिगणि क्षमाश्रमण के निदेशन मे जैन आगमो का जो संस्करण वलभी मे तैयार हुआ था और जो इस समय उपलब्ध है उसमें वर्णकों का जो परिनिष्ठित रूप प्राप्त होता है वह कुछ तो अवश्य ही प्राचीन काल से मूल रूप मे आया होगा; किन्तु हमारा अनुमान है कि गुप्त कालीन संस्कृति के समृद्ध वर्णनों की छाप भी उस पर लगी होगी, जैसा संस्कृत त्रिपिटक साहित्य के संकलन के समय भी हुआ । सांस्कृतिक शब्दावली के विभिन्न स्तरों की छानबीन की दृष्टि से इस प्रकार का अनुसंधान उपयोगी हो सकता है ।

वर्णक के लिये ही वर्ण शब्द गुप्तकालीन संस्कृति में प्रयुक्त होने लगा था । 'मूल सर्वास्तिवाद विनय पिटक' के अंतर्गत प्रव्रज्यावस्तु नामक ग्रन्थ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है — मृष्टाभिधायी स माणवः तेन तथा तथा मध्यदेशस्य वर्णो भाषितो यथा ते माणवकाः सर्व एव मध्यदेशगमनोत्सुकाः संवृत्ताः[३];-अर्थात् वह विद्यार्थी बडा मधुरभाषी था । उसने जैसे जैसे दक्षिणा-

---

१—न. व. वैद्य, ए नोट आन दी वर्णकाज (वर्णकों पर एक टिप्पणी), आल इण्डिया ओरियंटल कानफरेन्स, काशी अधिवेशन लेख संग्रह, भाग ७, पृ० ४७२–४७३ ।

२—सी. जी. काशीकर, ऋग्वेद पाठ में गलन्तों की समस्या, ओरियन्टल कानफरेन्स, नागपुर अधिवेशन लेख संग्रह, पृ० ३६ ।

३—मूल सर्वास्तिवाद विनय वस्तु, भाग ३ खण्ड ४, प्रव्रज्यावस्तु, पृष्ट १३, गिलगित मैनुस्क्रिप्ट्स, कलकत्ता ।

पथ के छात्रों के सामने मध्यदेश का वर्णन सुनाया वैसे वैसे दक्षिण के वे सब छात्र मध्य देश चलने के लिए उत्कंठित होते गए। वर्णक के अर्थ मे वर्ण शब्द का यह प्रयोग तेरहवीं शती के सगीतरत्नाकर नामक ग्रथ में भी पाया जाता है। उसमे 'वर्ण कवि' का उल्लेख है जिसका अर्थ टीकाकार कल्लिनाथ ने 'वर्णना कवि' किया है। शार्ङ्गदेव की सम्मति में वस्तु कवि श्रेष्ठ और वर्ण कवि मध्यम माना जाता था (वरो वस्तुकविर्वर्णकविर्मध्यम उच्यते, संगीत रत्नाकर भाग १ पृ० २४५)। यह स्पष्ट है कि तेरहवीं शती के आसपास के भारतीय साहित्य में प्रायः सभी क्षेत्रीय भाषाओं में वर्ण कवियों की धूम थी। उसी का एक रूप अवहट्ट के सदेशरासक और विद्यापति की कीर्तिलता मे प्राप्त होता है। दोनों के वर्णन वर्णक शैली के हैं, यद्यपि शब्दावली की दृष्टि से उनमें अपनी ताजगी भी पाई जाती है। कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठक्कुर (१४ वीं शती का प्रथम भाग) कृत प्राचीन मैथिली भाषा के वर्णरत्नाकर नामक ग्रन्थ मे वर्ण शब्द वर्णन, वर्णना या वर्णक के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। श्री सुनीतिकुमार चटर्जी ने ज्योतिरीश्वर के ग्रन्थ का सम्पादन किया है। वह ग्रन्थ इस प्रकार के साहित्य में शिरोमणि कहा जा सकता है। उसमें लगभग साढ़े ६ हजार शब्द हैं जो सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान है और मध्यकालीन भारतीय संस्कृति का, विशेषतः तुर्क युग में राजा और प्रजा की रहन-सहन का भरापूरा चित्र उपस्थित करते हैं। उस ग्रन्थ की सामग्री पर आश्रित एक बड़े शोध निबन्ध की आवश्यकता है। वस्तुतः समग्र भारतीय वर्णक साहित्य की सामग्री को लक्ष्य मे रखते हुए यदि अनुसंधान कार्य किया जाय तो कोश निर्माण और सांस्कृतिक परिचय दोनों के लिये बहुत लाभ हो सकता है।

प्राचीनकाल से ही साहित्यकारों ने परिनिष्ठित वर्णकों को अपना उपजीव्य बना लिया था, जैसा बाण कृत हर्षचरित और कादम्बरी से प्रकट होता है। जंगल या बागबगीचों के वर्णन के लिये वृक्ष और पुष्प पक्षी आदि की लगभग एक सी ही घिसी-पिटी सूचियाँ काम में लाई जाती थीं। उद्यान-क्रीड़ा और सलिल-क्रीडा, घोड़े और हाथियों के भेद और उनकी चालों के भेदों के वर्णन का भी एक परिनिष्ठित रूप प्राप्त होता है। पर अच्छे कवियों की उन्मुक्त कल्पना के लिये हमेशा ही मौलिकता का अवसर रहता था। हमारा अनुमान है कि अन्य भाषाओं का मध्यकालीन साहित्य भी वर्णक शैली से प्रभावित हुआ था। गुजराती भाषा के मामेरु काव्यों में दान दहेज मे दिये जाने वाले वस्त्र और सामान की यथासंभव विशद सूचिया समाविष्ट की गई। प्रेमानन्द कृत मामेरू में इसकी छाप स्पष्ट है। जायसी के

पद्मावत काव्य में अनेक वर्णन वर्णक शैली से प्रभावित है। उसमें घोड़ों और वस्त्रों की एवं वृक्षों और पुष्पों की सूचियाँ वर्णक साहित्य की दृष्टि से रोचक हैं। और भी दो स्थानों पर पद्मावती के रूप-वर्णन एवं विवाह-खंड में नायक नायिका का विलास-वर्णन अथवा आरम्भ में गढ़ और नगर वर्णन—इन पर यदि तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाय तो वर्णक शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ेगा।

यह प्रसन्नता की बात है कि वर्णक साहित्य क्रमशः अब सामने आ रहा है। भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में वर्णक ग्रन्थों की रचना हुई होगी, यह तथ्य युग युग के भारतीय साहित्य की विकास परम्परा के अनुकूल ज्ञात होता है। अतएव यह आवश्यक है कि जहाँ तक संभव हो प्रत्येक भाषा के वर्णक साहित्य को वहाँ के विद्वान प्रकाश में लाएं। जैसा श्री सुनीति बाबू ने लिखा है, बंगला भाषा में राय बहादुर श्री दिनेशचन्द्र सेन को इस प्रकार का साहित्य कथा बाँचने वाले कथकों से प्राप्त हुआ था। मध्यकालीन वर्णक साहित्य का सर्वोत्तम प्रकाशन अभी तक गुजराती भाषा में हुआ है। श्री मुनि जिनविजय जी ने अपने प्राचीन गुजराती गद्य सन्दर्भ नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत पृथ्वीचन्द्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास (कर्ता श्री माणिक्यचन्द्र सूरि, वि० सं० १४७८) का प्रकाशन किया था। यह भी एक विशिष्ट वर्णक ग्रन्थ है और वर्ण रत्नाकर के साथ तुलना करने से स्पष्ट विदित हो जाता है कि मध्यकालीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि कितनी दूर तक एक सदृश थी। जीवन की एक जैसी रहन सहन प्रत्येक प्रदेश में छाई हुई थी। इसी ग्रन्थ में ८४ हाटों की सूची सुरक्षित रह गई है। भारत की ६६ करोड़ ग्राम संख्या का उल्लेख भी इस ग्रन्थ में है जैसा स्कन्द पुराण के महेश्वर खण्ड के अन्तर्गत कुमारिका खण्ड में भी उल्लेख आया है (षण्ण-वत्येव कोट्यः ग्रामा', ३।१६३६)। जिस समय यह संख्या लिखी गई उस समय भारतवर्ष में भूमि एवं अन्य स्रोतों से समस्त राष्ट्रीय आय का अनुमान ६६ करोड़ कार्षापण किया जाता था।

वर्णकों के संग्रह की दृष्टि से श्री साडेसरा द्वारा संपादित वर्णक-समुच्चय, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें लगभग १२ वर्णक मुद्रित हैं। आरम्भ में विविध वर्णक नामक १०० पृष्ठों का १ वर्णक ग्रन्थ है जिसमें ये सूचियाँ महत्त्वपूर्ण हैं—राज लोक, पौर लोक, राजवर्णन (पृष्ठ १३-१४), नगर वर्णन (पृष्ठ २१-२२), देश सूची (पृष्ठ २८-३७, इसमें भी ६६ करोड़ ग्राम का उल्लेख है), नगर प्रासाद वर्णन (पृष्ठ ३२), ३६ राजकुली (पृष्ठ ३३), वस्त्र सूची (पृष्ठ ३४-३५), जिसमें

१०० से अधिक वस्त्रों के नाम है·), कलशान्त प्रासाद वर्णन (पृष्ठ ३६-४०), जिन मन्दिर (पृष्ठ ४८-७१), राजलोक, पौरलोक चक्रवाल (पृष्ठ ४६) वस्तु पाल-तेजपाल विरुद (पृष्ठ ५५), आस्थान मंडप वर्णन (पृष्ठ ७२), अश्व सूची (पृष्ठ ६२), समुद्र मे प्रवहण भंग का वर्णन (पृष्ठ ६७, इस प्रकार का एक अत्यन्त विशद वर्णन नायाधम्मकहा, अध्याय ६ में भी आया है)। इसी ग्रन्थ मे सभा शृंगार का भी एक सस्करण ५० पृष्ठो में प्रकाशित हुआ है जिसकी सामग्री नाहटा जी ने ले ली है। उसकी प्रतिलिपि सवत् १६७५ मे की गई थी। साडेसरा जी के तीसरे सग्रह वर्ण्य वस्तु वर्णन पद्धति मे भी देशों (पृष्ठ १६५) की सूची और उनकी ग्राम संख्या महत्त्वपूर्ण है जिसमे भारत के बाहर के महाभोट, सिहल, चीन, महाचीन देशो के नाम भी हैं। चौथे प्रकीर्ण वर्णक में १८ करों के नाम रोचक हैं। (पृष्ठ १७०)। पाचवे संग्रह का नाम जिमणवार परिधान विधि है जिसमें ३६ प्रकार के लड्डू, अनेक मिष्ठान्न भोज्य सामग्री एव लगभग २०० वस्त्रों के नाम हैं (पृष्ठ १८०-१८१)। यह प्रति १६७५ सवत् (ई० १६१८) में जहाँगीर के काल में लिखी गई थी। अतएव मुगल काल के आरम्भ मे जितने वस्त्र इस देश में बनने लगे थे और जो बाहर मे मंगाए जाते थे उनकी बहुत ही बडी सूची उस सग्रह में प्राप्त हो जाती है। यह सूची सभवतः किसी सम्राट के वस्त्र भण्डारी की सहायता से प्राप्त की गई होगी। साडेसरा जी ने अपने संग्रह के परिशिष्ट १ मे प्रयागदास नामक किसी लेखक के, कपडाकुतूहल नामक ग्रन्थ का मुद्रण किया है जिसका एक नाम कपडा-बत्तीसी भी था। दूसरे परिशिष्ट का नाम क्रयाणक-वस्त्र नामावली है जिसमे ३६० किराने की वस्तुओ के नाम, ६८ वस्त्रों के नाम और १४२ आभूषणों के नाम है। साडेसरा जी के वर्णक-समुच्चय के अन्त में अकारादि सूची नही है। संभवत. ग्र थ के दूसरे भाग में वे उसे प्रस्तुत करेंगे। किन्तु उस ग्रन्थ में सकलित सामग्री गुजराती भाषा तक सीमित न होकर हिन्दी के विद्वानों के भी बहुत काम की है।

नाहटा जी द्वारा संगृहीत सभा-शृंगार मे ऐसी ही उपयोगी सामग्री का एकत्र संकलन हुआ है। इसके १७ विभाग हैं। जो वर्ण्य विषय के अनुसार इस प्रकार हैं—

विभाग १—पृ १–२८ देश, नगर, वन, पशु-पक्षी, जलाशय, नदी, समुद्र वर्णन।

विभाग २–पृ० २६–८६–राजा, राजपरिवार, मन्त्री, चक्रवर्ती, रावण, राजसभा, आस्थानमंडप, गज, अश्व, शस्त्र, युद्ध आदि का वर्णन।

विभाग ३—पृ० ८७-११४—स्त्री-पुरुष वर्णन ।
विभाग ४—पृ० ११५-१३४—प्रकृति वर्णन ।
विभाग ५—पृ० १३५-१४४—कलाएँ और विद्याएँ ।
विभाग ६—पृ० १४५-१५२—जतियाँ और धंधे ।
विभाग ७—पृ० १५३-१७४—देव वेतालादि ।
विभाग ८—पृ० १७५-२२२—जैन धर्मसम्बन्धी ।
विभाग ९—पृ० २२३-२७२—सामान्य नीति वर्णन ।
विभाग १०—भोजनादि वर्णन ।

नाहटाजी ने इस संग्रह में जिस प्रकार से विषय का विभाग किया है वह उनका अपना है। वर्णन संग्रहों को यथावत् न छाप कर उनमें से एक जैसे विषयों का संकलन कर दिया है। इन विभागों का कुछ परिचय आवश्यक है।

पहले विभाग में जो विषय संकलित हैं उनमें देश नामों की चार सूचियाँ हैं (पृ०, ३-५)। पहली सूची में १५१ नाम हैं। पुराणों के भुवन कोशों की जनपद सूचियाँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से मूल सूची का संकलन पाणिनि काल में हुआ होगा। उसके बाद गुप्तकाल में उससे बड़ी एक दूसरी सूची तैयार हुई जो बृहत्संहिता और मार्कण्डेय पुराण में पाई जाती है। इस सूची के भी युगानुसार और संस्करण बनते रहे, जिनमें से एक गुर्जरप्रतिहार युग के महाकवि राजशेखर ने काव्यमीमांसा में उद्धृत की है। उसके बाद तुर्क युग की सूची पृथ्वीचन्द्रचरित में मिलती है। उस समय की सूची में ९८ देशों के नाम गिनाए जाते थे। वर्णरत्नाकर में भी यह सूची रही होगी किन्तु अब वह अंश खण्डित हो गया है। सभा-शृंगार की यह सूची मुगल काल में संगृहीत हुई होगी। इसमें नए और पुराने नामों की मिलावट है। पुराने नामों में शक, यवन, मुरुण्ड, हूण, रोमक, काम्बोज, कारव आदि हैं। ताईक (संख्या १४४) नाम ताजिक देश के लिये है। भारत से बाहर के देशों की सूची पर-द्वीप नाम के अन्तर्गत अलग दी गई है, जिनमें हुर्मुज, मक्का, मदीना, पुर्तगाल, पीगु, रोम, अरब, बलख, बुखारा, चीन, महाचीन, फिरंग हबस आदि के नाम तो ठीक हैं, किन्तु दीव, घोघा, डाहल, मलबार, चीउल, मुल्तान, जम्मू, आबू और ढाका के नाम इस देश के ही हैं। १।६ के अन्तर्गत जो संख्याएँ हैं उन्हें देशों की उपज कहना ठीक नहीं। वे उसी प्रकार की ग्राम संख्याएं हैं जिनका उल्लेख ऊपर आ चुका है। सूची १।८, १।९ में नगरों के नाम हैं जिनमें कुछ नए और कुछ पुराने मिले हुए हैं। १।११ से १।२४ तक नगर वर्णन संबन्धी वर्णक महल-

पूर्ण है। १।२१ और १।२२ मे ८४ चौहट्टो की दो सूचिया महत्वपूर्ण हैं। इनकी एक सूची पृथ्वीचन्द्रचरित्र मे भी प्राप्त हुई थी, जो नाहटा जी की पहली सूची से बहुत मिलती है। पृष्ठ १६ पर स्वयवर मण्डप का वर्णन करते हुए पञ्चरगी देवाशुक के बने हुए ऊलोच (शामियाने) के उल्लेख के अतिरिक्त तलियातोरण उठाने का भी वर्णन है। यह एक विशेष प्रकार का दोमजला तोरण होता था जिसे स्थापत्य की परिभाषा मे तलकतोरण कहते थे। पृथ्वीराज-रासो के लघु सस्करण मे जिसका सम्पादन पजाब के श्री बेणीप्रसाद शर्मा ने किया है इसी का बिगडा हुआ रूप तिलङ्गा तोरण हमे प्राप्त हुआ था। पृ० १८-२१ पर अटवी वर्णन नो प्रकार से सगृहीत हैं। उसके बाद वृक्ष नामो की छः सूचियाँ है। इस प्रकार की सूचियाँ वन वर्णन के साथ सस्कृत साहित्य मे भी प्रायः मिलती हैं। विशेषतः महाभारत और पुराणों मे वृक्षावली की लम्बी सूचियो के द्वारा ही वन वर्णन करने की प्रथा थी। वृक्षों के प्राचीन नामों मे सहकार कुषाण गुप्त युग का शब्द था। मूल महाभारत के स्तर मे उसे न होना चाहिए था। नन्दन वन के वर्णक की वृक्ष सूची मे वह पडा हुआ है, जो इस बात का सकेत है कि वह परिनिष्ठित वर्णन गुप्तकाल मे किसी समय जोडा गया। सरोवर वर्णन के भी तीन प्रकार दिए है (पृ० १२६)। इनमे शतपत्र, सहस्रपत्र के अतिरिक्त कमल के लिये लक्षपत्र हमे पहली ही बार प्राप्त हुआ है। नदी नामों के अन्त मे लिखा है कि १४ लाख ५६ हजार नदियाँ लवण समुद्र मे मिलती हैं। यद्यपि स्कन्द पुराण के नागर खण्ड मे हमे उल्लेख मिला था कि केवल गङ्गा ही ६०० नदियो को लेकर समुद्र मे मिलती है फिर भी प्रस्तुत संख्या अब तक की प्राप्त संख्याओ मे सबसे बडी है[1]।

विभाग २ के अन्तर्गत राजा के वर्णन के लगभग १५ प्रकार दिए हैं। पहले वर्णन मे गोड, भोट, पाचाल, कन्नड, ढूँढाड़ (जयपुर), बाबर (सौराष्ट्र) चोड, दशउर (दशपुर मालवा), मेवाड, कच्छ, अंग आदि देशो की समृद्धि या विभूति पर शासन करने का उल्लेख है। पृष्ठ ३६ पर अष्टादश द्वीप कीर्ति विख्यात एव एकोनविंशति पत्तनो के नायक विशेषण मध्यकालीन प्रतापी चोल सम्राटों के विशाल सामुद्रिक राज्य और दिग्विजय से लिए किए गए अभिप्राय थे। पृष्ठ ४३ पर चक्रवर्ती के वर्णन मे अनेक संख्याओ का उल्लेख है जिनमे ९६ कोटि ग्राम सख्या भी है जिनकी व्याख्या ऊपर आ चुकी है। रानी,

---

१—शतानि नव सगृह्य नदीना परमेश्वरी। तथा गङ्गाभिधा या तु सैव प्राक् सागर गता।

राजकुमार के वर्णन सामान्य कोटि के हैं। किन्तु राजसभा के छः वर्णन (पृष्ठ ५८–५६) महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सामग्री से भरे हुए है जिनकी व्याख्या विस्तार की अपेक्षा रखती है। सिगरणा (श्रीकरण का मुख्य मंत्री जिसे आजकल की भाषा मे गृह मंत्री कहेंगे) और वेगरणा (व्ययकरण का अर्थमंत्री) मध्यकालीन सचिवो के नाम थे। साहणिया या साहणी (अश्वसाधनिक) नामक अधिकारी था। राजसभा के पाँचवें वर्णन में उसे महामसाणी (=महासाहणी=महासाधनिक) कहा गया है। इसी प्रसग मे थैयायत शब्द उल्लेखनीय है। नाहटाजी ने सूचित किया है कि राज दरबार में ताम्बूल आदि देने वाला सम्मानित व्यक्ति थैयायत कहलाता था। श्रीपालचरित में उसका उल्लेख है। पृष्ठ ६३–६४ पर तीन बार लोहे के महाकाय मोगल का उल्लेख है। हमारे लिए यह नया शब्द है और प्रतोली और कपाट के प्रसग में इसका अर्थ परिघ या दृढ़ अर्गला होना चाहिए। गज वर्णन के ६ प्रकार और अश्व वर्णन के ७ प्रकार सगृहीत है। इनमें सप्तागप्रतिष्ठित विशेषण हाथी के लिये प्राचीन पाली और सस्कृत साहित्य मे भी आता है। अश्वों के नाम रंग एवं देशो के अनुसार रक्खे जाते थे जिसकी पर्याप्त नई सामग्री इन सूचियों में है। पृष्ठ ७० पर सेराह, हलाह, उराह, आदि नाम अरबी फारसी परम्परा के थे। बोरिया या बोर घोडे का उल्लेख जायसी में भी आया है। पृष्ठ ७२–८५ पर युद्ध वर्णन के ७ प्रकार मध्यकालीन वीरकाव्यो की रूढ़ शैली पर है।

विभाग ३ मे स्त्री पुरुषो का वर्णन है। इसमें सत् पुरुषों के गुणों की सूची एवं सज्जन दुर्जन का परिचय रोचक है। इसी प्रकार पृष्ठ ६६ पर उत्तम स्त्रियों की गुण सूची भी सुन्दर है। पृष्ठ ११३–१४ पर मालवा, मेवात, मेवाड, दक्षिण और गुजरात की स्त्रियो के नामो की सूची पहली ही बार साहित्य में देखने को मिलती है।

विभाग ४ में प्रकृति वर्णन का संग्रह है जिसमे प्रभात, सध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय और छः ऋतुओं के वर्णनो का संग्रह है। साहित्य में वसन्त, वर्षा और शरद् के वर्णन तो प्रायः मिलते है, पर ग्रीष्म के वर्णन कम पाए जाते हैं। बाण के हर्षचरित मे ग्रीष्म का बहुत ही उदात्त और मौलिक वर्णन पाया जाता है। यहाँ उन्हालो या उष्णकाल के तीन वर्णन है। जैसे बावन पल की तोल का सोने का गोला दहकता हो वैसे ही सूर्य तप रहा था—यह कल्पना नई है। बावन तोले माल गलाने का मुहावरा ही मध्यकाल में चल गया था, जैसा ५२ तोले पाव रत्ती इस लोकोक्ति में सुरक्षित है। पृष्ठ १२४ पर वर्षा के कारण पटशाल के टपकने का उल्लेख है। पटशाल पट्टशाला का रूप है जो राजप्रासाद के

आस्थान मंडप या आस्थायिका के लिये होना चाहिए जहाँ पाट या सिंहासन रहता था। किसानों को कई वार कर्षणीलोक कहा गया है। इसी प्रकरण में कलिकाल के भी कई वर्णन है। कलि वर्णन मध्यकालीन साहित्य का एक अभिप्राय ही बन गया था। प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी में कई कलियुग चरित्र मिलते हैं। यान कवि ने संवत् १६७४ में एक कलियुग चरित्र की रचना की थी। उससे २०० वर्ष पूर्व संवत् १४८६ में हीरानन्द सूरि ने कलिकाल रास लिखा था। गोस्वामी जी ने उत्तरकाण्ड मे कलिधर्मों का बहुत अच्छा वर्णन किया है। वैसे तो गुप्तकाल से ही इस प्रकार के कलिचरितों की रचना होने लगी थी। विष्णुपुराण में सर्वप्रथम कलिचरित का सन्निवेश हुआ है। लोकमाया बहुल, अल्प मंगल, यही इन कलिमलों का सार था। आउखा स्तोक, निवाणिजा लोक अर्थात् आयुर्बल थोडा हो गया और लोगो का व्यवसाय धन्धा जाता रहा यही कलि प्रभाव है। रामचरितमानस का कलिवर्णन उसी परम्परा मे है।

विभाग ५ मे कला और विद्याओं की सूचियाँ हैं। इस प्रकार की अन्य कई सूचियाँ सस्कृत साहित्य मे भी मिलती हैं। उनके साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिये ये सूचियाँ उपयोगी है। प्राचीनकाल की अनेक विदग्ध गोष्ठियो मे इन कलाओं की आराधना की जाती थी, जैसे वक्रोक्ति, काव्यशक्ति, काव्यकरण, वचनपाटव, वीणा, कथाकथन, अङ्कविचार, प्रश्न-पहेलिका, अन्ताक्षरिका आदि विषय मनोविनोद के साधन थे। पृष्ठ १४० पर ४७ राग-रागिनियों की सूची है और पृष्ठ १४१ पर बाजों के नामों की दो बडी सूचियाँ हैं। पृष्ठ १४० पर बद्ध नाटक में ३२ अभिप्रायों द्वारा सपादित नाट्य विधि का उल्लेख है जो जैन-परम्परा मे प्रसिद्ध हो गई थी और जिसका विस्तृत वर्णन रायपसेनिय सूत्र में आया है। पृष्ठ १४३ पर लिपियो की ३ सूचियाँ हैं जिनमें कुछ नाम तो काल्पनिक और अनेक नाम वास्तविक जीवन से लिये गए हैं, जैसे नागरी लिपि, लाट लिपि, पारसी लिपि, हमीरी लिपि, (अमीर या तुर्की सुल्तानो की लिपि), मरहठी लिपि, चौडी (चोल देश की तमिल लिपि), कुंकुणी, कान्हडी, सिंहली, कीरी (कीर या टक्क देश की टक्की लिपि)।

विभाग ६ मे जाति और धन्धों की उपयोगी सूचियाँ हैं। इनमें ३६ पौनि या नेगियों की नामावली भी है जिनका उल्लेख साहित्य मे आता है। अनेक पेशेवर जातियों के नाम रोचक है जैसे दोसी (दूष्य या वस्त्र का व्यवसाय करनेवाले), पारखि (रत्नो की परीक्षा करनेवाले), पटउलिया (पटोला बुननेवाले), भोई (सस्कृत भोगी, हाथियों के अधिकारी), बेगरिया (सस्कृत वैकटिक, रत्न तराश), परीयट (बरहठा या धोबी जिसे देशी नाममाला में परीयट्ट कहा

गया है), सुई (संस्कृत-सौचिक या दर्जी), ताई (संस्कृत त्रायी या आरक्षक, रक्षा करनेवाला पुलिस अधिकारी) इत्यादि। एक सूची में ८४ प्रकार की वणिक जातियों के नाम हैं और दूसरी में ३४ प्रकार के ब्राह्मणों के। राजपूतों के ३६ कुलों की सूची वर्णरत्नाकर के समान यहाँ भी है। यह पुरानी सूची थी। कालान्तर में जब और भी जातियाँ राज्याधिकार सम्पन्न हुईं तब एक दूसरी बड़ी सूची संकलित की गई जिसमें ७२ राजकुलों की गिनती थी। यह सूची भी वर्णरत्नाकर (पृष्ठ ६१) में है। ३६ कुलों की सूची के अन्त में कुली शब्द है, ७२ वाली के अन्त में नहीं। पहले अपने आपको सत् क्षत्रिय (वत्सराजकृत किरातार्जुनीय नाटक), सुक्षत्रिय (श्रीधरदासकृत सदुक्तिकर्णामृत, २६०) या शुद्ध क्षत्रिय (य. कोऽपिवा साहसी लोके यस्यास्ति वा क्षत्रियतावदाता, पृथ्वीराज विजय, ६।२२४) मानते थे। राजतरंगिणी में भी ३६ क्षत्रिय कुलों का उल्लेख आया है (७।१६१७) जिससे ज्ञात होता है कि ३६ कुलों की कोई एक सूची बारहवीं शती से पहले अस्तित्व में आ चुकी थी। इन सूचियों की ऐतिहासिक परख से बहुत से तथ्य हाथ लगेंगे। पृष्ठ १५१ पर साहूकार के कई विरुदों में एक 'छत्रीस वेलाउल विख्यात' भी है जिसका तात्पर्य यह था कि बड़े साहूकारों की कोठियाँ या लेन देन के सूत्र ३६ वेलाउल या समुद्र तटवर्ती पत्तनों के साथ जुड़े रहते थे और उनके साथ उनके हुण्डी-परचे का भुगतान चलता रहता था।

संवत्सर मुद्रा करणहार विरुद भी किसी महत्वपूर्ण तथ्य का व्यंजक है। संभवतः नये वर्ष के आरम्भ में संवत्सर सूचक व्यापार मुद्रा या भाव-ताव का आरम्भ करने का श्रेय रखने वाले शिरोधार्य महाजन के लिये यह विरुद था। इसी प्रकार कड़ाह समुद्र विरुद भी ध्यान देने योग्य है। कटाह-द्वीप के पूर्वी समुद्र या द्वीपान्तर के साथ व्यापार करने का प्राचीन गुप्तकालीन संकेत इसमें बच गया था।

विभाग ७ में देवी देवता आदि का वर्णन है। पृष्ठ १६३ पर श्रेष्ठि के वर्णन में कहा गया है कि उसके यहाँ लक्ष्मी के निधान कलश रहते हैं और लाख धन के सूचक दीप जलते हैं एवं करोड़ की सूचक ध्वजाएँ फहराती हैं। श्रेष्ठिप्रवहणयात्रा के वर्णन में देशान्तर के योग्य भाण्ड या माल को देशान्तरोचित क्रियाणा कहा गया है और कूपदण्ड या मस्तूल के लिये कुआखम शब्द है।

विभाग ८ में जैन धर्म संबंधी वर्णकों का संग्रह है। समवसरण के वर्णन में रत्नमय पीठ, प्राकार, कौशीश, चार प्रतोली द्वार, देव प्रतीहार, सुवर्ण स्तम्भ

मणिमय कुम्भ, रत्नमय तोरण, वन्दनमाला, छत्र, पुतली, मोरमुख, ध्वजा, पीठ, सिंहासन, पादपीठ, आतपत्र छत्र, चॅवर, भामण्डल, धर्मचक्र, देवदुन्दुभि, इन्द्र-ध्वज आदि पारिभाषिक शब्दावली ध्यान देने योग्य है। इसके बाद जिन-वाणी, जिनोपदेश, तपभावना, धर्म माहात्म्य, युगलियो मुखवर्णन, श्रावक आदि के वर्णक है। पृष्ठ २११-२१२ पर ८४ गच्छो के नामो की सूची है और अन्त मे चतुर्दश स्वप्नो के वर्णन है। १४वे स्वप्न मे निर्धूम अग्निशिखा को सदाज्वाला युक्त ऊर्ध्वमुखी धक धक करता हुआ वैश्वानर कहा गया है। सर्वान्त मे लक्ष्मी देवी और उनके पद्मसरोवर मे खिले मुख्य कमल का बहुत ही भव्य वर्णन है।

विभाग ६ मे सामान्य नीतिपरक वर्णको का सग्रह है। यह समस्त प्रकरण अत्यन्त सुपाठ्य और बुद्धि की चतुराई से भरा हुआ है। द्रामड़ का सकेत शेरशाह अकबरकालीन मुद्रा से है (कहाँ द्रम्य या दाम कहाँ रुपया)। पृष्ठ २५६ पर चचल मन के वर्णक मे उपमाओ की लडी पढते हुए चित्त प्रसन्न हो जाता है—चञ्चल मन ऐसा है जैसे हाथी का चञ्चल कान, पीपल का पान, सन्ध्या का वान, या दुहागिन (परित्यक्ता) का मान, मिट्टी का घाट, बादल की छॉह, कापुरुष की बॉह, तृणो की आग, दुर्जन का राग, पानी की तरग और पतंग (लकडी) का रंग। पृष्ठ २५८-५६ पर विशिष्ट पदार्थो के वर्णक मे वस्तुओं का उल्लेख ध्यान देने योग्य है—सोरठी गाय, मरहठी वेसर आबू तणउ देवड़ो (आबू के जैन मन्दिर), पाटण तणा सेवडो (पाटन के श्वेताम्बर यति), वाराणसीउ धूर्त। इसी प्रसंग मे ३६० प्रकार के किरानो को उत्तम और ३६ नाणक को अच्छा कहा गया है। ३६० किरानो की सूची माड-सरा के वर्णक-समुच्चय के परिशिष्ट २ मे सौभाग्य से बच गई है। ३६ नाणक या सिक्को को श्रेष्ठ मानने का कारण संभवत यह था कि ३६ दाम या तॉबे के पैसो का एक चॉदी का रुपया माना जाता था। विशेष पदार्थों मे (२५६–२६०) निम्नलिखित ध्यान देने योग्य हैं —

चतुराई गुजरात की, वामा हिन्दुस्तान का,
चूडा हाथी दॉत का, चौहट्टा की भीड दिल्ली की,

देवल आबू का, रूपा (चॉदी) जावर का इत्यादि। अपने वर्ग मे विशिष्ट पदार्थों का उल्लेख करते हुए वस्त्रों मे नेत्र वस्त्र की प्रशसा की गई है। 'भला क्या' इस सूची में भी अनेक उल्लेख बढ़िया हैं, जैसे—कच्छ की घोडी भली, पाग खॉगी (टेढी) भली, सेज चित्रशाली भली, कोरणी कोरी भली (अर्थात् नकाशी या उकेरी चारों ओर गोल कोरी या उकेरी हुई नकाशी अच्छी समझनी चाहिए।

विभाग १० में मगल, वर्द्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्र, अलंकार, धातु-रत्न आदि के वर्णन है। पृष्ठ २८१ पर वर्द्धापनक के अन्तर्गत ही तलिया तोरण का उल्लेख है जो पृष्ठ १६ पर भी आया है। जैसा ऊपर कहा है यह संस्कृत तलक-तोरण का रूप था। पृष्ठ २८२ पर धात्रियों की संख्या पाँच कही गई है। दिव्यावदान आदि बौद्ध संस्कृत ग्रन्थों में अंकधात्री क्षीर-धात्री, क्रीड़ा-धात्री और मल-धात्री ये चार नाम आते है। यहाँ अन्तिम के स्थान पर मज्जन-धात्री और मडन-धात्री नाम आए हैं। बाल-क्रीडा-वर्णन के मुख्य अभिप्राय सूर-सागर के विशद वर्णनों की संक्षिप्त सूची के समान हैं। विवाह समय नामक वर्णक में (पृ० २८३) घड़े सहित घृत मोल लेने का उल्लेख है जो उस युग का स्मरण दिलाता है जब पचास साठ वर्ष पहले तक गाँवों में घी गोल, घड़े आदि मिट्टी के पात्रों में भरकर रक्खा जाता था। घाघरवालि से तात्पर्य बडे और बजने घुँघरुओ की उस माला से है जो घोड़े, खच्चर आदि के गले में डाली जाती थी और जिसे गढवाल मे आज भी घाँघरयालो कहते है। भोजन के प्रसंग में रसोई के चार वर्णक सगृहीत हैं। लगभग २८ पृष्ठो में यह सामग्री अत्यन्त विशद है और इसमें मध्यकालीन साहित्य मे प्रयुक्त भोजन संबंधी शब्दों का एक पूरा भाडार ही मिलेगा। 'जिम महद्भूत गाड़ू तिम लाड्डू' (पृष्ठ २८३) उल्लेख ध्यान देने योग्य है। गाड़ू का अर्थ गडुवा या लोटा है जिसे यहाँ बडे लड्डू का उपमान कहा गया है। विद्यापति की कीर्तिलता में भी गाड़ू शब्द आया है (खणयक चुप भै रहइ गारि गाड़ू दे तबहीं, द्वितीय पल्लव, अर्थात् तुर्क के मुँह मे जब निवाला अटक जाता है तब वह गडुवे से पानी मुँह में उँडेल लेता है)। महद्भूत या महाअद्भुत गाड़ू सम्भवतः उस प्रकार के लोटे को कहते थे जिसके पिटार पर दस अवतारों का अकन किया जाता था। सम्भवतः यहाँ उन बड़े लड्डूओ का प्रसंग है जिन्हें मगद के लड्डू कहते है। पक्वानों में खाजा नामक मिठाई की उपमा महल के छज्जे से दी गई है (पृष्ठ २८३, २८६)। इस मिठाई का चलन अब बन्द हो गया है किन्तु ज्ञात होता है कि मध्य युग में फूले हुए बहुत बडे सतपुडे खाजे बनाए जाते थे। वस्तुत इस प्रकरण में अनेक प्रकार के लड्डू, माँडे, फल, मेवा, चावल, मसाले, मिठाई आदि के नाम हैं जिनकी व्याख्या के लिये पूरे शोध-निबन्ध की आवश्यकता होगी। वर्ण-रत्नाकर और वर्णक-समुच्चय की सामग्री के साथ तुलना करने से इन नामो पर प्रकाश पड़ने की सम्भावना है। इन शब्दो में अपभ्रंश युग की भाषा की परम्परा भी ध्यान देने योग्य है, जैसे पारिहेटि महिसिं तणउ दूधु (पृष्ठ २८४) इस वाक्य मे पारिहेटि बाखड़ी भैंस की संज्ञा थी जिसे हेमचन्द्र ने देशीनाममाला मे परिहट्टी कहा है (देशी०

६।७२)। पृष्ठ २०३ पर लड्डुओ के दो वर्णक है और पृष्ठ ३०४ पर सूॅखडी या मिठाई के तीन वर्णकों में अनेक नाम भाषा के इतिहास की दृष्टि से रोचक हैं, जैसे इमरती के लिये पुराना नाम मुरकी था जो दो वर्णको में पढा है और पद्मावत में भी प्रयुक्त हुआ है। भारतीय भोजन और पकवानों का इतिहास अभी नहीं लिखा गया यद्यपि वैदिक युग से लेकर आज तक की तत्सम्बन्धी सामग्री बहुत अधिक है। उदाहरण के लिये इन सूचियो में बरसोला शब्द कईबार आया है। यह एक प्रकार का खॉड का लड्डू होता था जो पानी में डालते ही गल जाता था। नैषधचरित में इसे वर्षोपल कहा है। अब इसका चलन कम हो गया है। पृष्ठ २१० पर फल-मेवो की सूची में भी बिजोरा के साथ बरसोला नाम आया है। इससे ज्ञात होता है कि मिठाई के अतिरिक्त नीबू की तरह के किसी फल के लिये भी यह शब्द प्रयुक्त होने लगा था। सुगन्धित वस्तुओ की सूची मे मोगरेल, चॉपेल, जाचेल, केवडेल, करणेल, इन पाँचों शब्दों का अन्त का 'एल' प्रत्यय तैल-वाचक है। ये शब्द मोगरा चम्पा, जाही, केवडा और करना (एक प्रकार का श्वेत पुष्प) नामक फूलों से सुवासित तेलों के नाम थे।

पृ० ३११-३१४ पर वस्त्रो के पॉच वर्णक अत्यन्त रोचक हैं। इनमें पॉचवी सूची में लगभग १४० वस्त्रों के नाम हैं जो ऊपर उल्लिखित वर्णकसमुच्चय की सूची के समान महत्त्वपूर्ण हैं। इन सूचियों में भैरव शब्द कई बार आया है जो आईन-अकबरी के अनुसार एक वस्त्र का नाम था। बीसलदेव रासो में भैरव की चोली का वर्णन है, जो आइन से लगभग २०० वर्ष पुराना उल्लेख होना चाहिए। मसज्जर अरबी मुशज्जर का रूप है जिस पर शजर या पेड-पौधों की बूटियॉ बनी रहती थी। पोपटिया, जैसा नाम से प्रकट है, तोते की बूटी से छपे वस्त्र को कहते थे। नारी कुजर वस्त्र का नाम भी नारी कुंजर भॉति की छपाई के कारण ही पडा था। कमलवन्ना (कमल के रंग का), मूॅगवन्ना (मूॅगिया रंग का), गंगाजल, चक्रवटा (चक्र की छाप से छपा हुआ), सेत्रुंजी (शत्रुंजय, सौराष्ट्र का बना हुआ), पाम्हड़ी (सं० पद्मपटी, कमल बूटी से छपा हुआ), हसवेडि (हंसपटी), गजवेडि (गजपटी), प्रवालिआ (मूॅगिया लाल रग का वस्त्र), कोची (कोच बिहार का बना हुआ), गौडीया (गौड, बंगाल के वस्त्र सभवतः जिन्हे जायसी ने पंडुआ के बने पंडुवाए वस्त्र कहा है), सुनारगामी कपूरधूली, लोवड़ी (सं० लोमपटी) पट्टकूल, मेघाडम्बर, खीरोदक, पैठाणी (पैठण या प्रतिष्ठान का बना हुआ) आदि नाम संस्कृत प्राकृत परम्परा के हैं जो मध्यकालीन संस्कृति में सुविदित रहे होंगे। आगे चलकर

महमूदी, सिरीबाफ, जरबाफ, तानबाफ, कमखाब, सूसी आदि मुसल्मानी युग के नाम भी पुरानी सूचियों में जुड़ते रहे जैसा वर्णरत्नाकर, वर्णकसमुच्चय और सभाशृंगार में पाया जाता है। इनमें कई नामों की अब ठीक पहचान ज्ञात नहीं है।

इस ग्रन्थ के परिशिष्ट रूप में जो रत्नकोष और राजनीतिनिरूपण नामक दो संस्कृत ग्रन्थ मुद्रित किये गए हैं उनमें भी मध्यकालीन जीवन की बहुविध सामग्री का उल्लेख आया है। हमें प्रसन्नता है कि ग्रन्थ की उपादेयता बढ़ाने के लिये श्री नाहटा जी ने उन्हें इस संग्रह में संकलित कर लिया है क्योंकि जितनी भी इस प्रकार की बिखरी हुई सामग्री प्रकाश में लाई जा सके स्वागत के योग्य है।

इस प्रकार इस विशिष्ट वर्णन सग्रह का कुछ संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से इसकी विशेष छानबीन की आवश्यकता है। हिन्दी साहित्य में यह एक नया क्षेत्र है। प्रयत्न करने पर इस प्रकार के और भी ग्रन्थ मिलने की संभावना है। हम श्री नाहटा जी के अनुगृहीत हैं कि उन्होंने परिश्रम पूर्वक इस प्रकार के उपयोगी साहित्य की रक्षा की।

काशी विश्वविद्यालय
६-४-१९५९

वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रस्तावना

विश्व अनंत वस्तुओं का भंडार है जहाँ प्रतिपल अनेक प्रसग बनते रहते हैं। उन वस्तुओं और घटनाओं को हम सभी देखते एवं जानते हैं पर उनका ठीक से वर्णन करना विरले ही व्यक्तियों के लिये संभव है। इसीलिये कहा गया है—'कहिबो सुनिबो देखिबो, चतुरन को कछु और'।

वस्तुओं और प्रसंगो को वर्णन करने की एक कला है। किसी बात का वर्णन करते समय उसका तादृश चित्र ला खड़ा कर देना तो बड़े महत्व की बात है ही पर उसे सुंदर शब्दों में दृष्टांतों और उपमाओं के साथ वर्णन करना यह उससे भी अधिक महत्व की बात है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से वर्णनकला की परंपरा पाई जाती है। प्राचीन जैन आगमों से तो यह भली भाँति सिद्ध है। वैसे तो सभी आगमों में जब भी नगर, राजा, वनखड, उद्यान, चैत्य आदि का प्रसंग आया है, वहाँ उनका बड़े सुदर ढंग से वर्णन किया गया है। पर उववाइ (ओपपातिक) नामक उपांग सूत्र में तो वर्णनो का संग्रह विशेष रूप से पाया जाता हैं और अन्य आगमा में नगर, राजा आदि का वर्णन—'उववाइ सूत्र के जैसा जान लेना या कहना' इस प्रकार का मिलता है। इन वर्णनों में सांस्कृतिक सामग्री प्रचुर रूप से संगृहीत है जिसके संबंध में मैने एक स्वतंत्र निबंध में दिशानिर्देश किया है और पटना से प्रकाशित 'साहित्य' नामक पत्र में 'जैन आगमों की वर्णन शैली' का संक्षिप्त परिचय भी प्रकाशित किया गया था।

वर्णनसंग्रह के दो महत्वपूर्ण ग्रंथ—जैन आगमों की वह परंपरा परवर्ती साहित्य में भी पाई जाती है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश काव्यों और कुछ गद्यग्रंथों में भी कवियों एवं विद्वानों ने विविध प्रसंगों में नगर, राजा रानी, ऋतु आदि का वर्णन किया है। प्राचीन राजस्थानी और गुजराती में वह परंपरा और भी विकसित रूप में पाई जाती है। मैथिली और महाराष्ट्री भाषा के भी 'वर्णरत्नाकर' एवं 'वैजनाथ कलानिधि' इस परंपरा की व्यापकता को सूचित करते हैं। इनमें से वर्णरत्नाकर को तो काफी प्रसिद्धि मिल चुकी है पर 'वैजनाथ कलानिधि' का विवरण अब से २३ वर्ष पूर्व पत्तनस्थ प्राच्य

जैन भंडागारीय ग्रंथसूची के पृष्ठ ७४ से ७६ में प्रकाशित होने पर भी इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की ओर अभी तक विद्वानों का ध्यान नहीं गया। इस ग्रंथ की ११५ पत्रों की एक प्रति संघवी पाड़े के जैन भंडार में है। ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित होने से इसका थोडा सा अंश पाटण भंडार सूची से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

आतां नगरवर्णन

आटालिया, उपरीया, मालीया, गजद्वारें, राजद्वारें, एडकीद्वारें, दाइलवाडे, चौकिया, मनोरम विलासपुरें।

प्रसिद्ध सिद्धांचे निवेश

बौद्धांचे विहारा, जिनांचीं जिनालयां, कनकशाला, टंकशाला, सोमशाला, अध्ययनशाला, गीतनृत्य वाद्यशाला, लेखशाला, चित्रशाला, धर्मशाला, सत्रशाला, हस्तिशाला, मल्लशाला।

अनेक मठ मढिया

'कलआडें नडें चौकीया धवलहारें वसुआरें सालवधें कोचनि बद्धें कोठारें, कोटिआ, कडी, वोडो डी, [क] लहस, दुआले आवासणियां। रिपणहारी, उधूनपताकासहस्र (स) प्रकटिते, उत्तंगगिरि शिखरसंकासें देवतायतनें, चतुष्पथे २ विचित्र चित्रित सभा मंडप। स्वर्णकलशालंप्रासादसहस्र (स्रु)। जैसे—गगन सरोवर कनककमलमुकुलीं अलंकृत, मयूर, पारावत, चकोर, राजहंस। तेयां चित्रां प्रासादांवरि इतश्चेतश्च संचरतेति आकाशसरोवरीं जलविहंगमां ब्राह्मणभवनीं ऋचां यत्तं सामाचे उद्‌घोप सायंप्रातरग्निहोत्र हवने मंगलप्रकासक होमधूम। सुरभिपरिमलालंकृत श्रीमंत भवनीं वहकले अगरुधूम। क्रय-विक्रय व्यवहारीं, ससम्भ्रम हट्टशाला प्रदेश। ठाईं ठाईं सतीसां दंडायुधां वे सरांवाचे या गरुडी। तांडवलास्यभेदें। भावकां नटांसि पात्र परिपाठ वाची अभ्यासस्थानें। गोववते आंगसरादीविग्रसाला। घट-प्रासादसाधकां देसी मार्गसाधनें। तत वितत घन सुखिर वाद्य वादकां सरावांचीं एकांतस्थानें परमप्रबोधा नंदनिर्भरां मुनीं वेद्याख्यान मठ राउलि वांसिह वारीं डावियें ऊजिवांये भुजे तीं तीं भूमींचीं भूविलासिणींचीं धवलहारें।' इसके वाद सभा आदि के वर्णन हैं।

वर्णन प्रकार—वर्णन करने की प्रणाली में मुख्यतया दो बातों की ओर हमारा ध्यान जाता है अर्थात् प्रधानतया वर्णनों को दो प्रकारों में विभाजित

कर सकते हैं (१) भेद प्रभेदों एवं नामावलियों का विस्तार (२) वस्तु और घटना का छटाकार अलंकृत शैली में चित्रण। इसमें तुकांत प्रासयुक्त गद्य की प्रधानता इसकी रोचकता में चार चाँद लगा देती है। छंद के बंधन से मुक्त होने पर भी तुकांत और प्रासयुक्त वर्णन शैली बहुत ही मनोहर एवं आकर्षक है। प्रस्तुत संग्रह में उपरोक्त दोनों प्रकार के वर्णन पाठकों को देखने को मिलेंगे।

दो अन्य राजस्थानी वर्णनसंग्रह ग्रंथ—इस ग्रंथ में संगृहीत सभी वर्णन जैन विद्वानों के लिखे हुए हैं पर जैनेतर लेखकों ने भी ऐसी कुछ रचनाएँ की हैं जिनमें से दो राजस्थानी रचनाएँ 'खीची गगेव नीबावतरो रो दो-पहरो और राजान राउतरो बात बणाव' मेरे विद्वान् मित्र श्री नरोत्तमदास जी स्वामी संपादित राजस्थान पुरातत्वोन्वेषण, प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग १ में प्रकाशित हो चुकी हैं। ये दोनों ही रचनाएँ किसी चारण विद्वान् की लिखी हुई प्रतीत होती हैं। इनमें प्राप्त होनेवाले वर्णन बहुत ही सुंदर और सांस्कृतिक दृष्टि से बडे ही महत्वपूर्ण हैं। बात बणाव का अर्थ है कि बात किस तरह बनाली अर्थात् कहनी व लिखनी चाहिए। राजस्थान में हजारों बातें (वार्ताएँ, कथा कहानियाँ) बडे चाव से कही सुनी जाती रही हैं। बातों को अच्छे ढग से छटादार शैली में कहनेवाले व्यक्तियों को राजाओं ठाकुरों आदि के यहाँ बड़ा संमान तो मिलता ही था पर जनसाधारण में भी उनका बडा आदर था। यद्यपि सैकड़ों राजस्थानी बातें लिखित रूप में भी मिलती हैं पर मौखिक रूप से कहने का ढग बड़ा ही अनोखा और निराला होता है जो कि लिखित रूप में प्रायः नहीं पाया जाता। फिर भी कई बातों में कई प्रसंग बड़े सुंदर रूप से लिखे हुए मिलते हैं।

वर्णकों के प्रति आकर्षण—वर्णकों के प्रति मेरा आकर्षण बाल्यकाल से है जब मैं ८-१० वर्ष का था तो पर्युषणों में कल्पसूत्र सुनने के लिये पिताजी आदि के साथ व्याख्यान में जाया करता था। कल्पसूत्र की लक्ष्मी-वल्लभी टीका कल्पद्रुम कलिका में कई जगह राजस्थानी भाषा के सुदर वर्णक हैं जिन्हें सुनकर मुझे बड़ा आनद मिलता था। टीकाकार लक्ष्मी-वल्लभ ने ऐसे वर्णकों को 'वागविलास' ग्रंथ से उद्धृत करने की सूचना दी है अतः उस वागविलास ग्रथ को प्राप्त करने की बड़ी उत्कंठा हो आई पर कई वर्षों तक उसका कोई अनुसधान नहीं मिल सका।

अब से करीब ३० वर्ष पूर्व बड़ौदा ओरियंटल सिरीज में प्रकाशित 'प्राचीन गुर्जर काव्यसंग्रह' और मुनि जिनविजय जी संपादित 'प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ' में संवत् १४७८ में माणिक्यचंद्रसूरि रचित 'पृथ्वी चंद्र चरित्र' अपर नाम 'वागविलास' नामक ग्रंथ देखने को मिला तो बड़ी प्रसन्नता हुई। पर इस ग्रंथ में लक्ष्मीवल्लभगणि ने 'वागविलास' के जो वर्णन कल्पसूत्र की टीका में दिए हैं वे प्राप्त नहीं हुए, इसलिये टीका में उल्लिखित 'वागविलास' नामक रचना और कोई होनी चाहिये इस धारणा के साथ उसकी शोध में लगा रहा।

संग्रह का प्रयत्न—महाकवि समयसुंदर की रचनाओं के अनुसंधान के प्रसंग से जब बीकानेर के हस्तलिखित जैन ज्ञानभंडारों की प्रतियों का अवलोकन शुरू किया तो सर्वप्रथम 'कुतूहलम्' नामक एक छोटी सी सुंदर वर्णनोंवाली रचना मिली। उसके बाद संवत् १७६२ की लिखी हुई 'सभा-शृंगार' (नंबर २) की एक प्रति प्राप्त हुई। इन दोनों की नकलें करवा के रख ली गईं। तदनंतर सन् १९५० में जैसलमेर की द्वितीय यात्रा में १६ वीं शताब्दी की लिखी हुई एक अपूर्ण प्रति बड़े उपाश्रय के यति लक्ष्मीचंद जी के पास देखने को मिली। अपूर्ण होने से इस रचना का कोई नाम ज्ञात नहीं हुआ। पर पत्रों के प्रत्येक उपांत में 'मुत्कलानुप्रयास' नाम लिखा हुआ था। प्राप्त ८ पत्रों में १०८ वर्णन प्राप्त हुए पर बहुत खोज करने पर भी इसकी पूरी प्रति प्राप्त नहीं हुई।

जैसलमेर से बीकानेर लौटते समय मुनि पुण्यविजय जी के पास जैसलमेर पधारे हुए डा० भोगीलाल सांडेसरा और डा० जितेंद्र जेतली से सर्वप्रथम मिलना हुआ तो उन्हें अनुरोध करके बीकानेर साथ ले आया। प्रसंग-वश डा० सांडेसरा से यह ज्ञात हुआ कि उनके पास भी वर्णनों की एक विशिष्ट प्रति है। तो मैंने उनसे वह प्रति भी मंगवा ली। ४० पत्रों की वह महत्वपूर्ण प्रति भी अपूर्ण थी। सन् १९५१ के मार्च में ही मैंने उसकी प्रतिलिपि करवा ली। उसके बाद जोधपुर जाने पर वहाँ के केसरियानाथ जी के भंडार में सभाशृंगार (नंबर १) के १८ पत्रों की एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई इसमें १५८ वर्णन थे। इन सब प्रतियों व रचनाओं के आधार से 'राजस्थान भारती' में 'कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य ग्रंथ' नामक लेख प्रकाशित किया। जिसमें उपरोक्त रचनाओं के कुछ चुने हुए वर्णन प्रकाशित किये गए। माननीय वासुदेवशरण जी अग्रवाल को उपरोक्त रचनाओं की

प्रतिलिपियाँ देखने को भेजी तो आपने इन्हें महत्वपूर्ण समझकर संपादित कर देने को लिखा। नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से इस ग्रंथ के प्रकाशन में भी अग्रवाल जी का मुख्य हाथ रहा है।

इसी बीच बीकानेर के खरतर आचार्य गच्छ के ज्ञानभंडार से कुशलधीर रचित सभा कौतूहल की ६ पत्रों की एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई। आगरे जाने पर विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर से सभाशृंगार (नंबर १) जो पहले अपूर्ण मिला था उसकी संवत् १६७१ की लिखी हुई पूरी प्रति मिली और पाटोदी दिगंबर मंदिर, जयपुर से भी उसकी एक प्रति प्राप्त हो गई। इस तरह वह रचना तो पूरी की जा सकी। सौजन्यमूर्ति आगमप्रभाकर मुनिवर्य पुण्यविजय जी को लिखने पर उन्होंने पाटण भंडार से 'सभाशृंगार (नंबर २) की ६ पत्रों की प्रति संवत् १६७७ की लिखी भिजवा दी। जयपुर जाने पर मुनि जिन-विजय जी के संग्रह में खरतर गच्छीय कविवर सूरचंद्र रचित 'पदैक विंशति' नामक महत्वपूर्ण अज्ञात ग्रंथ की ९८ पत्रों की अपूर्ण प्रति अवलोकन में आई तो उसे भी साथ ले आया। मूल ग्रंथ संस्कृत में है पर उसमें प्रसंग प्रसंग पर राजस्थानी के गद्यवर्णन स्वर्ण आभूषण में जड़ाव की तरह सुनियोजित हैं। अतः उन सब वर्णनों को अलग से छाँटकर लिखवा लिया गया। उसके बाद मुनि पुण्यविजय जी और जयपुर के दिगंबर भंडार तथा विनयसागर जी के संग्रह की प्रतियाँ प्राप्त होती गईं और कुछ अपने संग्रह की प्रतियों का भी उपयोग किया। चित्तौड़ जाने पर यति बालचंद्र जी के संग्रह से १ पत्र में लिखा हुआ सभाशृंगार ले आया। भारतीय विद्या भवन से जिनविजय जी के संग्रह के सभाशृंगार की प्रति मँगवाई। बड़ौदा, पूना आदि से भी प्रतियाँ मँगवाई गईं। इस तरह २५-३० प्रतियों को प्राप्त करके इस ग्रंथ को तैयार किया गया है।

आवश्यक स्पष्टीकरण—यहाँ यह भी बतला देना आवश्यक है कि जब मैं इस ग्रंथ की तैयारी में लगा हुआ था तो डा० भोगीलाल जी सांडेसरा से सूचना मिली कि वे भी एक 'वर्णक समुच्चय' ग्रंथ तैयार करने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसलिये उनके संग्रह की जो प्रति मँगवाई थी उसका उपयोग मैं अपने ग्रंथ में नहीं करूँ। अतः उस प्रति के वर्णनों का इस ग्रंथ में उपयोग नहीं किया गया। यद्यपि उसके बहुत से वर्णन सभाशृंगार आदि अन्य संग्रहों में प्राप्त होने से मेरे इस ग्रंथ में भी आ चुके हैं पर कुछ वर्णन ऐसे भी रह जाते हैं जो सांडेसरा जी की प्रति में ही थे, अन्य प्रतियों

में नहीं। सांडेसरा जी का वह वर्णक समुच्चय ग्रंथ महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा से प्रकाशित हो चुका है। उसमें प्रकाशित सभा-श्रृंगार तो मुझे प्राप्त सभाश्रृंगार (नंबर १) ही है। अतः 'वर्णक समुच्चय' के प्रथम भाग में सांडेसरा जी की प्राप्त प्रति में पत्रांक २ न मिलने से पाठ त्रुटित रह गया था, उसको मैंने उन्हें भेजकर वर्णक समुच्चय भाग २ में प्रकाशित करवा दिया है। इस दूसरे भाग में प्रथम भाग के वर्णकों का सांस्कृतिक अध्ययन और शब्दसूचियाँ प्रकाशित की गई हैं जो बहुत महत्वपूर्ण है।

अपूर्ण प्रतियाँ—काफी खोज करने पर भी सभा कुतूहल, पदैक विंशति, मुत्कलानुप्रयास की पूरी प्रतियाँ कहीं से भी पूरी नहीं हो सकीं और न रुक्मणीवल्लभी टीका में उल्लिखित 'वागविलास' ग्रंथ ही अभी तक प्राप्त हुआ। इसलिये उसके अनुसंधान एवं प्रकाशन का कार्य अब भी बाकी रह जाता है।

सभाश्रृंगार नामक संस्कृत ग्रंथ—संस्कृत में भी सभाश्रृंगार नामक एक पद्यबद्ध ग्रंथ प्राप्त हुआ है जो अंचलगच्छ के कल्याणसागरसूरि के शिष्य द्वारा रचित है। इस ग्रथ की ४ प्रतियाँ देखने को मिली है। जिनमें से नित्यमणि जीवन लायब्रेरी, कलकत्ता की प्रति की नकल परिशिष्ट में देने को भेज दी गई थी, पर जब तक वह अन्यत्र प्रकाशित हो गई । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर (पुरातत्वान्वेषण मंदिर) और बड़ौदे आदि के जैन भंडारों की प्रतियों का भी उपयोग नहीं किया जा सका। 'सभा तरंग' नामक एक संस्कृत पद्यबद्ध ग्रंथ की एक प्रति आमेर भंडार से मँगवाई गई थी और भंडारकर ओरियंटल इंस्टीट्यूट पूना में भी इसी नाम वाले ग्रंथ की २ प्रतियाँ है पर उनका उपयोग इस ग्रंथ में करना आवश्यक नहीं प्रतीत हुआ क्योंकि उनकी वर्णनशैली भिन्न प्रकार की है।

जैनेतर संस्कृत रचनाओं में गीर्वाण पद मंजरी और गीर्वाण वाणमंजरी क्रमशः वरद भट्ट और ढुंढिराज के रचित; वर्णक पद्धति की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इनमें से एक की प्रति हमारे संग्रह में भी है। ये दोनों रचनाएँ डा० उमाकांत शाह द्वारा संपादित होकर जर्नल ऑफ ओरियंटल इंस्टीट्यूट भाग ७ नंबर ४ (जून १९५८) के अंक में प्रकाशित हो चुकी हैं।

परिशिष्ट—परिशिष्ट नंबर १ और २ में दो और महत्वपूर्ण रचनाएँ दी गई हैं जिनमें से प्रथम 'रत्नकोष'नामक ग्रंथ तो बहुत ही प्रसिद्ध रहा है।

उसकी हमारे संग्रह और बड़े ज्ञानभंडार की प्रति से पहले प्रेस कापी तैयार की गई पर उसके बाद अनूप संस्कृत लायब्रेरी की ४ प्रतियाँ और मँगाकर देखी तो उनमें काफी पाठभेद मिला। पर उन सब पाठभेदों का देना संभव न होने से केवल उनमें जो विशेष वस्तु प्रकारों के नाम मिले हैं उन्हीं की सूची दे दी गई है। परिशिष्ट नंबर २ में राजनीति निरूपण नामक संस्कृत ग्रंथ दिया गया है। वह मुगलकालीन शब्दों एवं संस्कृत पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। इस रचना की एक मात्र प्रति जैन भवन, कलकत्ते की लायब्रेरी से मिली है। परिशिष्ट की सामग्री प्रतिपरिचय छपने के बाद तैयार की गई इसलिये उसमें इन रचनाओं की प्रतियों का परिचय नही दिया गया है।

उपयोग—वर्णकों का उपयोग ग्रंथो में किस प्रकार किया जाता हैं इसका सुंदर उदाहरण 'पृथ्वीचंद चरित्र' और 'पदैक विंशति' ग्रंथ हैं। एक ही वर्णन को, भिन्न भिन्न लेखकों ने कुछ घटा बढ़ा कर भी लिखा है। कुशल धीर ने पुराने वर्णनो में किस तरह अपनी ओर से कुछ मिलाकर परिवर्धन किया है इसकी कुछ सूचना इस ग्रंथ में प्रकाशित 'सभा कुतूहल' के वर्णनों से पाठकों को मिल जायगी। फुटकर पत्रों में भी ऐसे वर्णन लिखे मिलते हैं। जिनमें प्रकाशित वर्णकों से कुछ भिन्नता है, पर उन सब वर्णनों के उपयोग से यह ग्रंथ काफी बड़ा हो जाता है।

[1]नवीन उपलब्ध ग्रंथ—अभी अभी मेरे भ्रातृपुत्र भँवरलाल को 'आभाणक रत्नाकर' नामक ग्रंथ का प्रथम खंड प्राप्त हुआ जिसमें बहुत सी कहावतों के साथ कुछ ऐसे वर्णनों का भी प्रारंभ में संग्रह किया गया है। इससे मालूम होता है कि वर्णकसंग्रहों का व्यापक प्रचार था और ऐसे अनेक संग्रह समय समय पर तैयार होते रहे हैं। खोज करने पर और भी ऐसी मूल्यवान सामग्री अवश्य मिलेगी। सभाशृंगार की तो अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं।

वर्णनसंग्रहों के नाम—वर्णन करने की प्रतिभा प्रत्येक व्यक्ति में समान रूप से पाई जाना संभव नहीं इसलिये कुछ प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों ने वर्णनों के संग्रहग्रंथ तैयार कर दिए, जिनको अन्य लोगों ने अपनी रचनाओं में यथाप्रसंग स्थान दिया। ऐसे वर्णनसंग्रहों का नाम सभाशृंगार, वागविलास, वर्णना सार, सभा कौतूहल, आदि रखे गए।

---

१. दे० मरुभारती वर्ष ८।

प्रस्तुत ग्रंथ का संपादन—इनमें से जितने ऐसे ग्रंथ राजस्थानी गद्य में प्राप्त हुए उनकी प्रतियों को कई ज्ञानभंडारों से मँगवाकर विषय वार वर्गीकरण करके इस ग्रंथ में दिया गया है। पहले ऐसी रचनाओं को मूल रूप में अलग अलग प्रकाशित करने के लिये उनकी प्रतिलिपियाँ की गईं पर बहुत से वर्णन एक दूसरी रचना में समान रूप से मिलते थे इसलिये उस रूप में प्रकाशित करने से बहुत अधिक पुनरावृत्ति होती। अतः पुनरावृत्ति न होने और उपयोगिता को बढ़ाने के लिये प्रत्येक वर्णन को अलग अलग लिखवाया गया फिर समान वर्णनवालों का पाठ मिलान कर पाठभेद लिखा गया और उन्हें क्रमबद्ध करके १० भागों में विभाजित किया गया। इस कार्य में कई महीनों तक कठिन परिश्रम करना पड़ा। इसलिये ग्रंथ को तैयार करने में अधिक समय लग गया और फिर मुद्रण में भी देर होती रही। फिर भी पाठकों के समक्ष इस रूप में रखते हुए, किंचित् संतोष का अनुभव होता है।

आभार—इस कार्य में श्री भँवरलाल नाहटा, ताराचंदजी सेठिया, नरोत्तमदास जी स्वामी और श्री बदरी प्रसाद जी साकरिया से बड़ी सहायता मिली है। श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने भूमिका लिखकर मुझे बहुत उपकृत किया है। श्री चन्द्रसेन जी सोरल ने इसके साहित्यिक सौंदर्य पर लिखा है। ना० प्र० सभा काशी ने इसे प्रकाशित किया है। एतदर्थ सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

अगरचंद नाहटा

———

सभा शृंगार का साहित्यिक सौंदर्य

वर्णकसाहित्य में विभिन्न वस्तुओं के वर्णन का संग्रह होता है। इसी प्रकार का एक संग्रह 'सभा शृंगार' है जिसे 'वर्णन संग्रह' भी कहा गया है। यद्यपि डा० साडेसरा ने भी अपने ग्रंथ में सभा शृंगार का समावेश किया है[1] पर वह वर्णन एक ही संग्रह का है और अधूरा है जिसका त्रुटित अंश उन्होंने बाद में प्रकाशित किया है।[2] वह आकार मे भी छोटा है। प्रस्तुत 'सभा शृंगार' को श्री अगरचद जी नाहटा ने अलग अलग ५ 'सभा शृंगार' के वर्णनों की कई प्रतियो के आधार पर संकलित किया है। इन पॉचों का तथा विभिन्न प्रतियों का परिचय ग्रंथ के अंत में दे दिया गया है।[3] डा० साडेसरा ने 'वर्णक समुच्चय' (भाग १) नामक ग्रंथ में जो वर्णक संग्रह दिया है वह महत्वपूर्ण है पर नाहटा जी के 'सभा शृगार' की विशेषता यह है कि उन्होने सभा शृगार के पाँचो संग्रहों को ज्यों का त्यों नहीं छापा है बल्कि उन्होंने समान विषयों को अलग अलग करके एक जगह प्रकाशित किया है। साथ ही डा० साडेसरा द्वारा प्रकाशित 'सभा शृंगार' के अंश को उन्होने छोड़ दिया है।

'सभा शृंगार' निम्नलिखित १० विभागो में विभाजित है—

१. देश, नगर, वन, पशु-पत्ती, जलाशय

२. राजा, राजपरिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

३. स्त्री-पुरुष वर्णन

४. प्रकृति वर्णन [प्रभात, संध्या, ऋतु आदि]

५. कलाएँ और विद्याएँ

---

१. डा० भोगीलाल ज० सांडेसरा, वर्णक समुच्चय, भाग १, पृ० १०५–१५६

२. डा० भोगीलाल ज० सांडेसरा, वर्णक समुच्चय, भाग २, पृ० १२०–१२३

३. श्री अगरचंद नाहटा—सभा शृंगार, परिशिष्ट २; पृ० १–४

६. जातियां और धंधे
७. देव, वेताल आदि
८. जैन धर्म संबंधी
९. सामान्य नीति वर्णन
१०. भोजनादि वर्णन

वर्णकसाहित्य में वस्तुओं के विभिन्न नामरूपों का वर्णन होता है। इस प्रकार का वर्णन लेखक के ज्ञानभंडार की तो सूचना देता ही है, साथ ही पाठक या श्रोता भी उससे अपने ज्ञान की वृद्धि कर लेता है। इन वर्णनों के द्वारा पाठक के समक्ष एक चित्र उपस्थित हो जाता है और वह वर्ण्य विषय को सरलता से ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार का परिनिष्ठित और रूढ़िगत रूप हमारे मस्तिष्क की बौद्धिक चेतना को तो उद्बुद्ध करता है पर वह हमारे हृदय की मार्मिकता को सजग करने में अधिकांशतः असमर्थ रहता है। पर वर्णकसाहित्य के सभी लेखक समान नहीं होते। उनमें से कुछ कविहृदय होते हैं और उचित प्रसंग पाकर उनका अंतर भावुकता के साथ विषय का चित्रण करने लगता है। 'सभा शृंगार' भी इसका अपवाद नहीं। इसमें अधिकांशतः वस्तुओं के नामरूपों का ही वर्णन है पर कहीं कहीं काव्यछटा के भी दर्शन होते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से सभा शृंगार का 'युद्धवर्णन' उत्कृष्ट है। इसमें स्वाभाविकता के साथ साथ रसमग्न करने की शक्ति है। यह वर्णन या तो लेखकों ने पूर्व ग्रंथों के आधार पर किया होगा अथवा यह भी संभव है कि उनमें से किसी की व्यक्तिगत अनुभूति इसमें अभिव्यक्त हुई हो। ग्रंथ में ७ युद्धवर्णन हैं। इनमें परस्पर कुछ न कुछ समानता होते हुए भी भिन्नता है। प्रथम युद्धवर्णन के आरंभ में दोनो दलों की सेना के मिलने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ उसका चित्रण किया गया है। जब दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गईं तो चारों ओर रेत ही रेत छा गई। उससे अंधकार हो गया और वातावरण की धूमिलता के कारण अपने पराये का भी ज्ञान न रहा। इसके बाद युद्ध का वर्णन किया गया है। कहीं कहीं आरंभ मे युद्ध के वाद्य बजने और वीरों के सजने का वर्णन है यथा चतुर्थ युद्धवर्णन में—

वीर मादल वाज्या, सूर साज्या।
जय ढक्क वाजी, नीसत नीकली गया ताजी।
त्रंबक त्रहत्रहायइ, नेजा लहलहायइ।

कहीं कहीं युद्ध में भाटों द्वारा वीरों को उत्साहित करने का भी वर्णन है। द्वितीय युद्धवर्णन सबसे विस्तृत है और उसमें संघर्ष का जो चित्रण है वह काल्पनिक प्रतीत नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु के ताण्डव-नृत्य को अपने सामने देखकर ही लेखक ने लेखनी उठाई हो। सेना के व्यूह बनाकर खड़े होने के बाद युद्ध के बाजे बजे और रण आरंभ हुआ। धनुष से निकलकर तीर मस्तकों से जा टकराए। खाँडे ऐसे चल रहे थे मानो वर्षा की झड़ी लगी हुई हो। वीर एक दूसरे को काटने लगे। कई वीर सिर कट कर गिर जाने पर भी लड़ते रहे। कइयों की तलवारें टूट गईं। कायर लोग भागने लगे। इस प्रकार के युद्ध को देखकर वीर युद्धोन्माद से भर गए पर कायर काँपने लगे—

भाजेवा लागा धनुर्दंड।
जाएवा लागा शिरः खंड।
पड़ेवा लागी खांडा तणी झड़।
वजेवा लागी सुत्रट तणी काटकड़।
नाचेवा लागा भड़ कबंध।
फोटिवा लागा धज विंध।
त्रुटेवा लागा खड्गफल।
नासेवा लागा कायर दल।
इसइ संग्रामि सुभट गाजइ।
कायर थर थर धूजइ।

कहीं कहीं हाथी, घोड़ों और रथों की तैयारी और सृष्टि पर पड़नेवाले उनके प्रभाव की व्यंजना ध्वन्यात्मक ढंग से की गई है—

रथ थडहडइ, रण काहल त्रडत्रडइ।
गजेंद्र गडगडइ, घोड़े पाखर पडइ।
पृथिवी चलचलइ, समुद्र झलझलइ।
शेष सलसलइ, सूर सामला हलफलइ।

यद्यपि युद्धवर्णनों से पूर्व 'सभा शृंगार' में शस्त्रवर्णन अलग से दिए हुए हैं पर इन युद्धवर्णनों से भी अनेक प्रकार के शस्त्रों का वर्णन किया गया है जो लड़ाई के समय काम में लाए जाते थे। यदि किसी युद्धवर्णन का आधार

ऐतिहासिक घटना हो तो उसका वास्तविक स्वरूप समझने में भी सहायता मिलती है; यथा ७ वें युद्धवर्णन से जो कालिकाचार्यकथा से लिया गया है। इसमें कालिकाचार्य का गर्दभल्ल के साथ युद्ध का वर्णन है। युद्ध आरंभ होने से पूर्व जीते जी मैदान न छोड़ने की सौगंध ली गई —

आमल पांणी कीधा, भाजण रा सूँस लीधा।

पर जब युद्ध में कालिकाचार्य और उसके दल की विकट मार पड़ी तो विपक्षी दल के लोगों की जो दशा हुई उसका वर्णन इस प्रकार किया गया है —

कावलि मीर, नखइ तीर।
लागी खड़ा खड़, वागी भड़ाभड़ि।
गर्दभल्लरी फौज भागी, सबल लीक लागी।
जे हूँतो सेनानी, ते तो धूरखी थयो कानी।
जे हूँता कोटवाल, तेचो भागतो ततकाल।
जे हूँतो फौजदार, तिणरै माथै पड़ी मार।
जे हूता चौरासीया, ए दाते त्रिणा लीया।
जे हूँता खवास, तीए जीव आ री मुंकी आस।

युद्धवर्णनो के पूर्व विभिन्न प्रकार के शस्त्रों, गज, अश्व, ऊँट, रथ आदि का वर्णन किया गया है। शस्त्रों के वर्णन जहाँ सूचीमात्र हैं वहाँ गज, अश्व, ऊँट आदि के वर्णन में उनकी विभिन्न जातियों व आकृति का भी वर्णन किया गया है।

नायिका के अंगो का, उसके आभरणो का और सुष्ठु स्वभाव का वर्णन शृंगार रस की निष्पत्ति में सहायक होता है। पर सभा शृंगार में सुस्त्री के अतिरिक्त कुस्त्री के जो वर्णन हैं वे रति के स्थान पर जुगुप्सा भाव उत्पन्न करते हैं। विरहिणी के दो वर्णन हैं। दोनों मे ही वियोगिनी की मानसिक दशा के साथ उसकी उद्वेगजनित क्रियाओं का वर्णन किया गया है। विरहदशा में भोजन से विरक्ति हो जाती है और सब प्रकार के शृंगार विरहिणी को अंगारवत् प्रतीत होते हैं। चंद्रमा की शीतल चाँदनी उसके लिये वृष राशि के सूर्य के समान दग्धकारी हो जाती है। वियोग की आग से उसका शरीर जलता है और सहेलियों का साथ उसे नहीं सुहाता —

किसी एक विरहिणी हुई ?
विरहावस्था, आहारि ऊपरि करइ अनास्था।
सर्व शृंगार, मानइ अंगार।
चद्र तपइ पान, थया विखवान।
विरहानल प्रज्वलइ अगु, सखी जन स्यूं विरंग।

विरहिणी अपने हार को तोड़ रही है, हाथो के वलयो को मरोड़ रही है, गहनो को तोड़ रही है, कपडे उतारकर ढेर लगा रही है, किंकिणी की ध्वनि अच्छी नहीं लगती अतः उसे अलग कर रही है। वह अपने मस्तक और वक्षस्थल पर प्रहार करती है, बालो को बिखेर रही है और धरती पर लोट कर आँसुओ से अपने कचुक को भिगो रही है —

हारु त्रोड़ती, वलय मोड़ती।
आभरण भाजती, वस्त्र गाजती।
किंकिणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती।
वक्षस्थल ताड़ती, कुचूउ फाड़ती।
केश कलाप रोलावती, पृथ्वी तली लोटती।
आँसू करी कंचुक सींचती, डोडली दृष्टि मींचती।

विरह विलाप का वर्णन करते हुए प्रेमी के विभिन्न विशेषणों का प्रयोग किया गया है —

हा कांत !
हा हृदयविश्रात !
हा प्रियतम !
हा सर्वोत्तम !
हा सौभाग्यसुंदर !
हे प्रेमपात्र !

स्त्रीस्वभाव का जो वर्णन किया गया है उसमें 'त्रियाचरित्र' को ध्यान में रखकर नारी के चरित्र की अस्थिरता का मनोवैज्ञानिक ढंग से उद्घाटन किया गया है। स्त्री के कामो की गणना तो निम्न जाति की स्त्री के कार्यों को ध्यान में रख कर की गई है पर उसके जो नाम लिखे गए हैं वे केवल आभिजात्य वर्ग और रानियों के नाम हैं। हाँ विभिन्न प्रांतो की स्त्रियों के नामो का वर्णन अवश्य स्थानगत विशेषता लिए हुए है। पुरुषवर्णन में

उसके विभिन्न अंगों के सौंदर्य का चित्रण किया गया है और अनेक गुणों की सूची दी गई है। दुष्ट व्यक्ति के स्वभाव का चित्रण कर संग न करने योग्य पुरुष का स्पष्ट परिचय दे दिया गया है।

सभा श्रृंगार के वर्णनों पर मध्ययुगीन सामंती वातावरण का स्पष्ट प्रभाव है। राजाओं के अनेक प्रकार देकर उनके विभिन्न चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। कहीं वीर, कहीं उदार, कहीं न्यायी, कहीं दानी, कहीं यशस्वी और कहीं इन सबका समवेत रूप लिए हुए राजा का वर्णन है। राजाओं का केवल उदात्त रूप ही नहीं है, उनके अहंकारी रूप, कोपातुर रूप, रूठे हुए रूप आदि भी दिखाए गए हैं। राजकुमारों, रानियों और मंत्रियों का भी एकाधिक वार वर्णन किया गया है। पौराणिक नरेशों मे राम, रावण, वासुदेव आदि का वर्णन है। राजसभा का वर्णन तो विस्तृत है ही, राज्य के अंगों और कई अन्य कर्मचारियों का भी परिचय दिया गया है।

प्रथम विभाग में देशों के नाम देने के बाद जो नगरों का वर्णन किया गया है वह कई जगह तो विशेष नगरो का है, जैसे पृष्ठ ८ पर नगरवर्णन संख्या ६ में उज्जयिनी का वर्णन है। लेकिन यह वर्णन भी किसी काल-विशेष का वास्तविक वर्णन न होकर लोकाश्रित है। इसीलिये विक्रमादित्य की विभिन्न लोककथाओं में आनेवाले विभिन्न नाम इसमें हैं। कई वर्णनो में यद्यपि नगर का नाम नहीं दिया हुआ है पर उस वर्णन से नगर की समृद्धि और सुव्यवस्था का ज्ञान होता है—

नगर ने विषै खुश्याली दीसै छै—
भरिया दीसै हाट, अनेक स्वर्णमय घाट।
मोकली पोली वाट, चालै घोड़ा तणा थाट।
लोक नै नहीं किसो उचाट।

नगरवर्णन के अंतर्गत चौरासी चौहटो का नाम दो जगह है। इनसे बाजार में मिलनेवाली विचित्र वस्तुओ और उनके विक्रेताओं के नामो का पता चलता है। निश्चय ही चौरासी चौहटे किसी बड़े नगर में ही संभव हैं। यहाँ पाई जानेवाली भीड़ इतनी अधिक है कि मनुष्य धीरे धीरे चलते हैं। भीड़ के कारण लोग एक दूसरे का बिलकुल स्पर्श करते हुए चलते हैं। भीड़ के कारण साँस लेना भी कठिन है। भीड़ इतनी अधिक है कि एक तिनका भी नीचे नहीं गिर सकता। नजर घुमाकर, पीछे मुड़कर, देखना

कठिन है। यदि थाली फेंकी जाय तो वह सब लोगों के सिरों के ऊपर ही तैरती रहे, नीचे न गिरे—

चौरासी चौहटा भीड़, मनुष्य शनै शनै फिरै।
हिइ हिइं दलै, हारइ हार त्रूटै।
पूठैं पूठ मिलै, वांहे वांह घसाइ।
सास न लिवराइ, धड़ाधड़ हुई।
तिणखलो धरती पडि न सकै, दृष्टि फेरवी न सकै।
थाली माथा ऊपर तरै, इम अनेक भीड़ हुई।

नगरवर्णन के उपरात वहाॅ के लोगो का, घरों का, प्रासाद का वर्णन किया गया है और बाद में अनेक प्रकार के वृक्षों, पक्षियो, चतुष्पदों, कीटों व पर्वतों के नाम गिनाए गए हैं। इनका वर्णन प्रायः रूढ़ है। इनके बाद सरोवर व पनघट का वर्णन करके नदियो व समुद्रो के नाम देकर इस विभाग को समाप्त किया गया है। सरोवरवर्णन में तो विशेष रमणीयता नहीं है पर पनघट का जो चित्र अंकित किया गया है वह स्वाभाविक होने के साथ साथ आकर्षक भी है। राजस्थान में जहाॅ पानी का अभाव होने के कारण दूर दूर से जल लाना पड़ता है, इस प्रकार का दृश्य किसी भी पनघट पर देखा जा सकता है। पानी भरने के लिये भीड़ हो रही है। कोई तेजी से दौड़ रही है, कोई सिर पर वेहड़ा रख रही है, कोई किसी से टकराकर गिर रही है। कभी कोई स्त्री दूसरी स्त्री की साड़ी भिंगोकर उल्टे उसी से लड़ रही है। मोटे अंगवाली तो गाली दे रही है और दुर्वल अंगवाली वैसे ही अप्रसन्न हो रही है। सास भी बाद में उन्हे बुरा भला कहती है—

बईरा नी भीड़, हुइ पीड़, त्रूटैं चीड़।
एक ऊतावली दोडे छे एक माथै वेहड़ूं चौहड़े छे।
लूगुडु ते माथैं ओढें छइं, वेहड़ो ते फीड़े छइं।
एक एक नै अडै छइं धडाधड पडै छइं।
माहो माहि लडे छइं॥
हवें नान्ही लाडी, चीखल थी पड़ें आडी।
बीजी नी भींजाइ साडी, ते माटेइ करे राडी।
सोक सोक नी करइ चाडी, डीले जाडी।
खीजें माडी, सासूइं पाछी ताडी॥

पनघट का अंतिम दृश्य तो ध्वन्यात्मक सौंदर्य लिए हुए है। विभिन्न आभूषणों के नाद को लेखक ने अनूठी व्यंजना से व्यक्त किया है—

घूघर ते घमके छै, पायल ते ठमके छै।
वेहड़ झरघट्ट, घरोंक गट्टगट्ट।
वाजै झणवट्ट, आवै दट्टवट्ट॥
एहवें पणघट्ट।

प्रकृति के प्रति आदिम युग से ही मानव का सहज आकर्षण रहा है। प्रभात और संध्या नित्य होते हुए भी प्रति दिन की नवीनता से युक्त रहते हैं पर इनका मनोहारी रूप नागरिक जीवन के व्यस्त वातावरण में प्रतीत नहीं होता। सभा शृंगार में प्रकृतिवर्णन के अंतर्गत प्रभात, संध्या, रात्रि आदि का जो वर्णन किया गया है वह मुस्लिम काल का है और उसमें प्रभात, संध्या आदि का प्राकृतिक सौंदर्य नहीं है बल्कि तत्तद् कालों में जगत् के विभिन्न प्राणियों पर पड़नेवाले प्रभाव का वर्णन है। अँधेरी रात का वर्णन नागरिकता लिए हुए है। लेखक की दृष्टि अधिकांशतः शृंगार-परक होने के कारण वह गणिका, जार, दूती आदि के चतुर्दिक् चक्कर लगाती रही है।

ऋतुवर्णन में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत आदि का वर्णन है। वंसत का एक ही वर्णन है। उसमें ऋतुराज के आगमन के समय कोयल की कूक, मंजरित आम्र, उल्लसित अशोक, विकसित चंपक कली आदि का वर्णन और लोक पर उसका प्रभाव दिखाया गया है। ग्रीष्म के २ वर्णन हैं। प्रथम के आरंभ में राजस्थान की उस भीषण गर्मी का वर्णन है जब चारों ओर लू चलती है, धूप के कारण नंगे पैर जमीन पर चलने से पैर जलने लग जाते हैं, पेड़ों के पत्ते जलकर गिर जाते हैं। जलाशय सूख जाते हैं और पनिहारनें पानी के लिये लड़ती हैं, लोग काम पर नहीं जा पाते, गला सूख रहा है, सब छाया की शरण ग्रहण कर रहे हैं—

लू वाजै छै, शीत लाजै छै।
पग दाझै छइं, तावड़ो तपै छइं।
रुख पात झड़ै छइं, रुख पवनै पड़ै छइं।
पणिहारी पाणी माटि लड़ैं छइं, वावकूआ सुकै छइं।

लोग काम चूकैं छइं, पंथीमार्ग मूकै छइं।
तावड़ो लुकैं छइं, कंठ सूकैं छइं।

पर इसके उत्तरार्द्ध में गर्मी से बचने के लिये आभिजात्य वर्ग द्वारा प्रयुक्त उपकरणों का वर्णन है। वर्षा काल के ५ वर्णनों में लगभग समानता है। लगभग सभी में काली घटा उमड़ने का, धारासार वर्षा का, मेंढकों के बोलने का, जलप्रवाह बहने का, पथिकों की यात्रा रुकने का वर्णन है। कहीं कहीं वर्षा से मकान गिरने, छप्पर टपकने, हरियाली होने, मोर नाचने, किसानों के हल चलाने आदि का वर्णन भी है।

'सभा शृंगार' में अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है। गद्यमय तुकांत होने के कारण अनुप्रास तो लगभग सर्वत्र ही मिलता है। कहीं कहीं उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार भी आए हैं। 'सभा शृंगार' का विषय और उसका उद्देश्य बौद्धिकता से संबधित होने के कारण जो अलकार आए हैं वे सहज रूप से ही आ गए हैं। राजसभा में बैठे हुए राजा की शोभा का वर्णन करते हुए निम्न प्रकार से उपमा दी गई है—

सभा माहि राजा बइठा थको सोभइ छै ते केहवो-
अक्षर माहि जिम ओंकार, मत्र माहि ह्रींकार।
गंधर्व माहि तुंबर, वृक्ष माहि सुरतरु।
सुगंध माहि जिम कपूर, ओत्सव माहि जिम तूर।
वस्त्र माहि जिम चीर,.........
वाजित्र माहि जिम त्रंभा, स्त्री माहि जिम रंभा।
शास्त्र माहि जिम गीता, सती माहि जिम सीता।
देव माहि जिम इद्र, ग्रहां माहि जिम चंद्र।
द्वीप मांहि जिम जबू द्वीप, प्रदीप माहि जिम रत्न प्रदीप।

'सभा शृंगार' किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कई वर्णन ग्रंथों का समूह है अतः उसमे भाषा का भी एक रूप नही है। कहीं संस्कृत, कहीं अपभ्रंश, कहीं व्रजभाषा, कहीं गुजराती और कहीं मारवाड़ी का रूप होने के कारण पाठक के लिये भी यह आवश्यक हो जाता है कि वह उपर्युक्त भाषाओं का ज्ञाता हो अन्यथा उसे वर्णनों को सम्यक् प्रकार से समझने में कठिनाई हो सकती है। कहीं कहीं अरबी फारसी के भी शब्द आए हैं। ऐसे शब्द विशेषतः मुस्लिम काल से प्रभावित वर्णनसूचियों मे हैं।

'सभा शृंगार' उस वर्णकसाहित्य की एक बहुमूल्य कड़ी है जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देशी भाषाओं में अपनी एक दीर्घ परंपरा बनाए हुए है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने कई उदाहरण देकर बताया है कि इस प्रकार के वर्णकसाहित्य के प्रमाण प्राचीन काल से ही उपलब्ध होने लगते हैं।[1] हिंदीसाहित्य का विद्यार्थी पृथ्वीराजरासो, पद्मावत, सूरसागर आदि ग्रंथों की वर्णनसूचियों से तो परिचित है पर अभी वर्णकसाहित्य की इस विशाल पृष्ठभूमि की ओर विद्वानों का ध्यान कम गया है। श्री नाहटा जी ने बड़े श्रम से जो वर्णन संग्रह तैयार कर हिंदीसाहित्य के विद्वानों के सामने प्रस्तुत किया है उससे इन नये क्षेत्र में कार्य करने की अन्य विद्वानों को भी प्रेरणा मिलेगी, ऐसी आशा है।

— **चंद्रदान चारण**

भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर।

---

१. हिंदुस्तानी, भाग २१ अंक १ [जनवरी–मार्च १९६०] में 'वर्णक-साहित्य' शीर्षक लेख।

प्रति-परिचय

सभाशृंगार नं० १

संकेत स्पष्टीकरण

(स० १)=सभा शृंगार नं० १—इसकी दो पूर्ण और दो अपूर्ण, कुल चार प्रतियाँ प्राप्त हुईं, जिनका परिचय—

(१) विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर, आगरा की प्रति। शुद्ध। पत्र २ से १६, पंक्ति १५, अक्षर ४८ से ५०, ले० १७वीं का पूर्वार्द्ध।
अंत—इति सभा शृंगार वचन चातुरी ग्रंथ समाप्तः।

(२) पाटोदी दि० मंदिर, जयपुर—
पत्र २०, पक्ति १७ अक्षर ५२
लेखन सं० १६७१ वर्षे त्राह मासे शुक्ल पक्षे ३ दीतवार। लेखक साह दासू सुतेन। मा. सारंगपुर वास्तव्य।

(३) केशरियाजी मदिरस्थ खरतरगच्छ भंडार, जोधपुर। डा. १५, पोथी १६६, पत्र १८, पं० १५, अक्षर ४८, वर्णन १५८ वा चालू, फिर अपूर्ण। शुद्ध। लेखन काल १७ वीं शती।
प्रारम्भ के पत्र में पीछे से लिखा गया है 'व्याख्यान पद्धति वचनिका।'

(४) (अ० पु०) मुनि पुण्यविजयजी सग्रह—
पत्र ६ से १५, पंक्ति १७ अक्षर ६५ (आदि के ५ पत्र नहीं) लेखन काल १७ वीं शती।
अंत में—"स्त्री गुणाः ४२" के बाद ग्रंथ का नाम व प्रशस्ति नहीं है। पुरुष की ७२ कला से पूर्व "इत्युपदेश लेशः समाप्तः मिति भद्रं शुभं भवतु ॥छ॥" लिखा है अतः वही समाप्ति संभव है।
मुनिजी ने प्रति के कवर पर 'पदार्थ वर्णनां' नाम लिखा है।

सभा शृंगार नं० २

(सं० २)=इसकी एक ही प्रति मुनि पुण्यविजयजी से प्राप्त हुई। इसके वर्णन अन्यों से भिन्न व मौलिक है। मंगलाचरण श्लोक में इसका नाम "वर्णन सार" दिया है।

प्रति=पाटन भंडार। डा० २६४ नं० १२६४० पत्र ६, (अंत का एक पृष्ठ रिक्त, पत्र ५२ लिखे), पंक्ति २१, अक्षर ५३।
अंत—'इति सभा शृंगार ग्रंथ लवलेशोयं। लिपिकृतः संवत् १६७१ वर्षे आश्विन व० ८ दिने मंगल। छः॥

सभाशृंगार नं० ३

(सं० ३)=इसकी दो पूर्ण और तीन त्रुटित (अंश रूप) प्रतियाँ मिलीं।

१—मोतीचंद खजानची संग्रह। पत्र १२ की अपूर्ण प्रति। अन्य एक गुटका सं० १७६२ के लिखित से नकल करवाई थी उसे बहुत वर्ष होने से स्मरण नहीं, वह कहाँ का था।

ले० प्र० इति सभा शृंगार सम्पूर्ण। संवत् १७६२ वर्षे फाल्गुन सुदी सप्तम्या तिथौ भृगुवारे, गणि महिमाविजयेन लिपिकृता श्रीरस्तु। श्लोक ग्रन्थाग्रन्थ ७५६। ए ग्रन्थ संख्या जायते।

२—भांडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, की प्रति नं० ६७१ सन् १८६६ से १६१५ का संग्रह। इसमें नं० १ प्रति के 'अंधारी रात' वर्णन तक का प्रसंग आया है। नं० १ में इसके बाद कुछ वर्णन और है।

अंत इस प्रकार है—इति सभाशृंगार संपूर्णम्। सं० १७८१ वर्षे जेठ सुदी ७ चंद्रवासरे। लिखितम् बर्हानपुर नगरे। शुभमवतु॥

सभाशृंगार नं० ४

(सं० ४)=उपाध्याय विनयसागरजी संग्रह कोटा की प्रति, पत्र १०, पंक्ति १७, अक्षर ४३। इसके प्रारंभिक वर्णन तो सभाशृंगार नं० ३ के ही हैं। पीछे के स्वतंत्र हैं और वे अधिकतर जैन सबंधित ही हैं। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार हैः—इति सभाशृंगारहार संपूर्णम्। लिखितं गणि उत्तमकुशलेन श्री आमेठ नगरे श्री पार्श्व प्रसादात्। प्रति १६वीं शताब्दि की लिखी हुई है। भारतीय विद्याभवन, बबई से मुनि जिनविजयजी सग्रह को प्रति पीछे से मिली, जिसमें प्रारंभिक अंश ही था और नई लिखी हुई थी इसलिये उसका उपयोग नहीं किया गया।

सभाशृंगार नं० ५

(सं० ५)=चित्तौड़ के यति बालचंदजी के संग्रह से १ पत्र १८ वीं शती का सभाशृंगार के नाम का मिला था, जिसमें कुछ वर्णन थे।

(सू०)=खरतर गच्छीय कविवर सूरचंद रचित 'पदैकविंशति' नामक ग्रंथ के ६८ पत्रों की अपूर्ण प्रति मुनि जिनविजयजी से प्राप्त हुई थी। मूल ग्रंथ संस्कृत में है, पर बीच-बीच में प्रसगानुसार राजस्थानी भाषा में वर्णन दिये गये हैं। प्रति १७ वीं शती के उत्तरार्द्ध की, अर्थात् रचना के समकालीन लिखित है। ग्रथ अपूर्ण अवस्था मे मिला है, अतः पूर्ण प्रति के मिलने पर और भी बहुत से सुंदर वर्णन प्राप्त होगे।

कु०=१८ वीं शताब्दि के कवि कुशलधीर रचित सभा कुतूहल की भी अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। इसके बहुत से वर्णन तो पदैकविंशति के ही हैं। उसमें कुशलधीर ने बीच-बीच व अंत में कुछ पंक्तियाँ बढा दी हैं। उन पंक्तियो में कहीं 'धीर' कही 'कुशलधीर' नाम भी निर्देश किया है। पत्र ६ पंक्ति १७ अक्षर ७७, प्राप्त वर्णनो की संख्या ३६ है। पत्रो के परस्पर चिपक जाने से कहीं-कहीं अक्षर नष्ट हो गये हैं। यह ग्रंथ कितना बड़ा था, पूर्ण प्रति मिलने पर ही विदित हो सकता है।

कौ०='कोतुहलम्' इसकी प्रतिलिपि बहुत वर्षों पूर्व श्री भँवरलाल द्वारा की हुई हमारे संग्रह में थी। इसमें २५ वर्णन हैं, जो स्वतंत्र, मौलिक और सुंदर हैं। अंत में इति 'कोतुहलम्' लिखा होने से इसको यह संज्ञा दी हुई है। यथास्मरण प्रति १८ वीं शताब्दि की लिखी हुई थी।

मु०='मुत्कलानुप्रास' जैसलमेर के यति लक्ष्मीचंदजी के संग्रह में १६ वीं शताब्दि के लिखे हुए ७ पत्र प्राप्त हुए जिनमे १०८ वर्णन हैं। इस प्रति के बोर्डर में 'मुत्कलानुप्रास' नाम लिखा हुआ था। वैसे है यह अपूर्ण ही। इसके कई वर्णन संस्कृत मे हैं और कई राजस्थानी में। उपलब्ध प्रतियो मे यह प्राचीनतम है। इसकी पूरी प्रति प्राप्त होना आवश्यक है। पत्र ८ पंक्ति १८ अक्षर ६२।

पु० अ०=आगम प्रभाकर मुनि पुण्यविजयजी द्वारा यह प्रति प्राप्त हुई। यह १६ वीं शताब्दि की लिखित है। इसके ६ पत्र ही मिले, जिनमे भी बीच का १ पत्र नहीं था। ग्रंथ अपूर्ण होने से 'पु० अ०' संज्ञा दी गई।

का०=कालिकाचार्य की गद्य भाषा कथा से केवल वर्षा और युद्ध के दो ही वर्णन लिये गये हैं।

पु०=इस प्रति का १ पत्र मुनि पुण्यविजयजी से प्राप्त हुआ था।

इन प्रतियो में से सभा शृंगार नं० २ और सभा कुतूहल के प्रारंभ में ही मंगलाचरण श्लोक मिलते हैं। अन्य प्रतियों में मंगलाचरण का अभाव है। इन दोनो प्रतियों के मंगलाचरण नीचे दिये जा रहे हैं—

सभा-शृंगार नं० २

मंगलाचरण

॥६०॥ ऐं नमः ॥ पंडित श्री दयाकुशलगणि गुरुभ्यो नमो नमः ।

सर्व-जीव-निकायस्य, सर्वथापि हितप्रदाः ।
सुरासुर-नरैः स्तुत्या, जैनी जयति भारती ॥१॥
कोविदा देशिनं किंचित्, दृष्टं शास्त्रेषु किंचन ।
किंचिचात्ममति-ज्ञात, वर्णनासार[1] मुच्यते ॥१॥

सभा- कुतूहल (कुशलधीर)

प्रणम्य पार्श्वं प्रकट-प्रभावं, आनंद-कदोदय-वारिवाहं ।
सुरासुराधीश-नताङ्घ्रियुग्ममनन्तकीर्ति महिमानिधानं ॥१॥
नत्वा गुरून् प्रकट-पुण्यरसातिरेकान् लोक प्रमोदकरणं वितनोमि शास्त्रं ।
चंचच्चमत्कृति-विधायकमातलोक मान्यं मनोरथवरद्रुमबीजकल्पम् ॥२॥
सम्यक् सभाकतूहलमिदमविकरसं तनोमि गुरु शक्त्या ।
दृष्ट्वा शास्त्र-समूहं सानुप्रासं यथाबुद्धि ॥३॥
नगर-नरेश्वर-राज्ञी-मव्यादिपदार्थ-वर्णन-विशिष्टम् ॥
वार्त्ता प्रबन्ध सयुतमेतन्मोदयतु जन-चित्त ॥२॥

नोट—सभा शृगार न० १ से ५ की भिन्न-भिन्न प्रतियों के सूचक संकेत इस प्रकार हैं—

जो०=स० १ जोधपुर प्रति
पु०=सं० २ पुण्यविजयजी प्रति
पू०=सं० ३ भा० रि० इं० पूना की प्रति
वि०=स० ४ विनयसागरजी प्रति
चि०=सं० ५ चितौड़ प्रति

जै०='मुत्कलानुप्रास' की प्रति जैसलमेर की होने से कहीं-कहीं 'मु' के स्थान 'जै' सकेत भी लिखा गया है ।

१—वर्णनासार की एक अन्य प्रति भां० रिसर्च इंस्टी० पूना से और प्राप्त हुई थी पर देरी से मिलने के कारण उसका उपयोग नहीं किया जा सका ।

अनुक्रमणिका

विभाग १—देश, नगर, वन, पशु पक्षी, जलाशय

विभाग २—राज, राज परिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

विभाग ३—स्त्री पुरुष वर्णन

विभाग ४—प्रकृति वर्णन, प्रभात, संध्या, ऋतु आदि

विभाग ५—कलाएँ और विद्याएँ

विभाग ६—जातियाँ, धंधे और व्यक्ति नाम

विभाग ७—देव, वेताल, शाकिनी, सिद्ध, व्यक्ति तथा व्यक्तिकथादि वर्णन

विभाग ८—जैनधर्म संबंधी वर्णन

विभाग ९—सामान्य नीति वर्णन

विभाग १०—भोजनादि वर्णन

(मंगल, वर्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्रालंकारादि)

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग १

देश, नगर, वन, पशु-पक्षी, जलाशय

देश-नाम १

१	अंग	२१	र्जर	४१	जालधर
२	वंग	२२	बर्बर	४२	लोहित
३	कलिंग	२३	शर्बर	४३	किरात
४	तिलंग	२४	बंगाल	४४	तामलिप्त
५	भंग	२५	नेपाल	४५	पारिजात
६	गौड	२६	पंचाल	४६	वरूट
७	चौड	२७	कुणाल	४७	भट्ट
८	कर्णाट	२८	जहाल	४८	शकट
९	लाट	२९	जागल	४९	नलदतट
१०	पाट	३०	डाहल	५०	लोहतट
११	राष्ट्र	३१	कौशल	५१	समुद्रतट
१२	महाराष्ट्र	३२	सोसल	५२	मेदुपाट
१३	कीर	३३	सिंहल	५३	वैराट
१४	काश्मीर	३४	हिमाचल	५४	भोट
१५	सौवीर	३५	मरुस्थल	५५	महाभोट
१६	आभीर	३६	कुशस्थल	५६	नगरकोट
१७	चीन	३७	पुंसस्थल	५७	वागड
१८	खुरसाण	३८	कुरू	५८	कामरू पीठ
१९	दशाण	३९	जंगल	५९	छोकाण
२०	गूर्जर	४०	ढिल (ल्ली) मडल	६०	केकाण

२ देशनाम (२)

अग, अनग, किलिग, तिलग, । बंग, भंग, बंगाल, वच्छ, वत्स, विदेह, वैराट, कर्णाट, लाट, धाट, भोट, महाभोट, कोणाल, कामरु, काश्मीर, कुकण, कच्छ, केकी, गोड, तोड, वहस, बवस, हवस, मालव, मागध, मरुस्थल, मेवात, मेवाड, मरहट्ट, राष्ट्र, सौराष्ट्र, पंचाल, पारकर, सिंध, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, इत्यादिक देश नाम । (स ३)

३ देश—नाम (३)

गौड, द्रविड, मालवउ, नेपाल, जंगल, अग, वग, तिलंग, हर्मुज, गुर्जर, राष्ट्र, महाराष्ट्र, कुरु, काश्मीर, राट, लाट, धाट, कर्णाट, मेदपाट, भोट्ट, महाभोट्ट, विदेह, ऊच, मूलथाण, कुंकुण, चीण, महाचीण, खुरसाण, सवालख, सिंधु, ढोरसमुद्र, महरटा, नमियाड, कनूज, महाकनूज, अकज, अवज, कुरक, कोरटक, कौशिक, पाणीपथ, पाडवा, मरुस्थल । (स० १)

४ देश—नाम (४)

अग, बग, कलिंग, मगध, माधर ।
मालव, विदर्भ, वाल्हीक । हूण, रूण ।
उडीयाण, आनर्त, त्रिगर्त्त ।
सोरठ, मरहठ । कुकण, कस्मीर ।
कीर, गूर्जर, जालधर । गोड, बूड, कर्णाट
लोट, भोट । कान्यकुब्ज, कान्नोज
बर्बर, बंगाल नेपाल, भाहल, सिंहल
चीण, महाचीण इत्यादि देश ॥१०॥ (मु०)

५ पर-द्वीप-नाम (५)

हरमज, वक्खार[१], गोहा, सवाकीन, कौची, मक्का, मदीना, मूसब, पुरतकाल, पेगू[२], दीव, घोघा, डाहल, मलबार, चीउल, पथरा, मुलतान, जाबू, आबू, ढाको, रोम, साम, आरब बलख, बुखार, चीण, महाचीण, फिरग, हबस, इत्यादिक परद्वीपनाम (स०३)

१—बरका (ववरण) २—पींगु

६—देशों की उपज (१)

७२ (लक्ष) गाजण[1], ३४ (लक्ष) कनूज, १८ लक्ष वाणू मालवउ
९ लक्ष गौड, ९ कारू, ९ डाहालू,
७० सहस्त्र गुजरात, ९ सहस सोरठ[2], ४० जेजाहुत,
२४ सहस गगापरु, २१ लाड देस, १४ सहस व्यालकुंकुण[3] नमियाड[4]
स० १

७—नगरादि-पर्याय

नगर, निगाम, ग्राम, आगर, पुर पाटण, खेट कब्बड, मडंब, दोपण, द्रोण-मुख, सवाध, सनिवेश, आश्रम, उद्यान, द्वीप, बंदर इत्यादि पृथिवी।

८—नगर-नाम

द्वारावती, देवपुर, दसोर[5], देवकौपत्तन[6], सौरीपुर; सुदर्शनपुर, सामेरी, कावेरी, कुन्दनपुर, कोसंबी[7], कोसल, काशी, कोगाल[8], कोइलपुर, कनकपुर, काकदी; विनीता, विशाला, वाराणसी, दलिल, अहिछत्ता, अयोध्या, अवंती, एलचपुर, पावा, पाटलीपुर, चंदेरी, चंपावती, गंधार, गजपुर, गंधिलावती, भद्दिलपुर, भरुच, तिलकपुर, त्रंबावती, मथुरा, हथिणापुर इत्यादिक मोटा नगर। स० ३

९—नगर-नाम (२)

आगरो	उजैण	उदैपुर	ईडर
आंबेर	अजमेर	अहमदाबाद	अवरंगाबाद
दिल्ली	दोलताबाद	दरियाबाद	दीव
फतियाबाद	दसोर	गोधा	गोलकुंडु
लाहोर	लखमीपुर	बर्हानपुर	बहादुर पुर
बिजापुर	बूंदी	राजमहल	राजनगर
भागनगर	खंभाति	सूरति	पाटण
पटणू	जेसलमेर	विकानेर	सांगानेर
योधपुर	जालोर	नागोर	मेड़तू
मलकापुर	मुरादाबाद	साहज्याबाद	फत्तेपुर

इत्यादि नगर छै।

---

१ ७२ लक्षण गाजणउ, २ ५५ सहस सोरठ, ३. १४ सहस चाल कुकुण ४ प्रमुख देशा। ५ वसौर, ६ पाटण ७. कुलाल, कोपालाणा, ८. वलभी।

१०—नगर-वर्णन (१)

देवकुल विभूषित, सप्तभूमिक धवलहर अलंकृत सविस्तर तर हट्टश्रेणि विराजित, समस्त क्रियाणक विश्रामभूमि, कूप, वापि सरोवर सनाथ। प्राकारवेष्टित, खातिका दुर्ग। इसउ नगर नगरी।

११—नगर वर्णन

महा मनोहर

हिमगिरि शिखरानुकारिए प्रसाद करिं सुन्दरु।
प्राधान प्राकार करि परिकलतु,
वापी कूप प्रपा तटाक आराम करि अति शोभितु।
धनदयक्षानुकारि, धनवंते व्यवहारिए करि शोभायमानु। झात्कार
एव विधु द्वादश तूर्य निर्घोषि निरुपमु
चउहि दिशि द्वारि, प्रतोली द्वार। अनिवार शत्राकरि।
तेही करि सविभ्रमु स्वर्ग्य समानु, अतिहि प्रधानु
रत्नपुर इसइ नामि नगर ॥ २ ॥

(मु०)

१२—नगर-वर्णन (३)

यत्र खल तैलिका परोषु, गुप्तिः शुक सारिका पुजरेषु।
उपसर्ग निपातो व्याकरणेषु, कटकापद्मनालेषु।
मारिः सारिपु, बन्धः पुष्पेषु।
चिन्ता काव्येषु, व्यसन दानेषु।
आकाङ्क्षा कीर्त्तिषु ···· ·, तुच्छता बधूना मध्य भागेषु,।
चपलता लीलावतीना नयनेषु, दण्डः छत्रेषु,।
वक्रता कामिनीना भ्रूयुगेषु। निम्नता वनता नाभीषु, मौरयर्य वाद चर्चाषु।
पुरन्दर, पुरी सहोदरु।
क्वचित्कथा कथ्यमान, चिन्तन कथानकु।
क्वचिद्वाद वृन्दारकारब्ध वाद, क्वचिन्नाटक प्रस्तावनाकर्ण्यमान मर्द्दल निनद।
क्वचिद्विविध बधू विधीयमान धवल मंगलाचारु, क्वचिद्वणिक जनोद्यम द्यमान क्रयाणकः।
क्वचिद्द्विजय मगलोद् घोष्यमान वेदोद्गारः एव विध नगर (मु०)

१३—नगर-वर्णन (४)

पत्तन, विशाल, पथिकशाल, निरपवाद प्रसाद, नाना प्रकार सत्रूकार। तिरस्कृत त्रिविष्टप, प्रपा मंडप, अगाधोदर सोदर सरोवर, पृथ्वीमंडल मंडन। लक्ष्मी सकेत निकेतन, रमणी जन निधान। विद्वज्जन कृतावस्थान शत्रु संघातानाकलनीय। ईति अनीति अखंडनीय। (स० १)

१४—नगर-वर्णन (५)

नगर ने विषै खुश्याली दीसैछै—
भरिया दीसैहाट, अनेक स्वर्णमय थाट।
मोकली[1] पोली वाट, चालै घोड़ा तणा थाट।
लोक नै नही किसो उचाट[2]।
जिहा पुण्य विशाल, तिसी ही पोसाल, जिहा छात्र पढै चौसाल।
पाणी पिंइ सुभाबि, तिसी वावि।
देखता आणंद हुवा, तिसा कुवा
मोटैमंड, पद्मवन खंड।
जिसा रंग कीजै खाडि, तिसी माहि वाडि
जिहां शीतल फुरकै पवन, तिसो पाछलि वनि।
इम अनेक प्रकार सोभैछै।—(स० ३)

१५—नगर-वर्णन (६)

उज्जयिनी-वर्णन
जिहा सिप्रा नदी विराजमान, महाकाल प्रासाद शोभमान।
हरसिद्धिदेवी निवास, चउसिद्धि योगिनी सविलास[3]।
आगीया वेताल स्थान, कउडीया जूयारी अहिठाण।
खापरा चोर प्रबल वात, गइदमा मसाण विख्यात।
अनेक देव देवी होइ यात्र, प्रबल सिद्ध पुरुष वसइ पात्र।
सिद्ध वड भूषित परिसर, युगादि नगर।
महा मनोहर हिमगिरि शिखरानुकारीए प्रसादे करी सुंदर।
(जिहां)[4] विक्रमादित्य नरेश्वर, (जिहा) साक्षात् पुरंदर।

---

१. नोकलि घेली वाट २ लोक नै किसी उचाट ३ विलास, ४ जिहा

प्रधान प्राकारि करी परिकलित, जिहा वसइ लोक सम्मिलित।
वापी कूप तटाक आरामि करी अति शोभित, पर दलि करि अक्षोभित।
धनद यक्षानुकारिए व्यवहारिये करी शोभायमान।
स्वस्व क्रिया सावधान, जन वसइ प्रधान[1]।
कीजइ षडदर्शन विचार, परमार्थि आत्मज्ञान अधिकार।
चिहुँ दिसि च्यारि प्रतोलीद्वार, अनिवार, सत्रागार।
अति प्रधान, स्वर्ग समान।
ठामि ठामि फूल पगर, इस्यउ[2] उज्जयनी नाम नगर। सू०

कुशलधीर संकलित 'सभा कुतुहल' से परिवर्द्धित पाठ—

द्वादश तूर्य निर्घोष पडित वइ सुजाण वइ कोष।
धनधान्य समृद्ध, त्रिभुवन मइ प्रसिद्ध।
आराम जलाश्रयादि रम्य, परचक्र अगम्य।
अनेक देवकुल सकुल, नाचइ रंगइ प्रमादाकुल।
मेदनी शृंगार, वसइ वर्ण अढार।
अति ऊचा आवास, पूजइ सहु आस।
वसइ जिहा पडित, हट्ट श्रेणि मडित।
जिहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विशाल वाडी।
जिहा पढइ छात्र चउसाल, तिहा इसी अनेक लेसाल।
अति रूडी धर्मसाल, नगर नइ विचाल।
वखाणइ आवइ गुरु समीपइ वाल गोपाल।
मधुर वाणीयइ पद गुरु धरम उपदिसे विशाल।
श्रावक पडिकमइं उभइ काल, अतीचार टाल।
जिहा अध्यात्मी जोगी दृढ, तिसा महाकाय मढ।
रग विमासीउ लीये वाद, तिसा पुष्कल प्रासाद।
जिहा माहि गुरुआ भवन, वाहिर गुरुआ उपवन।
माहि मनुष्य दख्य, वाहर पंखीयातणा लख्य।
माहि वसइ भोगी, वाहिर वसइ योगी।
माहि चउरासीहट्ट श्रेणि, बाहिर अरहट्ट श्रेणि।
ठाम ठाम फूल फगर, इसउ धीर कहइ उज्जेणी नगर॥

---

१ मनुष्यनउ, कुण जानइ गान (इतना पाठ अधिक है) २ इसउ धीर कहइ उज्जेणी नगर।

१६—नगर वर्णन (७)

समस्ति स्वस्तिक पुरं नाम पुर । यत् कीदृशं—
पृथ्वी तिलकायमान । सर्व सौंदर्य निधान ।
लक्ष्मी जन्मावास । सरस्वती निवास ।
धवल देव कुल मंडित । पर चक्र अखंडित ।
अतुल धवल गृह विभूषित । कु कवि अदूषित ।
विकट हट्ट माला मालित । सदा सुठक्कर पालित ।
उतुग प्रथुल प्राकार परिवेष्टित ।
अगाध परिखा वलय । सर्वाश्चर्य निलय ।
वापी कूप मंडित परिसर । चिहुगमे दृश्यमान सरोवर ।
उद्यान वाटिका अभिराम । मनोज्ञ दृश्यमान विविधाराम ।
जनित दुर्जन क्षोभ । सज्जन जनित शोभ ।
पुरुष रत्नोत्पत्ति रत्नाचल । कुलवधू कल्पलता कनकाचल ।
जीणइ नगरि देवगृह मेरु शिखरोपमान । धवलहर सुरविमान समान ।
हाथीआ ऐरावण अनुकरइ । अश्व उच्चैश्रव अनुकरइ ।
वृषभ शिव वाहनानुकारि । रथ सूर्यानुकारि ।

८४ चोहटा—जीणइ नगरि गंधिका पण कुत्रिका पण, सौवर्णहट्ट, दोसीहट्ट ।
सूत्रहट्ट । कर्पासहट्ट । धान्य हट्ट । घृतहट्ट । तैल हट्ट ।
मणिकार हट्ट । काटविक हट्ट । लोहकार हट्ट ।
प्रमुख चउरासी चउहट्टा । अतिहि मोटा ।

पीठ—तथा वलद पीठ । शास्त्र पीठ । काठ पीठ प्रमुख अनेक पीठ ।

शाला—तंतु वाय शाला रजक शाला । चर्मकार शाला । पिंजारकशाला ।
प्रमुख अनेक शाला ।

निवासी—तथा महा सार्थवाह । इभ्य श्रेष्टि । व्यवहारिक । दौपिक । नैस्तिक ।
प्रमुख अस्तोक । कविअणलोक ।
तथा सुवर्णकार । कास्यकार । दंतकार । लोहकार । शिल्पकार ।
रथकार । सूत्रधार । सूपकार । चित्रकार । कुम्भकार । मालाकार
रूप प्रमुख वसइं ।
तात्रहड़ा । सीसाहड़ा प्रमुख दीसइं ।
ठामि ठामि सत्राकार । अनेक दीसइं देणहार ।

वर्ण—यत्र वर्णव्यवस्था। नागर ज्ञातीय। श्रीमाल ज्ञातीय। डीडवाल। सडेर वाल। जालंधरीय। सत्यपुरीय। प्रमुख ब्राह्मण।

सोम वशीय। सूर्यवंशीय। हरिवशीय। उग्रकुली। भोग कुली। सोलंकीय गुहिल्ल। उच्च। परमार। प्रतिहार। चौलुक्य। सकल प्रमुख क्षत्रिय। शिल्पकार। स्वर्णकार।···प्रमुख वैश्य वर्ण। प्रमुख, सौद्र। तथा काव्यकार। पदानुसारि लाक्षणिक। प्रामाणिक प्रमुख पडित मडित। तथा अंजन सिद्ध। गुटिका सिद्ध, योग सिद्ध, चूर्ण सिद्ध। लेप सिद्ध। पादुका सिद्ध। मंत्र सिद्ध। विद्या सिद्ध। वचन सिद्ध। प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ। जेणि दीठइं उत्तम ना मन विकसइ।

वृक्ष लतादि—तथा। त्रिक। चतुष्क। चत्वर। रमणीय। हिंताल ताल। तमाल। मालूर। खर्ज्जूर। अर्जुन चंदन। चपक। वकुल। सहकार। काचनार। निंब। कदब। जबु। जबीरक। कणवीर। वानीर। कपित्थ। अश्वत्थ/ करुण। वरुण। धव। खदिर। पलाश। अकुल्ल। सरल। सल्लकी। नाग। पुन्नाग। नागर। वल्लि। मल्लिक। यूथिका। मालती। माधवी लता। मडपाभि-राम। परपरा विराजमान परिशर। गंगाफेनदी फेनपट्टलसट्ट प्राकार पाडुर।

यत्र नगरे। जडता। सरस्सु। नमनुजमनस्सु। खलस्तैलिका परोषु। गुप्तिः शुक सारिका पजरेपु। उपसर्ग निपाता व्याकरणेषु। कटकाः पद्म नालेषु। बंधः काव्येषु। दडश्छत्रेषु। कुटिलता कामिनामलकेषु। निसता वनिता नाभीषु। चपलता लीलावती लोचनेपु। चिंता शास्त्रेषु। व्यसन दानेपु। मौखर्य वाद-चर्यापु। धन कनक समृद्ध, पृथ्वी तल प्रसिद्ध। अत्यत रमणीय, सर्वजन स्पृहणीय।

जिहा वाडा, वाडी, कूआ, परव। तलाव। आराम। गढ। देहरा। विहार। सत्रागार। कोष्ठागार। भाडागार। धउल हर। पिंडहर। जोगहर। मोगहर। पीटणी हर। पडवा। पटसाल। अघहटा। फडहटा। माडवी। दड कलस। आमल-सारा। तोरण। वदनमाला झलकइं। पंचवर्ण पताका फरकइ।

तिहा नगर मध्ये किसा लोक वसइं। भणइराय राणा। मडलीक। महाधर। मउड़धर। सामत। सेलुत। वर वीर। राउत। पायक। डिडिमायन।

भया मत । पटायत । फलह कार । छुरीकार । नलिकार । कुतकार । खागडीआ । सावलिआ । जेठी । यत्रवाह । जालंधर । प्रभृति राजवर्ग ।

अनइ व्यवसाईआ किसा—सोनी । गाधी । दोसी । नेस्ती साह्व । साह । सेठि । सोणावई । पडसूत्रीआ । कसारिआ । बीजउरीआ । खजूरिआ । कणसरा । मणसरा । मयारा । मणीयार । सुतार । सूत्रधार । तूनारा । वधारा । चीताहारा । लुहार । नाचकर । भाज कर । कवी अर । करीअ वेश्यादि वत । योगि । भोगि । विरागी । नट । विट । खुंट । खरट । लाट । मीठा । जूगव सिगार । वातहडा । रसिक । रंगाचार्य । एइसे । मागणहार मडित । पाचमइ व्यवसाईआ । व्यवसाईआ माहिं वर्त्तइ । एवं विधनगर प्रवर्त्तइ ॥ छ ॥ (स० २)

१७—नगर-वर्णन (८)

गढ, मढ, पोल, पगार, मदिर, मालीया, सेरी, चोहटा, चोक, चचर, चोतरा, गली, गोचग, घर बार, बारणा, कागुरा, कोरणी, बइठक, बारी, खाल, खूणा, खूंट, पुठ, पछिल, गोख, गवाक्ष, बोकडसाला, दानसाला, देहरा, उपासरा एहवु नगर सोभे छे । (स० ३)

१८—नगर-वर्णन (९)

(विषम प्रवेश)

नगर पाखती कंटक वन, एकुमार्ग अगाधि खाई, अभगु प्राकारु । अनै अनादिकालीन आबद्ध मूल, परचक्र अगम्य, थिर सन्निवेशु, विषम प्रवेशु ॥
(पु० अ०)

१९—नगर-वर्णन (१०)

चौरासी चौहटा, बहोत्तरि पावटा, अनेक शत··· ··बावि नही गावि । कमल खडे ··करि कोटडी कमाड़ि, अति मनोहर, सप्तभूमिका धवलहर । जिसी नगर लक्ष्मी तली प्रलब वेणि, तिसी हट्ट श्रेणि । अति सुंदर प्रधान राज मंदिर । (स० ५)

२०—नगर-वर्णन (११)

नगरि—जहि ८४ चौहटा ८४ याडा, ८४ देवकुल, ८४ शाला, ८४ बावि, ८४ कूआ, ८४ सरोवर, ८४ आराम, किंबहुना ८४ स्थानक । (पु० अ०)

२१—नगर-वर्णन (१२)

[चौहटा— नाम]

१ सोनीहटी	२ नाणावटहटी	३ जवहरी हटी	४ सुगधियाहटी।
५ फोफलिया	६ सूत्रियाहटी	७ पटसूत्रियाहटी,	८ घीया।
९ तेलहरा	१० दंताग	११ वलियार	१२ मणिहार हटी।
१३ टोसी	१४ नेस्ती	१५ गाधी	१६ कपासी
१७ फडिया	१८ फूलहटी	१९ एरडिया	२० रसणिया
२१ प्रवालिया	२२ त्राम्रहड़ा	२३ साखहडा	२४ पीतलगरा
२५ पन्नागरा	२६ सोनार	२७ सीसाहडा	२८ मोती प्रोया
२९ सालवी	३० मीणाहरा	३१ चूनाहरा	३२ कूटारा
३३ गुलियारा	३४ परीयटा	३५ घाची	३६ मोची
३७ सूई	३८ लोहटिया	३९ लोढारा	४० चीतारा
४१ लखारा	४२ कागलिया	४३ मद्यपहटी,	४४ वेश्याहटी
४५ पणगोला	४६ गाछा	४७ भाडभूजा	४८ भाड्साइत
४९ मलिननापित	५० चोखा नापित	५१ पाटीवणा	५२ त्रागडिया
५३ वहित्रा	५४ काठपीठिया	५५ चोखावटिया	५६ पत्रसागिया
५७ सूखडिया	५८ साथरिया	५९ दउढिया	६० मूजकूटा
६१ सरगरा	६२ भरथारा	६३ पीतलहडा	६४ कसारा
६५ खासरिया	६६ पाथरिया	६७ तेरमा	६८ वेगड़िया
६९ वसाह	७० साथूत्रा	७१ पेरुत्रा	७२ त्राटिया
७३ दालिया	७४ मंजीठिया	७५ साकरिया	७६ सावूगर
७७ लोहार	७८ सुथार (सूत्रधार)	७९ वणकर	८० तत्रोली
८१ कदोई	८२ बुद्धिहटी	८३ कुत्रीकॅ पणहटी	८४ तूनारा

(संग्रह फलसे)

२२—नगर-वर्णन

—:चौरासी चौहट्टे:—

१ अकीक हट्ट	२२ चितेरा	४३ पस्ताक	६४ लखेर
२ अफीण	२३ चोखावटी	४४ पाननी	६५ लुहार
३ अमल	२४ छीपा	४५ प्रवाल	६६ लूण
४ इधण	२५ जवाहर	४६ फड	६७ लोहनी

५ कडव
६ कपास
७ कसेग
८ कंदोई
९ कागल
१० काछी
११ कापड
१२ कीलिका
१३ कुंभकार
१४ कूडिया
१५ गलियार
१६ गंधर्व
१७ गंधी
१८ गाच्छा
१९ गुलनी
२० घात्रीनो
२१ घीवटी

२६ जीर्णशाला
२७ जोड़ा
२८ तलाविट
२९ तूनारा
३० त्रापडिया
३१ दात
३२ दूध
३३ दोरावली
३४ दोसी
३५ नाण
३६ नावित
३७ नालिकेर
३८ निस्ती
३९ नीराग
४० पट्टुआ
४१ पट्टकुल
४२ परीषद

४७ फूल
४८ फोफलीय
४९ बंकर
५० बलियार
५१ बाजित्र
५२ बिधरा
५३ वेश्य
५४ बंधक
५५ भड़भूंजा
५६ भरतार
५७ भागुड़ा
५८ भैंसा
५९ मणियार
६० मंजी
६१ माडविया
६२ मोची
६३ रंगरेज

६८ शल
६९ षामर
७० षीजर
७१ षेडागर
७२ सकह
७३ सतूआरा
७४ सरहिआ
७५ सराणिया
७६ साकर
७७ सायरिया
७८ सिलाव
७९ सुई
८० सुनार
८१ सुवर्ण
८२ सुषंडी (सुखडी)
८३ सूत्र
८४ सूत्रहार

(नाहर जी को प्राप्त प्राचीन पत्र से)

२३ नगर वर्णन (१४)

भीड़

मुंड मुडि फूटइ[1], खुरु खुरि त्रुटइ।
हियउ हियइं दलियइ, पूठि पूठइ मलियइ।
वाहु वाह घासइ, ऊसासु निसासु नासइ।
तिलु पड़उ खिरइ[2] नहीं, पर दृष्टि फिरइ नहीं। इसी बहुस॥

(पु० अ०)

२४ नगर-वर्णन (१५)

चौरासी चौहटा भीड़, मनुष्य शनै शनै फिरै।
हिइं हिइं दलै, हारइ हारत्रूटै

१—समहं मउड मउडिइं फूटइ, हारिहार तूटइ २—खिसइ (स० १)

पूठैं पूठ मिलै, आहैं आह घसाइ ।
सास न लिवराइ, धडाधड़ हुई ।
तिणखलो धरती पडि न सकै, दृष्टि फेरवी न सकै ।
थाली माथा ऊपर तरै, इम अनेक भीड़ हुई ।

२५ नगर लोक-वर्णन (१६)

सकल कला कलितु । सर्व शास्त्र विशारद । अनागत त्रिवेलितु स्वभाव सरलः प्रियालाप तरलः परदोष वार्त्ता विरल । दुस्थित जन दयालु, धर्म श्रद्धालु । परस्त्री सभोग भीरु, पयः पवित्रित शरीरु । प्रतिबध बन्धुर व्यवहार, नयानुबुद्ध बुद्धि व्यापार । सत्पथ विज्ञ, सर्वज्ञ शासनाभिज्ञ । एव विध लोकु ॥१०५॥ (मु०)

२६ धवल गृह वर्णन

स्वर्णमय प्रकार, अतिमनोहराकार ।
विचित्र कलिकाइ शाल मान, सहस्र सोपान ।
समस्त जन मनोहरु
ते कि चंद्रमा किरण धवलितु कि छोहि करी कलितु । स्फुटित कोल घटितु ।
कि मुक्ताफल राशि निर्म्मित । इसउ धवल गृह निर्मल ॥६३॥ (मु)

२७ जिन प्रासाद

लेवा हींडीइ जगि जसवादु, तउ माडावीइ प्रासादु ।
पुण्य नउ भारउ, एकासी आगुल गभारउ ।
सूत्रधारि घाट नइ विषइ नथी कीधी मउली, कउलीवटि सहित कउली ।
अतिहि प्रचण्डु, आखा मंडप अखण्डु ।
किसु एक नवचउकिउ, जाणे सृष्टिकर्त्ता आपहणी किउ ।
सुघट पणइ केतलउ एक वखाणउ, आगलि गूढ मंडप मडाणउं ।
अहर्निशि अभंगु, रग मंडप नउ रगु ।
चिहुं चउवीसी नी विगति, पाखलि जगति ।
मूर्त्तिवंती कला बहुत्तरि, देइंसी देहुरी बहुत्तरि ।
सुवर्ण्य दड कलसि अलकरी, ध्वजा परहरी ।
हिमाचल श्रीभरु, सूलिगउ शिखरु ।

जाणे मेरु पर्वत शृंगु, एहवउ ऊपरि स्वर्णमय कलश नउ रंगु ।
लोह घंटातु, लक्ष्मी गजातु ।
धर्म ध्वजातु चिहु पखेर कोटरी, कोसीसे करी आकाशि अड़ी, सुधा करि धवलितु ।
विविध घाटि करी सारुआर, एव विध जिन विहारु ।
सकल पणइ करी महा स्फूर्त्ति, माहि माडी वीतरागनी मूर्त्ति ।
परिगर करी शोभायमान, छत्र त्रय करी नइ विराजमान ।
आठ मागलिक मंडाणा छइ, पुण्यवत पूजा करई छई ॥
प्रासाद वर्णन ॥ ३६ ॥ जै० (मु०)

२८ स्वयंवरा मंडपु—

चउदिसि माच, हेठि रत्नमय भूमिका, स्वर्णमय स्तंभ,
ऊपरि पंचवर्ण देवाशुक तणा ऊलोच,
तलिया तोरण ऊभविया, स्वेत चगर लंबाविया,
फूलमाला लाबावी, सिखरि आरीसा झलकइ,
गगनि चिंछ पताका झलहलइ,
अच्छारायणु, इसउ जसउ देव निमियउ तिस्तु मंडपु । (पु० अ०)

२६ वाडी वर्णन

बीजउरी ना अखाडा, नीबुइना वृक्ष लक्ष, नवरंग नारंगि ।
द्राख मंडप, जोइवाजिससी जंत्रीरि, दीठी हाथ उपशामइ तिसी दाडिमि फूल्या फणस करणी नी कोटि केलि वृक्ष असंख्य अनेक विध आम्रा रूढ़ि रायणि चारु वृक्ष रसाल नक्षथ लगइ वाथीना नीलिएरि पान वारी प्रगटक ग्वारिक खजूरि वडोरि बोरि फूटी फोफलणी गूंद नरीना गजा इसी वृक्ष अलंकारी वाडी ॥ ३५ ॥ (मु०)

३० आराम-वर्णन (१)

नारिंग, लवंग, प्रियंग ।
पूफ, पुन्नासा, नाग, मागधी ।
धव, अर्जुन, सर्ज, खर्ज ।
खालूर, बीजपूर, कृतमाल, तमाल ।
नक्त माड, प्रियाल, ताल, हताल, श्रीताज ।
चंपक, सहकार, तगर, अगर ।

खदरी, बदरी, कदंब, निम्ब ।
जब, जंबीर, वानीर, कणंवीरू ।
रुक्षा, अक्ष, प्लक्ष,अखा ओवट, कुटज ।
पटोली, पंनस, वेतस ।
पलास, सल्लकी, अकोल, किंकिल ।
नागवल्ली, गिरिकर्णिका, कर्णिकार, सिंदुवार, मंदार ।
कोविदार, कल्हार, दाडिमी, करुणा, वरुणा ।
कपित्थ, अपत्थ, किंकिरात, पारिजात ।
पटाजा, सपूला, मालती, पद्मस्थल ।
पद्म तिलक, बकुल प्रभृति वनु ।
पुष्पित, फलितु, मंजरितु, पल्लवितु ।
स्निग्धच्छाया, सश्रीक, साड्वल, निचय, पत्र बहुल ।
परिमल पवित्र सपुष्प सफल, अनेक पथिक विश्राम मूर्त्ति ।
विविध पक्ष कुलाचार, दृष्टि आनंदक ।
मन संतोषक, एवं विध प्रधान वृक्षा ॥ ६५ ॥ (मु०)

३१ आराम-वर्णन (२)

सच्छायु महाकायु लताकीर्ण द्रुम संकीर्ण पल्लवितु कन्दलितु पुष्पितु फलितु सजनु शीतलु साड्वलु इसउ उद्यान वनु । (पु० अ०)

३२ सुगंध वृक्ष नाम (१)

जाई, जूही, जासूल, नाग, पुंनाग, चंपो, दमणो, वालो, वेल, पाडल, कुंद, मचकुद, केतकी, केवड़ो, मोगरो, मालती,[१] मरुओ, गुलवास, सेवंत्री, शतपत्र, सहस्रपत्र, सहकार प्रमुख एहवूं वन छै ।

तेहना फल केहवा छइ ?

रुड़ा, रंगीला, मीठा, मधुरा,[२] फूटरा, फरहरा, पाका, पड़वाडा सुंहाला, सुगंध, सुकोमल, सदाकर, फूल, फल, पत्र, माल, प्रवाल, पल्लव. मकरंद, मंजरि पराग, परिमल, छाया, सोहामणी । एहवू वन तिहा स्त्री क्रीड़ा करै छै ।

३३ सुगंध वृक्ष नाम (२)

कणयर प्रवर
कुंद, मुचकुंद ।

१—गुलाब २—खाटा । प्रति (कौ) मे अंकित नामों के वाद ये नाम विशेष है ।

जाइ, जूही । वेल, वउंला
निरुपम निरवाली । सेवत्री नासइं
मनोज्ञ मल्लिका राज गिरी नी रचना ।
फूल्या चंपक रहित शोक । कुम्हलित केतकी ।
मनोहर माडणीया अगथीया असंख्य
कउतिगा वणा कोरंटक इत्येव मादल पुष्प वृक्षा (३३) (मु०)

३४ सुंगध वृक्ष नाम (३)

कुसुम—
चम्पक, राज चम्पक, विचकिल, स्वर्ण जूथिका
केतकी पुन्नाग, मालती जाप कुसुम कुंद, मुचुकुंद
मंदार दमनक, कुरुवक शतपत्र बंधुजातिका पारिजात
हरिचंदन, कल्पवृक्ष प्रमुख कुसुम समूह तेहि रम्यु । (पु० अ०)

---

३५ सुगंध वृक्ष नाम (४)

मरुयउ
देखिवा जिसी देव गंधारि सविशेष सुरहि
विविध वालउ गंधि विमणउ, दमणउ ।
बहु विध वाबची, त्रिभुवन विख्यात तुलसी ।
एवं विधि पात्री ॥ ३४ ॥ (मु०)

३६ अटवी-वर्णन (१)

अरण्य, उजाड़, झाड, जाल, माल, जल, थल नदी, निवाण, नाल, खाल, खेड़, खोह, वांका, विषमा, गिरि, गोबर (गह्वर) इत्यादि ।

३७ अटवी वर्णन (२)

॥ अटवी वर्णक ॥ रौद्र घोर भयंकर ।
मनुष्य रहित । अनेक स्वापद सहित ।
किहा इक शिवा फूत्कार । घूहड़ तणा घू घू शब्द कार । सिंह तणा सिंहनाद ।
वाघ तणा गुंजारव । सूअर तणा घर घरा रव ।
वानर फूत्कार करइ । चित्र कबरकइं । वेताल किलकिलइं । दावानल प्रज्वलइं ।
भील गीत गाइं । कष्टि चलाइं । रीछ तणा समुदाय । चरू तणा घाट ।
साहसीक तणां हृदय कंपइ । कातर कोइ उभउ न रहइ ॥
इति रौद्र महाटवी ॥ छ ॥

३८ अटवी वर्णन (४)

अटवी—अथाऽटवी वर्णन। अनेकोत्कट वृक्ष गहन। विविध व्याल शार्दूल। काल कंकाल। वेताल। क्षेत्रपाल। शाकिनी। डाकिनी योगिनी। यक्ष। राक्षस। गंधर्व विद्याधर। खेचर। भूत। प्रेत। पिशाच। क्रीडादिक करि। कोलि डंत्र डंत्रर। श्मशान भिल्ल कर्व्वर। शब्रर। तस्कर। शब्रर। सरभ। कासर। व्याघ्र। सिंह। शृगाल। वृक। शूकरादि। स्वापद। रौद्राकार। घूक। शिवा। फेतकार। डाकिनी। डमर डात्कार। यक्ष राक्षस महा हुंकार॥ एवं विधा अटवी॥ छ॥ (सं० २)

३९ अटवी वर्णन (५)

जिहा सिवातणा फेत्कार,[१] घूक तणा घूत्कार।
व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ बाट नइ घाट।
लाघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, वेडि विलाउ धुरकइ।
वेताल किलकिलइ,[२] दावानल प्रज्वलइ।
रीछ साचरइ, वीरूतणा यूथ विस्तरइ।
वेडी रा साड त्राडूकइ, ठामि ठामि वनरा भइसा ढूकइ[३]।
सादूला सीह गाजइ, कायर ना हीया भाजइ।
सूरा हथियार साजइ, उद्दड वाय वाजइ।
रूख कडकइ, वटाऊ भडकइ। ताड खडहडइ, पखी भडहडइ।
बालइ[४] वाट साधि छड हडइ, कुमार जागइ छइ।
इसी रौद्र अटवी, किसी घणी वान रटवी।
जिहा न लाभइ माग, न लहीयइ नदी तणा थाग।
न सकइ चाली हाथी[५], न कोइ मिलइ साथी।
विषम पर्वतमाला, डावी जिमणी दव तणी ज्वाला।
जई न सकइ चव्यानइ पाला, दीसवा लागा भील अत्यत काला।
आवी विषम वेला, साथी हुवा लागा भेला।
झाड़ संधि मिली, न सकीयइ टली।
ठामि ठामि दीसइ ज्वाला, माहि ओझीसाला।

---

१ फुतकार, २ एक एक सू. मिलइ, वणराइ वलइ (विशेष पाठ), ३ मनीष्य मारग थी चूकइ. ऊचा शिखरि चढि कूकई (विशेष पाठ) ४ एक एक सू. अडेइ, चालइ साथ छडई। ५ दीसइ अरण्य ना हाथी।

जिहा रहइ सापकाला, न करी सकइ टाला, वडानइं वाला[1] ।
इस्यउ महा अरण्य, तिहां एक परमेश्वर सरण्य[2] । (मू०)

४० अटवी वर्णन (६)

शिवा तणा फेत्कार, घूअड तणा घूत्कार ।
सिंघ तणा गुंजारव, व्याघ्र तणा घुर्घुरारव ।
सूयर घुरकइं, चित्रक बरकइ ।
वेताल किल किलइं, दावानल प्रज्वलइं ।
रीछ उछलइं, ग्रश्रणी भ्रमइं ।
मृग रमइं जिसा हुइ दविधा रूंख
इसा दीसइ भील इसी वन भूमि ॥ ४ ॥ (मु०)

४१ अटवी-वर्णन (७)

महात घोर निर्मानुषी अटवी, जहि-कवहि ठाइ शिवा तणा फेत्कार ।
कवहि ठाइ अलिंजर तणा फूत्कार, कवहि ठाइ वानर तणा बोकार ।
कवहि ठाइ घूयड़ तणा हूंकार, कवहि ठाइ सीह तणा गुंजारव ।
कवहि ठाइ व्याघ्र तणा घरघरारव, कवहि ठाइ सूकर घरकइछइ ।
कवहि ठाइ चीत्रा बरकइ छइ, कवहि ठाइ वेताल किल गिलइ छइ ।
कवहि ठाहि दवानल प्रज्वलइ छइ, कवहि ठाहि रीछ सांचरइ छइ ।
कवहि ठाहि विरूतणां यूथ हीड छइ, इसी महाभय वणी अटवी ॥

४२ अटवी-वर्णन (८)

किहाई घूवडना घूत्कार, कि० शिवा तणा फेत्कार ।
कि० अलिंजर तणा फूत्कार, कि० शाकिनी तणा रासडा ।
कि० डाकिनी तणा काचडा, कि० कलहंस ना कलकलाट ।
कि० कावरि तणा कर्बराट, कि० चीतरा तणा वर्बराट ।
कि० सीह तणा गुंजारव, कि० व्याघ्र तणा घुर्घरारव ।
कि० क्षेत्रपाल तणा भैरवारव, कि० वेताल तणा कल कल ।
कि० वलइ दावानल, कि० रीछ तणी श्रेणी सांचरइ ।

---

१ कुण छोटा कुण वाला । सूरा सजे भाला, चतुष्पदरा चाला । वणा पखिया रा माला । (विशेष) २ इसी रौद्र अटवी, वखाणइ कुशलधीर कवी ॥ (विशेष) ।

—सभा कुतूहल से

कि० गाडा तणा यूथ फिरइ, कि० हरिण रोझ सूअर तणी श्रेणि चरइं ।
दुष्ट जीव प्रचार, विरुअ तणा जूथ हींडइ । इसी निर्मानुपी अटवी ॥ स० १

४३ अटवी-वर्णन (६)

एक अटवी तिहा सींह तणउ गुजारव, व्याघ्र तणा घुरघुरारव ।
घूअड़ तणा घूत्कार, सिवा तणा फुत्कार ।
साकिणी तणा रासड़ा, डाकिणी तणा काचड़ा[1] ।
काल कंसालना कलकलाट, काव्ररि तणा करबराट ।
खेत्रपाल तणा अट्टहास, .. .
भैरवराहु तणा भुत्कार[2], हणवन तणा हुत्कार ।
वैताल कलकलै, दावानल प्रज्वलै ।
रीछ तणी श्रेणी सचरै, मृगतणा यूथ विस्तरै ।
रोझ चरै, गाडा तणा यूथ फिरै ।
सूअर दौडै, दुष्ट जीव रूंख मोडै ।
विरवा तणा यूथहींडै,
धरती धडहडै, एहवी अटवी भय करै ॥ (स० ३)

४४ वृक्ष-नाम (१)

चपक, राजचपक, कुद, मुचकुद, पुन्नाग, नाग केसर, केसर, नारग, लवंग कपूर, वीजपूर, जबीर, बकुल, बिचकल, सिंदुवार, देवदारु, नमेरु, ताल, तमाल, हिंताल, तिलक, शिरीष, कक्कोल, मरिच, पिप्पली; एला, भूर्ज, कपित्थ, खर्जूर, पूग नागवल्ली, नालिकेरी, कदली, दाड़िमी, कदंव, सप्तपुत्यच्छद[3] प्रियगु, चदन, हरिचदन, सतानक, पारिक, पारिजात, वृक्षावली बहुल शीतल छाय वनं ॥
जबीरबकयबलि बकयली, कपूर, पूगीफली ।
विज्जूर[4] ज्जुण सज्ज[5] सल्लय समी निग्गोह, सोहंजणा ॥
ककोली कवली लवंग लवली नोमालया मालई ।
सग्गा सोअ तमाल ताल तिलया रेहंति निद्धादुमा । (स० १)

४५ वृक्ष-नाम (२)

ताल, हिंताल, कुद, मुचकुंद, अशोक, चपक, कोरिंटक, कर्णिकार, मंदार सहकार, सिन्दुवार, कणवीर, जबीर, निबक, कदब स्वच्छ, कपित्थ प्रमुख अशेष, वृक्ष विशेष ॥ (पु० अ०)

१—रामत २—भैरूतणा हूंत्कार पाठान्तर—३—सपूछद ४—खज्जूर ५—सजण

४६ वृक्षनाम (३)

अथ अंब, नींब, बीली, बाउल[१], बोर, बीजोरी, बदाम, कंकोल, केलि, कमल कणयर, करंज, कणज, कयर, कदंब, केसु, कोरंट, कैंवच[२] कालुंबरी, कंथर, ताल, तमाल, तगर, अगर, अरणी, खिरणी, श्रीखड, अखोड, अपनस, असोक, आउल आंबिली, इक्षु, एलची, आमला, अंजीर, सालर, सदाफल, सोपारी, सरद्द[३], गूगल, गूंदी, जांबू, नींबू, नागरवेल, रांयण, दाड़िम, जाल । (स० ३)

४७ वृक्ष-नाम (४)

वन वर्णनम्

अगर, तगर, निंब, अंब, जंबू, कदंब, वड़, कुड़ा, कैर, ग्वैर, बाउल, बोर, बीजोरा, अकोल, कंकोल, करंज, कणयर, केसू, कोरंट, कैंवच, उंबर, कटुंबर, कंथार, ताल तमाल, करणा, नींबू, दाड़िम, आंबला, हरडइ, बहेड़ा सेव, अखरोट बिदाम, पिसता, निवजा, दाख, किसमिस, अबनूस, असोक, आउल, आंबिली, इक्षु, एलची, अंजीर, सीताफल, नालेर, सोपारी, सालर, गूलर, गूंदी, रायण रत्तांजणी धव, सीसम, पीपल, टींबरू, करमदा, प्रमुख, (कौ०)

४८ वृक्ष नाम (५)

वनस्पति नाम—

अंब, निंब, कदंब, जंब, ताल, तमाल, हिंताल, प्रियाल, नन्दमाल, रसाल, नाग, साग, पुन्नाग, मदार, केदार, देवदार, कोविदार, सिंदुवार, कर्णिकार, जंबीर करवीर, वानीर, मालूर बीजपूर, खजूर, नारेल, नारिंग, लविंग, प्रियंगु, कुंद, मचकुंद, पाडल, कमल, उत्पल, चंपक, केतकी, किंशुक, अशोक, कंकोल, कलि प्रमुख वनस्पति जाणवी ॥ (स० ३)

४ _ वृक्ष-नाम (६)

नारंग, लवंग । प्रियंगु पूग । पुन्नाग साग । मगधी धव । अर्जुन, शोभाजन । सालरि बीजपूर । धत्तूरं वानीर । करवीर करीर । जंबीर जंबु । कदंम करंजन । कृतमाल, तमाल, ताल, हिंताल । रसाल, सज्जसाल । प्रियाल, पीतसाल । महाकाल अक्षरोट । अश्वथ, कपित्थ, अक्ष लक्ष, वट, कुटज । पनस, वेतस । तिनिश, पलाश काशं । अंकोल्ल, कंकोल्ली । मल्लिका, नागवल्लिका । गिरि कर्णिका, श्री पर्णिका । कर्णिकार, कोविदार । मंदार, सहकार । सिंदुवार कल्हार वृन्ददार, दमनक, दाडमी करणावरणा । किंकिरात पारिजात, आम्रातक श्लेष्मतक । विभीतक

१—बाहुल २—किंवच ३—सरखू

हरीतक । आमलक गुडफलकं । भावुक, गुग्गुल । पिचुल, निचुल । वंजुल जाई जुई । कुंद, मुचकुंद । पाटल कमल । वंधुक मधूक । भूर्जा खंजूर । मालती, नव मालिका । केतकी चेतकी हरीतकी । चारकुलिक तिलक वकुल, कट्टफली उंवर, कालुंवरि, नालिकेरि । प्रमुख नाना प्रकार, वनस्पति संभार । पुष्पित, फलित । मंजरित, पल्लवित । सच्छाय स्निग्धच्छाय । नीलच्छाय, हरितच्छाय, शीतलच्छाय । शाद्वल प्रवल । वहलदल सकल, अतुल परिमल । अनेक पथिक विश्रामभूत लक्षपत्ति सभूत । निष्पीड नीड विराजमान प्रधान, । अखड वनखड । (सू०)

५० वृक्ष वर्णन

वृक्ष फलित, पुफित, मंजरित, पल्लवित स्निग्ध, सच्छाय, शीतलच्छाय, सश्रीक, शास्वल, भास्वल, निचितपत्र, बहुल, परिमल, परिकलित पुरायकर शोभित[१], विविध विहंगमाधार, अनेक पथिक-जनागार, आनंददायक[२] ।

(चि०)

५१ पक्षी-नाम (१)

अथ पत्ती नाम—

हस, कलहस, राजहस, चकोर, चास, चातक, चकर, कवु, चक्रवाक, क्रौच, कपोत, कपिंजल, कलक, कलविक, क्लकट, केकी, नीलकट, कूर्कट, कोसीट, कहुआ, कारड, भारंड, कुडल, कावर, कादंव, काग[३] खग, वग[४], चातिक, ढीकरण, वलाहक, लावक, तीतर, भ्रमर, सुक[५], सारस, सारिका, खजन, सूकविक, भार इत्यादि ॥

कतार, जतार, वाज, कुई, सीकरो, कोइल[६], समली, चडकली, चडी, कमेडी, देवी, लाना, बटेर, कबूतर, होला, वगला ॥

५२ पक्षीनाम (२)

हस कलहस, राजहस सारस, चकोर, चक्रवाक, कोकिल, कोकनद, वक, मदन-शाल, कुक्कुर, कलविंक, क्रौंच, अरिष्ट, पारापत, कपोत, शुक, सारिका, वल, लीका, कपिंजल, चातक, चास, मयूर, तित्तिर, लावक, कुरर, शकुनिका, भैरवा, भ्रमर, दुर्गाकोशटक ,टिट्टिभ वेलाक, ढिंक, काकजीव, जीवक, हारीज, कारंड, कुंडल, खजन, पिंज, भृंगार, वितत पक्ष, सिंचानक, गुरुड । इत्यादि पक्षी वर्णन (सा०२)

---

१ पुष्प प्रकर शोभित २ अप्यायक (म० १) ३ काक ४ वक ५ शुक ६ कोकिल

(पु० अ०)

५३ चतुष्पद-नाम (१)

स्वापद नाम—

सिंह, शार्दूल, सरभ, सांबर, व्याघ्र, व्याल, वरु; वरगडा, वराह, चमर, चीतरा, महिष, जरख, रीछ, रोम्म, सियाल, हरिण, गंडक, गोमायो, ससलो, वरोटी, वानर, भूंड, भैंसा, खर, करत (भ), हस्ती, इत्यादि चौपद ।

५४ चतुष्पद-नाम (२)

बोकड़ो, गाडर, मींढो, मैंसो, शसल, सूर, सारव, हिरण, रोम्म, रींछ, सरभ, प्रमुख, चतुष्पद वर्णनं ॥

५५ चतुष्पद (३)

सिंह-वर्णन

सिंह पुच्छयच्छोटित भूपीठ ।
सिंहनाद प्रति शब्दित वर्त्तातुं ।
विस्फारित मुख कुहर विकराल दंष्ट्रा दुः प्रेक्षः ।
तीक्ष्ण नख विदारित करि कुंभस्थल ।
पिंगल लोचन, केशर भासुर स्कंध देश ।
रक्तोत्पल कमल कोमल रसना सनाथ, समस्त श्वापद नाथ (स० १)

५६ कीट-नाम

कीडी, कंथुग्रो, कीड़ो, कमीश्राकीला, घीवेल, गदहीरा, माकण, मकोड़ो, मंकोड़ी, चाचड, चूड़ेल, फाका, वगतरा, उदेही, श्रलसिया, गंडोला जलोक, चंदाण, भमरा, भमरी, तीड, माखी, मसा, डास, कंसारी इत्यदि जीव ॥

५७ पर्वतनाम

श्रर्बुदाचल, सिद्धाचल, विंध्याचल, मलयाचल, उदयाचल, श्रस्ताचल, रेवताचल, हिमाचल, कनकाचल, रोहणाचल, हिमवंत, महा हिमवंत, त्रिकूट, चित्रकूट, रुपी, सुरूपी, नीली[1] महानीली[2], सिखरी, मुक्तागिर, धोलागिर, मानुषोत्तर, समेदसिखर, अष्टापद, नैषध, वैताढ, कैलाश, गोवर्द्धन, गंधवाहन, इत्यादि ॥

---

१ नील २ महानील

५८ सरोवर-वर्णन (१)

अगस्ति ना रोस लगी सृष्टि कर्त्ता अभिनव समुद्र सरिज्यउहुइ,
आठ दिग्गजे दंतूसले थिरू हुतउ निरालब भणीउ जिसउ आकाश विसम्य हुइ।
आदि वराह पृथ्वी ऊधरी तीणइ म्लान कि जल सरित हुइ
वन लक्ष्मी नउ जिसउ क्रीडा सरोवर हुइ
किवाहइ नीलकंठ तणहंउना कंठ विपु विहतु घूटिवा भणीनइ भय
ब्रह्मा पाताल हूतउ लोक जीवन हेतु अमृतकुड आणी मेल्हउ हुइ
सत्कवि सहस्रमुख विनिर्ग्यतु जिसउं वचनामृत पिंडीभूत हुउ हुइ
धवल स्फटिक पाषाण तणी पालि वृक्षावली शोभितु हंस बग बलाहक चकोर
चक्रवाक मछ्य कच्छप कूर्म पाठीन पीठ जलचर जीव विशेपि विराजमान।
वन हस्ती जलक्रीडा करइ, तापस जन वल्कल प्रक्षालइं छइं
सुरसुदरी विद्याधरी जल केलि करइ भ्रमर गुण गणाट करइं
वाइ पाणी झलकइ घट नाला सूसूइं पाणी घूमूइ
पथिक जनना श्रम हरइं एवं विध सरोवर ॥ ५ ॥ (मु)

५६ सरोवर-वर्णन (२)

पानि तणो परिगरु, देहरी तणउ समहरु।
चउकी चउखंडे झलहलइ, उआरे पाणी खलहलइं।
पगथिया रा साल्यार[1] वरंडी-उदार लहरी मला उछलइं।
मत्त वारणा ऊपरि पाणी वलइं
समुद्र नी परि गभीर, निरुपमान[2] नीरू।
उपरि जाण भर[3]इं, खडगू ए तरीइं[4]।
नइवाली अगोरिजालि। प्रवाह छूटइ, बंध फूटइ।
देहरि टड कलस आमलसारा सोना तणा झलकइ।
जला[5] ढिरिणि कुल वधू तणे पागि नूपर खलकइ।
तडिइं किर्त्तिस्तंभ दीसइं, लोक हिया विहसइं।
मेघ मल्हार (राग) गाईयइ वीणा वश मनोहर वाईयइं।
देहरीए पूजा कीजइ, जन्म फल लीजइ।
शत पत्र, सहस्र पत्र लक्ष पत्र।
सूर्य वशी, सोमवंशी कमल करी सश्रीक दीसइं।

---

१ रासा उयारा २ तीर ३ भरीयइ ४ तरीए ५ जलाढिरिणी।

जिहां हंस सरलइं, सारस करलइं ।
कपिजल कलइं, वृक्ष ना पान चल चलइं ।
राजहंस रमइं, भ्रमर भमइं ।
चकोर चक्रवाक मयूर कूजइ, जलकेलि तणा मनोरथ पूजइं ।
महा काय पोलि, पावड़ियारा तणी ओलि ।
निर्मल जल कमनीय, विपुल पालि रमणीय ।
पथिक जनाधार, वृक्ष परंपरा सार ।
कल्लोल माला मनोहर, एवं विध सरोवर ।
सरस्या भोगलहर्यंभोग जाड्यांम्बुज पट् पराः ।
हंस चक्रादयास्तीरोद्यान श्री पाथ केलयः ॥ (मु०)

६० सरोवर-वर्णन (३)

तलाव—
सखरी एकल्लोल, देखीने समुद्रनी पड़ें भोल ॥
[1]पंखीनी वेटीओल, उछलेइं कल्लोल ॥
टोसे अमोल, घणाइक रंगरोल ॥
घणाइक वायरना भकोल, भला पगथीयाना वोल[1] ॥
घणीक पंखीयानी कलचल, घणीइक हलफल ॥
धोबी धोइं मलमल, भला विकस्या कमल ॥
पाणी पिण अमल, भला परिमल ॥
ख्याल देखीइं मुख पखालीइं पंथी पाणीले पीइछै ॥
भारी भरी लिजीइंछै, हाथोहाथ दीइंछै ॥
मसकते भरीइंछै, भैंसा उपरि धरीइं छै ॥
मोजकरीइं छे, वाभण न्हावे छै ॥
धोतीया ते ल्यावे छै, ईश्वर ते ध्यावेइ छै ॥
सहसनाम ते गिणे छे, सरस्वती पाठवद तैभणे छै
वेद वाचे छइं, प्रभाति ख्यालते माचे छइ ॥
सहुकोई राचे छै ॥
रसोई जिमीइं, आखो दिन तीज रमीइं ॥
वीजे स्युं भमीइ ॥

---

[1] पखी ।

एहवउ तलाव, परमेश्वर मिलाव ।

इति तलाव वर्णन (पू०)

६१ पनघट-वर्णन

बईरा नी भीड़, हुइ पीड़, त्रूटे चीड़ ।

एक ऊतावली दोड़े छै एक माथै वेहड़ चोहड़ेछै ।

लूगुंड़ ते माथै ओढ़े छइ, वेहडो ते फोड़े छइ ।

एक एकनै अडै छइं धडाधड पडै छइ ।

माहो माहि लडे छइं ॥

हवे नान्ही लाडी, चीखल थी पडे आडी ।

त्रीजी नी भीजाइ साडी, ते माटेइ करे राडी ।

सोक सोक नी करइ चाडी, डीले जाडी ।

खीजे माडी, सासूइं पाछी ताडी ॥

एक पणयारी भरे छइं, वाता ते करे छइ ।

नजर ते अरइं परइं फिरे छइ, एक एक ने हसे छइं ॥

त्रीजी ते पाणी माहि घसेछइं पग ते पागोथियासू वसइ छइ ।

एक एक टोली जाइ छै, आपणी आपणी पाछूं आवे छे ॥

एक एक नो छेहड़ो साहे छे, उपाडवा उमाहे छे ।

उतावली धाइ छै, वाता ते चाहै छै ।

जीवाणी पाछूं रेड्यूं छै, छोकरो तेड्यूं छै ।

माथा उपरि वेहड़ चोहड्यू छै, जेहड़े भमके छै ।

घूघर ते घमके छै, पायल ते ठमके छै ।

वेहइ अरघट्ट, घणेक गहगट्ट ।

वाजै अणवट्ट, आवे दट्टवट्ट ॥

एहवैं पणगट्ट । इति पणगट्ट वर्णनम् ॥

६२ नदीनाम (१)

गंगा, गोमती, गोदावरी, सिंधु, चामल, सिप्रा, सोवनभद्रा, सरस्वती, सीता, सीतोदा. रेवा, रिक्ता, रक्तवती, बनास, जमुना, मही, सरजू, तापी, सतलज, भूवि, ऐराव, १४ लाख ५६ हजार ९० समुद्र, भेली थई छइ । (का)

६३ नदी नाम (२)

गंगा, गोमती, गोदावरी, सिन्धु, सिप्रा, सरस्वती, सोवनभद्रा, सीता सीतोदा, रेवा, रिक्ता, रक्तवती, सुवर्णकुलिका, रुप्पकुला, नरकंता. नारिकता

हरिकंता, हरसलिला, यमुना, मही, तापी, बनास, गंभीरी, चाम्बिल, कृतमाल; नक्र-माल, प्रमुख, चौदलाख, छप्पन हजार नदी, लवण समुद्र मांहि मिलै। (स० ३)

६४ नदी-वर्णन (१)

नदी, दो तड पाड़ती, कचवर उपाडती।
रुंखउन्मूलती, कुंभिणि घालती।
सावज हणती, जड़ी मूली खणती।
मार्ग्गलोक खलती, वलणि वलती।
तरू तोपती, नीचउं जोअती।
महापूरि कलकलती, कल्लोलि उच्छलती।
लहरि करी सू सूती, वाहले फूफूती।
जिसी कृतात तणी मूर्त्ति तिसी रौद्र, वेउतटलेई आवी नदी। (स० १)

६५ समुद्र-वर्णन

समुद्र उच्छल दूहुल कल्लोलमाला मालित गगन मंडलु।
मत्स्य कच्छप कमठ कूर्म नक्र चक्र पाठीन पीठ जलचर संकुल।
अतिशय गंभीर, समुद्दंड नीर डिंडीर।
अनेक सायात्रिक लोक सेवित,
सोल जाति रत्ननउ आगरु एवं विध अपारु सागरु। (स० १ और स० ५)

६६ समुद्र-वर्णन (२)

समुद्र अगाध, अलब्ध मध्य, गुहिर गभीर, आवर्त्त दुर्ग, कुतीर्थ विषम, नक्र भयकर। (पु० अ०)

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग २

राजा, राज-परिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

नरेश्वर वर्णन (१)

समुद्रनी परि लक्ष्मीनिधान, सहिजि ही सावधान।
मेरुनी परि सर्व जनाष्टभ, अति निर्दंभ।
कार्त्तिकेय नी परि अप्रतिहत शक्ति, देव गुरु नइ विषइ निविड भक्ति।
आसमुद्रान्त भूमंडल भर्त्ता, आश्चर्यमय महा कार्य कर्त्ता।
सूर्य नी परि नित्योदय, सत्पात्र कृत संचय।
दिग्गज नी परि अनवरत दानाद्री[1]।
कृत करु, जय श्री वरु।
ईश्वर नी परि जितमन्मथु, प्रजापति धकटित[2] सत्पथु।
मित्र प्रति, उदयशील अति[3]।
सशील, सलील।
विक्रमाक्रान्त भूतलु, अतिहि प्रबलु।
रूपइं अभिनव कंदर्पावतारु, अति सुविचारु[4]।
यशस्वी[5], तेजस्वी।
प्रतापि लंकेश्वरु[6], एव विध नरेश्वरु ॥ १ ॥
जिणइ राजायइ गौड देश नउ राउ गाजिउ, भोट नृं माछिउ[7]।
पचाल नउ पालउ पुलइ, कानड देश नउ कोठारि रुलइ।
ढूंढाड़ि नउ ढोयणउ ढोयइ, वावर देश रउ बारि बइठउ टगमग जोयइ।
चौड नउ चापिउ[8], काश्मीर नउ थरहर कापिउ।
सोरटी (य) उ सेवइ, दसउर नउ दड देवइ।
मेवाड नउ माल आपइ, काछ नउ कापइ।
अंग देश नउ अंग ओलगइ, जालधर नउ जीवितव्य तणइ कारणि[9] रिगइ

---

१ दिग्गज नी परि निरन्तर, दानाद्रीकर २ प्रगटित ३ मित्र प्रति उदयशील, शत्रुहृदय खील। ४ सीकर घोर अ धार (विशेष पक्ति) ५ जयस्वी ६ सार्वभौम नरेश्वर (विशेष पक्ति) ७ मञ्यउ ८ चाप्यउ ९ काजि १० वयरीया कृतान, सेवका परम सात। काछ वाच निकलक, सीह नी परि निम्मक (विशेषपक्ति)

[१]घणूं किसु रिपुकुल कालकेतुवर, शरणागत वज्र पंजर[२] ।
पंचम लोकपाल[३], जिमइ सोना रइ थालि ।
जिणइ रिपु सवे निर्द्धाट्या;
दुर्ग सवे आपणा[४] कीधा, वइरी नइ[५] देसवटा दीधा[६] ।
इस्युं निःकंटक साम्राज्य राज्य पालइ[७] । (मु०)

२ नृप वर्णन (२)

एकांगवीर, रणागणधीर[१] ।
पराक्रम निर्भय भीम, साहसिक सीम ।
विसम घाडि मोडण, पर भूमि पंचाणण ।
परदल खंडण, छत्रीस राजकुली मंडण ।
लडवाय भडकोडि भजन, अगंज गंजन ।
रढ रावण, अरिदल ऐरावण ।
अहंकारी माण मोडण, मूछाला वीर माण खंडण ।
शरणागत वज्र पंजर, गढ भंजन[२] कुंजर ।
अडवड्या आधार, वाका वीर पाधोरणहार ।
सीकरि घोरंधार, विकट पर[३] महाहंकार धिकार ।
कलकीया केदार, पवाडा कोडि जइत्तूयार ।
रण रंगमल्ल, अरडकमल्ल । वीर टोकर मल्ल ।
पर वीर हृदय सल्ल, बावन्न वीर कटार मल्ल[४] ।
रण भग्न सुहडावष्टंभन मेरू, साहण[५] समुद्र विलोडण मंथाण मेरू ।
वीर कंकाल वेताल काल, चमर विंवाल ।
परदल हल्ल कल्लोल, वैरि वर्ग[६] द्रह बोल ।
भय भीत भडकोडि[७] रक्षा वज्र कमाड,[८] दूठ रायां हीयइ दराड ।

---

१ विस्तीर्ण कर (विशेष) २ हृदय विसाल ३ जिण रायद वडावडा विरुद खाट्या, सकल वइरी निर्घोट्या । ४ अपणइ वसि ५ वीहते ६ लीधा ७ रामचंद्र नी परटं चालइं । इसउ नि.कंटक वीर जितशत्रु राजा राज्य पालइ ।

पाठान्तर कुशलधीर कृत 'सभाकुतूहल' से ।

पाठान्तर—

१ अटग गंजण, रढरावण । २ भजन । ३ भट । ४ भाले भयंकर । कराल करवाल तर, ललधाराधर । ५ सीहण । ६ परदल । ७ भमकोडर । ८ रणांगण भिड़माल पाठान्तर— सभा-शृंगार विनयसागर प्रति ।

गय घड विभाड, चोर चरड दुफाड ।
नीसाण निसंक, रिपु राय तारामयंक ।
महारिपु कीर्त्तिलंकार हनुमंत, घणघोर बल घूमंत ।
डाकीया ऊतारण होप, धयवड घटा टोप । इत्यादि ।

३ राजा वर्णन (३)

विक्रमाकान्त भूतल, शक्तित्रय भासित रिपुबल ।
प्रजापति जनक जननी समानं, सेवकं कल्पद्रुमोपमान ।
युधिष्ठिर जिम वचन प्रतिष्ठु, श्रीराम जिम न्याय निष्ठु ।
विष्णु जिम प्रजापालन व्रत, तरुणादित्य जिम प्रौढ प्रताप ।
समुद्र जिम अनाकलनीय स्वरूप, एहवउ भूप ॥

४ राजा (४)

निज विक्रमाक्रान्त क्षोणि मंडल, शौर्य श्री वदनारविन्द प्रद्योतन ।
सकल महीपाल लीला लालितुः, रिपु कुल काल केतु ।
सरणागत वज्र पजर, पचम लोकपाल मुद्रावतार ।
हसउ राजा । (पु० अ०)
सीमाल सवे वश वर्त्तिया किया, गढ़ सवे ढालिया ।
गढवई सवे निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा किया ।
समुद्र पर्यन्त आण फेरी, इणपरि एकत्र निःकट्कु राज्य परिपालइ । (पु० अ०)

५ राजा (५)

महाशासनु, अरड़क मल्लु, जग झपणु, प्रताप लकेश्वरु
पर राष्ट्रीक हृदय शल्यु ।
जसु तणइ प्रार्थित प्राण भिक्षा हुता राय ओलगइ
केइ हाथि दर्पण लियइ ओलगइ
केइ पुण स्त्रीवेश मुंडित कूर्च हुता ओलगइ ।
केइ दाते आंगलि लेइ ओलगइ ।
केइ वेला बाढ़ी ओलगइ ।
केइ कोढ कुहाड़इ ओलगइ ।
केइ लोटीगया ।
विंहु नाकेइ हाथु खालइ लोटइ ।
इसउ प्रतापी राजा । पु० अ०

६ राजा (६)

राजा आदित्य जिम प्रतापियउ, सिंह जिम सौर्य संयुक्त, हंस जिम उभय पक्ष विशुद्ध, हार जिम कामिनी वल्लभु चंद्रमा जिम कलावंतु, पट जिम गुणवंतु, घनद जिम श्रीमंतु, हस्ति जिम दानवंतु, मकरध्वज जिम रूपवंतु ।

७ राजा (७)

याचक लोकु कामधेनु, उग्र विग्राहक ।
राज सभा चक्रवर्त्ति,
नीति विधातु । साहसैक स्यातु,
जेह प्रसन्नु ।तेह धनदावतारु,
जेह प्रति कुपितु ।तेह कुपितातावतार,
दोष दरिद्रु । गुण द्रव्य ईश्वरू, परदोषान्वेषण जात्यन्ध । तत्त्वावलोकन सहस्राक्ष, परदोषोद्‌घाटन मूक ।सद्‌गुण ग्रहण व्यवदूक,
एवं विध राजा ॥१०७॥ (मु०)

८ राजा (८)

जसु राय तणइ खड्गि राज लक्ष्मी वसइ ।
सरस्वती जिहवाग्रि वसइ, वचनालापि अमृत वसइ ।
महाजन हुइं गौरव दरिसइ, सेवकजन मन संतोसइ ।
दीठउ आणंद करइ, तूठउ दरिद्र हरइ ।
रूठउं सर्वस्व अपहरइ, अन्याय तणी वात परिहरइ ।
कीर्त्ति कामिनी कामइ, देव गुरू मेल्ही कुहिहुइं सिर न नामइ ।
मधुर प्रसन्न मुख, इंद्र पदवी तणउ सुख ।
परनारी सहोदर, दान सन्मान सदादर ।
ऊचित्य चतुर, प्रतिपन्न वाचा सार ।
सर्वजन आधार, पंडित जन शृंगार ।
अस्खलित कीर्त्ति, सूर वीर विक्रान्त ।
परम स्फूर्ति
उदार स्फार मूर्त्ति ।
पाप निःकंदन, सज्जनानंदन । एवं विध राजा ।
उश्वातान् प्रति रोपयन कुसुमिता विन्वन लघून वर्द्धयन् ।
कुब्जान् कंटकि नो वहिर्नियमयन् विश्लेपयन् सहतान ।

अत्युच्चान्नमयन् शनैश्चवित तानुन्नामयन् भूतले ।
मालाकार इव प्रपच चतुरो राजा चिरं नंदतु ॥११७॥ (स० १)

९ राजा (६)

जसु राय तणइ खड्गि राज्य लक्ष्मी वसइ, जिह्वा सरस्वती वसइ ।
वचनालापि अमृत वरसइ, महाजन किहि गौरव दरिसइ ।
सेवक लोक मन सतोषइ, दीठउ आणद करइ ।
तूठउ दारिद्र हणइ, रूठउ सर्वस्व हरइ ।
नीति अनुसरइ, अन्याउ परिहरइ ।
कीर्त्ति कामइ, देव गुरु मेल्ही सिरूकुणहइ न नामइ ।
जसु राय तणइ आणदु मधुरु प्रसन्न मुख,
प्रीति तरगित मनु दान सन्मानु आलापु ।
अमृत सहोदरू, वचन कारूण्य रस कूप तुल्य,
उचत्य चतुरु वाचासारु ।
शौर्य्य उपशम श्री विलासु, तत्त्वविचारणैक फल बुद्धि ।
सर्वत्र विख्याति कीर्त्ति, सत्पात्र सेवा रसिक मंत्रि ॥१॥ पु० अ०

१० राजा (१०)

प्रतापि लंकेद्र, सत्यवाचा हरिश्चद्र ।
साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला कर्ण ।
वचन प्रतिष्ठा युधिष्ठिर, धनुर्वेद अर्जुन ।
आज्ञा अजयपाल, परनारी सहोदर गांगेय
निर्भय भीम, आपन्न सत्व जीमूतवाहन,
विवेकी नारायण, विद्या वृहस्पति ।
लावण्य लवणार्णव, रूपि कंदर्प, प्रतपि मार्त्तंड
औदार्य वलिराज, अद्भुत दानि चिंतामणि
सेवक जन कल्पतरु, चतुरंग वाहिनी समुद्र
सौभाग्य गोविन्द, ऐश्वर्य सुरेन्द्र ।
सिंह जिम सौर्यवत, चंद्रमा जिम कलावंत ।
शीलि सुदर्शन, विक्रमाक्रात क्षोणीमंडल
अतुल वल, पंचम लोकपाल
शरणागत वज्र पंजर, सकल वैरि महीपाल दुर्जर ॥५७॥ (स० १)

११ राजा (११)

छत्रीस राजाकुलीनो नरेश्वर, सहजैं अलवेसर ।
प्रत्यक्ष परमेश्वर,
कपालैं राज्य लक्ष्मी वसैं, मुख सरस्वती उल्लसैं ।
तूठौ दारिद्र हरै, दीठौ आनन्द करैं ।

१२ राजा (१२)

पीनोन्नत स्कंध, सत्य संध ।
कमल वदन, उज्ज्वल रदन । सुरभि निश्वास, लक्ष्मी निवास ।
सदल नासावंश, पृथ्वी पीठावतंश । प्रलंब कर्ण, सुवर्ण वर्ण ।
विशाल नेत्र । सर्व कला क्षेत्र ।
अष्टमी चंद्र समान भालस्थल, अनाकलित बल ।
कज्जल श्यामल केश पाश, सर्व जन पूरिताश ।
सत्यैकतान वृत्ति, उभय पक्ष निर्मल प्रवृत्ति ।
त्रिशक्ति समन्वित, चतुराज विद्या अलंकृत ।
जित पंचेंद्रिय विक्रम, षण्मुख सम विक्रम ।
सताग राज विराजित, अष्ट विध मद विवर्जित ।
नव निधानाकार, भांडागार ।
दश दिशि विख्यात नामासार, अेकादश रुद्रइ कलाधार ।
द्वादश दिवाकर, प्रताप विस्तार ।
त्रयोदश यक्ष कृत सानिध्य, चतुर्दश विद्यालब्ध मध्य ।
पंचदश तिथि दत्त दान, सोल कला संपूर्ण ।
सत दशक युसवना अभ्य व्यवहारक । अष्टादश द्वीप कीर्त्ति विख्यात ।
एकोनविंशति पाटण नायक, वीस विसा परोपकारक ।
दानी कर्ण, पवित्रता ऋतुपर्ण । उपक्रमि राम, पितृभक्ति परशुराम ।
राधा वेधि अर्जुन, रससिद्धि नागार्जुन ।
संग्रामि भीमावतार । शरणागत वज्र कुमार ।
द्रोणाचार्य धनुर्विद्यायां । सुश्रुत आयुर्विद्यां ।
आज्ञालंकेश्वर । न्याइ विभीषण । इस्यो राजा भूमि भूषण ।
तथा । प्रतिपन्न विंध्याचल, अगि भोगि मलयाचल ।
कीर्त्ति गंगा । क्षिमा गुण रत्न रत्नाचल ।
तथा नयन नंद वा चंद्र । पृथ्वी घर नागेंद्र ।

पराक्रमि कार्त्तिकेय, शत्रु सैन्य सैंहिकेय।
स्त्री जन रति पति, प्रतापि दिनपति।
ऐश्वर्य सहस्राक्ष विभूति धनद यक्ष।
रूपि अश्वनी कुमार, लोकवसंतावतार।
तथा। जस प्रतापि।
मध्य देसीय मूझइं। सौराष्ट्रीय सूझइं।
मालवीउ आच माडइ। मेवाड़उ मट छाडइ। कनूजो कापइ।
वाणारसउ नरकइ नही। मागध तणउ मुणकइ नहीं।
तिलंगु तडफडइ नारि। कलिंग तणउ रूलइ कोठारि।
मरहठु होठ दसइ। कुंकणउ हाथ घसइ।
तथा। जू राजा दिन गमनिका करइ।
किवारह आस्थानि किवारह देवस्थानि।
कही देहवासरि। क० अंतेउरि। क० सत्र उसरि।
क० राज पार्टिका। क० पुष्पवाटिका। क० सत्तागारि। क० वडइ प्रकारि।
तथा। जीणइ गीत प्रवृत्तइ तुंवरु ताल मुझइ, रंभा नाच मुंकइ।
हा हा हू हू डर फर किन्नर कान धरि। गधर्व गीत मुकइं।
स्वर्गइ देव साभलवा ढूकई।
तथा। जेह तणी दृष्टिइं दाधा पालुईइ।
त्रूटा सधाइं। भागा सझिईइं। सूका नीलाइइं। जीर्ण पुनर्नव हुइ।
अशक्त शक्त हुइ। बाधा छूटइ। कुकवि कल्प त्रूटइ।
दारिद्र जाइ। लक्ष्मी आमाइ। इस्पु सत्यवंत। सूर्यवंत। कलावत।
गुणवत। आकृतिमंत। दान पर। मान पर। ऋजु स्वभाव।
मृदु स्वभाव। गीत प्रिय। काव्य प्रिय। दक्ष दातार। विधु विचारज्ञ।
अस्खलित सासन। सार्व भौम। राजा चद्रातप राज्य करइ ॥छ॥

१३ राजा (१३)

राजा सूर्यवत
अखंड प्रताप, साख्यात कंदर्प चाप।
दुष्ट निग्राहक, शिष्ट परिपालक।
नीति प्रधान,[१] पुण्य प्रधान।

पाठान्तर—१ निधान

विवेक नारायण,
परनारी सहोदर,[१] भरै अनेक ना उदर।
पराक्रमवंत, दानवंत ।
सत्यवंत, सोमवंत ।
याचक जन कामधेनु,
एवं विध राजान ॥ चि०

१४ राजा (१४)

दान वीर, संग्राम धीर।
वैरी कुल खंडन, निजकुल मंडन।
सत्यवाच अविचल, अति गाढो अकल।
संग्रामे स्थिर, प्रतापै युधिष्ठिर ।
पर राष्ट्र द्वंदप सल्ल,
त्रीडी वयरागर, गुण रत्न सागर।
साहण समुद्र, दान खडै निर्जित दरिद्र।
कप्पूर धारा प्रवाह, अति स्वोछाह।
सेवक जन कल्प वृक्ष, अति दक्ष।
विचक्षण, छत्रीस लक्षण।
याचकजन चिंतामणि, राजा मंडल चूडामणि।
प्रतापै दिनेश्वर, गाढो मलवेसर।
इसौ जित शत्रु नरेश्वर ॥ चि०

१५ राजा शरीर वर्णन (१५)

राजा कर्ण, गौर वर्ण, लंब कर्ण ।
विशाल नेत्र, फूल गात्र।
उपराही रोमराय, हीएं श्रीवत्स, पाय पद्म, हस्त चक्र
एक अखंड प्रताप, ऊंचो लक्ष।
कटि लंक, मूल वंक।
इति शरीर वर्णनम् (चि०)

---

[१] सेवक जन वत्सल। इस प्रति में ऊपर लिखे प्रथम चितौड की प्रति के अंत में यह शरीर वर्णन भी लिखा है।

१६ महाराजाधिराज (१६)

जीह रायतणी आज्ञा पचाल देश स्वामी मस्तकि वहइ ।
नेपाल देश स्वामी, द्वारि रहिउ, प्रासाद लहइ ।
मलया देश स्वामी पाहुड़ पाठवई ।
द्रविड देश स्वामी वाज धयकउ ओलगइ ।
सिन्धु देश स्वामी पडपडो दिइ ।
कच्छ देश स्वामी दिवसोदव नगइ ओलगइ ।
गउड देश० कोठारि ओलगइ ।
मरहठ देश० वज्र पजरि खडहडइ ।
जालधर देश० पग पखालइ ।
सोरठीउ राजा आठील आस्फालइ ।
केई गोतिहरइ तडफडइ, केई लोह खडे खडावडइ ।
केई दाति आगुली लेई ओलगइ, केइ स्कधि कुठार घाति ओलगइ ।
कि बहुना जीणइ सीमाडा सवे वस कीधा ।
गढ सवे ढालिया, रिपु सवि निर्धाटिया ।
समुद्र पर्यंत आज्ञा पाठवो, अनेकि परि प्रजा सुखिणी कीधो ।
इण परि राजाधिराज राज्य करइ । ५६ । (स०)

१७ अहंकारी राजा (१)

अहकारी कहवा छई—

अटाला, अणियाला, पटाला, हठाला, मुछाला, मामला, करडाला, मरडाला, मछराला, मतवाला, मलपता, मरडता, मसलता, आखडता, अड़ता, आपडता, पडता, पाडता, पकडंता, अमीहता[1] बलवंता, बोलंता, बुद्धिवंता, रूपाला, रगीला, रसीला, रढीला, रेखाला, रतीला, रिद्धाला, सूरा, पूरा, छयल, छबीला, एहवा गुमानी राजा ।

ओष्ट युगलु फुरकावतउ, वचन विन्यासि खलतउ ।
भीषणाकार मुख करतउ, आरक्त लोचन धरतउ ॥
इस्यु राजा कुप्पउ ॥ पु०

१८ कुपित राजा (१)

कुटिल भ्रकुटि ताडी, चपेटा ऊपाडी ।

१. अतिहन्ता

३३ रानी वर्णन

तेह तणी कलत्र-जिसीरंभा, जिसी उर्वसी, जिसी तिलोत्तमा, जिसी अप्सरा, जिसी पातलांगना । इसी राज्ञी ॥ (पु०)

३४ मंत्री वर्णन

रूपि करी रूडउ, पाट प्रति नथी कूडउ ।
राउला अर्थ निधानु, विण भूझ पृथ्वी आपणी करइ,
अनेरइ राय नइ चउका सरि सरइ ।
अनेइ खंडि आस जगीस, ताडी वखाणयइ विश्वावीस ।
लोक ना कार्य समारइ, अने प्रजा उगारइ ।
वाद विग्रह राखइ, असत्य न भाखइ ।
शास्त्र कुशल, यशि करी निर्म्मल ।
प्रजा नउ पीहरु, अतिहि अलवेसकरु सविहु वुद्धि निधानु एहउ प्रधानु ॥ १८ ॥ जै० मु०

३५ मंत्री-वर्णन

तेमहाराय तणउ चतुर्बुद्धि विलासु, समस्त जन विहितोल्लासु ।
नीति शास्त्र विचक्षणु, विद्यामान सामुद्रिक लक्षणु ।
महाराय तणउ प्रतिशरीरु, अवर्णवाद भीरु ।
कनकमय मुद्रालंक्रियमाणु दक्षिण हस्तु, अति प्रशस्तु ।
मन्त्रिमंडलुमुखाभरणु, सकल राज सभालकरणु ।
अनेक साधित दुर्घट कार्य सिद्धि, महंतउ सुबुद्धि ।
तीणंपरि सुख सदोह भरि पंच प्रकार सौख्यसारु, परि पालइ राज्य सारु ॥

२७ रावण-वर्णन (४)

त्रिकूट पर्वतु, लंकापुरी समुद्र खाई ।
दश सिरु वीस भुजु, त्रैलोक्य कंटकु ।
रावण मंडलेश्वरु, तूठो ईश्वरु ।
........वरु, नवाणवइ कोडि राक्षस बल ।
नव कोड़ा कोड़ि नवकोडि नवाणवइलक्ष नवाणवइ सहस्र नवसई

नवोत्तर राक्षस कुल ।
कुंभकर्ण विभीषण प्रमुख बाधव लक्ष,
मदोदरी प्रमुख सवालक्ष अंतेवरी ।
इद्रयम मेघनाद प्र० सवालक्ष कुमार ।
असाली सूर्पनखा प्रमुख अढार बहिन ।
सातलक्ष बेटी, तेर कोडि चेटी ।
विहि बैइठी कोद्रवा दलइ, आदित्य रसोई करइ ।
भैंसा रूपी घंटवाजतेइ यमुदेवतापाणी आणइ ।
विश्वकर्मा सूत्रधारउं करइ, शुक्र दैत्यगुरू पोथी वाचइ, कथाकहइ ।
इन्दु माली रूपि फूल आणइ, साड छेहिखाट तणी उडाणी ताणइ ।
तेंतीस कोडि देवता ओलगकरइ, इठियासी सहस्र ऋषिश्वरपाणी परबभरइ ।
वेद उच्चरइ, शिव शान्तिक करइ ।
देवगुरु बृहस्पति आरिसू देखाड़इ, मगलू क्षेत्र खेडावइ ।
कामदेवु कडी कटारउ बाधइ, धनुषाग्नि बाण साधइ ।
महेश्वर पवन (?) वायइ, ब्रह्मा वीण वायइ ।
नारायण ·· ··· ·, पवन देवता धूलि बुहारइ ।
नवदुर्गा आरती उतारइ, गंगा यमुना वे चॅवर ढालइ ।
गणपति गोकुल चारइ, कृतान्तु कोट्ट राखइ ।
सनिश्चरू रसोई राधइ, जीव रति ढोलड़ी झाडइ ।
केतु भामणा भमाड़इ गोरी सणगार करावइ ।
लाछि वस्त्रु सत्तावइ, नवग्रह खाट पाइयेबाधा ।
· · ·· ····, धनदु भडारि भरइ ।
·········करइ, · · ····रावण राज करइ ।
सात समुद्र माजणउ करावइ, अढार भार वनस्पति फूल पगर भद्र ।
तक्षकु केडउ भंडारि पहिरउ करइ ।

हस्ती-वर्णन

आलान स्तभ मोडी, निवड लोह तणी शृंखला त्रोड़ी ।
पु तार पाड़ी, कपाट संपुट्ट फाडी ।
पडिहारु गाजी, वरण संबधीया त्रिगड़ा भाजी ।
वरंडा पाडतउ, माणस मारतउ, राउत रसाडतउ ।
अटाल टलटलावइ, हाट्ट हलहलावइ ।

आराम उन्मूलइ, ऊभा मनुष्य ऊलालइ ।
क्षत्रिय खलभलावइ, खंडगृह खड़हडावइ, धवलगृह धाकलइ ।
तरल तुरंगम त्रासइं, नाइका नासइं ।
इसु मूर्तिमंतउ कृतांतु महाकाय, पर्वत प्राय ।
सप्ताग मद प्रतिष्ठतु, देवताधिष्ठितु, त्रिदंड गलितु ।
सारसी करतु, मद प्रवाह झरतु ।
हस्ति राजु, निर्व्याजु ।
कृष्ण वर्णु, सूर्य्यमान कर्णु ।
लीलां साचरइ, जयश्री वरइ ।
परस्त्री परिहरइ, शत्रु वर्ग दलइ ।
पर मानु मलइ, कोपि वलइ ।
मही तलि चालतउ, मेघजिम गाजतउ ।
इसउ हस्तिराजु चाल्यु । पु०

१६ कोपातुर राजा (२)

कृत भीम भ्रकुटि उत्कट ललाट पट्ट घटित त्रिशूल ।
उत्पाटितु दृष्टि संपुट ।
दसन संदष्टौष्टः
प्रकम्पित देह यष्टिः
इणि परिराजा कोपि चडिउ । पु० अ०

२० रूठा राजा (१)

रूठो साते पताल फोडै,
रणागणि गयवर-तणीं गडी गाजै, शत्रु भड़ भाजै ।
दानेश्वरैं कर्ण तणो अवतार, धनुर्धरंइ अर्जुन प्राग्भार ।
जेह तणो अतुल भंडार, प्रवल कोठार ।
वडा जुझार, कटक तणो नहि पार ।
करै शत्रु संहार, महा उदार ।
एहवो पराक्रमी ।
अंजनाचल रैं कैलास पर्वत तणी पदवी आपी ।
यमुना तणै स्थानके कीधो गंगा प्रवाह । मित्रकीधा चंद्रनैराह ।
सरीखा कीधा हारनै नाग, अंतर टालियो वगनै काग । एहवो जाणवो ।।स ३०

२१ राजानाम

जितशत्रु, जितारी, जयसिह, जनक, जयराज, कनकभ्रम[१], कनककेतु; कनकसिंह, कुंभकर्ण, कुरु, मदनभ्रम, मदनसिंह, मदनकेतु, मदनवेण, मकरध्वज, मृगाग, महिधर, मन्मथ, विजयसिंह, वैरीसल्ल, वैरीमल्ल, वीरसेन, विजयकरण, चंद्रसेन, प्रजापति, पृथ्वीपति, पृथ्वीमल्ल, प्रतापसेन, महीसेन, एहवा राजान महाबलिया छै।

२२ चक्रवर्त्ती ऋद्धि (१)

नव निधान १४ रत्न, सोल सहस्रयक्ष, बतीस[१] सहस्र मुकुट वर्द्धन राय, ६४००० अंतःपुर, सवालाख वारागना, १४००० वेलाउल, ३२००० देश, २१००० सनिवेश, ५६ अतरद्वीप, ९९ सहस्र द्रोणमुख, ९६ कोडि ग्राम, ९६ कोडि पदाति, ४९ सहस्र उद्यान, १८ श्रेणि, १८ प्रश्रेणि, ८० सहस्र पंडित, १०० कोडि[२] कौटुंबिक, ३२ कोडिकुल १४ सहस्र चतुर्बुद्धि निधान, १४ मत्रीश्वर, ३२ सहस्र नव बाहरी नगरी, ४९ कुरराज्य आताप[३] सपात १६ सहस्र म्लेच्छ राय, १४ सहस्र मंडप[४], १४ कडबट[५] १४ सहस्र संधान, १४ सहस्रखेट, ४८ सहस्र पत्तन, १८ कोडि अश्व[६] ८४ लक्ष उत्तम गज, ८४ लक्ष रथ ७२ लक्ष पत्तन, ३६ लक्ष वेलाकूल, ३२ सहस्र प्रवर देश, ६४ सहस्र कुलागना[७], सवा लाख वारागना, ३२ भेद भिन्न नाटक, ३२ सहस्र आगर, ८४ लक्ष तालारक्षु, ८४ सहस्र सूत्रधार, सवा कोडि व्यापारिणः, १४ सहस्र जलपथ, २४ सहस्र कटक ३६० सूपकार।

अन्योपि श्रेष्टि सार्थवाह माडंबिका कोडंबिकादयः।
ग्रामो वृत्त्यावृतः स्यान्नगरमुरु चतुर्गोपुरोद्भासि शोभ।
खेट नद्याद्रिवेष्टं परिवृतमभितः कर्वटं पर्वतेन।

---

१ जनक भ्रम (स० ३)

१—१००० कोटि २—आपाताप सवात ३—मटव ४—सह कर्वट ५—मुउरु।

ग्रामैर्युक्त मटंबदलित दश शतैः पत्तन रत्नयोनिः।
द्रोणाख्यं सिधु वेला वलयित मथ सत्राधनं चाद्रि शृंगे।
इति चक्रवर्त्ति ऋद्धिः॥ (मु०)

पाठान्तर—१ छत्रीस २ १००० कोडि ३ आताप ताप सघात ४ मटव मटव ५ सहकर्वट ६ चउरासी लक्ष जात्य तुरगम अ त पुर ८ मुउरु

विशेप—बहुत्तरि सहस्र पुरवर, छत्रीस सहस्र जनपद चउवीस सहस्स कर्पट सोल सहस खेटक चउद सहस सवादन पचास करुयान अधिपत्य, पुरावृत्तित्व, स्वामित्व, भर्तृत्व अनुभवति॥ (अन्तिम) ६९ (स० १)

२३ वासुदेव राज्य (२)

केवडंउ राज्य वासुदेव तणउं
जिहां समुद्रविजय प्रमुख दस दसार।
पजून प्रमुख अहूठि कोडि कुमार।
शंब प्रमुख एक सहस्र दुर्दांत कुमार।
बलदेव प्रमुख पाँच वीर।
वीरसेन प्रमुख एकवीस सहस वीर।
उग्रसेन प्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा।
महसेन प्रमुख छप्पन्न सहस बलवंत।
रुपिणि प्रमुख सोल सहस अंतःपुरी जन।
अनंग (सेना) प्रमुख सोल सहस वेश्याजन ७० (स० १)

२४ रावण-वर्णन (१)

लंका नगरी राजधानी त्रिकूट पर्वत गढ़।
अनेक अक्षौहिणी दल, अढारकोडि तूर। जिणइ मृत्यु पातालि घाल्यउ,
नवग्रह खाट पाईयइ बाधा।
वाउ देवता आगणउ बुहारइ, बार मेघ छड़उ दीयइ।
वनस्पती फूल पगर भरइ, सूर्य रसवत्ती करइ।
चन्द्रमा घड़ी-घड़ी अमृत स्रवइ, यम देवता पाणी वहइ।
सात समुद्र माजणउ करावइ, सात सात रसा[1] आरती उतारइ।
विश्वकर्म्मा शृंगार करावइ, तेत्रीस कोटि देवता आस्थानि[2] ओलग आवइ।
गंगा जमुना चमर ढालइ, तुम्बर गीत गावइ।
सरस्वती वीणा वावइ[3], रंभा नाचइ, बृहस्पति पुस्तक वाचइ।
इन्द्रमाली, ब्रह्मा पुरोहित।
जीमूत रिषि छोरू खेलावइ।
कामदेव कटारउ बांधइ, वासुगि खटि पहुरउ दीयइ।
कुलिक उपकुलिक वेउ पाउ उलालइ, अर्द्ध प्रहर श्रीखंड घसइं।
वैश्वानर वस्त्र पखालइ, चाउँडा तलारउं करइ।
विधाता[4] कोद्रवा दलइ, गणेस[5] गर्दभा चारइ।

पाठान्तर—

१. मानस्त्री २. आन्वानि ३ वाजइ ४. विहि ५. विनायक

२५ (पुनर्वर्णकान्तरं लंकेश) रावणस्य ॥ २ ॥

पहिलउ त्रिकूट पर्वतनी विसमाई, पाखलि (अनी) समुद्रनी खाई ।
लका नगरी पाखलि गढ़, अति सदृढ ।
ओलगइ निन्नाणवइ कोडि राक्षस ना कुल, बलि करि अतुल ।
बाधव कुंभकरण विभीषण जिसा, बेटा मेघनाद, इद्रजित् जिसा ।
बहिनी असाली सूर्पणखा जिसी.
रावणनइ दस मस्तक, वीस भुज, ए वात साभली कुणहइं इसी ।
लाधउ ईश्वर नउ वरु, वाउ बुहारइ घरु ।
मेघ करइ छाटणउ, देवागणा करइ ऊगटणुं ।
यम देवता[1] पाणी वहइ, सूर्य देवता रसोई रहइ ।
ब्रह्मा वेद वखाणइ, इन्द्राणी केस ताणइ ।
गगा यमुना चमर ढालइ, नवदुर्गा आरती ऊतारइ ।
विश्वकर्मा सूत्रहारू करावइ[2], विश्वामित्र आभरण घटावइ[3] ।
मगल पडिउ क्षेत्र नीश्र परिवारइ, छइ ऋतु आपापणी ओलग सचारइ ।
देवता मिलि आगलि नाटक माडइ, विधात्रा कोद्रवा खाडइ ।
धनद भंडार भरइ, रावण इस्यउ राज करइ । सू० मु०

२६ रावण—(३)

लका राजधानी, त्रिकूट दुर्ग, जीणइ मृत्यु बाधी पातालि घालिउ,
नवग्रह खाट तणइ पाइयइ बाधा ।
वाउ देवता आंगणउ बूहारइ, चउरासी मेघ छडा छावड़ा दिइं ।
वनस्पति फूल पगरि भरइ, जमराउ भइसा रूपि पाणी वहइ ।
सातइ समुद्र स्नान करावइं, सात मातर आरती उतारइं ।
विश्वकर्मा श्रृंगार करावइं, शेषनाग राजछत्र धरइ ।
गगा यमुना चामर ढालइ, छइ रितु पुष्प पूरइ ।
सरस्वती वीणा वायइ, तुम्बर गीति गायइं ।
रभा तिलोत्तमा नाचइ, नारद ताल धरइ ।
आदित्य रसोई करइ, चद्रघड़ी २ अमृत झरइ ।
मगल महिषी दोहइ, बुद्ध आरीसउ दिखाड़इ ।
बृहस्पति घडियारउं वायइ ।
शुक्र मंत्री बइसइ, शनैश्चर पूठि पग देई खाट बइसइ ।

---

१. ममहण (महमहण =) २. अघरावइ ३. थटावइ (घड़ावइ) ।

३ कोस समुद्र खाई, दस सिर, वीस भुज, ३० सहस्र वर्ष आयु, २१ धनुष-उच्च, त्रैलोक्य कटक, रावण राजा जेहनइ—६६ कोटि राक्षस कुल, ६ कोडा-कोड़ि, ६६ लक्ष, ६६ सहस, ६०६ राक्षस वल, कुंभकरण विभीषण प्रमुख लक्ष-बाधव, मंदोदरी प्रमुख सवालक्ष अंतेउर, इन्द्रजीत मेघनादादिक सवालक्ष बेटा, ७ लक्ष बेटी, आसाली सूर्पनखादिक ८८ भगिनी, ३ कोडि चेटी, विहिक्रोद्रवा टलइ ।

८८ सहस्र ऋषि पर्व पाणी भरइ, ३३ कोडि देव ऊलगइं आस्थानि इंद्रमाली ।

ब्रह्मा पुरोहित पणउ करइ, भृगरी ति आचमन दिइ ।

जीमूत ऋषि छोरु खेलावइ, कामदेव कटारउ वधावइ ।

वैश्वानर वस्त्र पखालइ, कार्त्तिकेय तलारउँ करइ ।

चामुडा चाउरि संचारइ, विणायक गादह चारइ ।

अनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ ।

इसिउ त्रिभुवन सल्ल, महामल्ल, राणउ रावण । १-४ (स० १)

२८ राम-वर्णन

यथा क्षीर माहि गोक्षीर, जल माहि गंगानीर ।

पट्ट सूत्र माही हीर, वस्त्र माही चीर ।

अलकार माहि चूड़ामणि, ज्योतिषी माहि निशामणि ।

अश्व माहि पंच वल्लभ किशोर, नृत्य कलावंत मांहि मोर ।

गज माहि ऐरावण, दैत्य माहि रावण ।

वन माहि नदन, काष्ठ माहि चंदन ।

तेजस्वी माहि आदित्य, साहसी मांहि विक्रमादित्य ।

वाजित्र माहि भंभा, स्त्री माहि रंभा ।

सुगंध माहि कस्तूरी, वस्तू माहि तेजमतूरी ।

पुण्य श्लोक माहि नल, पुष्प माहि सहस्र-दल-कमल ।

सत्यवादी माहि धर्म्मपुत्र, ज्ञानी माहि ज्ञातपुत्र ।

बाण कला माहि अर्जुन, सूर माहि सहस्रार्जुन ।

उपगारी माहि जीमूतवाहन, देव माहि मेघवाहन ।

शीलवंत माहि नारद, रसायण माहि पारद ।

वृक्ष माहि सहकार, भोगेश्वर मांहि कृष्णावतार ।

दातार माहि कर्ण, धातु माहि सुवर्ण ।
देव माहि अरिहंत, ऋतु माहि वसंत ।
भोगाग माहि नारी, क्रीडाग माहि सारी ।
धान्य माहि चोक्ष, सुख माहि मोक्ष ।
नाग माहि धरण, मंत्र माहि परमेष्ठि स्मरण ।
पक्षी माहि हंस, भूषण माहि अवतस ।
शास्त्र माहि गीता, स्त्री माहि सीता ।
रूपवत माहि काम, तिम पूर्वोक्त गुणोपेत न्यायवन्त श्री राम ।

२९ सीता

प्रधान, सर्व गुण निधान । भर्त्तारनी भक्त, धर्म नइ विषइ रक्त ।
राम नइ प्रेमपात्र, सुंदर गात्र । शील गुल विभूषित, सर्वथा अदूषित ।
कमल नेत्र, पुण्यखेत्र, । जेहनी मीठी वाणी, सगले जाणी ।
रूपवन्त माहि वखाणी, घणु स्यू इंद्राणी, पणि जे आगइ आणइपाणी ।

(सू०)

३० दशार्णभद्र सवारी (१)

महा गहगहाटि हाटि हाटि गूडी ऊभवी, विविध वदन माल शोभी ।
विचित्र वर्ण संपूर्ण उल्लोच ताड्या, मनोहर मंडप माड्या ।
गृहि गृहि आरीसानी ओलि[1] झलकइ, काचन तणी किंकिणी खलकइ ।
स्थानकि स्थानकि सुवर्णमय पूर्ण कलश श्रेणि चड़ावी ।
नीसरिणीनी ओलि मंडावी, कल्याण झल्लरी तडावी ।
पंचवर्ण पुष्प प्रकर भरी, अविद्ध मौक्तिक चत्रक पूरइं ।
कृष्णागरु धूपहडी मेल्हियई, रंग नइ तरंगि रास खेलीयइ।
शृंगार सार रस गाइयइं, वीणा वंशादि वादि वाईयइं ।
पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गुंहली दीधी ।
मोती तणा झूंबखा झूबाव्या, माहि पद्मराग पटल लबाव्या ।
केलि ने स्तंभि तोरणि तिग तिगाव्या, दुर्गंध ऊपजता राख्या ।
मण[2] पगाम कपूर लाख्या ।
केसर कूंकूं तणा छडा छाबडा नीपना, कमलिनी कमाल सपना ।
छत्र चामर गहगहइं, केतकी दल परिमल महमहइ ।

१ उलि-२ मण गमे (गर्त)

इम सर्व नगर सश्रीक करी, सर्वांग भूषण धरी ।
हस्ति राजाधिरूढ, प्रतापि प्रौढ ।
पाखलि लाख खाडा तणउ भडिवाउ, मंडलीक तणउ समवाउ ।
गजेंद्रनी घटा, घोड़ानाथाट, पायक ना पहट ।
रथ तणी रामति, मेघाडंबर, छत्र नउ[1] आडंबरु ।
सीकिरि तणां झमाल, अलंब[2] तणा डमाल ।
भेरि तणे भाकारि[3], झल्लरी तणो झात्कारि ।
शंख तणो ऊंकारि, तिविल तणो दोकारि, मादल तणो धोकारी ।
ढोल तणो ढमढमाटि, पटहने गुमगमाटि ।
रणतूर ने रणरणाटि, घोडा तणा हीसाटि ।
गजेंद्र ने गड़गड़ाटि, राजा श्री दशार्णभद्र चालिउ । (स॰ १)

३१ राज-यश

जिसिउ चंद्रमंडल, जिसउ स्फटिक कोमल[1] ।
जिसउ क्षीरसमुद्र[1] जलु, जिसउ हिमाचलु ।
जिसउ विकसित केतकी दलु, जिसिउ प्रधान मोतीहारु[3] ।
जिसउ शेषफणा संभारु[4], जिसउ कामिनी कटाक्ष निकरु ।
जिसउ कास कुसुम प्रकर, जिसउ डिडीरु ।
जिसउ गोक्षीरु, जिसउ गंगा तरंग पूर[5] ।
तिसिउ महाराय यशः पूर ।

३२ राजा शोभा उपमा

सभा मांहि राजा बइठा थको सोभइ छै ते केहवो—
अक्षर माहि जिम ओंकार, मंत्र मांहि ह्रींकार ।
गंधर्व[1] मांहि तुंबर, वृक्ष माहि सुरतरु ।

---

१ तणउ २ अलवा ३ आकारि ।

पाठान्तर—

१ क्षीरार्णव २ जिस्यउ शरदभ्र जलु ३ जिसउ मल्लिका कुसुम प्राग्भारु ४ जिसउ हर हास्य प्रसारु ५ जिमउ कास्य कुसुम निकरु ।

—१ जैसलमेर प्रति से
२ पुण्यविजयजी अपूर्ण प्रति से

(१) स्फटिकोपलु

—पुण्य विजयजी अपूर्ण प्रति से

सुगध माहि जिम कपूर, ओत्सव माहि जिम तूर ।
वस्त्र माहि जिम चीर,......
वाजित माहि जिम भंभा, स्त्री माहि जिम रंभा ।
शास्त्र माहि जिम गीता, सती माहि जिम सीता ।
देव माहि जिम इद्र, ग्रहा माहि जिम चद्र ।
द्वीप माहि जिम जंबूद्वीप, प्रदीप माहि जिम रत्न प्रदीप ।
तिम सर्व छत्रीस राजकुली माहि राजा त्रइठो सोभै छइ ॥

३० राजा राज-वाटिका गमन

राजा राज वाटिका चालिउ, गजेन्द्र चडिउ[१] ।
पाखती अगरक्षक तणी ओलि, मडलीक नइ[२] परिवारि ।
पताका लहलहती[३], अजालबि[४] झलकतइं ।
मेघाडंबरि, छत्र तणइ आडंबरि ।
सीकरि तणइ झमालि, सुखासण नइ दड़वडाटि[५] ।
घोड़ा तणइ थाटि[६], पायक तणी पहटि ।
रथ तणइ चीत्कारि, भट्ट[७] बंदी तणइ जयजयारवि[८] ॥ ६१ ॥ (स० १)

३१ राज्य सुख

जीह नइ राज्य इसिउ सुख—
कुणहु सूता मुह न ऊघाडइं, पड़िउं को न ऊपाड़इ ।
आहा कोइ न बोलइं,......
आज्ञा कोइ न लोपइ, पराई भूमि कोइ न चापइं ।
चोर चरड का नाम को न जाणइ, आपणइ मनि शंका कुणह न आणइं ।
सोनूं उछालते हींडियइ ॥ ६० ॥ (स० १)

पाठान्तर—

(१) प्रलव सूडादड, स्थूल दत मुसल
विपुल कुंभस्थल चडिउ, (प्रथम पंक्ति के पूर्व, विशेष)
(२) तणइ (३) फुरकती (४) अलवी (५) अडमड (६) थाकि ।
(७) भाट नगारी तणइ कइवारि ।
(८) राजा राज वाटिका चालिउ (विशेष)

—पुण्यविजयजा की अपूर्ण प्रति से

३२ राजा को आशीर्वाद

"अथ देसोत नै आसीस वचनिका" ।

काइम कबंध, विरद धजाबंध ।

मोजा समंद, आचार इंद ।

दुरजोधण माण, अर्जुन बाण ।

भुजबली भीम, सूरति सींह ।

षट भाषा जाण, तप तेज भाण ।

विप्र गोपाल, लीला भोआल ।

वीराधिवीर, हेला हमीर ।

मधुकरि सुतन, कर्तव्य विक्रम ।

बासट्ठि हजार फोजांरा भाजणहार, छह खंड खुरासाणरा विध्वंसणहार ।

मसती[1] हाथियारा आमोड़णहार, पतिसाह रा विभाण[2]हार ।

राजनि के हार,

अरी साल, केताइक साल ।

लख दीयण, जस लीयण ।

राजा के राजा, तप महाराजा ।

इति आसीस वचनम् ।। (स० ३)

३३ पटराणी-वर्णन (१)

जिस्यो मोर तणो कलाप, तिस्यो केश कलाप ।

जिसी शोभा अष्टमी चंद्रमा, तिसी भाल चंगिमा ।

जिसी जोत्र मालिका, तिसी कर्ण पालिका ।

जिसी खंजरीट नी देह यष्टि, तिसी आकारि दृष्टि ।

जिसी पुष्प नलिका, तिसी नासिका ।

जिसा दर्पण तणा वलक, तिसा कपोल फलक ।

जिस्यो बिंबी फल, तिस्युं अधरोष्ट दल ।

जिसी दाड़िम कली, तिसी दंतावली ।

जिस्यो सूकड़ि तणो घास, तिस्यउ मुखं तणोउ वास ।

तिस्यु मुख तणोउवास ।

पाठान्तर—

(१) मगत हाथियारा मारणहार (२) विभाडण, परगाहण ।

जिस्यू पूर्णिमा चंद्र नो अवतार, तिस्यु मुख तणो आकार।
जिस्यूं दक्षिणावर्त्त शंख नूं मडल, तिस्यु कठ कदल।
जिसी कोमल मृणाल कदली, तिसी बाहु युगली।
जिस्या रक्त कमल, तिस्या चरण तल।
जिसी अशोक तणा दल तरली, तिसी अंगुली सरली।
जिसी पद्मराग मणि, तिसी नख तणी भुणी।
जिस्या मुकुलित सरोज, तिस्यो उरोज।
जिस्यु सिंह तणौ वाक, तिस्युं मध्य तणौं लाक।
जिसी नील वर्ण तणी युक्ति। तिसी सामल रोम पंक्ति।
जिस्युं गंभीर हुइ कूप, तिस्यूं नाभि नु रूप।
जिस्यूं हाथिआनुं कुंभस्थल, तिस्यूं जघनस्थल।
जिस्यो केलि तणौ मध्य भाग, तिस्यु उरु तणौ सोभाग।
जिसी वृत्तानुपूर्व शुंड हस्ति तणी, तिसी शोभा जघा तणी।
जिस्या कूर्म तणा पृष्ट भाग, तिस्या उन्नत पाग।
जिस्यौ रक्त गेरु तणौ पराग, तिस्यौ तला तणौ राग।
जिस्यौ कमल तणौ विकास, तिस्यौ लोचन तणौ प्रकाश।
तथा विकसित वदन, शिखराकार रदन।
सुललित कर्ण, चंपक वर्ण।
पीन स्तन, अकुटिल मन।
मुष्टिमेय मध्य, चतुःषष्ठि कला लब्ध मध्य।
कोमल कर, सुलक्षण धर
चक्राकार जघन, मत्त गज गमन। सुघटित चरण।
जेह तणी मुख चंद्रमा भामणुं कीजई, विकसित कमल नुं लुछंणु कीजई।

जेह तणी दृष्टि दृष्टिइं,··· ·· ····· ···············
निर्जित हरिणी वनवासि गई, कमलिनी जल दुर्ग रही।
खंजरीट दृष्ट नष्ट चरई, वेड़ी समुद्र माहि फरइ।
जेहनई स्तन सुवर्ण कलस प्रसादि चडाव्या,
चक्रवाक वियोगिआ भणाव्या। तुंबाहलूआधियां।
जेहना वर्ण आगलि सुवर्ण सामलउं। चापा फूल झामलउं।
हरिद्रामसि वर्ण। गोरोचन धूम वर्ण।
तथा। जेहना वचन रस आगलि साकर मउली, द्राख लींबोली।

मधु नीरस, दूध विरस ।
अमृत खारुं । अनेरुं । किस्युं उपमान विचारुं ?
तथा । कंत माधुर्य आगलि किंनरी मौन करइ गंधर्व गर्व परिहरइ ।
सिद्ध कन्या कानओडइ, नाग कन्या हरख लोडइ ।
रंभा सुरासक्त । तिलोत्तमा त्रिदिशानुरक्त ।
अप्सरा निःप्रसर, लक्ष्मी अस्थिर ।
सरस्वति हीन जाति लोपिणी, नागकन्या अवस्था रोपिणी ।
विद्याधरी, यामिावनी ।
ऋषि कन्या तपस्विनी, गंधर्वी गीत व्यसनिनि ।
रति प्रीति अनंगनी । कलत्र करेणु उपमा न दीजइ ।
निरुपम चरित्र । इसी सुपरीक्षित दक्ष ।
दाखि नालू, मिति मयालू, देण हारि दयालू ।
सुललित, सुमलित ।
न ह्रस्व, न दीर्घ, न कृश, न स्थूल ।
न तोखाली । न रोषाली ।
न हठीली, न गहिली ।
अनुकिंतु सुपरीछणी । सु बूझणी ।
विछूटणी सुमुखि, सउलखि ।
सुजाणि । सुपरीआणी ।
सुपरठी, भर्त्त, चित्त वइठी ।
सइणी, सुहिणी । असिथिल, अकुटिल ।
धर्म परा, नियम परा ।
इसी सीलालंकारिणी, गुणानुरागिणी । कला संग्रह कारिणी ।
विवेकवती, सौंदर्यवती ।
लावण्यवती, पुण्यवती, आकृति मति देवी वर्त्तइ ।
तिणीस्यूं राजा आनंद मय वर्त्तई ॥छ॥ (स० २)

३४—राणी-वर्णन (२)

ते राजा नै अंतःपुर मांहि प्रधांन, गुण निधान ।
भर्तार तणी भक्ति नै विषै[1] महासावधांन

पाठान्तर—

१—भक्ति निवेषइ ।

कमल लोचना इस्यै नामै वर्त्तै ॥ (स० ३)
तेरांणि, सहिजैं मधुर वाणि ।
शीलवंत माहि वखाणी, गुणै करी सत्य जाणी ।
वर्णू किस्युं इद्राणी, जे आगलि वहै पाणी ।
रहे घणै परिवारे, सखी अनेक प्रकारे । (स० ३)
लीलावती, पद्मावती, चद्रावती ।
चंपकली, फूलकली, रामकली, गोकली, स्यामकली ।
हंसी, सारसी, बगली ।
सुविधि प्रमुख इसि राजा नी स्त्री वर्णनं ॥ (स० ३)

३५—राणी-वर्णन (३)

सुवर्ण वर्ण, प्रलंब कर्ण ।
सुकमाल हस्त, स्त्री गुणै लक्षणै करी प्रशस्त ।
कमल दल समान आखड़ी, माथै रतनमय राखड़ी ।
देवागना नी परै रूप रूडी, हाथै सुवर्ण मय चूड़ी ।
लखमी अवतार, हृदय कमल रूलै मोती नो नवसर हार ।
लंकाली कडि, कानै मोती जड़ित सुवर्णमय घडि ।
बोलै अमृत वाणि, अति सुजाणि ।
पडित लोकै वखाणी, इसी मदनमजरी राणी ॥१४॥ (चि०)

३६—राणी-वर्णन (४)

रंभा जिम रूप सपन्न, पार्वती जिम निःसीम सौभाग्य लावण्य ।
अरुंधती जिम निजपति पद चरण निरत, धर्मरत ।
सीता जिम शीलालकार · · · · · ।
बीज तणी चन्द्रकला जिम सर्व वन्दनीय, अति कमनीय ।
चक्रवाकी जिम निश्चय, अति प्रेम, करइ पुण्य ना नेम ।
आलापि करी कोकिलारूप, गति करि राजहसी स्वरूपु ।
विनय गुणि करी वेतसमय, मनि शुद्धि करीय गंगोदक मय ।
इति राणी वर्णन ॥५८॥ (मु०)

३७—राज्ञी-वर्णन (५)

अद्भुत भाग्यवती, सौभाग्यवती ।
पट्ट प्रतिष्ठावती, सत्वानुष्ठान वती ।

निर्मल शीलवती, उज्वल गुण झलकती ।
लावण्य निधान, अंतःपुर प्रधान ।
निष्कलंक, अकृत पाप पंक ।
सुकर्तव्य सज्ज, सलज्ज ।
विदित कार्य, पूजिताचार्य ।
औचित्य चतुर ।
पाप कर्त्तव्य कातर, सकल लोक मातर ॥६०॥ (स० १)

३८—राज्ञी-वर्णन (६)

सर्व अंतेउरी माहि प्रधान, सर्व गुण निधान ।
लावण्य कूप, अति स्वरूप ।
भर्तार नी भक्त, धर्म नइ विषइ रक्त ।
सुंदर गात्र, राजा नइ प्रेम पात्र ।
सर्वथा अदूषित, शील गुणे भूषित ।
कमल नेत्र, पुण्य क्षेत्र ।
सत्य गुणि कसी, रूप गुण उर्वसी ।
सुवर्ण वर्णकात, दीठइ आवइ देवागना सभ्रांति ।
स्नेह कला रति, भारती सम मति ।
सौभाग्य हंस तलाइ, कनक चूड़ि मंडित कलाई ।
सदा सनूरी, कामदेव पूरी ।
त्रिभुवन तत्व माटी, अमृत बिंदु साटी ।
पुण्यतणी वाटी, अतिरंग दाटी ।
रूपइं रति निर्घाटी, न करइं राटी ।
लावक, द्रावक, सावक ।
ऐरावण कुंभ विभ्रमाकार स्तन, त्रस्त हरणी लोचन ॥
मदन मुद्रावतार, प्रलंबित हार ।
क्षीण कटि, अति सुघट ।
जेहनी मीठी वाणी, सगलै जाणी ।
रूपवंत मांहि अधिकी वखाणी, घणूंस्युं इंद्राणी,
'धीर' कहइ जे आगइ घडउ ले आणइ पाणी ॥
इति राज्ञी वर्णन ॥—कु०

३९ कुमार वर्णन (१)

असम साहसैक मल्ल, वैरि हृदय सल्लु ।
अग्र प्रहारि धाडी तिलकु, त्रैलोक्य कंटकु ।
कृतान्त मूर्त्ति, सिंह स्फूर्त्ति ।
इसउ दुर्दान्त कुमरु ॥७६॥ (मु०)

४० कुमार (२)

अति प्रौढ, यौवनाधिरूढ ।
स्त्री जन नइ विश्राम भूमि, निरवद्य विद्या लास्य रंगभूमि ।
सर्वांगीण शुभकारु, राज्य लक्ष्मी श्रृंगार हारु ।
मकरध्वजावतार, एव कुमार ॥५६॥ (मु०)

४१ राजकुमार (३)

तयोश्च पुत्रो जनि । यौवन प्राप्तः सन् ।
जिस्यउ चद्रमा नु बिंब कोरिउ हुइ । जिस्यउ अमृत कुण्ड न्हाई होई ।
जिस्यउ कमल तणउ कोश आवरिउ हुइ । जिस्यउ कि मोहनवल्लि प्रसविउ हुइ ।
कि सौभाग्य मजरी हू तु सभव्यु हुइ । कोदंड तणउ फूल हरु ।
किं काति तणी कुल भीति । कि ए रूप-प्रतिछंदक तणी मूलगी रीति ।
कि मयण तणु मूल । किं सर्व रामणीयक तणउ अवचूल ।
इस्यु नयनानद दाईउ । नेत्रामृत आविउ ।
सुललित सुघटित ।
सुवासु सोहग निवास ।
अद्वितीय रूप, लावण्यामृत कूप ।
सर्वजन मोहक, मन नइ अद्रोहक ।
[सुकुमाल, सु विशाल ।] सुविचार,
[जोअण हार । तणा मन विहसइ, दृष्टि जाइ अगि पइसिइ ।]
पाय थभीइ, वाणी निरुभीइं ।
[सयल रोमंचिइ । आत्मा अपूर्व रस सींचिइ ।]
[जाणे बीजो कामावतार, जाणेत्रीजु अश्विनिकुमार ।]
जेह तणइ नाम श्रवण लोक काकुली गीत निवारइँ ।
दृष्टि प्रसारि काय कथा मूकइ, कान उरडी ढूकइ ।

तृषित पाणी न पीइं । भूखा भोजन न लीइं ।
इस्यु सर्वजन वल्लभ, देव दुर्लभ ।
सलूणउ सदाखिणउ ।
मित्र वत्सल, स्वजन वत्सल । इस्यउ राजकुमार शोभइ ॥छ॥
इति नगर राजादि वर्णन स्वरूपमिदं ॥छ॥ (स० २)

४२ राजकुमार (४)

अति लखणवंत, गाढौ संत ।
सकल शास्त्र भण्डार, राजवंश शृंगार ।
रूपइ करि जयंत अवतार, विवेक सुविचार ।
पिता माता भक्त, लक्षण संयुक्त ।
सकल विद्या निवास, करै बहुत्तरि कला अभ्यास ।
बत्रीस[1] लक्षण लक्षित शरीर, पहिरणि निर्मल चीर ।
जेह नी लोक नै गाढी हीर, संग्रामे वीर धीर ।
चंपक वर्ण अंग, अति सुचंग ।
नश्चल रण रंग, न करै मंत्री भंग ।
अति दातार, प्रताप अपार ।
मनोहार, याचकजन साधार ।
इस्यौ राजकुमार ॥ १६ (चि०)

४३ कुमार (५)

प्रतिज्ञा सूरू, अवष्टंभ कैलासु ।
राजपुत्र पतल्लिका, बंदि कोलाहलु ।
लोकरक्षा प्राकारू, माहात्म्य सारु ।
परनारी सहोदरु, इसउ कुमरु ।
पायक पहट्ट, ऊठवणि सुहड्डु ।
खाडा समुद्दु, त्राण सड्डवड्डु ।
सेल धूसरु, भाला डंबरु ।
रिण महाधरु, अतिशय दुद्धरु ।
इसउ कुमरु । (पु० अ०)

---

[1] छत्रीय

४४ राजपुत्र शिक्षा–

राज्याभिषेक पुत्र शिक्षा ।
वत्स प्रजासुखि पालेवि, अन्याय वाट टालेवी ।
भलउ न्याय आदरवउ, जसवाउ उपार्जेवउ ।
चिर परिचितं वार ही परहीन करेवी, कुणाहि विश्वास न जाण विउ[1] ।
अकुलीन पसाउ निसेधववउ, वेजाइ संसर्ग वर्जेवउ ।
महाजन समानेवउ, मंडलीक प्रति उचित्य वर्त्तेवउ ।
सीमाला सवेऊस सत्य[2] राखेवा, लोक रूडइ नीति मार्ग दाखिवा ।
चोर चरड निग्रहेवा, पायक प्रति यथा योग्य ग्रास देवा ।
किं बहुना राज्य भलउं करिवु । (१५५) (स० १)

४५ राज्य के अंग–

करि, तुरग, रथ, पायक, चतुरगसेना, भाडागार, कोष्टागार, गढ ।
सप्तांग राज्य लक्ष्मी ॥ १२६ (स० १)

४६ राजसभा (१)

गणनायक, दण्डनायक । सेगरणा, वेगरणा । देवगरणा, यमगरणा । सामंत, महासामत । मंडलीक, महामंडलीक, । चोहट्टीया, मुकुट बन्ध-संधिपाल सधि विग्रही[2], आमात्य, कानुगा, कोटवाल, सार्थवाह, महाजन, अगरक्षक, पुरोहित[3], नृत्यनायक, विहीवायक । दण्डधर, खड्गधर ।

बाणहीधर, छत्तधर, चामरधर, छत्तधर, दीवीधर ।

प्रतिहार, सेजपाल, तंत्रपाल, अगमर्दक, मीठाबोला, साचाबोला[4], कथाबोला, गुणबोला, समस्याबोला ।

साहित्य बंधक, लक्षण बंधक, अलकार बधक, नाटक बधक ।

यंत्रवादी, मत्रवादी, तंत्रवादी, तर्कवादी एहवी सभाछै ।

---

१. जाएवउ २. सता

पाठान्तर

१ पारिविग्रही २ वहीनायक ३ पड़वडियात, कपटायत ताकतमाली (ढाकढमाली) इंद्रजाली धर्मवादी, धातुवादी–

४. सहसबोला विशेषनाम, सभाश्रृंगार से ।

४७ राजसभा (२)

युवराज, मंत्री, महामंत्री। गणनायक, दण्डनायक, तंत्रपाल। मांडविक, कौडंबिक, श्रेष्ठि, सार्थवाह, पंडित सभा, ज्योतिष्क, प्रमुख राजसभा। (पु० श्र०)

४८ राजसभा (३)

राजराजेश्वर, मण्डलेश्वर।
सामंत मंत्रि, महामंत्री।
चौरासीकट नायकु, सेनापति प्रतिहारु, उपतारु।
साहणिया, मसूरिया, दीवटिया, द्वारवट्टि, दौवारिका।
संधिविग्रही, भांडारिक, महाजनिकु, श्रेष्ठि सार्थवाह, सभ्यसभापति, एवं राज-
लोकु ॥ १०६ ॥ (मु०)

४६ राज सभा वर्णन (४)

श्रीगरणा वयगरणा, धर्माधिकारणा।
मंत्रि,महामंत्रि, मंडलेश्वर।
सविधान, प्रधान, नायक, दण्डनायक
संधिविग्रही, श्मसाहणी। सुविचारु, प्रतीहार
आ (र) क्षक, जद्वारिका कथक, लेखक।
गायण, वायण। वीणाकार, वंसकार। ज्योतिष्की
वैद्य, महावैद्य। गजवैद्य, अश्ववैद्य।
मांत्रिक, तांत्रिक। कुतगीया, काठीया। प्रखर, सत्पात्र, नट, विट।
इसी राजसभा ॥६॥ (मु०)

५० राज सभा (५)

अनेक गणनायक, दंडनायक, राजेश्वर, तलवर, माडविक, कौटंविक। मंत्री, महामंत्रि, गणक, दौवारिक। आमात्य, चेटक, पीठमर्दक, श्री गरणा, वयगरणा, श्रेष्ठि, सार्थवाह, दूत, संधिपाल, प्रतीहार, पुरोहित, थईयायत, सेनानी। अनेकि संधिविग्रही, त्रिघरणी, चउघरणी। पंचउली, खट्तर्क विदुर, सात सेजवाल, आठ ग्रह गण जोसी, नव पडिहार, दस प्रति सुवर्णाकार, इग्यारा सामंत बार महा मंडलेश्वर, तेर पसाइता, चउद चडियाता, पनर पडंतार, सोल महा मसाणी, सतर आडणीया, अठार भूभार, अगुणीस माणिक्य विनाणी, वीस रत्न पारिखी। परिवारि परिवारिउ राउ सभा बइठउ ॥५८॥ (स० १)।

५१ राज सभा-(६)

सभा माहि रामण काचढालिउ[1], कुंकमतणा बडा छाबडा दीधा।
कस्तूरिका ना स्तनक पडिया, श्री खंडुतणी गूंहली दीधी।
काचइ कपूरि स्वस्तिक पूरिया, अविद्ध मोती तणा चउक पूरिया।
परवाला तणा नंदावर्त्त रचिया, अंतरातरा पुष्प प्रकर भरिया।
कृष्णागरु ऊखेविउ, पचवर्ण पट्टकूल तणा उल्लोच ताडिया।
मोतीतणी श्रेणि त्रिसरी चउसरी लबावी।
मोर पीछ तणे वीजंणे वाउ बींजियइ। ५६। (स० १)

५२ जवनिका

राजहंस, मोर, सभा, आतपत्र-केतु, भवन, वृक्ष, अबर, नदी, पुष्करनी, जल-निधि, रत्न, सरोवर, वाडि प्रमुख लिखीते रूप।

एवं विधि आश्चर्य विराजमान।

५३ मंत्री वर्णन (१)

सरस्वती कंठाभरण, राज्य श्री अलकरण।
विचार चतुर्मुख, कृत सर्वजन सुख।
लघुभोज, अत्यत ओज।
कूर्चाल सरस्वती, साक्षाद्भारती।
कलिकाल कल्पवृक्षावतार, समस्या सत्रागार।
खाडेराय, करइ न्याय।
षड दर्शन पारिजात, सर्व राजकुली विख्यात।
समग्र[2] ग्राम नगर चैत्य पूजा प्रवर्त्तक, अन्याय निवर्त्तक।
सकल ज्ञाति[3] अलकार, सुविचार, उदार, स्फार, शृङ्गार।
सचिव चक्र चूडामणि, प्रताप दिनमणि।
सरस्वती पुत्र, आचरण पवित्र।
दातार चक्रवर्त्ति, अपहृत जन आर्त्ति।
बुद्धिइ अभयकुमार, रूपि कदर्पावतार।
चतुरिमा चाणक्य, मंत्रिगण माणक्य।
सदैवोत्साह, ज्ञाति वराह।
ज्ञाति गोपाल, दूबला मुंसाल।
शत्रुवंश क्षय कारक, वैरिराज मान मर्दक[4]।

---

१ काव २ सन्मार्ग प्रवर्तक ३ ज्ञान ४ सारक

मजा जैन, अप्रतिहत सैन ।
जिनधर्म धरा धुरंधर । भोग पुरंदर ।
सर्वज्ञ शासन प्रभावक, जिन आज्ञा प्रतिपालक ।
कुल क्रमागत, सदाचार रत ।
लीला ललित गर्भेश्वर । साक्षात् लक्ष्मी वर[१] ।
जग ज्येष्ठ, अति श्रेष्ठ ।
चतुर्बुद्धि निधान, एवं[२] विध प्रधान । (सू०)

५४ मंत्री (२)

चाणक्य जिम बुद्धि निधान, राज्य भार स्वीकार मूल स्तभायमान ।
चतुरशीति मुद्रा व्यापार परिपालन दक्ष, सकल लोक कृत रक्ष ।
अभयकुमारु जिम राज्य पालनोपाय सावधानु,
बृहस्पति जिम निखिल नीति-शास्त्र जाणु ।
एवं विधु मंत्री ॥ ६० । (मु०)
सरीर सकलापु, स्नेहांग आलापु ।
आडंबर मूल, रिपु जन सिरि सूल ।
उपरोधि नमइ, सर्व जनी कउ वीनवइ ।
समय कहावइ, असमय रहावइ ।
कूड नी सारइ, आलू आरु वारइ ।
प्रयोजन पृच्छकु, चालतउ उच्छकु ॥ ६१ ॥ (मु०)

५५ मंत्रि वर्णन (३)

चाणक्य जिम बुद्धि निधान, अभयकुमार जिम राज्य राखिवा सावधान ।
बृहस्पति जिम निखिल नीति शास्त्राधिगत परमार्थ,
चउरासी मुख मुद्रा मथन दक्ष । सकल लोक कृत रक्ष ।
राजार्थ प्रजार्थ ।स्वार्थ कारक । अन्याय निवारक ।
एवं विध महामात्य ॥ छ ॥ (स० २)

५६ महामात्य वर्णन (४)

चतुर्बुद्धि निधानु, महा प्रधानु ।
कुल क्रमागत, सदारत ।
नीति शास्त्रिकरी, सगुण धीर ।

---

१. नरेश्वर २. स्वामिधर्म सावधान (पाठ यहाँ अधिक हैं ।)

अलुब्ध, प्रबुद्ध ।
सर्व राज्य उद्वहन धुरंधरु, पुरवरु ।
लीला ललित गर्भेश्वरु, ज्ञाने करि साक्षात् लक्ष्मीवरु ।
जग ज्येष्ठ, अति श्रेष्ठ ।
सुविचारु, उदारु ।
एवं विध महामात्य ॥ ३ ॥ (मु०)

५७ मंत्रीश्वर (५)

अच्छेद्य, अभेद्य, गुहीर, गभीर ।
आकृतिमंतु, कलावन्तु ।
मर्मज्ञ, उचितज्ञ, सर्वार्थ करण समर्थ ।
उद्यम प्रधान, सर्वमहिमा निधान ।
बुद्धिमय रहर, जग झपणु ।
राजार्थं स्वार्थ, लोकार्थकारक, न्यायशास्त्र तारक ।
गंभीर धीर स्थैर्य मदर, गुणग्राम सुंदर ।
षड् दर्शन दत्ताधार, निरीह, निस्पृह, योगीन्द्रावतार । अमात्य ५६ (स० १)

५८ मंत्री विरुदानि (६)

सुरताण सुभाग्रत, दीवाण दीपक ।
अश्वपति, नरपति, गजपति, रायस्थापनाचार्य ।
राज सभालंकार, राजसूत्र सोधन सूत्राधार ।
रायसाधार, रायबदी छोड ।
राय वालेसर, मर्यादा मनोहर ।
परनारि सहोदर, कलिकाल निकलंक ।
विचार चतुर्मुख, रूपरेखा मकरध्वज ।
वज्राक भालस्थल, चतुः चिन्तामणिः ।
वाचा अविचल, बालधवल ।
शील गंगाजल, गोत्र वाराह ।
उभय कुल विशुद्ध, एकोत्तर शत कुलोद्योतकारक ।
उभय कुलपद्म निर्मल, राजहंसावतार ।
हर्षवदन, सत्यवाचा युधिष्ठिर । इत्यादि मंत्री विरुदानि । (स० ४)

५९ प्रतिहार

शरीरि सकलाप, स्नेहल आलाप।
आडंबर मूल, रिपुजन शिर शूल।
अपरोधि मनइ, सर्वनाकुल वीनवइ।
समय कहावइ, असमय रहावइ।
कोप वीसारइ, अलू आरु वारइ।
गुप्त आदेश प्रयोजन पृच्छक, चालतोच्छेक।
एवं विध प्रतिहार ॥ छ ॥ (स० २)

६० मंडलीक

संग्राम सीहु, रिण सीहु, महेन्द्रसीहु।
संग्राम विक्रम, नरविक्रम, रिण विक्रम।
संग्राम मल्ल, रिणमल्ल, भवनमल्ल।
पृथ्वीमल्ल, आसा मंडलीकः। (पु० अ०)

६१ खड़ायत

ठाकर भक्त, वाड सक्त।
सयरि त्राणयनु, पडवइ प्राण इतु।
हाथ वासइ।
वाह खाडा तणी काल, आत्रणी अकल।
आगलीउ साहंकार, भाट तणो जय-जय कार।
फरड उड़वइ, माथउं मीडवइ।
पयसी बोलावइ, सामहउ चलावइ।
धाई गाजइ, खांध भाजइ।
एवं विध खडायत ॥ छ ॥ (स० २)

६२ राज सेवक

तसु राय तणइ आसन्न ओलगा पसायता पायक आन छइ।
कवहणइ चउद चयाल वृत्ति पलइ छइ।
कवहणइ सोलसइ (वृत्ति) पलइ छइ।
कवहणइ वीर मुठियल (वृत्ति) पलइ छइ।
कवहणइ वीर वलकु (वृत्ति) पलइ छइ।
कवहणइ सासणबद्ध गामु (वृत्ति) पलइ छइ।

कवहणइ सुखासण (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ चउखंडी सीकरि (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ सुवर्णमय कलस पलइ छइ ।
कवहणइ धज त्रिन्धु पलइ छइ ।
कवहणइ पताका० ,,
कवहणइ घंटा० ,,
कवहणइ चमर०
"कवहणइ आगच्छीता शृंगार०"।
कवहणइ भुंजाई रुप्यमय स्थालु प०
कवहणइ शालिउ कूरु । ,,
कवहणइ रू.........(पु० अ०) (पत्राक ५ वा अप्राप्त)

६३ सुभट

साहण समुद्रु, वयरि घरट्टु ।
विपक्ष कटकु, चहुच्छ मल्लु ।
धाडी तिलकु, दगदेक वीर ।
इसा सुभट । (पु० अ०)

६४ गढ (१)

गढु गरुउ, अनइ विसमउ,
जसु तणा पाइया पातालि पइठा, भीति गगनि गई,
महागज इसा कोठा,
गरुई पोलि, निवड़ कपाट, लोहमइ भोगल, ऊपरि कसीसा तणी पंक्ति, विद्याहरा तणी पद्धति, यंत्र तणी श्रेणि, ढीकुली तणी परंपरा, गढ बाहरि वा कवला मणा तणउदुर्ग्ग, खाई तगउ दुर्ग्ग, जल तणउ दुर्गा, थल तणउ दुर्ग्ग,
अनइ परचक्र तणउ प्रवेश नहीं, हाथिया ढोह नहीं, पाखरिया रहण नहीं, सूयण थानक नही, पायल वाह नहीं, नीसरणी ठाउ नही, भेद सभावना नहीं, जिसउ वज्र खटितु, विश्वकर्मा निर्मापितु हुइ ।
किं बहुना ! पराक्रम असाध्यु,
बुद्धि मंतह अयोग्य, देवह्वइ असाध्यु इसउ गढु । (पु० अ०)

६५ गढ (२)

किलास जिम उंचउ । प्रधान प्रतोली द्वार । सघर कपाट । लोह मय भोगल विजय हरी तणी बरज ।

कोठा तणी पद्धति यंत्र तणी श्रेणी । ढीकली तणी परंपरा ।
खाई गढ़ । पाणी गढ़ । कटक तणउ गढ ।
वैरी तणो प्रवेश नहीं । हाथीआ तणो ढो नहीं ।
पाखरीआ रहण नहीं । भेद सभावना नहीं ।
जिस्यु व˜ मय घड़िउ हुइ ।
घणुं किस्यु । अेक अ॰
देवता रहि अगम्य । गढ प्राकार ।। छ ।। (स० २)

६६ गढ़ (३)

गढ़ गरूअउ अनइ विसमउ ।
जीह तणउ पायउ पातालि पइठउ, पर्वत नइं शृंगि बइठउ ।
उच्चैस्तर पोलि, लोहमयकपाट, महाकाय भोगल ।
विजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी श्रेणी ।
कुली तणी परम्परा, जल निभृत खाई तणउ दुर्ग ।
पर प्रवेश नहीं, हाथिया ढोउ नहीं, पाखरिया रहण नहीं ।
नीसरणी ठाउ नहीं, भेद सम्भावन नहीं ।
जिसिउ वज्र घटित विश्वाकर्मा निर्मापित ।
कि बहुना देवइ हुइं अगम्य ।।५५ (सं६ १)

६७ आस्थान-मंडप (१)

आस्थान मंडप, लोभ ऊपनउ,
कवणु सुभट संग्राम रसिक हूतउ, भुंइ आहणिउ, ऊठइ छइ,
केऊ घसइ छइ, केउ प्रलयकालु समान टंकार मेल्हइ छइ,
अट्टहास्यु नीपजावइ छइ, केऊ वक्षस्थला परामारश छइ,
केऊ खवा फुरकावइ छइ, के भुजाडंडनिरहालइ छइं,
केऊ भ्रकुटि ताडइ छइ, केऊ नेत्र आरक्त करइछइ,
केऊ खडगि दृष्टि निवेसइ छइ, केऊ कटारइ हाथु घालइ छइ,
इणिपरि आस्थानु क्षुभियउ । (पु० अ०)

६८ आस्थान सभा (२)

पुरोहित । सेनापति । तंत्रपाल । दंड नायक
श्री गरणा । वइगरणा । मध्यगरणा ।
देवगरणा ।-आखंडली । धर्माधिकरणी ।

कानड़ा । महीअड़ा । सोरठा । मरहठा । राठउड़ । बारहट । भाड़िआ । भयाड़िआ । जालधर । काश्मीर । मालविआ । प्रमुख सुभट । कोटि । संकट । अेवं विध लोक अलंकृत अस्थान सभा । (स० २)

६९ गज वर्णन (१)

सिंघलद्वीप तणा, अंगमइ गुण घणा ।
भद्रजातीक प्रचंड, उल्ललित सुंडा-डंड ।
पर्वत समान, जलधरवान, चपल कान ।
मदजलभूरता आलिकरता, अतुल बल उच्छृंखल गलगर्जित करता ।
सप्ताग प्रतिष्ठित, प्रमत्त, मदोन्मत्त ।
प्रचंड उदंडी विंध्याचल, समान,
कज्जलवान ।
कोपारुण, जाणे साक्षात ऐरावण, अविचल दंतूसल ।
छूटा हूंता पर्वत प्राय गढ़ पाडइ, कुणातिह स्यु पइसइ आखाडइ ।
कुंभस्थलि सिंदुर नउ पूर, अनइ ऊपरि कर्पूर ।
सुवर्णमय साकलि करी अलकर्या, गजवरत्रा पाखर्या,
च्यारि शय चौयालिस लक्षणे अनुसर्या ।
रूप्यमय घंटानाद, जेहना जगत्र सगलइ जयवाद ।
पगिघोर, करइ सोर, श्रम करता दीसइ जाणे लक्ष्मीना क्रीडा मोर ।
जि वारइ कुंडलाकारि रमइ, ति वारइ इस्युं जाणीयइ जाणे पृथ्वी पद्मिनी ऊपरि भमरडा भमइ ।
इस्या काइ हलूयइ फिरइ, परीक्षकना हृदय माहि संचरइ ।
सारसी करता, जय श्री वरता ।
इस्या अनेक प्रवेक, उत्तुंग मतंग । सू.

७० गज वर्णन (२)

सप्ताग प्रतिष्ठित, सुंडा डंड परिकलित ।
सुगंध मदजल वासित, गजेन्द्र गु······ ।
······ विंध्याचल समान, कज्जल वान ।
चपला कान, लावण्य विधान ।
प्रमत्त, मदोन्मत्त ।
तेजकरी प्रचंड, साख्यात मार्तंड ।
कोपारुण, जाणे ऐरावण ।

विस्तीर्ण कुंभस्थल, अविचल दंतूसल ।
कुंभस्थलि सिंदूर, अनइ ऊपरि कपूर ।
परित्यक्त सकल, दोष सजल ।
जलधर गर्जित, गंभीर निर्घोषित ।
महा साहसीक, भद्रजातीक ।
चार सय चम्मालीस गुणे अणुसरया, सुवर्णमयी साकल करी अलंकरया ।
मद झरता, आलि करता ।
हालता चालता, जाणि करि पर्वता ।
शत्रुदला पालता, ईत भय टालता ।
रूप्यमय घंटानाद, जेहना जगत्र सगलइ जयवाद ।
छूटा हुता पर्वतप्राय गढ पाड़इ, कुण तिहस्यु पइसइ आखाड़इ ।
पगि घोर, करइ सोर, श्रम करता दीसइ, जाणे लक्ष्मी ना मोर ।
जिगरइ कुंडलाकारि रमइ, ति वारइ सुइ जाणीयइ जाणे पृथ्वी पद्मिनी ऊपरि भमरड़ा भमइ ।
इसा काइ हलुअइ फिरइ, परीक्षक ना हृदय माहि संचरइ ।
सिंहल दीप तणा, अंगमइ गुण घणा ।
सारसी करता, जयश्री वरता ।
इसा अनेक, प्रत्येक ।
उत्तंग, मत्तंग ।

७१ गजवर्णन (३)

मदोन्मत्त, सप्तांग प्रतिष्ठित । भद्रजाती, चतुर्दंती ।
पर्वत प्राय, महाकाय । प्रसारित सुंडादंड, समर सागर[1] तरंड ।
मद प्रवाह झरइं, भूमंडल भरइं ।
जयलक्ष्मी वरइ, वैरिवर्ग दलइं ।
पर मान मलइ[2], कोपि चलइं ।
स्थूल दंत मुसल, विपुल कुंभस्थल । ५० (स० १)

७२ गजवर्णन (४)

गढ गंजणु, अमर वल्लभु, विंभ माणिक, अरि प्रसक्कु ।
चउदंतु, मेरुआलि भयंकरु, अरिकेसरि
सहजगेलि, हमीर मर्दनु । इसा हस्ति । (पु० अ०)

१ सारग २ परमानद मिले ।

७३ गजवर्णन (५)

किसा ते हाथीआ ?

सिंहल द्वीप तणा । भद्र जातिक । उल्लालिक सुडादंड ।
पर्वत समान, जलधर वान, चपल कान । मदजल झरता, आलि करता ।
अतुल बल, उत्संखल । गलगर्जित करता । २ ॥ (स० ५)

७४ गजवर्णन (८)

गजनाम—

गणेशावतार, गजगाह, गजराज, गज मंडल, गजसुंदर, गजजग, गढभंजण, गढदीपक, पौलिभंजण, दलदीपक, दलमंडण, भुइ वादल, गजशोभन, भोगी नायक । सदा सुरग, रण अभंग । सिदुरीआ भाल, मोत्या री झाल । सोना री ढाल, गलइ घूघरमाल । पेटझरता, मदवहता, चीकार करता, अभिनवा परवत सरीखा देही रा माता । एहवा हाथी छई[१] । (कौ)

७५ गजवर्णन (६)

गज मदावसर

लोहनी साकल त्रोडइं, आलान स्तंभ मोडइ[२] ।
हस्तिशाल भाजइ[३], पडंतां गांजइ ।
कमाड़ फाड़इ गढ़ मढ मंदिर पाड़इ ।
हस्तिनी यूथ स्मरइ । ....
व्यंध्य मन माहि धरइ, नगर माहि साचरइ । ५१ (स० १)

७६ अश्व वर्णन (१)

निमास्ति मुख मंडल, लघुतर स्तब्ध कर्ण युगल ।
(अत्यन्त चपल), विस्तीर्ण हृदय स्थल ।
उद्धुर स्कंघ वंधुर, विशाल पृष्टि प्रदेशि मनोहर ।
हेंशा रवि करी वधरित भुवनोदर,
अनिवार्य्य वर्य्य तेजः प्रसर । सकल जीव लोक विस्मय कर, (अनेक गुणधर) ।

१—गजभग, गजभजन, गज-दीपक, गजजीपक, गढखडण, गले घंटा री माल ।
चाले अगड़धत्ता, पिलवान करै हत्ता हत्ता । इति विशेष पाठ (स ३)
२ रण सग्राम नै विषे दौडै, गुमान जोडै ।
३ अनेक दुश्मन नै गाजइ । (स० ३)

परमित मध्यदेश, स्थूलतम पश्चिम प्रदेश ।
स्निग्ध रोम राजी विराजमान, अति प्रधान ।
चंद्रावर्त्त भद्रावर्त्त, प्रशस्ते समस्तावर्त्त परिकलित शरीर, संग्राम शौंडीर ।
झांप, टांप । राग, वाग । अर्द्ध फल गति विशेषि । प्रवीण, धुरीण[१] ।
चतुः शत लक्षण समवाय, पर्वतोत्तुंग काय ।
समुद्र कल्लोल जिम चंचल, सर्वत्र प्रांजल ।
वेगि करी पवनोपमान, उच्चैश्रवा समान ।
असमान रूप विलास, सलील चरण विन्यास ।
शालहोत्रादि शास्त्र प्रणीत, जाणइ असवार चीत ।
मान संस्थान संपन्न, प्रशस्य देशोत्पन्न ।
राज्याभ्युदय करण, सदा जय लक्ष्मीशरण[२] ।
रेवत देवताधिष्ठित, पंचधारादिकाश्व[३] ।
गति समाश्रित, सुवर्ण संकला विभूषित[४] ।

किस्या एक ते[५]—हयाणा, भयाणा, कूदणा[६], कासमीरा, हयठाणा, पइठाणा, उत्तरपंथा, पाणीपंथा[७], ताजा, तेजी, तोरका, काछेला, कांबोजा, भाडेजा ।

क्षेत्रशुद्ध, प्रमाण शुद्ध, चंपल, ऊँचासणा ।
जोइउ सहइ, वपूकार्‍या रहइ, वांकी द्रेठी, सभर पूठि ।
छोटे काने, सूधे वाने । मुहि रूधा, आसणि सूधा ।
हसमसंत, हय हेषारवि अंबर वधिर करता ।
सूरवीर साहसी, आम्हां साम्हां मिलइ धसि ।

कालूया, किराडिया, किहाडा, नीलडा, कविला, धूसरा, मांकडा, हांसला, जांबूया, दोरीया, चोरीया, शालिहोत्र शास्त्र लक्षण प्रणीत ।

---

१. विराजित जीण । २. प्रधान चरण । ३. देवाधिष्ठित रेवंत, पंचम धारावंत । ४. नृत्य कलानी विषइ उचित, ५. हिव, तेहना, देश, कहियइ सुविशेष । ६. कूंकणा ७. कनोजा कुहका, कावेला, सुकराणी, खुरसाणी, सतेजा, खरिंगा, तिलगा एहवा तुरंगा ।
ते केहवा, घणुं वखाणियइ जेहवा—

टीलइ घणा । दृष्टचोर, करडखोर । पीलडा, रातडा ।
कनोजडा, भागउडा, मेघ वरणिया, हिरणिया, अगंजिया ।

हासला, वांसला, चलइ उद्धांछला । अंबुआ—(कु०) में विशेष ।
+ प्रति (मु०) का पाठांतर—देशसम्पन्न, कालाभ्युदय कारण, अतिमारण ।
सदाजयवाद, लक्ष्मी संपन्ना, क्षेप विक्षिप्त ।

ससइ, घसइ, साटि पइसइ । जुडइ, दुडइं ।
इस्या अनेक हृदयंगम, तुरंगम । सू०

७७ अश्व-वर्णन (२)

परिमित मध्य प्रदेश, विशोष्टोभय प्रदेश ।
निष्ठुर खुरो श्वात भूमंडल, निर्मासल मुख मंडल ।
स्तोकतर कर्ण युगल, विशाल वक्षस्थल ।
हेषारव वधिरित भुवनोदर, मनोहर दर्पोद्धुर ।
सग्राम सोंडीर, समुद्र कल्लोल चचल । ४६ (स० १)

७८ अश्व-वर्णन (३)

काछी, कंबोजा, कलुजा, कश्मीरा, कसेला, काबरा, कमेत, काला, पंचाला, अणियाला, हंसाला, हरियाला, हयाणा, भयाणा, पतंगा, उत्तंगा, उनगा, जलगा, पाणीपंथा, उत्तरपंथा, ऊर्धपथा, अधोपथा, पइठणा, तेजाला ।
लोहधार न मुडइ, ऊँचै आसण भड़इ ।

धूंसरा, भूंसरा, माकड़ा, वाकडा, राकडा, खुरसाणी, तुरकी, नीलड़ा, पीलड़ा, धोलडा, जलबाधी, भरेजा, खेचरा, खेतरा खरा (त), नासै परा, आखडता अनिहंता, रिधाला, जुवाधिया । (स० ३)

७६ अश्व-वर्णन (४)

तेजी उरडा । गह्वर तोरा । खुरासाणा । भयाणा । हयाणा । रोहवाल । रुडमाल । तोरकामंद कोरा । पीलुआ । भादिजा । दक्षिण पंथा । पाणी पंथा । मांकड । नीलड़ा । कीहाडा । गंगाजल । सिंधूआ । पारकरा । पारसीका भद्रेश्वरा । काबूआ । इसी घोडा जाति । पु०

८० अश्व-वर्णन (५)

अथ अश्व लक्षणानि
नरागुलानि द्वात्रिंशात् । मुख भाल त्रयोदश ।
अष्टाङ्गुल शिरः कर्णौ । षडगुलमितौ मतौ ॥ १ ॥
चतुर्विंशत्यंगुलानि । हयस्य हृदय तथा ।
अशीतिश्च समुछ्रये । परिधिस्त्रिगुणो भवेत् ॥ २ ॥
एतत्प्रमाणसयुक्ता । ये भवति तुरंगमाः ।
राज्यवृद्धिमहीपस्य । कुर्वंत्यन्य स्व वाछितं ॥ ३ ॥
अेकः प्रमाणे भाले च द्वौ द्वौ रध्रापरध्रयोः ।
द्वौ द्वौ वक्षसि शीर्षे च ध्रुवावर्ता हये दश ॥ ४ ॥

(स० २)

८१ अश्व-वर्णन (६)

क्याहड़ा, खूगड़ा, नीलड़ा, हरियाड़ा।
सेराहा, हलाहा ऊराहा, वराहा।
सिरि खंडिया, वोरिया।
इसा अनेक जाति तणा तुरंगम अश्व॥
रूपि हीरउ, कंठि हीरऊ।
माणिकउ, फटिकड़उ।
रेवंतु जयवंतु। विसालु, सुकमालु, सावष्टंभु, गरुयारंभु।
गंगाजलु, संसारफलु। इसा नामांकित घोड़ा॥ (पु० अ०)

८२ अश्व-वर्णन (७)

केहाड़ा, नीलड़ा, हरियाड़ा,। सेसहा, हराहा, वराहा।
कोहाणा, भायाणा। ताई, तुरगी।
ऊचसिया, पीचसिया।
झाटकिया, झोटकिया। खोलाविया, मल्हाविया,
लडाविया, पुलाविया। सरला, तरला। छोटकर्णा, एकवर्णा। ५२ (स १)

८३ अश्वी-वर्णन

जइ हुई घरि व्याउर[1] घोड़ी, तउ घरस्युं दारिद्रय काढीइ झाड़ी पखोड़ी[2]।
पुण प्रिय जोइ लीजइ, दरिद्रहइं जलांजलि दीसइ[3]।
वरस मइ दीसि वियाइ, घरि घणी ऋद्धि थाइ।
लाखीणउं जिणइ, घणी हुइं डाकुर मानइ गिणइ[4]।
जिहनइ घरि घोड़ा सुजाति, देसि विदेसि[5] तिहनी विख्याति।
किसोरो[6] साखीइं पृथ्वी प्रमाणइ, वात सहु को बोलइ ऊखाणइ।
द्रव्य कइ घोड़ी नइ कोटि, कइ वउणि नइं खोटि[7]।
घोड़ी साखियइ एह कारण, जिम्र घणियाणी पिहरइ सोनाना मुण[8]।
एह स्युं कूडूं, वर दीसइ घोडे नि रूडूं।
नइ तूसइ रेवंतु, तउ वेगउ आणिइं दारिद्र नूं अंतु। (मु०)

८४ ऊंठ-वर्णन

गोली वीतली रउ, लांबी नली रउ।
जाडै गोडइ रउ, ससा सेरीयइ वगला रउ।

+ एकर्णा

१. च्यार २. मझोड़ी ३. दीजइ ४. धणीनइ ठाकुर ढूंढा माहि गिणइ ५ परदेस
६ किस्रउ रउ ७. कई राजवीनी श्रोटि ८. श्रकीर्त्ति निवारण।

सिघोडा जेहे ईडर रउ, वाजवट आठूआ रउ ।
लाखेरी रंग रउ, कुंमराले थूंभे रउ ।
........., लटीयाले पूछ रउ ।
वलिवीं फींच रउ, लांबे गडदाणइ रउ ।
कोरीयइ कान रउ, सोपीयइ दात रउ ।
रतनाले आखि रउ, दमामा जेहइ कोपट रउ ।
गाले म्रिहुं गूंजतउ, ... ।
लाम्राण इरे (दूरे),
भामण ज्युं नेसे चसड़का करतउ,... . .. ।
धसला देतउ, ऊंठ तउ इसउ ।
ऊभ्रर सूभ्ररा चडण रउ । (कु०)

८५ रथ-वर्णन

चारु चीत्कार कलित, विशाल सालभंजिका शालित ।
धवल पताकाचल मालित, विचित्र चित्र परम्परा विराजित ।
पर पथिनी निर्दलन । ७३ (स० १)

८६ शस्त्र-वर्णन (१)

१ चक्र	२ धनु	३ वज्र	४ खड्ग
५ कृपाणी	६ तोमर	७ कुंत	८ त्रिशूल
९ शक्ति	१० पासु	११ मुग्दर	१२ मषिका
१३ भल्ल	१४ भिंडमाल	१५ गुरुज	१६ लूठि
१७ गदा	१८ शंखी	१९ परशु	२० पट्टसु
२१ यष्टि	२२ सपन	२३ पठसु	२४ हल
२५ मुशल	२६ कुलिस	२७ कातरि	२८ करपत्र
२९ तरवारि	३० कुद्दाल	३१ यत्र	३२ गोफण
३३ डाहिणि	३४ सडसिका	३५ कुहाड़ी	३६ लिपुंख

इति दंडायुधानि । १२५ । (स० १)

८७ शस्त्र-वर्णन (२)

सिल्ल, भल्ल, वावल्ल, कुत, करवाल, तीरी, तोमर, नाराच, अर्द्धनाराच, चक्र, शंख, शक्ति, क्षुरप्र, दुस्फोट, कोदंड, हल, मुशला, गदा, तरवारि, कातरि, शस्त्रिका, खड्ग, मुग्दर, तद्दल, भिंडमारि । ११५ । (स० १)

८८ शस्त्र-वर्णन (३)

तरवारि। त्रिशूल। नाराच। कौशल। कृपाण। चक्र। कुंत। सब्ब। गंडीव। सहापट्टि। मुसंढि। गदा। मुशल। लकुटी। मुग्दर। छुरिका। शस्त्री। कस। अर्द्धचंद्र। कर पत्र। वाण। यष्टि। असि पत्र। क्षुरप्र मुखी। अर्द्ध मुखी। भिंडमाल। तोमर। भल्लि। लांगल। पाश। परश। क्षुर। विस्फोट। वज्र। शक्ति। मूल। भल्लल। सबला। इत्यादि शस्त्राणि। (स० २)

८६ शस्त्र-वर्णन (४)

हथनाल, हवाई, हल, मुंशल, चक्र, नाल, गदा, गुरज, गेडि, गोलो, गोफण, गुपती, फरसी, तरवार, तीर, तरकस, कटारी, कसी, कुद्दाल, कबाण, कोकबाण, काती, भाला, बरछी, बगतर, पाखर, अकुश, अणी, छुरी, साकल, दारू। इत्यायुध।[1]

६० शस्त्र-वर्णन (५)

तीरी, तोमर, नाराच, अर्द्धनाराच, भल्ल, सिल्ल, बावल्ल, कुत, खङ्ग, छुरिका[1] तरवारि, यमदंष्ट्रा, पटह, फुरसी कर्त्तरी, धनुष, शींगिणि, चक्र, शक्ति, गदा, मुद्गर, गर्ज, त्रिशूल, फलक, ओडण[2] प्रमुखा। (स० १)

६१ शस्त्र-वर्णन (६)

छुरसार लोहतणी घणी, पौगर मेल्हती, वीजनी परि झलकती, तीन्ही धाराली, बढ़ाली, अणियाली पइसारुई, नीसारुई। ७४ (स० १)

६२ छुरीकार

हाकइ, ताकइ। दड़इ, दावरइ। ऊधसइ, विहसइ। हणइ, धुणइ। पुलइ, मेल्हइ। उविलइ, रहइ। हंसइ, घुरकइ। चड़इ, पड़इ, अडवड़इ। हुलइ, दुलइ। छुरीकार। (स० २)

९३ धनुर्धर

सामितणु वयरु, नव यौवन शरीरु।
सीगणि तत्र अभ्यासु, आगुलि तणउ प्रासु।
सौर्य वृत्ति तणी गांठि, उधसि झांटि।
जोइ त्रिविविध गणु, लाखइ बाणु।
हाथ वावरइ, भवरडं वीसरइ।

---

१ फासी। वज्र, त्रिशूल, मुदगर, बड, बगदो, ढाल, चक्रवाण, कुठ—इति विशेष (स० ३)

१ चुरिक २ उडण।

समरु साधइ वेझउं वीधइ ।
कोसीसा उतारइ, निटोल मारइ ।

६४ योध-पायक

जेह तणुं जाणइतुं कुल, स्वामि तणु बल ।
आगलि आचार चालइ, थोड्ड बोलइ ।
छइ दर्शन नमइ, ठाकरहिं गमइं ।
संग्रामि युद्धर, परनारि सहोदर ।
पागे काम करइ, स्वामि काज मरइ ।
रणि वइरी नइ हाकइ, हथीआर ताकइ ।
बोलावी दिइ घातइ, जाणइ युद्ध तणु उपाय ।

६५ युद्ध-वर्णन (१)

बिहु पखा दल मिल्या ।
सर्वत्र धूलि-पटल ऊछल्या ।
कोई आप-पर बूझइ नहीं ।
न जाणीइं आपुदल
सर्व एकंकारु प्रतिभासइ ।
केतलउ गज सारसी करतउ जाणियइ ।
तुरंगम हेषारवि जाणियइ ।
रथ चीत्कारि जाणियइ,
विंधि पताका जाणियइ,
किंकिणी नारि जाणियइ,
सुभट मनोरथ मालियइ,
हीन हृदय ना शस्त्र ऊदालियइ ।
तुरंगमे खुरे करी पृथ्वी दलीइ ।
काहली त्रडत्रड़इं ।
प्रहारि जर्जरित खड़हडइं ।
कबध धरा पड़इं ।
राजपुत्र घोड़ चडइं ।
सूरवीर गहगहइ,
कातर डहडहइ ।
विंध लहलहइ,

सेनानी महमहइ ।
धड़ झूझइ,
इतर मूझइ ।
एकि खड्ग काढइ,
एकि गज तणी वस्त्र वाढइं ।
अनेकि शस्त्र झलहलइं,
हाथिआनी गुढि ढलइं ।
कायर खलभलइं,
घोड़े पाखर गणणइं ।
विहित सर्व जन डमरि,
इसइ समरि ॥ ७१ ॥ (मु०)

९६ युद्ध-वर्णन (२)

बिहुँ पखा वृहत पुरुष साचरिया
क्षेत्र सूड़ावियउ
बिहुं पखा सन्नद्ध बद्ध नीपना
सुभटे पाखर लीधी
मयगल गुडा सुण्डि-दण्डि मुहवड़ घाता
पंच वल्लहा किशोर पाखरा ।
जाति तुरंग पलाणा ।
रथ पाखरा ।
वीर पुरुष महा सुभट प्रगुण नीपना ।
केई आगि लोहमय आंगी करिउ मस्तकि सिरि कुनिसि ओ हुआ संग्रामोद्यत ।
केइ परिकर संपूर्ण लौह चूर्ण हुया सोत्साह ।
केई आबद्ध तोणीर वीर हुया युद्ध प्रगुण ।
सेवागत राजान चक्र हुयउ सावष्टंभु
चक्रव्यूह गरुड़ व्यूह तणी रचना नोपनी ।
आगवाणि सीगडीया तणी श्रेणी ।
पश्चात् भागि फारक मंडल तणी पद्धति ।
तदनंतर हस्ती घटासीत्कार करती ।
पाखरा तणी श्रेणी हेषारव मेल्हती ।

बिहुं पखा पंच शब्द तणा निर्घोष उछलेवा लागा ।
रणतूर्य वाजेवा लागा ।
नीसाणे घाय वलेवा लागा ।
बिहुं पखे भाट पढेवा लागा ।
बिहुं पखे सुभट तणा सिंहनाद प्रवर्त्तेवा लागा ।
सिल्ल भल्ल वावल्ल नाराच प्रमुख प्रहरण पडेवा लागा ।
बिहुं पखे हाकि २, हणिउ २, मारि २, नाठउ रे २, भागउ रे २, आव्उ रे २
इणि परि सुभट शब्द नीपजेवा लागा ।
गयण आच्छ-दियं । आदित्य किरण निरुद्धा ।
तेतलइ समइ कूटेवा लागा कपाल ।
भाजेवा लागा धनुर्द्दण्ड ।
जाएवा लागा शिरःखण्ड ।
पड़ेवा लागी खाडा तणी झड ।
बाजेवा लागी सुभट तणी काटकड़ ।
नाचेवा लागा भड़ कबंध ।
फोटिवा लागा धज विंध ।
त्रूटेवा लागा खड्गफल
नासेवा लागा कायर दल ।
इसइ संग्रामि सुभट गाजइ ।
कायर थरथर धूजइ ।
वीरे बाधी कसणि ।
कायर झूरहि खणि खणि ।
कुंभ सेल लीजइ ।
कायर खीजइ ।
वीर तणा भाला झलकइ ।
कायर तणा मन टलकइ ।
पंचन्दि पड़ घाय ।
कायर भणइ पाय पाय प्रसके जाइ ।
निसाण, कातर तणा पड़इ प्राण ।
दल आघा खिसइ ।
कायर खूणे खुसइ ।
दल हियरइ वड़इ ।

कायर तक्खणि पड़इ ।

दल आफलइ, कायर खलभलइ ।

भड़ भूझइ, कायर मूझइ ।

भड़ मेल्हइ प्रहारु ।

कायर जोय वारु ।

वीरह मुडी पड़इ ।

कायर पींडी चड़इ ।

तिणि संग्रामि हृदय दृढु करी सन्नाहु करिउ ।

एक मनु धरिउ ।

खाभनी खणीउ ।

पय घरट्टु बांधिउ ।

बाण सांधिउ ।

रिणि राजा चढिउ ।

जिहा धूलि पटल सर्वत्रइ ऊछलिया ।

कोइ आपु पर विभागु न बूझइ ।

पिता पुत्र न सूझइ ।

न जाणियइ आत्मदलु ।

न जाणियइ हाथिया तणइ गुलगुला-रवि ।

तुरंगम तणइ हिणहिणकारि ।

रथ तणइ चीत्कारि

भाट नगारी तणइ कयवारि ।

इसइ समरि भरि वर्त्तमानि हूतइ

सुहड़ सूडइ, सगुण हाथि लूडइ ।

रथावली उथिलावइ, मउड़बद्धा माकडु जिंव खिलावइ ।

पाखरिया थाट हणाइ ।

दल समदाय भाजइ, दलवइ गांजइ

सत्रु स्कंधावार तणा कंद ।

समग्र तृण समान करिउ गणइ ।

इसउं संग्राम ।

चहल कुंकुम तणाइउ छड़उ दीन्हइ

कस्तूरिका तणा स्तवक पडिया

भावना श्रीखंडहणी गूंहली दीन्ही

काचइ कर्पूरि स्वस्तिक भरिया
अवीधा मोती तणा चउक पूरिया ।
प्रवालाघोखंडे नंदावर्त्त रचिया ।
अंतरा २ पुष्फ तणउ प्रकर भरियउ
कृष्णागरु ऊखवियउ ।
पंचवर्ण पाट्ट पटुला तणा ऊलोच बाधा
मुक्ताफल सबन्धिनी त्रिसरी मोतीसरी लंबावी
राजा स्वयमेव आस्थानु दे बइठइ
मोरवीछ तणे वाउ वीजणे वाउ खेपियइ छइ
ऊपरि सजल जलद पटलाय मान मेघ डंबरु धरिओ
मस्तकि त्रिशेखरु मुकुटु रचियउ
दीप्ति विनिर्जित मार्त्तण्ड मंडल कर्णि कुंडल निवेस
वक्षस्थलि स्थूल मुक्ताफल ग्रथित सर्व सारु नवसरउ हारु लम्बावियउ ।
सहस दलु हस्ति कमलु, निरुव करु पाय टोडरु
पुरुष प्रमाणु सिंहासनु कटी प्रमाणु पादपीठु, पश्चिम दिग्ग विभागि थईयायठु
वाम प्रदेशिमंत्रि, जीवणइ पुरोहितु । बिहु पक्खइ अंगरक्ख तणी ओलि ।
सर्वत्रइ कावड़िया फिरिया । तेतइ समइ सुपहुत्तउ ॥
जोड काहली तडपडइ
सार उठिया हाथि गड़यड़इ
सीगी तणा शब्द कल्लोल ऊछलइ
नीसाण घाइ वलइ
तुरंगम तणा हिणहिणाकार
सुभट तणा त्रापूकारु
घंटा हणा टंकार
कवीहणा झकार हूया
वीर सिरि पट्ट बाधा
फरीहणा मंडप ठाडा
खाडा तणा समुद्र विस्थारा
कंडोरण कोठारु भरिया
सुभट तणी पाटी भरी
आरेणि तणी सूत्रण धरी
प्रलय तूर्य वाजेवा लागा

वीर मोदला रण ऊणेवा लागा
असी परि संग्रामु प्रगुणु हूया । (पु० अ)

९७ युद्ध वर्णन (३)

सीमाड़ा सवे वसि कीधा, सवे गढ लीधा ।
गढवई सवे निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा कीधा ।
समुद्र लगइ आपणी आण फेरी ।
एकछत्र निष्कंटक राज्य प्रतिपालता संग्राम विषय कदाचित् उपजइ ।
बिहु पखा वृद्धपुरुष साचरिया ।
क्षेत्र सुडाविउं, बिहुंगमा सन्नद्ध बद्ध नीपना ।
सुभटे जरहि जीण साल लीधी ।
मयगल गुड़िया, सुंडादंडि मुद्गवडि घातिया ।
पंच वल्लह किसोर पाखरिया, जाति तुरंगम पलाणिया ।
वीर पुरुष महा सुभट प्रगुण नीपना ।
चक्रव्यूह गुरुडव्यूह तणी रचना नीपनी ।
अगेवाणि सीगडिया तणी श्रेणी ।
पछेवाणी फारक तणी पद्धति ।
ततो हस्ति घटा सीतकार करती ।
पाखरीया नी श्रेणि हेषारव मेल्हती ।
पंच शब्द तणा निर्घोष जमला उछलइं ।
रणतूर वाजइं, नीसाण घाय गाजइं ।
बिहुं गमे भाद पढइं ।
बिहु गमे सुभट तणा सिंह नाद हुवा लागा ।
सिल्ल भल्ल तीरी तोमर नाराच प्रहरण पड़वा लागा ।
बिहु पखाहा कि २ हिणि हिणि मारि २ नाठउ २ भागउ २
इण परि सुभट शब्द नीपजावइ ।
गयण आछादिउ, सूर्य किरण रूंध्यां ।
तेतलइ समइ फूटेवा लागा कपाल मंडल ।
ाजेवा लागा धनुमंडल, जाएवा लागा शिरः खंड ।
पड़वा लागी खांडा तणी झंड, वाजेवा लागी सुभड़ तणी काटकडि ।
नाचेवा लागा धड़-कवंध, पडिवा लागा ध्वज चिंध ।

प्रहार जर्जर कुंजर पड़इ ।
सुनासणा तुरगम तड़फड़इ, भाले भरडीता गजेद्र आरडइं ।
रीरीया करता राउत हथियार हलइं, घाइ घूमिया सुभट ढलइं ।
पडिया पाइक न उसासीयइं, हिवा हाथीया आश्वासीयइं ।
मउड़उ धाम उड़वडइ, रेवत रडवडइं ।
पड़िश्रा पचायण नी परि हाकइ, रोस लगी मुंछ भूंछफरकावइ ।
रथ चक्र चापीति करोड़ि कड़कड़इ, वेताल हडहडइ ।
भाग्यवंत जय लक्ष्मी वरइ, आपणउ काज करइं । १२२ (स० १)

६८ युद्ध-वर्णन (४)

वीर मादल वाज्या, सूर साज्या ।
जय ढक्क वाजी, नीसत नीकली गया लाजी ।
त्रंत्रक त्रहत्रहायइ, नेजा लहलहायइ ।
त्रिभुवन टलवलवा लागा, माहोमाहि वइर जाग्या ।
सूर्य्य आछदिउ, रजो गण उन्मादिउ ।
सेष सलसलिउ, दिग्गज हलवलिउ ।
आदि वराह घुरहरिउ, उच्चैश्रवा घरहरिउ ।
परदल मिलइ, चींध चलवलइ ।
नीसाण वाजइ, जाणे आकासि मेघ गाजइ ।
रथ थडहडइ, रण काहल त्रडत्रडइ ।
गजेंन्द्र गडगडइ, घोडे पाखर पडइ ।
छत्रीस दंडायुध झलहलइ, कायर खलभलइ ।
पृथिवी चलचलइ, समुद्र झलझलइ ।
शेष सलसलइ, सूर सामला हलफलइ ।
कापुरुष टलवलइ , हाथीया गुलगुलइ ।
झूझार ना मनोरथ फलइ ।
अति रागी रा मन छूडायइ, रूडा रणक्षेत्र सूडाइ ।
ढोल ढमकइ, चित्त चमकइ ।
अतिहि फार, फुंकार, हुंकार ।
सुहड हसइ , अंगि ऊघसइ ।
वीर किलकिलइ, सूरना टोल मिलइ ।
बिहुं दल विचालि प्रधान फिरइ, थापिउ झूझ सिरइ ।

बाणावली विछूटइ, पर्वतना शिखर त्रूटइ ।
घोडां ने खुरे उडी खेह, जाणे आकासइ आव्या मेह ।
धूलि गगनांगिणि लागी, मार्ग प्रचारनी वात भागी ।
अंधकारि विश्व व्यापिउं, इसु रणक्षेत्र थाप्युं ।
धारा मंडप गाज्यउ, जगत्रय अमूझ्यउ ।
सेष सलक्यउ, वाराह चमक्यउ ।
माहो माही हंस्या, इस्या सुभट धस्या ।
भाट बपूकारइ, पूर्वज संभारइ ।
हाथीयइ हाथिउ, घोडेइ घोडउ ।
रथइ रथ, पायकिई पायक ।
हुयवा लागूं भूझ, स्युं वर्णवि वस्यइ अबूझ ।
वात करता रोमाचीयइ अंग, ते सुभट भला जे मरइ रणरंग ।
उड्यालोह, मेल्ह्या घर ना मोह ।
आपणा स्वामी आगलि ऊभा, नथी किसी वात नी छोभ ।
अख्या झाटके, कायर ऊडी गया गोफणि ने त्राटके ।
रथना घडघडाट, बाणना सडसडाट ।
रणतूर ना गडगडाट, कहुक बाणना पडपडाट ।
तुबक ना भडभडाट, गोली ना कडकडाट ।
चंद्रबाण ना तडतडाट ।
सर धोरणि सांधी, माहोमांही चाल बांधी ।
अणीसर फूटइ सेल, देव जोवइ खेल ।
सन्नाह त्रूटइ, खंग ना अंगार विछूटइ ।
धड पडइ, मस्तक रडवडइ ।
कबंध नाचइ, नीर याचइ ।
अति उ गाढ, फूटइ जम दाढ ।
तेहने अगि उपरापरइ झाटके तरवारि त्रूटइ, ते मरइ अखूटइ ।
पड्या ऊठइ, धायइ एक एक नइ पूठइ ।
गृध्र ऊपरि सांचरइ, अपछरा वरइ, देवता जय जयारव उच्चरइ ।
सूर वाहइं भाला, न छूट चड्या नइ पाला ।
वहइ फोला, लोक ल्यइ ओला ।
गूहा आवइ वाण, कायरां रा पडइ प्रांण ।
बांधी चाल, निपटि घोडी विचाल ।

भाला री भचाभचि, बकतर भेदी लागइ विचाविचि ।
घोडे घाली पाखर, आडी आया जाणे भाखर ।
कहता तो घणाही कहइ, ते बिरला सूर जे इसइ रिण ऊभा रहइ ।
एहवा सब्द सहइ, ते कवि कहइ ।
देठ लागा, माहो माइ बइर जागा ।
जे हुंता सेनानी, ते धुर थी हुआ कानी ।
जे हुता कोटवाल, ते पिण नाठा तत्काल ।
जे हुता एक एकडा, तीयारइ नाम नामइ दीया छेकडा ।
जे हुंता फोजदार, तीयारइ सिर पडी मार ।
जे हुंता फउज विडार, ते हुआ कहार ।
जे हउसे बाधता कटारी, तीयानइ ते पडी मारी ।
जे हुंता खवास, तीया मुकी जीविवारी आस ।
जे वणावत्ता सागी बाकी, तीया नासिवा नइ वाट ताकी ।
जे पहिरता मोटा साडा, तीया नासता कीधा कोडि पवाडा ।
जे ढोलरइ ढमकइ मिलता तिकेपिण दीसइ टलता ।
काबिली मीर, नाखइ तीर ।
इस्यै रणि जे पामइ जय, तेहनइ पोतइ पुन्य निचय । सू०

युद्ध-वर्णन (५)

परदल मिलइ, सुभट कल कलइं ।
नीसाणि घाय वलइं, पताका भलहलइ ।
ओरणि माडीयइं, अर्द्धचंद्र बाण खडियइ ।
भट्ट हक्का हक्क करइ , देवागना वीर वरइं ।
विद्याधरी पुष्प वृष्टि करइ, धनुर्धर बाण तणी श्रेणी वावरइ ।
आकाश मडलि गृध्र फिरइं, सीचाणा समली साचरइ ।
हाथियानी घटा गुडी, घोड़े पाखर पडी ।
विहुगमा दल मिलइं, धूलि पटल उछलइं
जेतइ सुभट गाजइं तेतलइं कायर थरहरइं ।
जेतइं सुभट बाधइं कसणा तेतलइं कायरथाइ नासणा ।
जे० खड्ग खड्गिइं, लीनइं, तेतलइं कायर मन माहि खीजइं ।

जे० वीर भाला झलकंइं, तेतलइं कायर ना मन टलकइं
जे० पंच शब्दि पडइं घाय, ते० कायर करइं पाय।
जे० धूनके वाजइं नीसाण, ते० कायर ना पडइं प्राण।
जे० दल आवां खिसइ, ते० कायर खूणे खिसइं।
जे० वेदल ही चडइ, ते० कातर तत्काल पडिइ।
जेत० बिदल आफलइ, ते० कातर मनि खलभलइ।
जेतलइं सुभट झूझइ, तै० कातर लोक अमूझइं।
जे० सुभट मेल्हइं प्रहार, तेतलइं कायर जोअइं नासिवा वार।
जे० वीर मस्तक पडइं, तेतलइ कायर पगि पीडी चडइं।

हाथिउ हाथिइ, घोडउ घोडइं।
रथ रथिइं, पायक पायकिइं।
भथाउत भथाउतिइं, खड्गायुद्ध खड्गायुद्धिइं।
कुंतायुध कुंतायुधिइ, गदायुध गदयुधइं।
गर्जायुध गर्जायुधइं।
हलायुध० मूशलायुध, शूलायुध०, त्रिशूलायुध०।
बेउ दल मिलइं, सर्वत्र धूलि पटल उच्छलइं।
कुण हूं आपणउ परायउ विभाग बूझाइ नहीं, पिता पुत्र सूझइ नही।
न० जाणियइं आत्मदल, न जाणियइं पर दल।
न० भूतल, न० नभोमंडल।
न० रात्रि, न० दिवस।
न० पूर्व, न० पश्चिम।
सहू एकाकार हुइ, इसिइ समय समग्र दलि वर्त्तमानि।
राजा सन्नद्ध बद्ध लोह चूर्ण हुई सुहडइ सगुड हाथीया लूडइ।
रथावली ऊथलावइं, मउड़उथा माकड जिम खेलावइ।
पाखरिया घाट हणइ, महायोध संमुख मणइ।
दलवइ भाजइं, जल समुदाय गाजइं।
एतलइ समइ समकाल काहली वाजइं, मदभंभल गजेन्द्र गाजइं।
सींगडियानी श्रेणी कमकमइं, नीसाण तणा घाय धमधमइं।
तुरंग तणा हेसारव, घंटा तणा टंकारव।
चीर रण भूमिभरी, आरेणि तणी सूत्रधरी।
प्रलय चंचल तूर्य वाजइं ॥ ६७ (स. १)

१०० युद्ध वर्णन (६)

फौज फौज मिले, सुभट कल कले।
पताका झलहलैं, नगारे वाउबलै।
रिण मडिये, अर्धचन्द्र बाण खंडिये।
गयवराह, हयवराह।
वाहयहोवे लडाई, वडावंशी राजपूतने होहलागारि वडाई॥
चिहुँ दिशा धमाधम, सो मेदनि रक्त छाई।
कटाकटि काटे, योधा एकएका सवाई।
हला मुसला पडत्ताल बूढई हवाई॥
अडे आथडे पडे वंद थाई॥
गडेगढ गोफणागढ आवे गिराई।
धसहुइ ओधइ, अरिप्राणपाडे धकाई॥
काठाओनरखग्ग धारा तणा कटाका।
पडे कोकबाणा गोलाहिंदा पटाका॥
अडे डील डीला लिये लाबा छटाका।
पीठे वटावट पड़े बरछा वटाका॥
बडा जोधमारे जम्म दाढा।
लगे घाउ त्युं मानने मन गाढा॥
चणाक चणाक वहें तीर सूधा।
आखेधटस्यु धावधावे विलुद्धा॥
अजुआलवावस आप आपे अलुद्धा॥
गिरे दुर्जनें गेडिझरें लोह बुद्धा॥
फोज फोजें सिंधुडा रागरी व्यन्न वाजे॥
गोलानाल नोवत्त सारसी वाजे॥
भोंअ उठ भारथ मास लोहि भभके।
ओर भूपाल दिक्पाल देखी लबके॥
महा एक कारक हूओ जग्ग माहे।
उडि रज आकाश भूह सूरथाए॥
वार वरसा लगे युद्ध एह दिट्ठो
हारीओ पापने धर्मराजान जित्तो।

इति युद्धवर्णन॥ (स० उ)

१०१ युद्ध-वर्णन (७)

आम्हो-साम्हो कटक आविया बडी, फोजइ फोज अडी।
बगतर नइ जीन साल, सुभटे पहिरया ततकाल।
माथइ धरया टोप, सुभट चढ्या सबल कोप।
पाचे हथियार बांध्या, तीर-तीर साध्या।
आमल पाणी कीधा, भाजण रा सूंस लीधा।
घोड़े घाली पाखर, जाणे आड़ा भाखर।
आगइ कीया गज, ऊपर फरहरै धज।
दमामे दीधी घाई, सभ वीर आया धाई।
रण तूर वागइ, ते वलि सिंधूडइ रागइ।
ठाकुर बघुकारइ, बड़ा-बड़ा बापारा बिरद संभारै।
छूटै नालि, निपटि थोड़ी विचाल।
वहइ गोला, लोकलयै ओला।
छूटै कुहक बाण, कायरा रा पड़ै प्राण।
काबलि मीर, नखइ तीर।
लागी खडा खड़, वागी भड़ाभड़ि।
गई भल्लरी फौज भागी, सबल लीक लागी।
जे हूंतो सेनानी, ते तो धूरखी थयो कानी।
जे हूतो कोटवाल, तेत्तो भागतो ततकाल।
जो हूंतो फौजदार, तिणरै माथै पड़ी मार
जे हूता चौरासीया, ए दांते त्रिणा लीया।
जे हूता खवास, तीए जीववा री मुंकी आस।
जो हूंता कायर, तिणने सांभरी आपणी बायर।
जे चढ़ता वाहर, तेह थया छोड़ी कायर।
जे ढोलरै ढमकै मलता, ते गया पासे टलता।
जे बाधता मोटी पाघड़ी, ते ऊभा न रह्या एका घड़ी।
जे हूंता अेक अेकड़ा, तिणरे नामइ दिया छेकड़ा।
जो माथै धरता आकड़ा, तीए मुंहडा कीया बाकड़ा।
जे वणावता सारंगी वांकी, तीए तउ रण भूमिया की।
जे बाधता बिहूं पासे कटारी, तीयानइ नासतां भुई पड़ी भारी।

जे पहिरता लाग्रा साड़ा, तीए नासता कीया कोडि पवाडा ।
गर्दभिल्ल नाठउ, बोल थयो घणु माठौ ।
गढ माहे जाई पयठउ, चिंता करइ बयठउ ।
पोलिना ताला जडया, कालिकाचार्यना कटक चिहू दिसि वीटी पड्या ।

—कालिकाचार्य कथा से

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ३

स्त्री-पुरुष वर्णन

पुरुष-वर्णन (१)

कज्जल श्यामल केश पाश,
अष्टमी चन्द्रोपमानु भालस्थल।
कामदेव कोदण्डाकृति भ्रूभंगु,
विकसित नीलोत्पल दीर्घ लोचन
सज्जन चित्त वृत्ति तुल्य सरल नासा वंस
परिपक्व बिम्बाफल तुलिताधरोष्ट
कुदकलिकोपमान दंत पक्ति
निर्मल परिपूर्ण पूर्णिमा चद्र मण्डलायमान वदन मंडलु
सख सदृश त्रिरेखाकित कंठ कंदल
लम्बमान स्कंधन्यस्त कर्णपालि
मासल स्कंध देशु
पृथुलु वक्षस्थलु
नगर दुर्ग परिघा समान वर्त्तुल भुजादंडु
सर्वथा अलक्ष्य क्षामोदर गभीर नाभि प्रदेशु
कदली स्तभोपमानु उर युगुलु
कूर्म पृष्टि प्रदेश जिय उन्नत चरण
अशोक तरुपल्लवानुकृत हस्तपाद तलु
विद्रुमारुण नखमणि निकर
छत्रीस लक्षण लक्षित शरीरु
पृष्टि पालकु बहुत्तर कला कुशल
लिखित पठित प्रमुख चौसठ विज्ञाभ विचक्षणु
उदग्र यौवन पुरुष नीप जइ। पुरुष वर्णन (पु०)

२ पुरुष गुण-वर्णन (२)

सौन्दर्य,	धैर्य,	औदार्य,	गांभीर्य ,
शील-स्वभाव,	सत्य,	साहस,	भाग्य ,
राग,	रूप,	लावण्य,	लालित्य,
कान्ति,	कला,	ज्ञान,	विज्ञान ,
विद्या,	विनय,	विवेक,	विचार ,
शस्त्रशास्त्रभेद,	वेद विदान,	लक्षण	प्रमाण ,
तर्क,	साहित्य,	सामुद्रिक,	शकुन ,
संगीत,	गीत,	निमित्त,	निरुक्ति,
निघंटु,	पिंगल,	पुराण,	गणित ,
ज्योतिष ।	एहवागुण —		(स०४)

३ सत्पुरुष-गुण वर्णन (३)

कुलीन	शीलवान	विवेकी
दाता	भोक्ता	कीर्तिवान्
सूरः	साहसिकः	सत्ववान्
सत्यवान्	गंभीर	प्रियवाग्
धीर	सलज्ज	बुद्धिवंत
कलावंत	गुणग्राही	उपकारी
कृतज्ञ	धर्मवान्	महोत्साह
संवृत मंत्र	क्लेश सह	पात्र रुचि
जितेन्द्रिय	संतुष्ट	अल्प भोजी
अल्पनिद्र	मितभाषी	उचितज्ञ
जितरोष	अलोभ	स्वरूप
सुभग	तेजस्वी	बलिष्ट
प्रतापी	सुसंस्थान	सुगंध देह
सुवेष	शुभगति	सुस्वर (मुखर)

सुकान्ति इत्यादिक पुरुष गुणाः । (स० १)

४ सत्पुरुष के स्वाभाविक गुणों की उपमा (४)

सत्पुरुष स्वभाव—

कः शशिनं[1] शीतलं करोति, को दुग्ध धवलयति ।
को मयूर पिच्छानि चित्रयति, कः शर्करा मधुरा[2] करोति ।
कोमृत[4] सर्वरसा स्वाद धत्ते, को गगा पवित्रयति ।
हंसाना को गति शिक्षयति, कः पुष्परागं[3] रजयति ।
कश्चपक[4] सुरभी करोति, को जात्यमणिषु काति कलाप ।
कः सरस्वती पाठयन्ति, को लकाया अलकारं कुरुते ।
तथा साधु पुरुषस्य स्वभावेन गुणाः ॥ (स० १)

५ सज्जन स्वभाव उपमा (५)

चंद्रमा नै कुण शीतल करै ?
अगनि नै कुण दाह करै ?
दुग्ध नै कुण धोलै छै ?
मयूर पीछ नै कुण चित्रै ?
लक्ष्मी नै कुण नोत्रै ?
कमल नै कुण मधुरा करै ?
गगोदक नै कुण पवित्र करै ?
हंस नै गति कुण सीखवै ?
जुआरी नै कुण भीखवै ?
चंपक नै कुण सुगंध करै ?
सारदा नै कुण भणावै ?
लोका नै कुण दीपावै ?
स्त्री नै कपट कुण गोखावै ?
वृहस्पति नै कुण वचावै ?

---

१ शिशिरी २ मधुरी ३ ब्रह्म ४ को मंथानभ्यर्थयति,
५ इनके बदले में यह पाठ—को नालिकेर जल क्षिपति
क कोकिला स्वर माधुर्यं विदधाति ।
को वृत्तता नयति मौक्तिकान् । मु
कु में विशेष पाठ—तथा को पुत्रो विनय नयति ।

कृपण नै लक्ष्मी कुण संचावै ?
तिम सज्जन नै स्वभावै जांणवो ।
(सू. ३)

६ सत्पुरुष प्रतिज्ञा (६)

कदाचित् समुद्र मर्यादा व्यतिक्रमइ, कदाचित् जइ मेरु महीधर चंकमइ ।
कुलाचल चक्रवालइ , ग्रहचक्र निज मार्ग सू चलइ
पृथ्वी पातालि जाइ, वाउ निश्चल थाइ ।
वज्र दण्ड जर्जरता धरइ, जल ज्वलइ ।
ज्वलन शैत्य धरइ,
आदित्य पश्चिम ऊगइ,
कमल वन पर्वत विकसइ
कदाचिदमृत विष थाइ
कदाचित्पाषाण जल माहि तरइ, कदाचित्नारकी सौख्य पामइ
कदाचित्बृहस्पति वचन खलइ, गंगाजल पश्चिम वहइ
कदाचित् अभव्य जीवहृदयि धर्मोपदेश रहइ, कदाचित् मानस सरोवर सूखइ
कदाचित् हरिश्चंद्र प्रतिज्ञा हूंतउ चूकइ, कदाचित् सिद्ध गर्भवासि अवतरइ
तथापि सत्पुरुष आपणीप्रतिज्ञातउ न टलइं । १०८ ।

७ सत्पुरुष के परोपकारों की उपमा (७)

सत्पुरुष परोपकार किहिं पृथ्वी नियमिया छइ
शेषराजु पृथ्वीधरइ, आदित्य अंधकार संहरइ
चन्द्रमा शैत्य करइ, मेघु जलु पृथ्वी भरइ,
गोमंडलु दुग्ध त्तरइ, चन्द्रोपलु अमृतु झरइ,
वैश्वानरु प्रज्वलइ, वृक्ष फलइं ॥
(पु. अ.)

८ सत्पुरुष के परोपकारों की उपमा (८)

सत्पुरुषः परोपकारमेव कुरुते न पुनरात्मार्थं यथा—
रविस्तमो नाशयति, परं नास्तं स्फोटयति ।
चद्रः स्वामृतेन जगत्तापं, निर्वापयति न त्त्वयं ।
वृक्षाः पंथानामातपं निवारयति, नात्मनः

यथा खड्गोऽन्येषा शरीराणि विदारयति, नात्मशाणा घर्षण
यथा वैद्योऽन्य नाटिका[1] विलोकयति नात्मनः ।
यथा मत्रवित्पर विषाणि छिन्नति[2] तथा न स्वदेह विप ।
यथा रत्नाकरः पर दारिद्रय निराकुरुते तथा कस्मान्न क्षारत्वम् ।
तथा चिंतामणि कल्पद्रुमाद्याः कामान् कुर्वते ।
तथा स्वाचेतनत्वं कस्मान्न स्फोटयति ॥ ७६ (स. १)

९ सत्पुरुषों के परोपकारों की उपमा (९)

सत्पुरुष परोपकाराय अवतरति ।
कर्पासः परार्थे विडबना सहते, मौक्तिकं पर शृगाराय बेधंसहते ।
सुवर्ण परालकाराय, ताप ताडनादि ।
अगरु पर सौरभ्याय दाह, चदन पर तापोपशातये घर्षणं ।
कर्पूर-पर सौगंध्याय मर्दन, कस्तूरिका पर पत्रभंगी कृतेवर्त्तन ।
ताबूल पर रगाय चर्बण ।
दधिविलोडन परार्थ सहते, मजिष्ठा वस्त्र रंजनार्थं कुट्टन खंडनादि सहते ।
धुर्यः परार्थमेव भारमुत्पाठ्यति, सूर्यः परार्थमेवोद्गच्छति ।
जलधरः परोपकारायेव वर्षति ॥ २१ । (स० १)

१० सत्पुरुष के कोप की उपमा (१०)

सत्पुरुषस्य कोपो मनस्येव विलीयते ।
यथा दरिद्रस्य मनोरथा मन विलीयते ।
यथा कूपस्य छाया कूप एव० वि० ।
यथा सुरंगाया धूली सुरंगायामेव वि० ।
अरण्य कुसुमानि अरण्य एव विलीयते ।
कातारच्छिन्न कूट शैल फलानि शैल एव० ।
यथा वध्यावपुरपत्यानि तत्रैव विलीयते ।
विधवा जन स्तना हृदय एव विलीयते ।
कृपण लक्ष्मीः भूमावेव यथा विलीयते । ७७ । (स० १)

११ पुरुष के ३२ लक्षण (११)

इह भवति सप्तरक्तः षडुन्नतः पंच सूक्ष्म दीर्घोयः ।
त्रि विपुल लघु गंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षणः सपुमान् ॥ १ ॥

---

१. नटिका २. भिन्नति ।

नख चरण पाणि रसना दशनछद तालु लोचनान्तेषु ।
रक्तः सप्त स्वाध्यः सप्तागा सलभते लक्ष्मीम् ॥ २ ॥
षटकं कक्षा चक्षुः कृकाटिका नासिका नखास्यमिति ।
यस्येदमुन्नतं स्यादुन्नत यस्तस्य जायते ॥ ३ ॥
दतत्वग् केशांगुलि पर्व नखाः पंच यस्य सूक्ष्माणि ।
धन लक्ष्म्यायेतानि च जायते प्रायसः पुंसा ॥ ४ ॥
नयन कुचांतर नासा हनुभुज मिति यस्य पंचकं दीर्घं ।
दीर्घायुर्भवति नरः प्राक्रमी जायते सह ॥ ५ ॥
भाल मूरो वदनमिति त्रितयं भूमिश्वरस्य विपुलं स्यात् ।
ग्रीवा जघा मेहनमिति त्रिकं लघु महेश्वरस्य ॥ ६ ॥
यस्य स्वरोग्रम्य नाभी सत्वमितीदं त्रय गंभीरस्यात् ।
सतांबुधि पर्यंत भूमे स परिग्रहं कुर्यात् ॥ ७ ॥
इति द्वात्रिंशल्लक्षणानि ॥ १२३ । (स० १)

१२ संग योग्य पुरुष (१२)

सुमति, शीलवत, संतोषी, सत्संगी, स्वजन, साचाबोला, सत्पुरुष, समेला[१], सुलखणा, सलज्ज, सुकुलीण, गंभीर, गुणवंत गुणज्ञ। एहवा पुरषनो संग कीजे ॥

(स० ३)

१३ कीर्त्याभिलाषो पुरुष (१३)

चौदह विद्यानिधान,
समस्या शत्रुकार,
षड्भाषा चक्रवर्ती,
जाणराय कालिकाचार्य,
कालिकाल सर्वज्ञ,
सरस्वती कंठाभरण,
प्रत्यक्ष वृहस्पति,
वादी विभाड़,
कवि-कामधेनु,
इत्यादि विविध गुण वर्णाना कीर्त्याभिलाषिणः ॥ (स० ४)

(वि०)

---

१ सामल

१४ रूपालो (रूपवान) पुरुष (१४)

छयल,	छबीला,	रूपाला	रंगीला,
रलियामणा,	ललितांग,	ललितगर्भ,	लीलाभोपाल,
लीलावत,	भुआला,	लटकाला,	भटकाला,
लवणवत,[1]	मीठाबोला,	मलपता,	मा (म्हा) लता,
विनोदी,	विनयी,	ख्याली,	खुस्याली,
सौभागी,	सुंदर ॥	एहवा	रूपाला ॥

(स० ३)

निर्द्धन होने पर भी सत्पुरुष

१५ प्रतिभा-वैशिष्ठ्य पुरुष उपमा (१५)

निर्द्धनोपि सएवोतमः पुरुषः यथा-भग्नमपि वाराह ।
श्रातोपि पारसीको हयः, रक्तोपि कर्पूर समुद्गकः ।
खडोपि निशाकरः, अच्छादितोपि दिवाकरः ।
दुर्बलोपि सिंहः, शुष्कोपि वकुलश्री विद्धापि मुक्तावली ।
फाटितमपि रत्नं कंबल[2] । मलिन मपि दुकुल,तृप्तमपि गंगाकूल ।
म्लानमपि इक्षुखड, जीर्णमपि शर्करा खंड ॥ ७४ । (स० १)

१६ दुर्जनवर्णन (१)

दुर्जन एहवउ दीसइ, बाहिर हेजालूओहीयउ हीसइ ।
अंतरंग बलइ रीसइ मिलइ सुजगीसइ ॥
आघेरउ जात (प्र) दाँत पीसइ , मुहि मीठउ, चित्त वीठउ ।
पराया छल छिद्र जोवइ, विश्वास विण विगोवइ ॥
परम प्रससायइ खीजइ, उपगारन सहसे न लीलइ ।
पर मर्म भाखइ, साच करी दाखइ ॥
पहिलउ विचार माँहि आवइं, अवसरे खिसी जावइ ॥
मुहडइ सहू सु लिबास, वाह नउ न करइ बिसास ।
केहनइ वचनि न पतीजइ, जउ आपणउ चित्त दीजइ ॥
तोही भीजइ न सीजइ, वार वार स्यु कहीजइ ॥
न सगा, न सणीजा, जाणुं मो सारिखा करू बीजा ॥

---

१ लावण्यवत

न सहइ बीजा साथइ, ठाक ठोक ल्यइ आपणइ माथइ।
इसउ दुर्जन, तिण सुं न मिलइ कोई मन ॥
इति दुर्जनकम् ॥ (कु०)

१७ दुर्जन पुरुष

मुहि मीठउ, चित्ति विणठउ।
पिराया छल छिद्र जोयइ, विणास विण विगोयइ।
पर प्रशंसाइं खीजइ, उपकार ने सहस्रि न लीजइ।
परमर्मु भाखइ, साच करी दाखइ।
न सगा न सणीजा, नविहु छइ इस्या लोक बीजा।
न सहै जैइ बीजा साथइ, ठाक ठोक कल्पइ आपणइ माथइ।
नहीं-कोई नेह नइ सज्जन, इसिउ दुर्जन ॥ १६ ॥ (मु०)

१८ दुर्जन-वर्णन (३)

दुर्जन, कृतघ्न, निष्ठुर स्वभाव, अप्रतिष्ठ, वंदनानिष्ट
स्वकार्य बद्धकक्ष परकार्य निरपेक्ष। (पु० अ०)

१६ दुष्ट पुरुष (४)

रे रे दुराचार, अधर्म व्यापार।
जनित कुल कलंक, दूर मुक्ति मर्याद।
पापिष्ट, निकृष्ट, दुष्ट दष्ट इण परि निर्भछउ। १५६ (स० १)

२० कुपुरुष (५)

प्रत्यक्षे मधुरया गिरा अमृतं वर्षतां परोक्षे दोषं जल्पतां।
नीचानां व्यसनैर्वस्सी कृतानां इंद्रियैः[१] पराभूतानां।
पल्वल जलादपि निर्मलानां।
अमावाश्याया अपि अंधकार मुखानां।
गुरुषुः विद्वेषिणां।
बंधुषु बद्ध वैराणा, पितृमित्र द्रोह कारिणा।
मातृ शूकलाना, स्वपुच्छादि कारकाणां।
समुद्र जलादप्यनुप भोग्यानां।
अंत्यज चरितादपि मलिन चरितानां।

---

१ इंद्रियें.

सर्पजाते रपि अनात्म नीतानां ।
प्रदीपा द्याश्रय विध्वसिना ।
नदी कूलादपि नीच गामिनां ।
मृत्पात्रादपि भंगुराणा ।
हरिद्रा रागा[1]दिपि क्षण विनश्वराणा ।
उदया न दृश्यते कुपुरुषाणा ।
यतः—

परवादे दश वदनः पर दोष निरीक्षणे सहस्राक्षः ।
सद्वृत्त वृत्त हरणे बाहु सहस्रार्जुनो नीचः ॥ ६७ (स० १) ॥

२१ अंध-वर्णन (६)

रणाध, रोगाध, बुभुक्षाध, तृष्णाध[1], लोभाध, कामाध, दर्पांध, मद्यांध, क्रोधाध[2], विद्याध, वित्ताध, अहंकाराध[3], जात्याध, चित्ताध ।

पुरुष सर्वथापि न देखइ काई ।

न पश्यति मदोन्मत्तः कामाधो नैव पश्यति ।
न पश्यति जात्यंधो अर्थी दोषा न पश्यति ॥ १।१३६ (स० १)

२२ मूर्ख संग (७)

कुमाणस नउ ससर्ग न कीजइं, वरि व्याघ्र सिंउ, क्रीडा कीजइ ।
वरि सूता सींह[1] मुखि हाथ घातीयइ, (आ)अजीसाप[2] सिउ साई दीजइ ।
अजी[3] हलाहल विष पीजइ, वरि अगिनी ज्वाला लीजइ ।
वरि[4] वयरि घरि वासउ वसीयइ, वरि चोर साथि बइसीउ ।
वरि पाताल विवरि पइसीइ, वरि बलतइ दावानलि जईयइ ।
पुण[5] सर्वथापि मूर्ख साथि न जाईयइ ॥

न स्थातव्यं न गंतव्य, क्षण माप्यसना[5] सह ।
पयोपि शुण्डिनी हस्ते वारुणी[6] त्यभिधीयते ॥ १
वरं पर्वत दुर्गेषु,. भ्रात वनचरैः सह ।
नतु मूर्ख जन संपर्कः सुरेन्द्र भुवनेष्वपि ॥ २।८५ (स. १)

---

१ रागा दपि
आति लाभ

१ कोपाध २ मदाध ३ तृषाधु । (पुन्य विजय जी अपूर्ण प्रति)

१ ससर्ग २ जिसापस्यु ३ वरि ४ वरि यरि ५ पण ५ सती सता ६ वारुणी

२३ संग न करने योग्य पुरुष (८)

केहवा पुरुष नो संग न कीजे ?

छल, छद्म, वंच, द्रोह, कूड, कपट, करह, कोसेर, लहक, त्रहक, दगा, अहक, अन्याय, जोर, जुलम, ओछो, अधिकी, चोजारी, हेरा, लूटवा, लगडवा, पीडवा, परिच, पापीडा, फंद जाल, अजाडी, आहेडी, अखाद्य, अपेय अगम्य, मोडा-मोडि, मुरडा मरड, मचली, मसकरी, ठीगाई, ठीगलणी, ठकुराई, ठमठोरणी, वांकाई, वरणागी, चउ सारंगी, वेढि, लड़ाई, लपटाई, हासी, त्राजी, चोराला, एहवा पुरुषनो संग न कीजे। (स-४)

२४ संग न करने योग्य पुरुष (६)

चुगल[१], चंचल, चोर, छलवेटी[२], अधर्मा, अविनीत, अधम, अधिक-बोला, आकुला, अणाचारी, अथगा[३], अधूरा, अधीहा[४], अमोहा, कुलक्षणा। कुबोला, कुपात्र, कूड़ा बोला, कुशीलिया, कुव्यसनी, कुलखन, भगु, ममता, मुंडा मुंछ, एहवानो संग न कीजै ॥ (स-३)

२५ कृपण (१०)

संचक[१] अदाता, वद्धमुष्टि, कापड़िड, भिक्षाचर, रंकप्राय, चमार चक्र-वर्ति, कृपण पितामह, अग्राह्य नामधेय। जीह[३]नइं नाम लीधंइ[४] धान गुण न मिलियइ ॥१४॥ (स-१)

२६ दुष्टागमन (११)

भ्रकुटी त्राड़तउ, विकट चापटा उपाड़तउ
ओष्ठ जुगलि फुडफुड़तउ, वचनि विन्यास प्रस्खलतउ।
विभीषणाकारु मुखु करतउ, आरक्त नेत्र दरिसतउ
दुर्वाक्य बोलतउ, त्रिवली तरंग विकासतउ।
महाकोपाकुलु, जाणिय करि प्रज्वलितु वड़वानलु।
अति रोपारुणु, प्रकटित क्रूरु मणु।
आरक्त लोचन, बोलतउ निष्ठुर वचन।
आपापिष्ट, कृतान्त कटाक्षित, व्याघ्र वदनं पतित।
अहो पापात्मनु, इसउ कोपीन दुष्टागमनु । (पु० अ०)

---

१ चपल, २ छलवधी ३ अनगा ४ अधूरा अधीरा २ भलवेटी

१ सञ्चकु २ चिहुण ३ जसुतणइ ४ लिधइ (पु०अ०)

२७ स्त्री गुण (१)

कुलीना	शीलवती	विवेकिनी
दानशीला	कीर्त्तिवती	साहसिका
सत्ववती	सत्यवाक्	प्रियवाक्
गंभीरा	स्थिरा-सरला	सलज्जा
बुद्धिमती	कलावती	विज्ञानवती
गुणग्राहिणी	उपकारिणी	कृतज्ञा
धर्मवती	सोत्साहा	सवृतमन्त्रा
क्लेशसहा	अनुपतापिनी	सुपात्ररुचि
जितेन्द्रिया	सन्तुष्टा	अल्पाहारा
अलोला	अल्पनिद्रा	मितभाषिणी
उचितज्ञा	जितरोषा	अलोभा
विनयवती	सुरूपा	सौभाग्यवती
शुचिवेषा	सुखाश्रया	प्रसन्नमुखी
सुप्रमाण शरीरा	सुलक्षणवती	स्नेहवती

+

योषिद्गुणाः ।। इति संपूर्ण समाप्तः ।। १७१ ।। (स० १)

२८ स्त्री गुण (२)

सुवर्णि, सुसची, सुसूत्रणी, सुसील,
अमृत वाणि बोलती पाहण पल्हालइ
दुग्ध मधुर, हाथि मोकली, सहजि प्राञ्जलि ।
इसी सर्व गुण परिपूर्ण
इसी कलत्र महाभाग्य लाभइ ।। (पु०-अ०)

२९ सुस्त्री (३)

भर्त्तारि अनुरागिणी, कोमल भाषिणी
अदृष्ट मुख विकार, सदाचार सुविचार
परिपालित कुलाचार, उदार, कृत परोपकारु[1]
असी कलत्र ।

---

१ स० १ अन्तिम पुष्पिका—१ इति सभा शृंगार सपूर्ण समाप्त ।।

अवरु रूप तणी रेख, लावण्य केरउ कसवट्टउ
कनीयता तणउ भंडार, काति केरउ आधारु
पसइ प्रमाण लोचन, जसी कामदेव तणी सींगी
धणुही त सांभमुह,
जसउ जाइलउ हीरउ, तिसी झलकती दंत पंक्ति
त्रिहु पइटे वहतउ सीमंतउ, अति सुकोमल रोमराजि
बोलती जिसी अमृत तणीवेलि, वचनि करी पाहण तेई पल्हाल
इसी स्त्री ॥[1] (पु अ०)

३० सुस्त्री (४[2])

चद्रमुखीचकोराक्षी, चित्तहरणी, चातुर्यवंती, शीलवती सिंहलंकी, सुलक्षणी श्यामा, नवागी, नवयौवना, गौरागी, गुणवंती, पदमणी, पीनस्तनी, हेजाली, हस्तमुखी, एहवी स्त्री पुण्य नइ योगइ (पामइ)

प्रति स० ३ का पाठ इस प्रकार है—

रूपाली, चंद्रमुखी, चकोराक्षी, चातुर्यवंती, हंसगतिगामिनी, चित्तहरणी (मनहरणी), हसत मुखी, पद्मिनी, पीनस्तनो, गोरागी, गुणवंती, नवागी, नवयौवना, सिंहलंकी, भ्रूहवकी, शीलवती, सुलक्षणी, पद्मगंधी, सुकोमल शरीरी, पातल पेटी, मोहनगारी, अतिहलवी, नही भारी, हेजाली, शील गगेव, मधुरभाषिणी, कोकिलकंठी। एहवी स्त्री क्रीड़ा करै छै।

३१ सगर्वा स्त्री (५)

हंस गति चालती,मयगल जिम माल्हती।
कामिनी गर्व भाजती, चंद्रकला जिम वाधती।

---

१ इति सभा शृंगार वचन चातुरी ग्रन्थ समाप्त

२ स० १ प्रति, मे इसके वाद का पाठ नीचेवाला न होकर इस प्रकार है—
सुवरणि, सुमची, सुसूत्रणी, सुशील,
अमृत वाणी वोलती, पाहण पल्हालती
हाथि कोमली। सहजि प्राजली
सर्व गुण सपूर्ण। इसी कलत्र महा भागि लाभइ, स्थाने निवास ॥
नोट—स० १ की दूसरी प्रति मे पाहण के स्थान पहाण और कोमली के स्थान मोकली पाठ है।

नयण बाण जण वीधती ।
तरुण तरङ्गि, करुण तरुङ्गि ।
चाकड जोअती,जन हृदय आल्हादती ।
कंचुक ताडती, सीमवउ फाडती ।
कंठ कंदलि हारु रोलवती,
जोवतु न इसी बाल सुकुमाल, तत्काल उत्सलित काम काल ।

विरह—

हा कान्त !
हा हृदय विश्रान्त !
हा प्रियतम
हा सर्वोत्तम
हा सौभाग्यसुन्दर
हे प्रेमपात्र । ॥ ६६ ॥ (मु०)

३२ सुबाला (६)

हंसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती ।
कामिनी गर्बु भाजती, चद्रकला जिम गुणिहि वाधती ।
नयण-बाणिहि जण मण वींधती ।
माथइ सीमतंउ फाडती, हियइ कुंचक ताड़ती ।
चाकउ जोयती, विरहिया चित्त बोअती ।
अति रूपवती, साक्षात रति तणउ रूप ।
लक्ष्मी तणउ लावण्य, पार्वती तणी रेषा ।
रंभा तणी काति, रन्ना देवि नउ तेज ।
रोहिणी तणी कला, सीता देवि नी लीला ।
द्रौपदी तणउ सौभाग्य, लक्ष्मी तणउ भाग्य ।
अग्नि देवता नउ वान, रूपिणी तणउं संस्थान ।
कठि नवसरइ हारि रुलतइं जिम दीठि ।
तिम चित्त माहि पइठी ॥ अेइसी बाला ।
इदुर्वक्रस्य वीणा सदन मुपकथा पादयो पंकजाली
पर्यापोलि· कर्णयाननुतनु महसा वर्णिका कर्णिकारं ।

आभासः कुंभि कुंभ द्वयः मुरसि जयो काम कोदंड दंडः ।
पाखंडं भ्रूलत्तायारतिरभि नयनं पश्य रूपस्य यस्यः ॥१३१॥ (स०-१)

३३ नायिका अंग उपमा (७)

काजल श्यामल केश कलापालकृत उच्च मस्तक ।
जिसिउ अष्टमी तणउ चंद्र तिसिउ भालस्थल ।
जिसीया वसंत मास तणा हींडोला तिसिउ कर्ण युगल ।
पुरुष प्रसृति प्रमाण कमल परिलोचन ।
जिसी कामदेव तणी सागिणी, तिसी भुमहि ।
जिसी तेल तणी धार, तिसी सरल तरल नाशावश ।
जिसीउ पूर्णिमानउ चंद्रमा तिसी मुख कमल ।
जिसियां प्रवालियां, तिसिया ओष्ट पुट ।
जिसी दाड़िमनी कल, तिसी दंत पंक्ति ।
जि० विशाल करि कुंभस्थल, तिसिउ वक्षस्थल ।
जि० कमल कोमल नाल, तिसी बाहु लता ।
जिसिउ सीह तणउ लाक, ति० मध्यदेश
जि० पर्वत्त शिला, तिसिउ नितत्र त्रिव ।
जि० केलिना स्तंभ, ति० वेऊर ।
जि० ऐरावण सुंडादंड, ति० जंघ युगल ।
जि० अलता[1] नी पोलो, ति० सुकुमाल पादतल ।
जि० यमुना प्रवाह तिसी वेणी लहलहइ ।
जिसी चापानी कली तिसिउ सकल शरीर ।
रूप तणी रेखा, लावण्य तणउ कसवट्टउ ।
काति तणउ आगर, सौभाग्य भंडार ।
बोलती अमृत वेलि, जे वचनि करी पाहण पहालइ[2] । ६५ (स० १)

३४ नायिका आभरण (८)

ललाटि तिलक, काने झलक

---

१. अलना

२ पल्हाल

बाहे वलक[1], आगुलि अगुलियक,
कठि कंठिका, गलइ हारु,
माथइ मोतीसरि, हृदय सोवन[2] ऊतरी
हाथे दोरा, पाए पोलरा,
इसे आभरणे आहरी दोहरी नायका ॥ (पु० अ०)

३५ कुस्त्री (१)

काली, ककाली, कोचरी, काणी, कुरूपी, कुत्सित, कुरुर, काकसरी, काकजघा, कुहाडी, कुलक्षणी, सापिणी, पापिणी, सखिणी, सउखिणी[1], सवणी, निरगुणी, चंचल, चीपडी, कुखेडी, कूबडी, बोबडी, सुकडी, सुंबडी, लबडी, सडी, पडी, बली, उछाछली, भूतेछली, चिंतावली, पागुली, रूलीखली,[2] खुली बली, खेलेजाडी, मुल, आखा चिपडी, आ खेबाडी, डीलेजाडि, कामकाज माडी, आखेचूधी[3], कानि ऊची, हाथिट्टूंटी, कानि बुटी, लाबा दात, करेरात, नीलज, अकज, छिनाल, दारी, कुतरी, निसनेही, कुहाड, दुर्गंध देह, जीभाली, रीसाली, भूठाबोली, निद्रणखीण, अकुलीण, सेडाली,

एहवी स्त्री पाप थे होइ । एहवी स्त्री भला माणसने वरजवी । (स० ३)

३६ कुस्त्री (२)

काली, कुत्सित, कुहाड, राड, रीसाली, रोमाली, रोती, चूची, चीपड़ी, सूगाणी, सखिणी, हठीली, सेडाली, हराम जाति, कलेसणी, कुपात्रणी, कुजाति, एहवी भूडी स्त्री पाप नइं उदय पामइ (पै०)

प्रति स० ३ का पाठ—

काली, कुत्सित, कुरूप, कुहाड, कुतरी, राटी, रीसाली, रोमाली, रोती, चूची, चीपडी, सुगामणी, सखामणी, सोझाली, माजाली, सेडाली, माजरी, हठीली, हरामजादी, भूठा बोली, कलेसणी ।

३७ कुस्त्री (३)

बोलती छूती छड ऊतारइ, चाट फाडइ
महा विकरालि, अति आगि झालि
साची अलछि, बोलती सर्वांग सूल उपजावइ

---

१ वलय २. सोवर्ण ३ हाथे ककण रव झलत्कार, पगे नेवर झात्कार ।
(स० १ न० १४० के अतर्गत)

१ सउछिणी २ सुली ३ आखे चूची

मिरी तणी ऊगटि, अंगार तणी सउड़ि
चालतउ पलेवणउ, दाघ ज्वर तणि वहिन
जिसी केवलइ हालाहलि
विषि घडी हुइ तिसि स्त्री ॥ (पु० अ०)

३८ कुस्त्री (४)

कुहाडि अढंढ स्त्री—

बोलती छउड ऊतारइ, दृष्टि देखती मनुष्य मारइ ।
साप माथइ सइ[1] थड फाडइ, चालती[2] भुहि फाडइ ।
नव धाया तिर पाडइ, वालि वाधी कुडी आहणइ ।
आकाशि उडता पखीया गणइ, कुहणी छेहि खात्र पाडइ[3] ।
विहु पुरुष देखता वाट उठाडइ ।
वगाई करति आवा[4] लुंबि त्रोडइ, पग छेहि गाठि छोडइ ।
आखि हुंतउं काजल हरइ, केसि वाधि[5] शिल धरइ ।
जीभइं जव छोलइ, निष्ठुर वचन बोलइ ।
जीण[7] बोलाविती माथा ना केस ऊभा थायइं । सा चालती अलच्छि जाणवी ।
दुरित वन घनाली[8], शोक कासार पाली ।
भव कमल मराली, पाप तोय प्रणाली ।
विकट कपट-पेटी, मोह भूपाल चेटी ।
विषय विष भुजगी, दुःख सारा कृशागी ॥ ८८ ॥ (स० १)

३९ कुस्त्री (५)

जीभइ जव छोलइ, बोलतु छउड उतारइ ।
चालती भूमि फोडई, नव धामा तेर पाडई ।
वालि वाधी कोडीआ हणई, कुहणी छेहि खात्र पाडई ।
पग छेहडइ गाठि छोडई, साची अलछी,
मिरी तणी ऊगटी; चालतु पलेवणु
आगरण तणी दाह, जूर तणी वहिनी,

---

१ साथ, मथउ फाडइ २ भुडहि भुहि ३ पडइ ४ वगइ ५ वालुवि ६ वर्ध [illegible] ७ जेणि
८ वराली

जिसी केवली, हलाहल विषइं ।
घडी हुई, इसी स्त्री प्राहिया पथिकु हुई ॥

(पु० अ०)

४० दुष्ट स्त्री (६)

काली, ककाली । आँखि काणी, घणु खाणी ॥
आप दाणी, दीसइ घाणीं ॥
पापनी अहिनाणी, न पीयइ को हाथ नउ पाणी ॥
आपरइ मनि राणी, लक्ष्मी नी बहिन जाणी ॥
कठोर वाणी, आडोसिये पाडोसिये पिछाणी ।
वाडू[1] तउ काढियइ परीताणी, परमेसर काइ पडोरि आणि ॥
कोचरी, करइ अगोचरी ॥
कुरूप, बइसइ धूप ॥
काकमरी, जाणीये खरी ॥
काक जघा, लेवइ ऊधा गूधा ॥
कुहाड़ि, छाडि सकइ तउ छाडि ॥
कु कुलखिणी, सुखणी ॥
नरगणी पापिणी, जाणे सापिणी ॥
टिरती जाबडी, जीभइ बोबडी ॥
वली बाफ, घाणु स्यु न लीजइ जेहनुं नाम साफ ॥
लाबडी, जिसी सूकी कावडी ।
पड़ी, सडी ।
धणी री छाडी, भले भाडी ।
कामि काज माठी, निरति सुरति नाठी ।
आखि चूची, कानि ऊँची ।
लाबा दात, करइ रात ।
निकज्ज, अकज्ज ।
निस्नेह, दुर्गन्ध देह ।
जीभाल, रीसाल ।
अलवइ बोलइं गालि, फिरइ कुहालि ।
निरदाखीण, अकुलीण ।

---

१ वारू ।

बोलती छउड उतारइं, रीसइं छोरू नइं मारइं ।
जइ को वारइं, तउ साहमु तेहनइ विडारइं ।
जण जण स्यु आफलइ, बोलती विसइ हाथ उछालइ ।
जाअइ खेत्र खलइ, घरि वित्रोड़ करि बाहिर मलइ ।
पूरी पापिणी, फूंफूंती सापिणी ।
जे चालती कवच्छ, साची अलच्छ ।
जीभइ जत्र छोलइ, सासू सुसरा नू नालइं ओलइ ।
अंगार तणी सउडि, विढइ सहू मुं दउडि ।
बोलंता केस ऊभाथाय, मनुष्य नासी घरे जाय ।
विलाड मुखी, धणी नइ दुखी ।
बगाई ग्राती, ·· ···· · ।
गोडउ गिलइ, झागूंडि मुंहडउ छिलइ ।
जाणें आरण नी राख, छोरू नइ लागइ जेहनी चाख ।
पर मर्म चापइ, आगलउ बोलतउ थरहर कापइ ।
जे जे चालत पलेवणू, एहनूं नाम न लेवणूं ।
जिवारई गृहस्थ नइ··· ··जोग, तिवारइ होइसी कुकलत्र तणउ सयोग ।
चालती चीतरी, ··· ·· ····· ।
लावा लूंतरी, किता कहू कूतरी ।
पुण्य द्वार तणी आगल, मोक्ष तणी भागल ।
जेह जीव नइ होइ पापकर्म भारी, इसी सतापकारी तऊ सपजइ नारी ।
कहइ 'धीर' अणगारी ।

इति दुष्ट स्त्री वर्णक ॥

(कु०)

४१ दुष्ट स्त्री (७)

काली, ककाली । काणी, कोचरी ।
कुरूप, कुत्सित ।
काक जंघा, काकसरी ।
कुहाडि, कुलक्षिणी,
सापिणी, पापिणी
सुंखिणी, नरगिणी
लावडी, बोबडी ।
सडी, पडी ।

धणीरी छाडी, भले भाडी ।
कामकाज माठी, निरति सुरति नाठी ।
आखिचूंची, कानिऊंची ।
लाबदाति, करइराति ।
निकज्ज, अकज्ज ।
निःस्नेह, दुर्गंध देह ।
जीभाल, रीसाल ।
निरदाखीण, अकुलीण ।
जिवारइ गृहस्थ नइ होइ पुण्य तणउ वियोग,
तिवारइ होइ कुकलत्र तणउ संयोग ।
जे वालती वाछ्र साची अलछि ।
बोलती डारइ, रीसइ छोरू मारइ ।
बोलती विसइ, हाथ उछलइ ।
घरि वित्रोड़करी बाहरि मिलइ ।
फूॅफूॅती सापिणी, पूरी पापिणी ।
चालती चीतीरी, लावालूत्तरी कूनरी ।
पुण्य द्वार तणी आगल, मोक्ष नी भागल ।
इसी संताप कारी, तउ संपजइ नारी, जइ जीवनइ होइ पापकर्म्म भारी ।

(सू०)

४२ स्त्री दुर्गुण (८)

स्त्री हूती लाज नही, मर्यादा नही, अपेक्षा नहीं
कुल जाति मालग्न ऊपजावइ ।
अयुक्त साहसु खेलइ, सुख पाए पेल्हइ ।
कुलाचारू लोपइ, क्रियाद्वार लोपइ,
सत्य सौच आचार विचार लोपइ ।
मातृ पितृ कुल द्रोह करइ
स्वसुर कुल द्रोह करइ
किंबहुना जिण प्रकारि काक पासि सौच नहीं
तिणी प्रकारि स्त्री पासि भलउ काइ नही ।

(पु० अ०)

४३ अधम स्त्री (९)

बोलती खाल पाडइ, फूक देती पाहण फाडइ ।
महाकालि, विकरालि । सपूरी आगि झालि[1] साची अलछि ।
जाची जेऊ काल रात्रि ।
वचनि सर्वांगि शूल ऊपजावई, मिरी तणी ऊगटि ।
अंगार[2] तणी सडड़ि, चालतउं पलेवणउं ।
दाघ ज्वर तणी बहिन, नव धाया तेर ऊपाडइ ।
बगाई करता थाटी त्रोडइ, फूंक वेहि गाठि छोडइ ।
जिसी केवलइ हालाहलि घडी हुइ, प्रलयकाल तउ नीपनी हुई ।
वीछी ना आकुडा नी परि वाकुडी, कूड़ कपट कारि साकुडी ।
कुलक्षण तणी आकुडी ।
इसी सर्वाधम स्त्री जाणिवी ।
आवर्त्तः संशया नाम विनाय ।

(स० १) १३७

४४ फूहड़ स्त्री (१०)

कुघरणि, महा कुहाड़ि ।
सदा धरइ आटोपु, बइठी भरतार दिइ निरोपु ।
डोला हेठि कि कि उघरइ, मुहि साम्ही[1] थी त्ररत्ररइ ।
राधणा सीधणा नितु अणाह करइ, सकल दिवस सूअर जिम चरइ ।
ऊंचा× नीचा वाक्य बोलाई, यही प्राहुण उटल[†] कोलई ।
वोर छाकस^ भिडइ, वाट+ गुलाम ऊपरि मुहि चडइ ।
वरि थकि सीकउ त्रोडइ, बोलावी माथउं फोडइ ।
पाणी माहि कलिं ऊटाडइ, कुटुम्ब सदा दुःखि पाडइ ।
इसी घर नारि दुर्मुखि, अंधकार मुखि ।
संताप कारिणी, उद्वेग कारिणी, कलह कारिणी ।
महापाप तणइ उदयि पामीयइ, रोसि चडी कुणही न मनावीयइ ।
राधती सीवती खारउ मउलउ करइ दाधउ काचउ करइ ।
ढीलउं गीलउं करइ । जे खाधउ ते खाधउं

---

[1] मूलि २ अन्वार ३ छेहि

[1] वीवर

+दीह् नगलू × अवाक्यु – ठणको ^ छोरु वाङ्म :कवाग कवागी ऊपरि त्रिनेत्रउ चडइ

शेप माखी भिणहणतउ-मेल्हइ । हाडलउ कूंडउ खरडिउ मेल्हइ ।
घर[2] ऊखरलउं, माकुण मांचा भरिया, जू भरिया गोदड़ा ।
कान सियाली[3] भरिया रालडा ।
फूहडा पगभरिउ साडलउ, उघरसाला[4] भरिउं उढणउ :
हाथि पाणी नहीं, पगि पाणी नही ।
मल मलिन सरीर दीठीइं उंकारी आवइ ।
ईसी फूहडी मूगामणी घर नारि कलिकालि घणी ॥ (स० १)

४५ विरहिणी (११)

किसी एक विरहिणी हुइ ?
विरहावस्था, आहारि ऊपरि करइ अनास्था ।
सर्व शृङ्गार, मानइ अगार ।
तीणइ अवला, अंतर्गत फूल कीधा वेगला ।
चंद्र तपइ पान, थ्या विखवान ।
विरहानल प्रज्वलइ अंगु, सखी जन स्यू विरंग ।
एहवउ काई थ्युं विग्र चित्तु, न उलगइं गीतु ।
न कुणही स्यु हसइ, सदा नीससइ ।
बोलावी खीजइ, मा बाप हुइ न भजइ ।
एहवी अगही अवाधि, कदली गृहि सूता नहीं समाधि ।
प्रवासी थियु रामु, कहिहइं कहइ चित्त नु विरामु ।
सूआ सालही रामति, तिहा विरमी मति ।
सारि सोगठू तेहुँ न सहाइ दीठू ।
सगली इ मिली सखी, थई विलखी ।
पुण तीहे नुं कह्यउ न परीछइं, योगी नी परि बइसी रहइ छइ ।
मेल्हउ सगला नउ अभ्यासु, अरण्य समान मानइ आवासु ।
सूनी श्री फिरइ, भणयूँ कहइ नउं न करइं ।
एवडु काई विरह नउ व्यापु,
अनेकि सीतलोपचार करीइं पुण न भाजइ
शरीर नउ सतापु ।
दीहाडइ दीहाडइ देह खीजइ, नेमित्तिक ने वचने न पतीजइ
कहिनइं कहीइ, जेइ पहिलइ दीसि न विमास्यउं तउ इम ईजि वेदन सहीइ ।

---

२ वीवर ३ कानामियाली ३ उथर ४ उकार

जिम थोड़इ पाणी माछलु, तिमि विरहि कीधउ आतमा आकलउ ।
जिमि द्विविध ससार देखइ, तिम आपणपू उवेखइ ।
पुणि रोअइ, अनि आखि ना आसू लूही दिसि पखा जोअइ
जिसी वाग विछोही हरिणी,
तिसी विरहि व्याकुलि तरुणी ।
गाढइ दुख सागर बूडी
तउ निद्राइ न तेडी ॥ ३७ ॥ (मु०)

४६ विरहिणी (१२)

हारु त्रोड़ती, वलय मोडती ।
आभरण भाजती, वस्त्र गाजती ।
किंकिणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती ।
वक्षस्थल ताड़ती, कुचूउ फाड़ती ।
केश[1] कलाप रोलावती, पृथ्वी तली[2] लोटती ।
आँसू करी[3] कुंचक सांचती, डोडली दृष्टि मींचती ।
दीन वचन बोलती, सखी जन अपमानती[4] ।
थोडइ[5] पाएणी माछली जिम तालो वली[6] जाती, शोक विकल थाती ।
क्षणि जोयइ, क्षणि रोअइ ।
क्षणि हंसइ, क्षणि वइसइ[7] ।
क्षणि आक्रंदइ, क्षणि निंदइ ।
क्षणि मूझइ, क्षणि बूझइ ।
तेह तणउ तणु, संतापइ चंदणु ।
कमल[8] नाल, पुण मेल्हइ झाल ।
चद्र काति[9] ज्वलइ, पुष्प[10] शय्या बलइ ।
हारु, मावइ अंगारु ।

पाठांतर

१ कुल कलाप रोलती (पु० अ०), कतुल कलाप रोडती (मु०) २ मण्डल (पु० अ० और मु०) ३ सकजलि वाष्पाजलि (पु० अ०) सकल वाष्पि (मु०)

४ इसके बाद प्रति (पु० अ०) में 'गुणवुण रोड़ती, अपरापर दिग्मण्डल जोडती, ।' पाठ है ।

५ पाणीय रहित मच्छी जिम तिलोवलिजाती, विकलथाती (पु० अ०) पाणीय रहित मत्स्य जिम वैल्लती, (मु०) ६ विनसइ (पु० अ०) विहसई (मु०) चद्रोपलपलई । ७ क्षणि एक टबूकइ, क्षणि एक मूवई (मु०) ८ मृणाल नाल ९ ज्योत्स्ना (पु० अ०) चद्रिका (मु०) १० चद्रोपलदलई (पु० अ०) चद्रोपल खलइ (मु०)

कदली हर,[1] मानइ जमहर।
जे जल सीकर[2] ते उद्वेग कर।
जउ शीतलोपचार ते करइ[3] विकार।
इण परि प्रज्वलित स्नेह पटल।
विरहानल नीपजइ,
विरह ताप निश्वास चिंता मौन कृशागता।
अब्ज शय्यानिशादैर्घ्य जागरः शशिरोष्णता॥
अप सारथ्य घनसारं कुरु हार दूर एव किं कमलैः।
अलमल मालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला॥
अथ सा पुनरव विह्वला, वसुधालिंगन धूसर स्तनी।
विललाप विकीर्ण मूर्द्धजा सम दुःखामिव कुर्वती स्थलीं॥ ११८। (सं० १)

(स २) मे विशेष पाठ—

जे तरू किसलय तप, सोइ सताप कर

(स. ३) मे विशेष पाठ—

आखि चचालै। बैठी डोलै। घूँघटरी ओट धरती लौटे।
आसूई धरती सींचै, दुखै आँख मीचै।
कुटुम्ब नै करै कानै, सहेलिया नै अपमानै।
मूर्छा पामती धरती ढलई,
खिण उघाड़ै मुहडइ मूंडैधरई,
अहोराजकुल दिवाकर, हो करुणासागर
हो असरण-सरण, मुझनइ मूकी नै किहा गयो।

४७ विरह-विलाप (१३)

हा कान्त! हा हृदय विश्रान्त!
हा प्रियतम! हा सर्वोत्तम!
हा दयत[1]! हा प्राणहित!
हा सौभाग्यसुंदर! हा भाग्य पुरंदर!
हा अमृत वचन! हा चन्द्रवदन!
हा सुदर गात्र! हा प्रेमपात्र! (पु० अ०)

---

१ गृह (मु०) २ शीतलकर (पु० अ०) शीतलु (मु०) ३ भजइ (पु० अ०) (मु०) ४ इणि पर प्रबल, प्रज्वलित स्नेह पटल (पु० अ०) (मु०)

१ दयित (स० १)

४८ वेश्या वर्णन (१४)

चतुषष्टी कला[1] कुशल, कोमलालाप पेशल ।
निरुपम[2] रूप लावण्य सरूप, विलसद् गुण निधान कूप ।
चतुरिम चाणक्य[3], ज्योत्सना माणिक्य ।
इंगिताकार निपुण[4], कामशास्त्र विचक्षण[5] ।
चंपक कलिकावत सुकुमार, सत्पुरुष सार सुकुमार ।
इस्यउ पुरुष देखि, कुट्टणि भणइ विशेखि ।
वस्थि[6] करै भक्ति, वड़ी आसक्ति ।
आव्यउ आपणै गृहागणि, चालतउ[7] जाणै चिंतामणि ।
निवृत्ति करु, साक्षात कल्पतरु । (सू०)

४९ स्त्री स्वभाव (१)

खिण रूसे, खिण तूसे । खिण मुलके, खिण धुरके ।
खिण मुरझे, खिण बुझे, खिण झूझे । खिण धीजे, खिण सूझें ।
खिण हँसे । खिण सस्नेह साहमुं जोवे,
खिण प्रीति तोडे, खिण प्रीति खिण रोवे ।
खिण टले, खिण मिले । खिण कोप उछले, खिण वले । खिण तारे, खिण मारे ।
खिण राचे, खिण माचे । खिण विरचे, खिण वढे ।
खिण गाइ, खिण उदास थाइ । खिणपडे, खिण[1] पाडे, ।
खिण राग दिखाडे, खिण महिला मर्म उघाडे ।
खिण हसे, खिण मा र वाघसे । खिण भूंडी, खिणरुडी ।
॥ एहवो स्त्रीनोस्वभाव ॥ (स० २)

---

१ विज्ञान (मु) २ 'देखता मोहियइ वडावडा भूप, विमल सदगुण निधान कूप ।' इससे पूर्व अधिक पाठ—'महा एक अनूप, जोवता अवगुणइ छाह नइ धूप ।' (कु) ३ चतुर वाणिज्य (मु) ४ 'अ ग मइं घणा गुण' (प्रति कु, में अधिक) ५ जाणइ नरनारी ना लक्षण (कु मे अधिक) इसके आगे ओर अधिक—

वक्षस्थल विशाल, अत्य त सुकमाल ।
रूपइ उर्वसी, मिलइ लोचन विसी ।
साक्षात रंभा, देखता उपजइ अचंभा ।

६ वस्त्रि (कु) वत्से (मुं) ७ चालतउ (मु) आविउ (कु)

१ त्राटै

५० स्त्रीना काम (२)

दलवा, भरडवा, पीसवा, थालधोवा, झटकवा, छाण पूछा, लीपणा, वासीदा, राधवा, प्रीसवा, कालवा, सांधवा, इत्यादि स्त्री का काम ।

(स० ४)

५१ स्त्री उपमा (३)

रति, प्रीति, रंभा, तिलोत्तमा, इन्द्राणी ४ अपछरा, उर्वसी, लक्ष्मी, गंगा, देवकन्या, नागकन्या, किन्नरी, विद्याधरी, खेचरी भूवरी, सरस्वती, गौरी इत्यादिक [एहवी कन्या]

(स० ३)

५२ स्त्री नाम (४)

कपूरदे, रत्नादे, रूपादे, अमृ प्रतापदे, सहजलदे, मूमलदेवि, चापलदेवि, रामलदेवि, पाल्हणदेवि, पाल्हणदेवि, राणी कपूरमजरी, रत्नमंजरी, मदनमंजरी, सोभाग्यमजरी, कुमरि ॥

(पु० अ०)

५३ मालवी स्त्री नाम (५)

चंगा, गंगा, चंपा, गोभा, जसोदा,
जागसा, जसमा, वरजू, वेणि, खेडां,
सोना, लाली, लखमी, नीला, तेजू,
तिलका, अगरा, आसा, फूला, अनूला,
इंद्रा, सुंदर,

५४ मेवात स्त्री नाम (६)

गुलालदे, गुलाबदे, गोरादे गूजरदे ।
गुमानदे, गोपालदे, साहिबदे, चतुरंगदे,
सोहागदे, सुजाणदे, सुरताणदे, देवलदे,
दुरगादे, साहिया दे[1], राययादे, सोभागदे
चमेली, कसेरी, कपूरी, कस्तूरी,
रांकली गाकली,

---

[1] साहिबादे

५५ मरुधरस्त्रीनाम (७)

हरकी, वीरकी, केसकी, रामकी, सोनकी, पूरकी, देवकी, राजकी, चापली, पेमकी, आसकी, कोडकी, ऊमली, सिवली, देवली, दीपली, जगली खेतली, मानकी, नेतली, पासकी, इत्यादि मरुधरस्त्रीनामानि ॥

५६ दक्षिणी स्त्रीनाम (८)

तेजाई, तुकाई, तुलजाई, जोगाई, झरबाई, झबाई, जम्यबाई, मोगाई, भोगाई, गंगाई, मंगाई गोभाई, रंगाई, रेवाई,[1] शिवाई, देवाई, चगाई. लबाई, केसाई, कोडाई, कोकाई, कनकाई, जमुनाई, हंसाई, भंगाई, मणिकाई, भीमाई, कासाई, कामाई, जीवाई फूलाई, द्वारकाई, पीलाई, राजाई,

इति दक्षिणीस्त्रीनामानि ॥

५७ गुजराती स्त्री नाम (९)

छोटी, चड़कली, मड़कली, मागबाई गाबाई, गोरबाई, लाडबाई, लाछाबाई लीलबाई, लालबाई, वीरबाई, वइणबाई सेजबाई, वेजबाई, वालबाई, गेलबाई तेजबाई, फूलबाई, पूतली बाई, सेवित्रीबाई, कुंअर बाई, कीकी बाई, रींडली बाई, मढूबाई, मटकूबाई, फटकूबाई, फणकूबाई, झणकूबाई, वीभूबाई ॥

---

१ गीवाई

सभा श्रृंगारादि-वर्णन संग्रह

विभाग

प्रकृति-वर्णन

प्रभात, संध्या, ऋतु आदि

१ प्रभात-वर्णन (१)

हवै कूकडा बोल्या, लगारेक नीद थी डोल्या ।
नींदे झकोल्या, मूंकी संभोग नी लोल्या, स्त्री भर्तार डमडोल्या ।
आवी नारी, वार उघाड़ी, राति अँधारी ।
भर्तारइ लूगड़ूँ आल्यूं, वासै पाछै घल्यूं ।
दही संभाल्यूं, विलोवणूं घाल्यूं ।
राति ज दीसै छइं, घरटी पीसै छइं ।
इतरइ शख वाग्या, झबकी नै जाग्या ।
ऊठ्या नागा, लूगडा पहिरवा लागा ।
पहिर्या वागा, आपणै कामै लागा ।
दीवइ जोति घटी, चाकी परीवटी ।
दूती परी सटी, चंद जोति मटी ।
गणिका नी महिमा घटी, माथा नी बाँधै लटी, पाप मति फटी ।
तितरै झालर वागी, स्त्रियो पण जागी ।
ऊठवानै लागी, भावठि भागी, पुण्य दिसा जागी ।
किंवाड खोली, मुँहड़ै बोली—
उठो बाई, जागो भाई, राति निहाई ।
प्रह पीली थई, राति परी गई ।
कलीं चूण लई, हीइं सरदई ।
आकाश लाली भई, स्त्रियो गहगई, सबकूं भली भई ।
शैया सकेली, अलगी म्हेली ।

रजनी खेली, स्त्री रही इकेली।
वात संभारै पेली, ऊभी देहली, नयणै रेली।
प्रभाती गावो, मंगल ध्यावो।
आणंद पावो, दरबार जावो।
घोड़ै जीण करइं, कोतल आगल करइं।
झाँखी नै मुजरैं, वड़ैं गुजरैं।
तीन हजारी, पंच हजारी।
सात हजारी, महा बजारी।
बार हजारी, लाज वधारी, काज सधारी।
मुजरै आया, मोजां पाया घोड़ा लाया।
निवाज गुदारं, भेजंत आवै।
तुरक मुगल, सईद अवल।
काजी आगें, पगे लागें।
नोबत गड़गड़ै छै, पारसी भणै छै, खुदा खुदा करै छै।
चोपू उछेरयूं, गोवालै वेरयूं, आघुं सूं प्रेरयूं।
पंथी परा चाल्या, आघा हाल्या।
सोण साउ वाल्या, साथै संबल घाल्या।
वाका मारग टाल्या, सजनिया पाछा वाल्या।
सूरज उग्यो, संसार जग्यो।
व्यापारे लग्यो, पनघट लग्यो।
आप आपणा धर्म करीइं पुण्य करीइं, अरिहंत धरीइं।
सुणो हो भ्रात, करो पुण्य नी वात।
पवित्र करो गात, गई रात, थयो प्रभात॥ (स० ३)

२ प्रभात-वर्णन (२)

प्रभात समउ हुयउ प्रह फूटउ[१]।
लोक तणइ घ छूटउ।
तारागण विरलउ हुयउ, चंद्रमा विच्छायु थियउ।
कूकडउ[२] लवइ, देवतणाबार ऊघड़ां।
प्रभातिक तूर्य वाजिया, राजभवन वैतालिक पढइ।

१—अंधकार फीटउ। गाय तणा गाला छूटा।
२—कूकडा तणी ऊलि लवइ,

हस्ति सिंखलारवि कानि पडियउ न साभलियइ ।
विलोणा तणा झरडका ऊठिया,[1] पथिया मार्गिथिया ।
ब्राह्मण तणै घरे वेदध्रुणि[2] विस्तरियउ ।
धार्मिकलोक अनुष्ठान[3] पर हुया । (पु० अ०)

३ सूर्योदय-वर्णन (१)

उदयाचल चूलिकालंकार, निज किरण विकाशितान्धकार ।
प्रवर्त्तित सकल महीतल व्यापार, चक्रवाक प्रीतिसूत्रतणा सूत्रधारु ।
निजकर निकर प्रतापाक्रान्त भूतल, इस्यउ सूर्यमडल ।
कातिसमूह प्रकासइं, उद्दड पद्मिनी खंड विकासइ ॥ ६५ ॥ (मु०)

४ संध्या-वर्णन (१)

सूरज ना किरण पश्चिम ढल्या, पथी सगा नै मल्या ।
विरही ना हिया बल्या, गोवाल घरै वल्या ।
चोपूं लाव्या, आप आपणा घरै आव्या ।
पखी टलवल्या, मालै जावानै खलभल्या ।
चोर सलसल्या, आवै हडफल्या ।
आकाश राता, मेहें करी माता ।
किहाकिण नीला, किहाकिण पीला ।
नानाप्रकार ना रग, भला सुरग ।
राछ-पीछ सकेल्या, ठिकाणै मेहल्या, कारीगर घरै खेल्या ।
सक्का पाणी भरैं, छटकाव करैं, देसोत डेरैं ।
फूल विखेरै छइं, छडीदार जी-जी करै छइं ।
दुलीचा विछावै छइ, उमराव आवैं छइ ।
मोजा पावै छइ, कीर्तन थावैं छइ ।
गुणियन गावै छइ, अंब्रखास जुडै छइं ।
पाछा ते मुडै छइ, दुसमन ते कुढै छइ ।
हीयो हीआते अडै छइ, असवार ते खडै छइं ।
एक-एक मा पडै छइं, कुजडिया लडै छइं ।
गुदडी जुडाणी छइं, अनेक वस्तु मडाणी छइ ।
दलाल बोलावै छइ, रसिया मोलावै छइं ।
माला गूथावै छइ, बीडा खावै छइं ।

१—उपजइ । २—ध्वनि । ३—प्रतिक्रमण (स० १।१५०)

पान मिठाई ल्ये छइं, पईसा दे छइं ।
झालर झणकै छइं, रणीसींगा रणकै छइं ।
शंख भणकै छइं, कतेब भणै छइ ।
तसबी गिणै छइं, खटकर्म ते करै छइं ।
लोक अरापरा फरै छइं, दीवा हाटे घरे छइं ।
तेल ते भरे छइं, संध्या ते करै छइं ॥ (स–३)

५ चन्द्रोदय–वर्णन (१)

गजलक्ष्मी स्फाटित दर्पणु, चकोर संतर्पणु ।
अमृतमय किरणु, तिमिर हरणु ।
मुग्धवधू विदग्ध शिक्षिणोपाय, प्रणय कुपित कामिनी माननोपाय ।
विरहिणी हृदय करपत्रघातु, चकोर दत्तलातु ।
चक्रवाकु निःकारण शत्रु, कन्दर्प्पराजनउं छत्रु ।
अमृतइं भरिया चन्द्रकान्तु, यामिनी-कामिनी कान्तु ।
प्रकाशित कुमुदाकार, इस्यउ ऊग्यउ रजनीकार ॥ ६४ (मु०)

६ अंधारी रात–वर्णन (१)

साझ परी गई, गुदड़ी परी थई, दीवैं जोति भई ।
चोहटैं भीड़ मिटी, व्यापार नी महिमा घटी, हाटैं तालूं जटी ।
आप-आपणै घरै आया, कूँची लाया ।
स्त्री सोलैं सिणगार सजै, गणिका जारनै भजै, घड़ियाले घड़ी वजै ।
सर्वकारज साध्या, पाडा बांध्या, रंधारण रांध्या ।
व्यालू कीधा, किमाड़ आडा दीधा ।
सीरख मांचा संभाल्या, ढोलिया ढाल्या ।
ऊपरि पहतेड़ा वाल्या, सूवा नै भाल्या, जांमण घाल्या ।
मिठाई खाइं छै, कहणी कहवाइं छै, नींद आवै छै ।
सूपा पड्या, जार परस्त्री नै अड्या ।
अंधकार व्याप विस्तरैं, कुमाणस पर घर संचरैं ।
काजल जेहवी, स्त्रियोनी वेणी जेहवी ।
यमुना ना प्रवाह जेहवी, रेवंतकाचल जेहवी ।
अंजनाचल जेहवी, पटाभर कुंजर जेहवी, कालीघटा जेहवी ।
काली-काली स्यांम, ·········।
हाथे हाथ न सूझै, कोई कोईनै न बूझै, विचार मांणस मूंझै ।

काइ न कहवाई छै, दूती उतावली धाई छै, सदेसो कहवा जाइ छै।
केड़ते कसै छै, चोरते धँसै छै, कूतरा ते भसै छै।
घोड़ा ते हणहणै छै, नीला जवते चरै छै।
कोटवाल ते फिरै छै, चोकी ते करै छै।
रणतूर बजावै छै, 'खबरदार-खबरदार—जागते रहियो-जागते रहियो' कहीनै जगावै छै, चोर चकार नै भजावै छै।
घणी सी कहीइं वात, दुसमणनी न पूगै घात।
मनुष्यनी नोवैं यात, एहवी अंधारी रात। (स० ३)

७ अंधकार-वर्णन (१)

काली लली—रात्रि रात्रि प्रतिइं मिली।
जिसी भ्रमरनी पाख, जि० अजनाचल नउ' शिखर।
जि० कुमाणस मुख, जि० स्त्रीतणी वेणि।
जि० यमुना प्रवाह, जि० कज्जल नउ अवार।
जि० गुलीनउ रंग, जिसिउ' कसीसनउ' जल॥ ७३ (स० १)

८ वसंतऋतु-वर्णन (१)

विरहिणी हसंतु, पुहतउ वसतु।
फूलइ वणराइ, नगरमाहि न फिराइ।
रुलीइ तिम' निजईय वनि।
मेल्ही वइराग, खेलीइ फाग।
कामराज ना भूंप, तिसा मस्तकि रचीइ चूप।
अति सुविशाल, आम्र नी डाल।
तिहा बाधीइं हिंडोला, रमइ नर भोला।
फूलहरा भरीइं, भला कदलीग्रह अनुसरीइ।
कोइलि वासइ, रुलीईत विलासी नासइ।
भर्त्ता स्त्री रलिए, खेलहि खडोसली ए।
विहसी वउलसिरी, भमइं रहइं भमर पाखलि फिरी।
चंपक नी कली, चंपक ऊपर नीकली।
मस्तकि मरूआ, पहिरे लोक गरूआ।
रितुराज नउ भालु, वनि महक्यउ वालउ।
परिमल भारी, उल्लसी देव गंधारी।
दमणउ पहिरीइ, कुण एकु चित्तु न हरीइ।

नीकली निरवाली, हियइ पहिरी वाली ।
सुकृतीया हुइं सुखकरणी, इसी विहसी करणी ।
दीसइ महाभरि, आंबानी माजरि ।
उल्लस्या अशोकु, वसंत रागु आलवइ लोक ।
इम वसंतश्री विलसइं, सुरराज हुइं हसइं ॥ ४१ (मु०)

६ ग्रीष्मऋतु–वर्णन (१)

गयो सियालो, आयो उन्हालो ।
लू वाजै छै, शीत लाजै छै ।
पग दाभै छइं, तावडो तपै छइं ।
रूंख पात झड़ै छइं, रूंख पवनै पड़ै छइं ।
पणिहारी पाणी माटि लड़ै छइ, वावकूआ सूकै छइं ।
लोग काम चूकैं छइं, पंथीमार्ग मूकै छइं ।
तावड़ो लुकैं छइं, कंठ सूकै छइं ।
जोगी जाप जपैं छइं, जीव रूंख नै लपैं छइं ।
सर्वछाया छिपैं छइं, तावडो तपैं छइं ।
…………, चंदन प्याला भरावीजै ।
तैखाने पोढीजै, मलमल ओढीजै ।
एलची साकर ना पाणी पीजै छइं, वाय लीजै छइं ।
मोज दीजै छइं, करतूत कीजै छइं ।
लाहो लीजै छइं, आंबा मोरथा छइं ।
फाग खलैं छइं, पचरका मेलैं छइं ।
मुहड़ै गुलाल छेलै छइं, लोक हाथ झेलै छइं ।
हीया विकसै, लोक हँसै ।
बागवाड़ी जाइजै, तलाव न्हाईजै ।
कमल लाइजै, चाग वाइजै ।
राग[1] गाइजै, आणंद पाइजै ।
दुलीचा विछाइजै, यार बोलाईजै ।
गोठ कराइजै, पात्र नचाइजै ।
बाजा बजाइजै, पाय नचाइ जइं ।
रंग रमीइं, परदेस काइ भमीइं

---

१ रास।

अवल्ल जीमिइं, ...।
केसरीलाल, रमोगुलाल ।
बइसौ चउसाल, एह्वो उष्णकाल । (स० ३)

१० उष्णकाल-वर्णन (२)

मह्रा पित्त[1] नउ आलउ, आव्यउ उन्हालउ ।
लूअ वाजइ, काननी पापड़ी दाझइ ।
झाळुआ वलइं, हिमाचल ना शिखर गलइं ।
निवाणै खूटा नीर, पहिरीइं आछा चीर ।
हथेली जेवडा, जीमइं[2] भोना वडा ।
एवड़उ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ ।
पाचइ वण, राणी ना ढीला थायइ काकण[3] ।
वायु वाजइ प्रबल, उड़इ धूलि ना पटल ।
सियालइ हूती राति मोटी, ते उन्हाले थई छोटी[4] ।
सूर आपणपइं तपइ, जगत्र सतापइ[5] ।
जे जीव थलचरइं, ते जलाश्रय अणुसरइ ।
लोक ल्यइं आवलवाणी[6], मेली टाढा पाणी ।
केइक जीमइं खाटा, तड़कउ टालइं वाधइ त्राटा ।
साहूकार ल्यइ साकर, तपति नई सिर द्यइ टाकर[7] ।
एवउ उष्णकाल, फूलइ अंब डाल[8] ।

११ उष्णकाल-वर्णन (३)

जिसी दावानल तणी ज्वाला तिसी लू वाइं ।
जिसिउ बावन्नपल तणउ गोलउ धमिउ हुइ, तिसिउ आदित्य तपइ ।
जिसी भाड़ तणी वेलू तिसी भूमिका धगधगइ ।
मस्तक तणउ प्रस्वेद पानी[9] उतरइं ।
धर्मि जीवलोक गलगलइ, श्रीमत तणा चउबारा झलहलइ ।
जलद्रा शरीरि लगाडीपइं, गुलाल[10], तणा अभ्यगम[11] कीजइ ।
बावन्ना श्रीखडघसीयइ, चउदिसिहि वीजणा फिरइं ।

१—पित्र २—जीमइलोक ३—रणीय हुइं ढीला थाइ काकण ४—सीयालइ हुती मोटी रात्रि, ते नान्हीथई रात्रि, ५—जगयउ तपइ ६—आछिल वाणी ७—तपति माहि फिरइ कागलिया चाकर ८—फलीयइ अ वा कालि। ९—पाल्ही। १०—गुलाम। ११—अभ्य ग।

द्राक्षा आंबिली पान कीजइ, कलमशालि तणा सीवउरा करंबा कीजइं ।
आछा कापड़ा पहिरीयइं, लू आहण्यां पाणी पीजइ ।
अच्छाछ चंदन रसार्द्रकरा मृगाक्षो धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च ।
मंदोमरुत्सुमनसः शुचिहर्म्यं पृष्ठं ग्रीष्मेमदं च मदनं च विवर्द्धयंति । १५२
(स० १)

१२ वर्षाकाल–वर्णन (१)

आयउ वर्षाकाल, चिहुं दिसि घटा उमटी ततकाल ।
गड़गड़ाट मेह गाजै, जाणै नालि गोला वाजै ।
कालै आभै वीजुली झबकइ, विरहणी ना हिया द्रबकइं ।
बब्बीहा बोलइ, वाणिया धान वेचिवा वाखार खोलइ ।
बोलइं मोर, दादुरइं सोर ।
अंधारइ घोर, पइसइ चोर ।

कंदर्प्प करइ जोर, मानिनी स्त्री भर्त्तारनइ करइ निहोर । चंद सूरिज वादले छाया, पंखेवाऊ आप आपणां घरां नइ धाया । राजहंस मानसरोवर भणी चाल्या, लोके वस्तु वाना घरा माहे घाल्या । वग पंकति सोहइ, इंद्र धनुष चित्त मोहइ । आभो थयो रातो, मेह थयौ मातौ । मोटी छाट आवइ, लोकानइ भावइं । झड़ी लागी, करसणीरी भाग्य दसा जागी । मूसलधार मेह वरसइं, पृथ्वी उर्ण-पूर्ण करिवा तरसइं । वहइ प्रनाल, खलखलइ पाल । चूयइ ओरा, भीजइं वस्तुवानां रा बोरा । टबकई पटसाल, चिचुंयइ वाल । नदी आवी पूर, कडणिर रूंख भांजि करइं चकचूर । वहइ वाहला, लोक थया काहला, जूना ढूंढा पड़इ, लोक ऊंचा चडइ । हालीए खेत्र खड़या, वाडिस्युं सेढा जड्या । मारग भागा, जे जिहा ते तिहां रहिवा लागा । प्रगल्या राता मामोला, धान थया सुंहगा मोला । नीली हरी डहडही, घणा थया दूध नइ दही । नीपना घणा धान, संभर्‍या धर्म्मनइ ध्यान । गयो रोर, लोग करइं वकोर । गयो दुकाल, थयो सुगाल । ईदृशे वर्षाकाले न कोपि, गंतुं शक्नोति । (का०)

१३ वर्षाकाल-वर्णन (२)

आसाढ़[१] मेह आव्या, कुणइक नइ मनि उछरंग न भाव्या ।
कालाहणि[२] वली, सर्व जीव[३] नइ मन रली ।
उत्तर वाउ वाज्या, आकास मेह गाज्या ।

---

१ साढ़ (मु०), संसाढ़ (मु०) २ कालविणी (मु०) ३ जगत्रय (मु०) ।

कुडा बहक्या, केवड़ा महक्या ।

कुद उलस्या, करसणी हरस्या ।

कदंब महमह्या, मयूर गहगह्या ।

पपीहा वासइं, विरहणी उसासइं ।

पर्वत[1] नइ सिखरि स्नेह नइ भरि ।

सीगङ्ग[2] वायइं, मल्हार गाइं ।

भील नाचइ, महिषी माचइ ।

तूठा मेह, उलस्या स्नेह ।

नदी पूर वहिवा लागी, पग न लहइं पाणी[3] ।

जल सूं भरया निवाण, पृथ्वी प्रवर्त्ती मदन नी आण ।

हरी प्रगट हुआ, दीसइ वराह रा जूथ जूजुआ ।

सालूर ना साभलीयइ स्वर, जाइ दीसइं विकस्वर ।

भला केलिवीयइ[4] वालर, वावीयइ भालर ।

अति सरूप, नींबूआ नीपजइ भूप ।

ठामि-ठामि[5] मन मोहीयइ, शालि ना क्यारा डोहीयइ ।

गुहिरउ मेह गाजइ, दुर्भिख्य तणा भय भाजइ ।

आगम नरेसर ना जाणै नीसाण वाजइ, बग पंक्ति विराजइ ।

वाव्याकरण वाचइ, लोक धर्म कर्म वेवै साधइ ।

वेला लहलहइ, सर्वलोक आचारइं रहइं ।

पर्वत थी नीझरण छूटइ, भरिया सरोवर फूटइ ।

मघा अंधकार विस्तरइ, कमल परिमल निस्तरइ ।

अखड धार पाणी पडइ, करसणी खेत्र खडइ ।

सीम जडइ, लोक ऊँचा चडइ ।

केई एक तिलकी पड़इ, कोठार खोलीजइ ।

कढीयारा दीजइ, एक-एक नइ पतीजइ ।

धान रा धणी छीजइ, कागदी पीजइ (काम दीपीजइ) असबाब सहु भीजइ ।

इसउ वर्षाकाल जाणी, हीयइ संतोष आणी ।

साधुमास च्यार एक ठउड़ि रहइ, पीठ फलक संग्रहइ ।

घणू स्यूं कहीयइ, जइ रूडूं थानकि लहीयइ, तउ चउमासि एक रहीयइ ।

---

१ वप्पीहा (सु०) (मु) २ सींगलू (सु०) (मु०) ३ देश-विदेश नी वाट भागी (मु०) ४ कोलविइ (सु०) ५ अणवावै (सु०) -[(सु) और (मु) प्रतियो में यह पाठ नहीं है ।]

फोरवियइ तप री[1] सगति, श्रावक करइ[2] भगति ।
स्यउ बंधुवर्ग,[3] साधु नइ[4] इहाई स्वर्ग ।
लाभइ प्रासुक[5] श्राहार, तउ लेवउ[6] व्यवहार ।
बइसइ श्रावक सुजांण, भला करइ वखांण ।
पुण्यवंत नइ[7] सगलइ पूरउ, नहीं मुनिसर[8] नइ कांई अधूरउ ।
(कु०)

१३ वर्षाकाल-वर्णन (३)

ऊमटी घटा, बादल हुई एकठा ।
पडइ छटा[9], ऊलसै[10] कुलटा ।
भाजै भटा, भीजै लटा ।
पुहवि पुण्य प्रगटा, ऋषिराजान ठामि बइठा ।
मेह गाजै, जाणें नाल गोला बाजै ।
दुकाल लाजै, सुवाय बाजै ।
इन्द्र राजै, ताप[11] पराजै ।
बीजली झबकैं, पाणी झमकैं ।
मेह टबकैं, हीया द्रबकैं ।
नदी खाल उबकैं, वनचर भबकै,[12] आयो अबकैं ।
घणा जीवनी उतपत, को पंथ चालो मत ।
बोलैं मोर, डेडक जोर,[13] दादुर करैं सोर ।
अंधार घोर, पइसैं चोर ।
भीजैं ढोर, स्त्री करैं निहोर ।
चंद सूर बादलै छायो, पंथि घरे आवि धायो ।
मेघ वरसै सवायो, रूठो नाह मनायो ।
खलकै खाल, वहै प्रणाल ।
चंचूइं बाल, चूइं ओरा साल ।
साप गया पयाल, नदी वहै असराल ।
झड़ी लागी, करसारी[14] दिसा जागी ।
वरसइलो पूर, भानैं रूंख चकचूर ।

---

१ जीमवानी हुई २ गाढी (मु) वणी (मु) ३ सूं करइ अपवर्ग (मु) ४ महात्मा हुई (मु) ५ परघल 'विशेष पाठ' (मु) ६ स्याकार करइ विहार (मु) ७ सहु करइ (मु) ८ तपोधन हुई । ९ छाटा १० ऊलटैं ११ दाप ।
१२ लवकै १३ डेड करै सौर १४ लोक दशा (कौ)

हाटि बिचै वाहला, लोक थया काहला[1] ।
जूना घर पड़ै, लोक ऊँचा चढ़ै ।
आभ हुओ रातो, मेह थयो मातो ।
हाली हल खड़या, वाडी सूं सेरा जडया ।
नीली हरियाली महमही,[2] घणा दूध नै दही ।
मारग भागा, जे जिहां ते तिहा न्हसवा लागा ।
गयो दुकाल, हुओ सुकाल ।
पाणी छडै पाल, एहवा वर्षाकाल । (स० ३)

१५ वर्षाकाल—वर्णन (४)

वर्षाकाल हूउं वहतउ रहिउ कूउं ।
कालूंबणि वहइ[4], मेघतणा पाणी वहइं ।
पथिक[3] गामि जाता रहइं, पूर्व दिशि तणा वाय वायइ ।
लोक हर्षित थाइं ।............... ।
आकाश घडधड़इं, खोलड[5] खडखडइ ।
पंखी तडफडइं, वडा मानुस अडवडइ[6] ।
काष्ट खंड सडइं, हाली लोक हल खेडइं ।
आपणा घरबारि कादम फोडइं[7], तिहा मुडि २ वेलू रेडइ[8] ।
पाणी पार न लहइं, साधु साध्वी विहार न करइ[9] ।
श्रावण लोक जयणा करइं ।.................. ।
अनेक जीवाबाध[10] नीपजइं, विविध धान्य ऊपजइं ।
लोक तणी आस पूजइं, गोकुलना[11] वृंद दूझइं ।
अनेक कोठार भरियइं, जूना धान्य वावरियइं ।
[12]आवइं रेलि, बाधइ वेलि ।
[13]ऊपजइं नीलि फूलि, कुटंबी कणवीकइ मूलि ।
[1] फीटउ दुकाल, नीपनउ सुगाल ।
एव विध वर्षाकाल ॥ ४१ ॥ (स० १)

१—आकुला २—हरी डहडही । ३—वाविपाणी भरता रह्या, वादल उनह्या । ४—पथी । ५—खाल । ६—लड़थड़ै ७—फेडै । ८—वीजा काजमेहै । ९—थईइ । १०—जीव । ११—गाय भैंस । १२—अनेक लपसै, लोक हँसै । १३—अनेक वनस्पति फूलै । १४ दुकाल नासीजे, सुकाल होइजै । (स० ३)

१६ वर्षाकाल वर्णन (५)

ऊपरि मेघ गड़गड़इ, अमोघ धारा पाणी पड़इ,
अनेक घर खड़हड़इ, कर्द मि वृद्ध अडबडइ, दुर्दुर रड़ई ।
वीज भबाक जाइ, पामर लोक घर छाइ,
पथिकलोग ठामि ठाइ, पृथ्वी हरिताकुल हुइ ।
सरोवरहुया गडलु, सर्वत्री टोडा प (ख ?) डई ।
बगुला रूंखसिहर ऊपरि चडई, वासर गिरी कदरि वीसमइ
हंस पहुंचइ मानसिसरि,… …… ।
मयूर नाचइ, विरहणि सोचइ ।
करसणी लोक हल खेडइ, धनवतलोक धान खेडइइसउ वर्षाकालु ।।पु० अ०

१७ शरद ऋतु वर्णन (१)

ऊन्हालो नउ भाई, अनी लेई वैश्वानर नउं अंगु काई ।
न जाणीइ किहाई हूतउ दिशि सप्रकाश, शरदऋतु पहुतउ फूल्याकाश ।
अगस्ति ऊगिउ, मेहनउ भरग्यउ ।
पाणी थ्या निर्मल, करसण सफल ।
चंद्रज्योत्स्ना शीतल, पीजइं अभावताइं जल ।
हंस स्वर सुखावा विलसिआ लागा ललभ (त) वरणं गावा ।
स्त्री सुनेत्र, डोहइं क्षेत्र ।
सांड मावइ, कोठीबड़ा पावइं ।
वैद्य सुविचारू, करइ पित्तोपचार ।
करीइ स्यूंस खाईइं, खांडु नइ पुहुंक खाईइं ।
पूगी लोक नी आस, महा भरिवा परया कपास ।
कोठा अन्न भरीइं, कुणहि हुई काई न करीइं ॥ ३६ ॥ (मु)

१८ हेमन्त ऋतु (१)

अति वसंतु, आविइ ऋतु हेमन्तु ।
जिहां सीयना भर, सेवीइं निर्वात घर ।
तुलाईए पुढीइं, भली तुलाई उढइ ।
अति ही मोटी, प्रलंब दोटी ।
ओढी वईसीइ सीयाल हुइं हसीइं ।
जिमतो न थाइं भत्सक वेटा जिमई अनेक विध मोदक ।

मुहुडा रइ काइ लागी कुटेव, सदैव जिमइ सातू जल सेव।
गजीणा खाजा, चिहुँ आगि साजा।
परीसणि हारि किम नइ थाइ आकुली, जीमइ भली साकली।
घणी खाड करी बहू मूल्या,.. .. ..
अमृत पाहिइ मीठी, तापइ अगीठी।
ते तलाई माहि सगुण, आव्यउ माह नइ फागुण।
सीय ना कोट दीसइं, दरिद्र ताढि मरता दात पीसइ।
हिम जामइं, न खंडाई ओढँणु लामइ।
काष्ट दाघ सीय पडई, दात खडहडइं।
घणूइ जीमइ सपराणी रोटो, पुण न सकीइ नीगमी रात्रि मोटी।
फूल माहि पडवउ, फूल नइ मिसि विहस्यु दीसइ कूदडउ।
राति सघळीइ अरहट वहइ, ऊन्हाळऊ धान गहगहइ।
पुण्यवत लोक, रहित शोक।
रमइ होळी, फागु दिइ भभल भोळी।
ऋतु सारी सबळ, सेवीइं आदा गुळ।
रोग नउ भमु, जउ सीयाळइ कीजइ श्र रु।
भल तळ्या गुळ्या जीमइ, सीयाळा ना दिन सुखिइ गमीइ ॥४०॥ (मु०)

१६ शीतकाल वर्णन (१)

आविउ ऋतु हेमंतु, भोगी प्राणीयइ अत्यत।
जिहा सीय ना भर, सेवीयइ निवति घर।
तुलाईयइ पउढीयइ, सखरी सीयरक्ख ओढीयइ।
अति हि मोटी, मजीठी दोटी।
ओढ़ी बइसीयइ, सीयाळा नइ हसीयइ।
जिमता न धरईयइ[१] उत्सुक, भावइ विविध मोदक।
अमृत पाहि[२] मीठी, लोक तापइ अंगीठी।
तेतला माहि सगुण, आव्या माह नइ फागुण।
सीयना कोट दीसइ, दरिद्री याढि मरता दात पीसइ।

१ थाईजइ २ वहि।

हिम जामइ, न छुंडाइ ओढणु घणइ कामइ ।

काष्ट दाघ सीय पडइ, दात खडहडइ ।

घणुइ जीमीयइ चोपड़ी रोटी, तउही[1] नीगमी न सकीयइ सीयाळानी राति मोटी ।

राति सघली अरहट वहइ, ऊन्हाळू धान गहगहइ ।

पुण्यवंत लोक, दूरी कृत शोक ।

जन रमइ होळी, फाग धइ भंमर भोळी ।

ऋतु सारी सबळ, सेवीयइ आविनइ सूंठ नइ गळ ।

भला तल्या, गल्या जीमीयइ, तउ सीयाळा रा दिन सुखइ गमीयइ[2] ।

(सू०)

२० शीतकाल-वर्णन (२)

शीत कालि-दिवसि २ गोधूम वृद्धि थाइ ।

बेटी आंपणा सासुरे जाइं, व्यास[3] रग महघा थाइ ।

कंबळि जोई ती न लाभइं, घरे फलसा वापरइं ।

तपोधन विहार क्रम करइ, श्रीमंत घर माहि पइसी सूयइं ।

दारिद्री लोक सीयंइ कांपइं, सकळ लोक अंगीठे तापइं ।

तादि खड[4] बांखड खडइं, राति मिरी जिम सांकुडइं ।

श्वान नी परि कुणमणइं, हाथ पाय आंगुळी चणमणइ ।

हेमते दधि दुग्ध सर्पिरसना० । १५३ (स० १)

२१—शीतकाल-वर्णन (३)

भोगी भमर नै प्यारो, योगीश्वर नैं न्यारो ।

महा तादो, वाऊ वाजै गाढो, जावा नो न मिलैं किह साढो ।

दाहे रूंख बाल्या, सज्जन हीइं साल्या ।

विलोवणा घाल्या, बीजा कांम टाल्या, स्त्रीना पालव झाल्या ।

वायइं खीजै, पान बीड़ा दीजै ।

संग कीजै, ऊंडै पडवै पोढीजै ।

सखरा सीरख ओढीजै, हीये हीओ भीड़ीजै ।

---

१. नीठ २ गणिकुशळ धीर सु विशाळ, यूं वखाणियउ शीतकाळ । ३ पास ४ तादिहड ।

चीजैं नडीजै, लाड लडीजै ।
स्त्री स्युं घणी गोठि, खावा लाड्डू सोंठि ।
कोई न चहरैं, दुसाला पहिरैं ।
दुख हरैं, आणंद करैं ।
पासैं त्रागडी[1] धखैं, अवल चोज भखैं, साधो पासैं रखैं ।
मावठो होइं, लोक ऊंचो जोइं ।
गाय भैंस दूझै, विरही धूजैं ।
तपसी बूझैं, रागियो मूझैं ।
हिमाचळै पडैं बरफ, रोगी नैं पगैं चालैं सड़फ ।
हीइ वघइं कफ. वैद्य करैं शफ उफ, लबाडी करैं लपलफ ।
फिरैं हरीफ, मागै गरीब ।
झाड झूड झडझडया, आक उजडया ।
पात झडपड़या, दरिद्री तडफडया, पाणी पत्थर सम अडया ।
भोगी खाइ औषध ऊपर पीइं दूध, तेथी थाइं कोणे शुध ।
राबडिया दूध चाटैं[2], ताढैं होट फाटैं ।
खळैं धान लाटैं, व्यापारी लाभ खाटैं ।
आवैं हाटैं, फुलेल वाटैं, देवै पईसा साटैं ।
साध पागरया, पग ठागरया ।
गरढा डोकर, पगैं लागै ठोकर, हसै छोकर ।
ठाकर ठरया[3], साथ सोड मा धरया ।
हाथे न लवेंवाइ शस्त्र, आघा ओढ़ि वस्त्र ।
लोक सीसीयाट करैं, पाणीं नींठ भरैं ।
चोपूं उछरैं, ताढैं न चरैं ।
धूजैं बाल गोपाल, विरही मा पड़ैं हवाल ।
विषम हवाल, सहु बैठा चउसाल ।
साचव्या देहरा नैं पोसाल, एहवो शीतकाळ ॥ (स० ३)

२२—दुष्काल वर्णन (१)

एहवुं एक पडिउ दुकाल, ठामि[२] दीसइ नर कपाल ॥
रुंड मुंड धरापीठ, चाचरि चाली सकइ नीठ ।

१—सगड़ी । २—वाटइ । ठारै करि ठन्या ।

नैरती वाय वाजइ, भूपति ना हीया भाजइ
मिल्या मेह नासइ, न रहइ को केहनइ पासइ ।
धनवंत सीदाय, तउ राक नी सी गति थाय ।
मारग हुआ महाविषम, सचरइ चोर चिहुगम
गोरू विण दीसइ गाम नइ देस, वाल्हा छोडि गया विदेस ।
माणस माणस नइ भखइ, आपणौ परायउ नोलखइ
लोक वेचवा लागा पुत्र, छाडीजइ फूटरा कलत्र
रोता बालक देख, तू पजइ दयानइ देख ।
लोक घणा निर्धन थया, उत्तम सु नीच-घर गया ।
वडा जे जगम यती, तेह पिण ताकइ कोइक सती ।
केइक धान ना धणी, तेतउ वावरइ अन्नमिणी ।
पाताळ भोग लीजइ, सगउ सगा नइ न पतीजइ ।
पहिलउ जे लेता वनस्पती, तेह पिण न दीसइ रती
लोक भला लाज छोड़ी, मागिवा लागा हाथ ओडी ।
वीजा सहू भोग भागा, सहु ध्यान धान लागा ।
कहाजता जे दातार, ते पिण मागइ कही करतार ।
वीसरया सर्व कला गीत, घरि घरि कीजइ अन्न री चीत
रूड़ा जे राउत राजा, ते पिण ताकइ लोक ताजा ।
सर्व लोक निर्धन हुवा, बाप वेटा रहे जूजुआ ।
वंचिवा लागा लोक, सगपण सँध हूई सहू फोक ।
घणुं किंसु पतिसाह, ते पिण करइ धान ऊमाह ।
केतलुं कहीये एक रूप, जेहनी वात भय-रूप ।
एहवइ महा दुकालि, धीर पुन्यवंत दीयइ दान सालि ।
इति दुर्भिष्य वर्णनम् ॥ कु० ।

२३—कलि-वर्णन (१)

ईणइ अवसर्पिणी कालि, समइ समइ अनंत गुणी हाणि ।
वलि माति सभ्य, अशुद्ध नरेन्द्र लब्ध ।
रस निरास्वाद, लोक स्लोक मर्याद ।
अविवेकि वासु, धर्मवन्त नासु ।
हुण्ड संस्थान, अल्प विज्ञान ।

अतुच्छ मच्छर, कर्कश स्वरु ।
तुच्छ धर्म रंगु, गुरुजन प्रशसा भगु ।
सुकृत करणी प्रमाद, बहु मृषावाद ।
साम्प्रत वर्त्तइ इसउ कलिकालु, जिहां को नहीं कृपालु, दर्शन उत्सृंखलु ।
आर्यजन स्वल्प, घणा कुविकल्प ।
बहु कराक्रान्त देश मडल, पृथ्वी मंद फल ।
नारी विकल निरर्गल, ऋषि भाजन खल ।
साधु लोक आकुल, राज तुच्छ बल ।
गुरु कलह कदल, धर्माचार्य चंचल, भविक धर्म विकल ।
खड वृष्टि, बहु स्त्री सृष्टि ।
लोक द्रव्य दृष्टि, सर्व लोक मिथ्यात्व दृष्टि ।
लोक घटियइ कपटि दल, इसी प्रवर्त्तइ कलि ॥ १०० ॥ (मु०)

२४—कलिकाल-वर्णन (२)

सप्रति वर्त्तइं कलिकाल, महा कूड कपट काल ।
चोर चबाड साक्षात हालाहल, सासू बहू परस्पर कलि ।
गुरु शिष्या जायइ खाध बलि, अन्याय कुरीति देश मडलि ।
राजकुल रूंधा खली, राय राणा वर्त्तइं छली ।
क्षत्रिय नासइं दीठइ दलि, भला माणस हुइइं तातलि ।
पृथ्वी मद फल, मंत्र सवे निफल ।
जडी मूली रस विकल, कुल स्त्री निरर्गल ।
न्यायी राय तुच्छ दल, चरड बहुल ।
वाट पाडा तणा कलकल, धर्म गुरु चपल ।
पापोपदेश कुशल, मिथ्यात्व निश्चल ।
लोक माया बहुल, अलंद सगल ।
इणइं कुकालि, अवसर्पिणी कालि ।
अल्प क्षीर गाइ, निःस्नेह माइ ।
भक्ष्य भोज्य निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद, ।
रहस भेद, रस छेद ।
क्रूर संचना, गुरु वंचना ।
आऊषा स्तोक, निवाणिना लोक ।

देह वातली, भक्ति प्रातली
अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्य ।
बाप वेटा तणां गर्थ सातइं, आपणां छोरु कुक्षेत्रि घातइं ।
श्लोक सीदंति संतो विलसंत्यं संत ।
पुत्रा म्रियते जनकश्चिरायुः ।
परेषु तोषः स्वजनेषु रोषः ।
पश्यंतु लोकाः कलि केलितानि ।
दाता दरिद्रः कृपणो धनाढ्यः ।
पापी चिरायुः सुकृती गतायुः ।
राजा कुलीनः, कुलवांश्च भृत्यः ।
पश्यंतु लोकाः कलि केलितानि । ११४ । (स० २)

२५—कलिकाल-वर्णन (३)

इसी स्त्री अनर्गल, देव निःकल ।
पृथ्वी अफल, राजान अवल ।
चोर प्रवल, शत्रु वहल ।
साधु विरल, मंडलीक कुटल ।
दर्शनिया शिथिल, इसी कलि । (पु० अ०)

२६—कलि प्रभाव-वर्णन (४)

पापि जउ, धर्मि खउ ।
साचउ अविगणियइ, झूठउ वखाणियइ ।
गुरु शिष्य तणउ[१] खमइ, बाप वेटा नमइ ।
सासू पाटलइ, वहू खाटलइ ।
ए कलि तणा प्रमाव ॥ १२१ ॥ (स० १) १ तण ख० इ (पु० अ०)

१—तण खवइ (प्र० अ०)

सभा-श्रृंगार

अथवा

वर्णन संग्रह

विभाग ५

कलाएँ और विद्याएँ

१ कला-भेद (१)

७२—कला वणिक

२३—कला वेश्या

७४— ,, जूवारु

७५— ,, रस-वणिक

(पु० अ०)

७२—कला पुरुष (२)

१ लेखन	२ पठन	३ सख्या	४ गीत	५ नृत्य
६ ताल	७ पट	८ मरुज	९ वीणा	१० वंश
११ भेरी	१२ द्विरद	१३ तुरम	१४ शिक्षा	१५ धातु
१६ दम	१७ मंत्रवाद	१८ वलित पलित नाश	१९ रत्न	२० नारी लक्षण
२१ नरलक्षण	२२ छंद	२३ तर्क	२४ नीति	२५ तत्वविचार
२६ कविता	२७ ज्योतिष	२८ श्रुति	२१ वैद्यक	३० भाषा
३१ योग	३२ रसायन	३३ अंजन	३४ लिपि	३५ स्वप्न
६ इन्द्रजाल	३७ कृषि	३८ वाणिज्य	३९ नृप सेवन	४० शकुन
४१ वायस्तंभन	४२ अग्निस्तभन	४३ वृष्टि	४४ लेपन	४५ मर्दन
४६ ऊर्ध्वगमग	४७ घट बंधन	४८ घट भ्रमण	४९ पत्र छेदन	५० मर्म भेदन
५१ फल वृष्टि	५२ अबु वृष्टि	५३ लोकाचार	५४ जनानुवृत्ति	५५ फलभृत
५६ खड्गधारण	५७ क्षुरि बंधन	५८ मुद्रा	५९ लोह	६० रद

पाठान्तर—

३ गणन, १० १७ मन्त्रवाद के वाद तन्त्रवाद विशेष है। २६ व्याकरण। ३० षड-भाषा। ४२ शाक स्तम्भन। ५१ कला-वृष्टि। ५४ जातानुवृत्ति। ५५ पल भरण। ६१ काष्ट छेदन। ६२ चित्र कृति के वाद वाहु युद्ध है। ७२ अष्ट ज्ञान। (मो०)

६१ कार ६२ चित्र कृति ६३ दग युद्ध ६४ मुष्ठियुद्ध ६५ दंडा युद्ध ६६ असि युद्ध ६७ वाक् युद्ध ६८ गारुड़ दमन ६९ सर्प दमन ७० भूत दमन ७१ योग ७२ अञ्ज।

यथा श्लोक—

६४ कला—(स्त्री) (३)

चौसठ कला, तन्नामानि यथाः—१ नृत्य २ उचित्य ३ चित्र ४ वाद ५ मंत्र ६ तंत्र ७ यंत्र ८ ज्ञान ९ विज्ञान १० दण्ड ११ जलस्तभन १२ १२ गीत-गान १३ ताल मान १४ मेघ वृष्टि १५ फलावृष्टि १६ आराम रोपण १७ आकार गोपनं १८ धर्म विचार १९ शकुन विचार २० क्रिया कल्प २१ संस्कृत जल्प २२ प्रसाद नीति २३ धर्म नीति २४ वर्ण वृष्टि २५ सुवर्ण सिद्धि २६ सुरभि तैल करण २७ लीला सञ्चरण २८ गज तुरग परीक्षा २९ पुरुष स्त्री लक्षण ३० सुवर्ण रत्न भेद ३१ अष्टादस लिपि परिच्छेद ३२ तत्काल बुद्धि ३३ वस्तु सिद्धि ३४ वैद्यक क्रिया ३५ काम क्रिया ३६ घंट भ्रम ३७ सारि परिश्रम ३८ अंजन योग ३९ चूर्णयोग ४० हस्त लाघव ४१ वचन पाटव ४२ भोज्यविधि ४३ वाणिज्य विधि ४४ मुख मंडन ४५ सालि खंडन ४६ कथाकथन ४७ पुष्प ग्रंथन ४८ वक्रोक्ति ४९ काव्य शक्ति ५० स्फार वेष ५१ सकल भाषा विशेष ५२ अविधान ज्ञान ५३ आभरण ५४ नृत्योपचार ५५ गृहाचार ५६ काव्य करण ५७ परिनिराकरण ५८ धान्यरंधन ५९ केस बंधन ६० वीणा वजावी ६१ वितंडा वाद ६२ अंक विचार ६३ लोक व्यवहार ६४ अन्ताक्षरिका—प्रश्न प्रहेलिका स्त्रियोनी चौसठ कला।

६४ स्त्री कला (४)

नृत्य १	उचित्य २	चित्र ३	वादित्र ४
मत्र ५	तंत्र ६	ज्ञान ७	विज्ञान ८
दम ९	जलस्तंभ १०	गीतगान ११	तालमान १२
मेघवृष्टि १३	फलाकृष्टि १४	आरामरोपण १५	आकारगोपण १६
धर्मविचार १७	शकुनसार १८	क्रियाकल्प १९	संस्कृत जल्प २०
प्रासादनीति २१	धर्म नीति २२	वर्णिका वृद्धि २३	स्वर्ण सिद्धि २४
सुरभि तैल करण २५	लीला करण २६	गज तुरंग परीक्षण २७	
स्त्री पुरुष लक्षण २८	सुवर्ण रत्न भेद २९	अष्टादश लिपि छंद ३०	
तत्काल बुद्धि ३१।	वास्तु सिद्धि ३२	वैद्यक क्रिया ३३	

काम विक्रिया ३४	घटभ्रम ३५	सारिपरिश्रम ३६
अजन योग ३७	चूर्ण योग ३८	हस्त लाघव ३६
वचन पाटव ४०	अताच्चरिका ४१	भोज्य विधि ४२
वाणिज्य विधि ४३	मुख मंडन ४४	शालि खडन ४५
कथाकथन ४६	पुष्प ग्रथन ४७	वक्रोक्ति ४८
काव्य शक्ति ४६	स्फार वेष ५०	सकल भाषा विशेष ५१
अभिधान ज्ञान ५२	आभरण परिधान ५३	भूतोपचार ५४
गृहाचार ५५	व्याकरण ५६	परिनिराकरण ५७
रधन ५८	केश बन्धन ५६	वीणा निनाद ६०
वितण्डावाद ६१	अंक विचार ६२	लोक व्यवहार ६३
हस्त[1] प्रहेलिका ६४	स्त्री चतुषष्टि कला ॥	(१५५ जो०)

५—(वशीकरण) विद्या साधन (५)

कामण	निर्जीव सजीव करण
मोहन	आम्नाय उपासन
थभन	अकाल फल
वसीकरण	मोहन वेल
आकर्षण	काली वेल
उच्चाटन	मत्र
सातन	तत्र
पातन	यंत्र
अंजन	जडी
(चू !) रण	स्याल श्रृंगी
पाताल गमन	स्वेत चरमी
पाद लेपन	स्वेत अरंड
इद्र दर्शन	स्वेत आकडो
अदृष्टीकरण	स्वेत पलास
आकाशगमन	बंदो हाथाजोडी इत्यादि
रमणी मोहन	

(वि०)

१—प्रस्त (प्रश्न !) ।

अथ राग नाम (६)

१ श्री राग
२ सारंग
३ दीपक
४ सोरठ
५ नट
६ विहागड़ो (विहंगड़ो)
७ कान्हड़ो
८ मालवी
९ गोलो
१० गोंडी
११ टोडी (तोडी)
१२ वैराडी
१३ जयजयवती
१४ प्रभाति
१५ खंभाइति (-यची)
१६ ललित
१७ वरात
१८ वेलाउल
१९ भैरव (भयरव)
२० भूपाल
२१ बंगाल
२२ रामकलो
२३ मल्हार
२४ देव गंधार
२५ केदार
२६ मारू
२७ सिंधु
२८ मधु
२९ माधव
३० परज
३१ पूरवी
३२ विभास
३३ कल्याण
३४ धोरणी
३५ जयतसिरी
३६ गूजरी
३७ रामगिरी
३८ सामेटी
३९ आसाउरी
४० धन्यासरी
४१ हिंडोलन
४२ मालकोश
४३ आशा
४४ काफी
४५ दीपक
४६ माहव
४७ अडाणो

३२ बद्ध नाटक (७)

१ गय
२ रथ
३ तुरंगम
४ सीह
५ वृषभ
६ सुर
७ असुर
८ किन्नर
९ देवगण
१० विद्याधर
११ गंधर्व
१२ विहग
१३ सरभ
१४ सर्प
१५ सुकराज
१६ सारस
१७ हरिण
१८ चामर
१९ वनलता
२० पद्मलता
२१ संख
२२ नदावर्त्त
२३ पूर्ण कलस
२४ स्वस्तिक
२५ भद्रा(द्रा!)सन
२६ सिंहासन
२७ आरिसा
२८ विमान
२९ हंस
३० कोकिल
३१ वांस
३२ लांव

रथांग पडह भेरी लांगळ
मृदंग ताल भुंगल चतुपद

वाद्य (८)

१ भंमा, २ मडंग ३ मद्दल, ४ कडव, ५ झल्लरि, ६ हुडुक्क, ७ कंसाला ८ काहल, ९ तिलिमो १० वंसो, ११ संखो १२ पणचोय बारसमो ।

द्वादश तूर्य निर्घोषो नांदी नाम रव ।

रण नंदी तूर (६)

१ ढक्का २ इक्का ३ डमरूय ४ काहल ५ पुप्फ-भेर ६ भाणग, ७ पडहो ८ जुग संख ६ करड १० पुग्गय ११ मद्दल १२ कंसाल रणनंदी। इतिरणनंदी तूरः।

(१२७ जो०)

वादित्र नाम वर्णन (१०)

भेरि	भुगल	पडह	ढोल
तरि	कुंडि	पखाउज	मादल
वंस	वीणा	सुरमद्दल	पणव
ताल	भाली	घूघरि	कंसाला
तूर	निसाण	नफेरी	डाक
बुक्कर	हुडुक	शख	शखमाल
रावणहथथ	दुदभि	करडि	तिवल
दुडदडि	कासी	भभा	डमरू
वरघू	पिनाकी	दमामा	महुॅयारी
आउज	पटाउज	सींगी	घाट
अधउडी	रुद्रवीणा	सींगा	सरणाई
टमकीउ	मदनभेरी	काहली	कादवरी
चाग			

(सू०)

३६ वाजित्र (११)

१ भेरी	१० श्री मङल	१६ मृदग	२८ गडवड़ी
२ भभा	११ तिवल	२० त्रिवल	२६ नाद
३ भूगळ	१२ ढोल	२१ भूलरी	३० केदारी
४ नफेरी	१३ करनाळ	२२ दुदुभी	३१ होक
५ नीसाण	१४ कासी	२३ वरघू	३२ पूंगी
६ ददा मे मा	१५ सरणाई	२४ सारगी	३३ भाभ
७ दडवडी	१६ वासरी	२५ रणसिंघो	३४ तदूरो
८ ताळ	१७ वोणा	२६ जन्यघंटा	३५ [प] खाज
६ धूसाल	१८ चंग	२७ राई	३६ नरसिंघो

---

१ शास्त्र

काव्य ना भेद (१)

काव्य, कवित्त, छंद, सवैया, योतिस, वैदक, प्राकृत, तर्क, वितर्क, प्रमाण, चिंतामणी, चतुराई, रघु, किरात, माघ, मेघदूत, नेमदूत, नैषध, कुमारसम्भव चम्पूकथा, गीता, भागवत, स्मृति पुराण, वेद, विचार, वखाण, गाहा, गूढा, दूहा, प्रहेलिका, हरियाळी, कमलबन्ध, छत्रबन्ध, नागबन्ध, गरुडबन्ध राजबंध तोडरबन्ध, मादळबन्ध, अहर, अलग्ग, इटापखरा, छपखरा, नटपखरा, पंखाळ, पारंगत श्लोक, सगीत, गीत इत्यादि काव्य (शास्त्र) ना भेद ॥

विद्वान लक्षण (२)

काव्य, कवित्व छंद, सवैया, ज्योतिष, वैद्यक, प्राकृत, संस्कृत, तर्क, वितर्क प्रमाण, गीता, भागवत, पुराण, वेद, विचार, इत्यादिक ना जाणणहार छइ।

(कौ०)

वादीन्द्र (३)

अढारहइं लिपि तणइ विषय कुसल, चारि विद्या कंठस्थ
चेष्टानुवादु, अक्षरानुवादु, अर्थानुवादु परवादी सउं करइ
पर पटित अष्टोत्तर शत काव्य अर्थु देइ
एक पदी द्विपदी त्रिपदी समस्या पूरइ
तुरग पद पाठि कोष्टक पूरण करइ
गूढ पद क्रिया-गुप्तक तण लेखउं न लेई
त्रिवर्ग परिहारु पंचवर्ग परिहारु बोलइ
प्रच्छन्न लिपि तणी अलवि करइ
कूर्चाल सरस्वती, प्रत्यक्ष वाचस्पति
पंडित घरट्ट, भग्न वादी मरट्ट
इसउ वादीन्द्रः ॥

(पु० आ०)

१८ लिपि (१)

हंसलिवि[1] भूवलिवि[2] जक्खाका तह[3] रक्खसीय बोधव्वा[4] उड्डीइ[5] जवणी[6] तुरकी[7] करी[8] दविडीय[9] सिंधविया[10]।

मालविणी[11] नडि[12] नागरी[13] लाड लिवि[14] पारसीय[15] बोधव्वा।

तहय निमितिश्र[16] लिव्वा चाणक्कि[17] मूलदेवीय[18] ॥ १ ॥ लिपि नामानि

१२४ न० (१२६ जो०)

१८ लिपि (२)

१ हस लिपि	७ तुरकी लिपि	१२ लाट लिपि
२ भूत लिपि	८ द्राविणी लिपि	४१ सारसी लिपि
३ यक्ष लिपि	६ सैंधवो लिपि	१५ अनिमित्तिलिपि
४ राक्षस लिपि	१० मालवि लिपि	१६ चाणक्की लीपि
५ उड्डी लिपि	११ नडी लिपि	१७ मूलदेवी लिपि
६ यावनी लिपि	१२ नागरी लिपि	१८ करी लिपि

मौ०

लिपियें (३)

लाडी	चौडी	कान्हडी	गूजरी
सोरठी	मरहठी	कुंकुणी	खुरासाणी
ससी	सिंहाली	डाहली	कीरी
हमीरी	कास्मीरी	परतीरी	मागधी
महायोधी	मालवी	॥ इत्यादि लिपयः ॥	(११३ जो०)

सभा शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ६

जातियाँ, धंधे और व्यक्ति नाम

१८ वर्ण ३६ पौन (१)

घाची, घाछा, मोची, मणीहार, मइणारा मेर, मैणा, सुई, सुतार, सोनार, चूनगर, चित्रगर, नीलगर, तेरमा, लूंणगर, ठंठारा, मठारा, लोहार, लोवाना[1], लोवना, लोढा, भोपा, भरडा, भिखारी, भील, कोळी, काठी, वणगर, कठीयारा, कळवी, कसारा, कुंभार, चूडीगर, काछी, वाणीश्रा, विप्र, वैद्य, वेश्या, वणगर माली, तेली, मरदनीया, मठवासी, गोला, गाधी गारडी,[2] योगी, यति, संन्यासी, जिंदा, सोफी, भगत, ग्रामीक, भेषधर, इत्यादि ३६ पवन (स०)

प्रत्यतरे— छींपा, सिलावट, सीसगर, तुरक, तंबोळी, तोरगर (विशेष)

पेशेवार जातियाँ (२)

सोनी,	पारखि,	जवहरी	गाधी	दोसी,	नेस्ती
कणसारा,	मपारा,	मणियारा,	सोनार,	कुंभार,	ठंठार
लोहार,	वलार[3]	पटउलीया,	पटसूत्रीया,	माली,	तम्बोली
हरथेरवलिया,	जोगी,	भोगी,	वइरागी,	नट,	विट,
खूँट,	खरड,	लाठा,	माठा[4],	रंगाचार्य,	उचितबोला
साहसोला,	मोटा बोला,	मेलगर,	मामगर,	कउतिगिया,	कुलहटीया
नटावा,	गाछा,	छींपा,	परीयट,	सुई,	ताई,
तेली,	मोची,	सतूश्रारा,	वंधारा	चीत्रारा,	तूनारा
कोळी,	पंचउळी,	डब्रागर,	ब्राव्रर,	फोफळिया,	फडहटीया
फडिया,	वेगड़िया,	सींगड़िया,	भोई,	कदोई,	देसाळी
कलाळी,	गोली,	ग्वाळ,	पसूयाळ	राजपात्र,	विद्यापात्र,

विनोद पात्र । १०८ । (स० १)

चौरासी वणिक जाति (३)

श्रीश्रीमाल,	श्रीमाली,	श्रोसवाल,	पोरवाल ।
पल्लीवाल,	बघेरवाल,	दिसावाल[5],	मेड़तवाल ।

---

१ लवाना । २. गाडरी । ३. तराल । ४. मठा । ५ देसवाल ।

खंडेलवाल, अगरवाल, नैसवाल, सेभ्रूवाल[1] ।
डीडूवाल, कठोडा, सूराणा, सोनी ।
लाट, मोढ, भागद्रा, नागद्रा ।
नागर, नीमा, हरसोला, नरसिंघपुरा ।
दसोरा, मेवाड़ा, आमेटा, मेडतिया ।
सोरठिया, वीयाड़ा,[2] खड़ायता, साडेरा ।
भटेरा, कुभा, धाकड़[3], चीतोडा ।
लाडूआ, हरसोरा, हूवड, नागोरा ।
जलोरा, साचोरा, वधनोरा, सोभीता ।
वाल, कपोला, इत्यादि वणिक जाति ।

नैष्टिक ब्राह्मण (४)

उत्तरासंग धोती, सऊतरिऊ जनोइ, हाथि प्रवीती,
सिरु भद्रियउं, सिखा फरहरती, तिलकु वधारियउ,
गात्री[4] सारु, त्रिकाल सध्याराधनु, प्रभात स्नानु, नित्यदानु ।
वेद पढ़इ, वेदान्त जाणइ, सिद्धांत वखाणइ,
देव तर्पणु, गुरु तर्पणु, ऋषि तपणु, पितृ तर्पणु,
इसउ नैष्टिकु ब्राह्मणु ।

ब्राह्मण नी जाति (५)

नागर, राजर, उदवट, भटनागर, सिणोरा, सांचोरा, दसोरा, उदम्बर,[5] साहोद्रा[6], नागंद्रा,[7] रोडवाल, खेडावाल, इटावाल, पल्लीवाल, श्रीमाल, गोलवाल, चोवीसा, लोडी सीखा,[8] वडी-साखा, मथुरीया, सिनोडिया, कन्होजिया, वालिमिया, श्रीगोड, गुजरगोड, गोड, मेवाडा, चितोडा, कन्हडा सारस्वत, उदिच, धेणोजा, तंदुआणा, मालवी इत्यादिक ।

विरुदावली वाचक छात्र नाम (६)

एक राजा नै ब्राह्मण महा पंडित, बोलाइ छइ ॥
मुंहडा आगल छात्र भणे वृदावलि बोलइ छइं ॥
कुण २ ते छात्र तन्नामानं:—

---

१. सेभ्रूवाल । २ वायडा । ३. धाकड । ४. गायत्री साधनु (स० १) प्रारम के कुछ आगे पीछे है । ५. गांडा । ६. सिवोद्रा ।.७. नागोद्रा । ८. सिखा । ६. वारणी ।

उपाध्याय, शकर, ईश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, गगाधर, गदाधर, विद्याधर, महीधर, धरोणीधर, भूधर, श्रीधर, दामोदर, महादेव, सिवदेव, रामदेव, मेवाडी, त्रवाडी, उमापति, गंगापति, गणपति, भूपति, देवपति, पंडित, जनार्दन, गोवर्धन, मुकुन्द, गोविंद । एहवा नाम विरुदावली बोले ॥

विरुदावली (राजकुमार शिक्षक पंडित) (७)

सरस्वती कंठाभरण, वादि विजयलक्ष्मी सरण ।
ज्ञान सर्व पुराण, वादी कदली कृपाण ॥
जीतवादि वृन्दवादि, गुरो गोविंद वादि ।
घुक दिवाकर, अज्ञान तिमिर निसाकर ॥
वादि मुखभजन, रामसभा रजन ।
कुवादि प्रस्त्रर खडन, पडित सभा मडन ॥
वादि गोधूम घरट्ट, मर्दित वादि मरट्ट ।
वादि मृगसिंह सार्दूल, वचोवात्या विकृतवादि मूल ॥
षडभाषा वल्लिमूल, परवादि मस्तक सूल ॥
वादि कुद कुद्दाल, रजितानेक भूपाल ॥
वादि वेस्या भुजंग, शब्द लहरी तरंग ॥
सरस्वती भण्डार, चवद विद्यालंकार ॥
सूर्य सास्त्राधार, बहुत्तरी कला भर्त्तार ॥
महाकवीश्वर, प्रत्यक्ष परमेश्वर ॥
कूर्चालि सरस्वति, प्रत्यक्ष सारमेति ॥
जितानेक वाद, सरस्वती लघुप्रसाद ॥
ते षासंभलि पडित जाणी, पोताना कुंवर नइ कुंवरी भणवा मूकी ॥

राजपूत नी छत्रीस वंशावली (८)

परमार,[1] राठौड़, चौहाण, गहिलोत, दहिया, सेणचा, त्रोरी,[2] बगछा,[3] सोलकी, सीसोदिया, खेरमोरी,[4] नाकुभ,[5] गोहिल,[6] पड़िहार, चावडा भाला,[7] छूर, कागवा,[8] जेठवा, रोहर वूस,[9] बोरड,[10] खीची, खरवड, डोडिया, हरिअड, डाभी, तूंअर, कोरड, गौड, मकवाणा, यादव, कछवाहा, भाटी, सोनिगरा, देवडा, चंद्रावत । ए छत्रीस राजकुली छइ ।

---

१. पमार २. वीर ३. कावा ४ खयरमोरी, ५. निकुभयक ६ गहिलोत, दिया, ७ भाला ८ गवा ६. छूसा १०. वारड । (स ३)

महाजन नाम (९)

पासणागु आसणागु देवणागु

पासचंद्र आसचन्द्र देवचन्द्र

पासवीरु जसवीरु आसवीरु

इसउं महाजनु

महाजन विरुदावलि (१०)

सुरताण सनाखत, दीवाणदीपक।

अश्वपति, गजपति, नरपति, राय स्थापनाचार्य्य।

राजसभालकार, राजसूत्रधार, रायबंदिछोड़, राजवाल्हेसर।

मर्यादामयरहर, पर नारी सहोदर।

कलिकाल निष्कंलक, विचार चतुर्मुख।

रूपरेखा मकरध्वज, वज्रांक भालस्थल, चतुः पथ चिन्तामणि।

वाचा अविचल, बाल धवल, शील-गंगाजल।

गोत्रवाराह, शील गांगेय।

उभयकुल विसुद्ध, एकोतरशत कुलोद्योतकर, उभयपक्ष निर्मल हंसावतार।

हर्ष वदन, सत्यवार्त्ता युधिष्ठिर।

सोना जलहर, कूर सागर।

कडाहि समुद्र, सालि समुद्र, वाहण वरिस।

द्रारिद्रय मुद्रा विहडणहार, विहि लिखिताक्षर मीटणाहार,

पचार्कादि सवत्सर मुद्रांकणहार

अछित ना विक्रमादित्य, विमणिम भोज।

जगजीवन जीमूत वाहन, दुवलां मुसाल, दुवला पीहर।

ताकूया रउ तीर्थ, याचका रउ जीवन, रांक रउ रक्षक।

मारून्नउ मालवउ, सकल जीव लोक कनक धार प्रवाह।

ऋण मोक्षण कामधेनु, दीनोद्धरण धीर, दुस्समय सावधान।

छत्रीस वेलाउल विख्यात, अष्टादस वर्ण पारिजात।

विषम दुष्काल जीतूयार, कलिकाल कल्पवृक्षावतार।

इत्यादि। दातृविरूदानि। (सू.)

साहुकार विरुदावलि (११)

दान व्यसन वासित चेतसः। अथ एकोत्तर शत कुलानि। पितृपक्ष १४, अमाय पक्ष २०, अपक्ष पक्ष १६, असुतापक्ष १२, भगनी पक्ष ११, अफूई पक्ष १०, १७६, अमासी पक्ष १८, एवं १०८ पक्ष।

सोना जलहर, कूर सागर ।
कडाह समुद्र, शालि समुद्र वाहन ।
दारिद्र मुद्रा विहडनहार, विहि लिना (रक्त !) अक्षर मेटणहार,
पचायन वादी, सवच्छर मुद्रा करणहार ।
अछति इला विक्रमादित्य, जीमणे भोज, जगत जीवन, जीमूत वाहन,
दुबलानो पीहर, सकल जीव लोक कनक धारा प्रवाह ।
कृण मोक्षण कामधेनु, दीन धरण हार ।
दुःसमय सावधान, छत्रीस वेलाउल विख्यात, अष्टादश वर्ण पारिजात,
विषम मार्ग भञ्जनहार । इत्यादि साहुकार विरुदानि (वि०)

गुजरात श्रावक नाम।(१३)

रामजी, रतनजी,[१] रूपजी, राघवजी, रायसिंघ, विजयसिंघ, [२]जैसिंघ, जसवत जिणदास, विमल दास, वर्द्धमान, वीरजी, वजीर, [३] सामल दास, सूरदास, शातिदास, शिवदास ।
ऋषभदास, राघवदास, सोमजी, सुदर, सोमचंद, करमचंद, कपूरचद, कमल सी, अमरसी, विमलसी, अमथो, ओधव, हेबुओ, ढबूड, धरमो, धींगड, धनराज, मनराज इत्यादि ।

दक्षिणी श्रावक नाम (१४)

अथ दक्षणना श्रावक नामानि ।
बासवा, पासवा, आसवा, बीरवा, हीरवा, नारवा[४], सोनाबा, दानाबा, गोमाजी, रामाजी, तानाजी, कानाजी, मानाजी, खांनाजी, इत्यादि ।

सीरोही श्रावक नाम (१५)

अथ सीरोहीनी धरतीना श्रावक नामानि ।
भूधर, भाखर, परवत, डूगर, राउत, दुलीचद, टेकचंद, समरचद[५], उत्तम चद, उग्रसेन, वीरसेन, भगोतीदास, भिखारीदास, भइरोदास, नंदलाल, बंदलाल, जगतसिंह, सबलसिंह, जेठमल्ल, टोडरमल्ल, टेकमल्ल, झाझण, खाखण, खारवण इत्यादि ॥

१—मेवाड़ । २. खेतल । ३. वजिड । ४. नीरवा । ५. सभाचद ।

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ७

देव, वेताल, शाकिनी, सिद्ध, व्यक्ति तथा
व्यक्ति कष्टादि वर्णन

(१) देवता

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, भगवती, शक्ति, राम, कृष्ण, हनुमान ।
आसपास [लोक देवता]—खेत्रपाळ, गोगो, पाबूदेव, शक्तिदेव, रामदेव, रामापीर, भैरव, पीर, दाउलपीर, भूत, सीतळा ।

(२) अथ शाकिनी

करि माळ, दिंती ताळ ।
मुख बोलती आळ माळ, उर्द्ध कीधा मुत्कल केश जाल ।
दष्ट्रा कराळ, हाथि धरती रक्त कपाळ ।
मुखि बोलती जाणे वैश्वानर झाळ, इस्यउ शाकिनी चक्रवाळ ।
जिसा मरु देशि कूप तल, तिसा नयन युगल ।
जिसा पुरातन कोद्रव पलाळ, इसा पीळा केश जाळ ।
जिसा साप पर्ण, तिसा टापरा कर्ण ।
जिसी सिला उच्च सरल, तिसी अंगुली विरल ।
जिसा ताल वृक्ष तरल, तिसा जंघा युगल
जिसी पर्वत नो दोतडि, इसी मोटी कडि । इसी शाकिनी ॥ ७२ ॥ (जै)

(३) वेताल (१)

साग पाग समान कर्ण, श्यामल कज्जल समान वर्ण ।
निलाट चटित विकराल, महा भैरवानुकारि मुख ।
ज्वलन ज्वाला कलाप पिंगल दृष्टि, निरंतर अंगार वृष्टि करतउ ।
कडकड़त महिष मोडतउ, पाताल विवर नी परि पेट संकोडतउ ।
आपणउ कपाल आस्फालतउ, दुर्दरा रवि ब्रह्माण्ड फोड़तउ ।
आकाशि तारा मंडल त्रोडतउ, कुलाचल पर्वत पातालि घाततउ ।
हाथि तीक्ष्ण काती नच्चावतउ, महा कर्पालि रुधिर पीतउ ।
गलइ रुंडमाल वहतउ, अट्टहास करतउ, कातर आतुर बीहावतउ ।

प्रत्यक्षकाल, कंकाल, कराल वेताल ।
काकीडा उंदिर सर्प घेरोलां नी माल धरतु ।
ताल तमाल जंघा घर हरतउ ।
पग छापरा, कान टापरा, आखि ऊंडी, निलाड़ी भूंडी,
धमिया लोह गोला, तिसिया वेउ डोला । एवं विध वेताल ॥ ११२ ॥ जो०

(४) वेताल (२)

सूप जिसा नख. लोढउ जिसि आंगुली, लोह तणी नीसाह जिसा पाय । ताल वृक्ष जिमी दीर्घ जंघ, जिसी कूमी तणउ खापरु. तिमउं उदरू । जिसउ प्रवहण तणउ कूया खभउ, तिसि बाह । लांबा होठ, नीचउ नाकु, वाकउं निलाड, त्रीभींटउं माथउं । इसउ रौद्र विकरालु वेतालु ।

(५) वेताल (३)

मनुष्य फीटि हुओ वेताल,	कंठि विलंत्रित रुंडमाल ।
करतल पातके,	...............।
बुभुक्षाभिभूत,	जिसो जमदूत ।
कान टोपरा,	पग छापरा ।
आंख ऊंडी,	पेट कूंडी ।
आंख राती,	हाथे काती । भूंडी छाती ।
विकराळ वेस,	बिहावे देस ।
हडहड़ाट हँसे,	धरामंडळ धँसे ।
मस्तके अंगार बळै,	रवि जिम कळकळै ।
इस्यौ रौद्र रूप,	तेहनो स्वरूप । कान कूंप
केतलो वखाणूं,	इस्यो वेताल ॥

(५) वेताल वर्णन (४)

भीषणाकार, अति रौद्राकार ।
मुखि करतउ फार फुत्कार, कृतान्तावतार ।
मुखि मेल्हतउ झाळ, हाथि देतउ ताळ ।
मस्तकि कपिल केश, स्थपुठ, ललाट ।
त्रटितका कराल दृष्टि, मुख विवर विरचितांगार दृष्टि ।
कर्ण कुहर विहरमाण, भुजंगराज भीषण ।

चिपट नाशिका, ओष्टपुट विनिर्गत दीर्घ दृष्टि ।
ताल विशाल जघा युगल, सकल स्थाली वधू कठ कालकायकाति ।
कटि कलितु कपाल ।
लोहितारुण पाणि विकराल, हास वाचालित दिगंतराल ।
एवं विध वेताल ॥ ७३ ॥ जै०

(६) महासिद्ध

मंत्र तणउ जाण योगींद्र[1], स्वर्गलोक समग्र अवतारइ[2] ।
गगनागणि चंद्रादित्य[3] स्तभइं, आकाशि[4] वैश्वानर बालइ ।
आपणा वस्त्र आगि पखालइ[5], पाणी माहि[6] पलेवणउं प्रज्वालइ ।
पाताल कन्या प्रत्यक्ष दिखाइ[7], कउपउ[8] करता वन खंड मोडइ ।
पातालि[9] बालि तणा बंध घोडइ, लोह शृंखला[10] फुंक जोडइ ।
पर्वत्त[11] ना शृंग ढालइं, शम्र शृग गालइ[12] ॥ २४ ॥

(६) सिद्ध

कर कमल कलित योगदंड स्कध प्रतिष्ठित योगपट्ट[13] ।
प्रसाधित प्रचंड चडिका मत्र, पिशाच साधन स्वतंत्र ।
शाकिनी निग्रह साहसिक, रसायन प्रयोग रसिक ।
प्रदर्शित वलि पलित नाश, वशीकरणि अमूढ लक्ष ।
खडी चापडी प्रमुख विद्या कुतूहली ।
असाध्य साधक, आकाश पाताल बंधका ।

(८) योगीन्द्र

ऊपर हुतउ इंद्रिसहितु स्वग्रलोकु आणइ
गगनागणि चद्रमादित्य स्तंभइ
आकाशि अग्नि बालइ
पाताल कन्य का प्रत्यक्ष देखाडइ
कडयडरभु करता वनखंड पोडइ

---

१. जोगी । २. अवतारें। ३ चद्रसूर्य थंभे । ४. आकाश विश्वानर वलै । ५. मां पखालै ६ माहे पलेवणू प्रज्वालै । ७ देखाडे । ८ कटक परोकरता वनखड मोडै । ९. घताल वलि तणा वधन छोडै, १० फूकै त्रौडै । ११. पर्वत शृग उवाडै । १२. गालै । १३. व्यायोग ।

इत्यादिक महासिद्ध जाणवो ॥ (पू०)

पातालि बलि तणा बंध त्रोड़इ
पर्वत तणा शिखर फोड़इ
इसवु महा मां थिकु
शक्ति मंतु योगीन्द्र ॥

(९) पूतली वर्णनम्

पूतली, जाणे काचइ कपूरि घड़ी, जाणे रंभा तिलोत्तमा आकाशि हुंति पड़ी।
जिसी अमृत सारिणी, इसी मनोहारिणी ।
जिणि दीठि ऊपजइ रली, इसी पूतली ।
सा देखी जाणियइ चित्राम चित्रितु, जिसउ पाषाण घटितु ।
जिसउ काष्ट उत्कीरितु, जिसउ मंत्रि स्तंभितु ।
जिसउ महाग्रह ग्रहितु, जिसउ भूताधिष्ठितु, जिसउ सन्निपात पूरितु ।
जिसउ मदन भिंभलु, इसउ हुइ ग्रहिलु ।
न वेलइं, न वेयइं ।
न चालइं, न हालइं ।
न खेलइं, न बोलइं ।
न जियइं, न रमइं ।
न नासइं, न सम्मुख लागइ ।
मन मध्यिकरइं ऊमाहउ ॥ २ ॥

(१०) रोषातुर व्यक्ति

सकोप नरः, भ्रकुटि ताड़तउ ।
विकट चपेटाऊ पाड़तऊ, होठकरी फुरफरतउ ।
वचन विन्यासि प्रसख लतउ ।
विभीषणाकार मुखवरतउ, आरक्त लोचन फेरतउ ।
दुर्वाक्य बोलतउ, महा कोपि सयर डोलतउ ।
जाणेकरि प्रज्वलतउ वड़वानल ।
अति रोषारुण, जिसिउ रातउ अरुण ।
निष्ठुर वदन क्रूर लोचन ।
सर्व स्फुटाटोप कुटिल ।
कज्जल दल श्यामल, निर्लालित जिह्वा युगल ।

चूड़ामणि प्रभा प्रहताधकार जालु ।
सज्जित सज्ज सरल स्फालु स्फारस्फुत्कार भीषण ।
अत्यता[1] मर्य दूषण ।
अवनि वनिता वेणि दंडायमान, यमुना समान कायमान ।। ४० ।।

(११) प्रसन्न व्यक्ति

किरि धनदु यक्ष तूठउ,
किरि वेतालु तसु सेव पयठउ ।
किरि कल्पद्रुम फलियउ,
किरि कामु घट्ट माम्फि दलियउ ।
किरि कामधेनु ग्रिहांगणि बांधी,
किरि नवनिधि तणि लाधी ।
किरि चिन्तामणि रत्न हाथि चडिउ,
किरि उदयु पुण्य ऊर्वडिउ ।
इसउ हृष्ट तुष्ट सानंद हूयउ ।। (पु० अ०)

(१२) प्रेमी

सहर्ष, सस्नेह, सोल्लास, सविकास, सविभ्रम, सप्रेम, सोत्कंठ, विहसित-वदन, उल्लसित वचन, रोमाच, कुचकित शरीर, सर्वालकार विभूषित, सर्व-शंकादिदोषा दूषित, प्रेम संयोग ।।३।।

(१३) कांतिहीन

[[2]विच्छाय श्याम दीन बदन हूउ ।]
जिसिउ[3] चपेटा आहणिउ माकड, जि० डाल चूकउ वानर ।
जि० घाय[4] चूकउ सुभट, जि० दाय[5] चूकउ जुआरी ।
विद्या चूकउ विद्याधर, फालै चूकउ दर्दुर ।
जिम ठाम चूकउ भंडारी, यूथ भ्रष्ट चूको हरिणु ।
जिसिउ[6] चौर अत्राण अशरण ।
राज्य चूकउ राजा[7], पदवी चूकउ पदस्थ,
लाज चूको नारि, भीख चूकउ भीखारी[8] (स० १)

---

१ अल्पता । २. सकल विकास । ३. स० ३ में नहीं । ४. ऊच पेटा । ५. घाव। ६. दुख । ७. जिम । ८. राजश्री । ९. पदवी ।

(१४) भाग्यवान

तसु तणइ रूपइ कूलि वहइ, सोनमा मोर ऊडइ
मोन वेहूले राति विहाइ, पटउवे भूमि वहुरियइ
चीतविया पासा पड़इ, ऊंधउ करतां पाधरउ थाइं
लक्ष्मी बाहिरि मूसाविइ, उपरि पइसइ,
इसउ दीहाड़उ ॥

(१५) पुण्यवंत

जसु तणइ प्रदक्षिणा वर्त्त शंख ।
चिंतामणि रत्न फरुस पाखाण, सोना तणउ पुरिसउ ।
कोटीं वेध रस, काली चित्रावलि वेलि ।
चोटिया द्राम, जल तरणि हीरउ ।
कवडी पोतइ, सांखिणी पदमिणी वेउ लक्ष्मी निधान कलस आणइं ।
लाखी कउ दीवउ प्रज्वलइ, कोटिध्वज लहलहइ ।
जसु तणइ रूपइं कोलू वहइं, सोना ना मयूर उडइं ।
सोवने फूले राति विहाइ सपात्य सोना पहिरियइ ।
पटउले भूमि बाहिरियइ, चीतविया पासा पड़इं ।
ऊधउं करता पाधरउं थाइ, लक्ष्मी वारणइं लाखइं ।
अनइ ऊपर वाडइं पइसइ, इसिउ दीहाइतउ ।

(१६) पुण्यवंत (२)

जाणे धनद यक्ष तूठउ, जाणे करि वेताल सेवावाहि पइठउ ।
जाणि करि कल्पद्रुम फलिउ, किरि काम घट आवी मिलिउ ।
किरि कामधेनु गृहागणि बाधी, किरि नवनिधि तीणि लाधी ।
किरि चिंतामणि रत्न हाथि चडिउ, किरि पूर्व भवभाग्य ऊघड़िउ ।
अथवा कल्प वैलि घरां गणइ प्रइठी ।
अथवा महालक्ष्मी मूर्ति मले घरि पइठी । भवंति भूरिभिः ॥

१—गृणागणि ।

(१७) लक्ष्मीवंत वर्णनः—

ऊँचो तो[1] अजान बाहु,[2] वामनो[3] वासुदेव ॥
गोरो[4] तो कंदर्प, कालो[5] तो कृष्ण ॥
घणो जीमै तो आहारी,[6] थोडो जीमै तो पुन्यवन्त ।
जो ऊँचा वस्त्र पहिरै तो राजैश्वर, सामान्य वस्त्र पहिरै तो खुमो[7]
दाता[8] तो कर्णावतार, जो न दे[9] तो[10] छाना पुन्य करै
घणुं बोलै तो भोलो, न बोलै तो मितभाषी
जो लपट तो भोगी, जो नपुंसक तो परनारि सहोदर[11] इत्यादि ॥

(वि० पु०)

एक अन्यप्रति में उक्त पाठ विशेष मिलता है ।
मुक्तिनारी प्रतोलीद्वार, सकल तत्व भडार
कर्मवल्ली छेदन कुठार, चतुर्दशयोद्वार
पंचपरमेष्टि नवकार, कंदर्पावतार

(पू०)

थोडुं जिमइ तउ सुकुमार, झगड़दू तउ व्यवहार
अपहुंचवाण तउ पूरउ, जउ पहुचइ तउ सूरउ
लक्ष्मीवंत जिमि करइतिमि छाजइ, 'वीर' जिम बोलइ तिम विराजइ

इति वर्णक—

सभा कुतुहल में यह पाठ अधिक मिलता है ।

(१८) लक्ष्मीवंत (२)

लक्ष्मीवंतु ।
जइ ऊंचउ तउ अजानु बाहू, जउ खाटरउ तउ वामणउ वासुदेव ।
गोरउ तउ कंदर्प, कालउ तउ कृष्ण सोह गालउ ।

---

१. उचउ तउ २ अर्जुनवाहु ३. वामणउ तउ ४ गोरउ ५ कालउ ६ पूरउ आहार ७ खूमउ ८. जइ दातार ९ जइन धइ १०. तउ ११. साचदापी १२ महायोगी ।

घणउं जिमइ तउ पूरउं आहार, थोडा जीमउ तउ पुण्यवंतु ।
जउ पटउला पिहरइ तउ राज राजेसरु ।
जउ सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ अलवेसर ।
जउ दातार तउ वलि कर्णावतार ।
जउ लक्ष्मी न वावरइं तउ प्रछन्न पुण्य करइ ।
जउ घणउ बोलइ तउ भोलउं, न बोलइ तउ मित भाषी ।
भोग चपल तउ कंदर्पवितार, जउ अविषइ तउ परनारी महोदरु ।
जउ टालि माथइ, तउ टालिये पुण्यवंत जि हुइ ।

श्लोकाः—

यस्याति वित्तं स नरः कुलीनः सः पंडितः सश्रुतवान विवेकी,
स एव वक्ता, सच दर्शनीयः सर्वेगुणाः काचन माश्रयंति ॥
गुण वृद्धा तपोवृद्धा ये च वृद्धा बहु श्रुता ।
सर्वे ते धन वृद्धस्य द्वारे तिष्टन्ति किंकराः ॥१०६॥ जे०

(१६) ऋद्धिवंतु—(३)

ऋद्धिवंतु, पुण्यवंतु ।
कर्पूर कुलगला करइ, अद्भुत शृंगार रस माचरइ ।
नितु नव नवालंकार वावरइ, उत्फुल्ल पुष्प शय्या आदरइ ।
हींडोलाट खाटनी लीला धरइ, भोग पुरंदर हुअउ फिरइ ।
सकल स्त्री लोक लोचन हरइ, दृष्टि दीठउ मनि विकार करइ ।
नव नवे लीला विलासे रमइ, मूँह पूंछी जिमइ ।
कडि पूछी पहिरइ, खडोखली तणां पाणी लहिरइ ।
ललित गर्भेश्वर, द्रव्य अविनश्वर ।
शालिभद्रानुकार, मदन मुद्रावतार ।
अभ्रांत तंबोल समारइ, पंच प्रकार विषय सुख अमाणइ ।
ऊगिउ आथमिउ काइं न जाणइं ।

गाथा

जाईं विजारुवं, तिन्निवि निवडंतु कंदरे विवरे ।
अत्थुच्चियं परिवुद्धो जेण गुणा पायडा हुंति ।

(२०) वणिक वर्णन

रिद्धिवन्त पुन्यवत, कपूरे कोरला करे ।
अद्भुत शृंगार समाचरें, नित नवा अलकार बावरें ।
कमल फूल त्रिदश आदरें, हिंडोला खाटनीं लीला करे ।
भोग पुरन्दर होइं फिरे, सकल स्त्री जन लोचन हरें ।
दृष्टि राधो ठाम बिकार न करें, नवा नवा विलास करें ।
महता भोजन जीमे, खंडोखली तणा पाणी लहर ।
दयावंत चित्तधर, पर उपकार कर ।
ललित गर्भेश्वर, द्रव्य अर्चनेश्वर (अविनश्वर ?) ।
सालिभद्रानुकार, मद मुद्रावतार । निरतर तम्बोल संभरें,
पंच प्रकार विषय सुख माणें, ऊग्यो आम्यो न जाणे,
दिन प्रति विलास हँसें, एहवा महाजन वसें ।
भोग पुरंदर, सौभाग्य सुन्दर ।
जवादि जलधर, ताबूल सनागर ।
बीड़ी वैरागर, माननीय मनोहर ।
लीला अलवेसर, लीला शालिभद्र, इत्यादि भोग पुरंदर ।

(२१) श्रेष्ठि

जसु तणइ प्रदक्षणावर्त्त संखु, चिन्तामणि रत्नु ।
फरस पाषाण पुरिसउ, कोटि वेधु रसु, कालउ चीत्रउ ।
चोटीया द्रास, जलतरणि हीरउ, कवडी पोतइ, सखिणि पदमिणि ।
बेउ लक्ष्मी निधान कलस आणइ,
लाखि दीवउ ज्वलइ । ध्वज लहलहइ, इसउ पनउतउ सेठि ॥

(२२) सुखी श्रेष्ठि

श्रीमंतु, रिद्धिमंतु ।
काकत्रि करुला करइ । फोफले कग्ग ऊडावइ ।
महु पूछी जीमइ । कहि पूछी पहिरइ ।
ललित गर्ब्भेश्वरु । शालिभद्रावतारु ।

ऊगियउ आथमिउ काई न जाणइ । अश्रान्त तंत्रोल समाणइ । पंच प्रकार विषय सुख माणइ ।
इसउ धनाढ्य सुखिउ सेठि ॥

(२३) श्रेष्ठि पुत्र

सुजन, सरल प्रकृति, दाक्षिण्यशील, औचित्य गुणो पेत कृतज्ञ, नीतिपरु, सदाचारु, उपकार निरत, दातार शिरोमणि, स्वजन, वच्छल, नगर मुख, राजमान्य प्रसिद्धि पात्रु, इसउ श्रेष्ठि पुत्र ।

(२४) श्रेष्ठि प्रवहण यात्रा

समुद्र अगाध मध्य, गुहिर गंभीर, असप्राप्त तीर ।
तीहि समुद्र नइ तीरि, वावन्नउं वोहित्थ नागरिउं ।
आउलां सूत्रियां, देशातरोचितक्रियाणा भरियां ।
कूआ खंभ ऊभविउ, [२]नीजामा सज्ज हुआ ।
ग[३]भेला लोक भाड़िउ[४], इंघन पाणी पक्वान संग्रहिया ।
खांडिया पीसिया संवलु[५], सिद्द ताडिउं ।
वलि बाकुलि किया, दिक्पाल पूजिया ।
नाटक पेखणा[६] करावियां, स्वजन लोक मोकलाविउ ।
भले[७] शकुने भले मुहर्त्ते, भले दिवसि, [८]हूते प्रवहणि [९]श्रेष्ठि चड़िउ ।
(पु० अ०)

(२५) निर्द्धन वर्णन (१)

उंचउ तउ एरंड, खाटइउ तउ हीनांग ।
घणुं बोलइ तउ लाफु, न बोलइ तउमोगु ।
घणुं जीमइ तउ भूखउ ।
उंचा वस्त्र पहिरइ तउ ईतर, सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ सुंखीउ ।

वि० पु० अ० में प्रथम पक्ति नहीं ।

१. समुद्र तणइ, तीथिं वापन्न २. नौजाव संचिया ३. कमारउ ४. माडियउ ५. सांवलु, सिद्ध ६ प्रेक्षणक ७. शुभ ८. वर्त्तमानि हूते ९. पुत्र चडियउ ।

गोरउ तउ पांडु रोगिउ, कालउ तउ कबाडी । व्यापारी तउ भडग,
विषयी तउ सर्वधर्म्म बाह्य । विषयहीन तउ नपुंसक ।
पुरुष लक्ष्मी रहित, तेहनइ कोइ न चीतवइ हित ।
बोलतउ होइ मीठउ, तउही न सुहावइ किण ही नइ दीठउ ।
गुणे करी पूरउ, तउ ही लोक कहइ अणूरउ ।
घणुं किसुं झखीयइ, मेलावा माहि नो लखियइ ।
लक्ष्मीयइ छाडियइ, ते कुण ही माडियइ ।
सदीवउ सीयालउ, चर्ड्या आगलि दीठइ पालउ ।
घरनी कलत्र, तेहइन मानइ जिम सत्रु ।
मोटायइ वंस नउ, न लेखवइ कोइ किणही अस नउ ।
इस्यउ दरिद्र पुरुष, सहू करइ कुरुष । (सू०)

(२६) निर्धन (२)

निर्धन-उंचउ तउ मसाण खंभ, खाटरउ तउ हीनाग ।
घणउ जीमइ तउ छारीउ, थोडउ जीमइ तउ भूडऊ टाणउ[1] ।
घणउ बोलइ तउ लबाल लापड, न बोलइ तउ मोगउ ।
भला वस्त्र पहिरइ तउं ईतरवा, सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ दरिद्री ।
गोरउ तउ आम वातीउ, कालउ तउ कबाडी ।
वेवइ तउ खात्र पाड़िउं, न वेवइ तउ भडग ।
विषइ तउ सर्वधर्म बहिष्कृतः,विषयहीन तउ नपुसंक ।

श्लोकः—

वरं रेणुर्वरः भस्म नष्ट श्रीर्नपुर्नरः
पूज्यते परीणि[2] क्वापि निर्धनस्तु कदापि न ॥१॥

गाथाः—

पंथ समा नत्थि जरा, दारिद्द समो पराभवो नत्थि ।
मरण सम नत्थि भय, खुहा समा वेअणा नत्थि ॥२॥

पाठान्तर—१ भूडउ ऊणाटउ २ परवणि ।

(२७) निर्धन वर्णक (३)

पुरुष लक्ष्मी रहित, तेहनइ कोई न चींतवइ हित ।।
बोलता होइ मीठउ, तउही, न सुहावइ किणहीनु दीठउ ।।
गुणेकरे पूरउ, तउही लोक कहइ अणूरउ ।।
घणुंस्युं झखीयइ, मेलावा माहे न लखीयइ ।।
लक्ष्मी छडीयइ, ते कुणइ मंडीयइ ।।
सदीव श्रोसीयालउं, चड्य । श्र ।गलि हीडंइ पालउ ।।
घर नी, कलत्र, तेह पिणि गिणे सत्रु ।।
मोटा नइ वसंनउ, न लेखवइ कोई किणही श्रंस नउ ।।
जउ ऊंचऊँ तउ एरंड, जउ मातउ तउ संड ।।
गोरउ तउं पंडु रोगियउ, न बोलइ तउ सोगीयउ ।।
कालउ तउ कत्राड़ी, घणुं बोलइ तउ लत्राड़ी ।।
थोडउ जिमइं तउ दूखउ, घणु जिमउ तउ भूखउ ।।
सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ छीतर, उंचा वस्त्र पहिरइ तउ ईतर ।।
जउ पातलउ तउ विरंग, व्यापारी तउ भडंग ।
विषई तउ सकामी, निविषई तउ अकामी ।।
दातार तउ लंड, सूंब तउ भड ।।
झगडइ तउ नग, न झगडइ तउ ठग ।।
जिम चालइ तिम त्रोटउ, जिम बोलइ तिम खोटउ ।।
इसउ दलिद्री पुरूष, तिण जगत्र करइ कुरुख ।।
जिवारइं लक्ष्मी त्रासइ, तिवारइ डील माइ गुण सर्व नासइ ।।
दीन भाषइ, तउही को न राखइ ।।
इति दलिद्री वर्णकम् ।। कु.

(२८) निर्धन (४)

उचो तो एरंड, खाटरो तो हीनांग ।।
वणो भोलो तो लाकु ।।
बहु बोलै तो लबोल, न बोलै तो मौन ।।
घणुं जीमै तो भुख्यो, थोडुं जीमै तो अभागीयो ।।

भला वस्त्र पहिरें तो ईतर, सामान्य वस्त्र पहिरें तो दरिद्री ॥
व्यापारी तो भडंग, विषइ तो सर्वधनवाह्य ॥ विषयहीन तो नपुंसक ॥

(२६) दरिद्री,

पुरुष लक्ष्मी रहितु, तिह हुइ कुणहुं न चीतवइ हितु ।
बोलतउ हुइ मीठउ, तथापि न सुहादू कुणइइं दीठउ ।
गुणे करी पूरउ, तोइ लोक देखइ अणूरउ ।
घणउं किसिउ झखीयइ, मेलावइ न उलखीयइं ।
लक्ष्मी छाडियइ, सुकुणिइ माडियइ ।
सदैव उसी आलउ, सुखासणि बइसण हारउ ।
आगलि हींडइ, अण वाहणे अनइ पालउ ।
घरनी कलत्र, तेहइ मानइ भणी शत्रु ।
मोटावइ वंस नउ, पुणि रिणि राउलि निमइ,
इसउ दरिद्री ॥ २० ॥ जै०

(३०) दरिद्रो वर्णन—(२)

दरिद्री ना टापरा, जूनागढ ना छापरा ॥
तिहा रहे माणस वापडा, ते महा लापरा । न जाणे आपरा ॥
वाका वला, उपरि पडे सला । नीकले कानसला ।
वासडा काला । घणा चडकलीना माला, विचमा साप ना चाला ॥
कुण२ दीसें ख्याला,
गीरोली ना इडा ॥
मकोडा ने कीडा, धरती, माननी निरती,
घडाधड करती, जिणतिणसु लडती, आगणे पडती ॥
घणा मेलना थोक, हीया थी न जाइ शाक, जे बोलें ते फोक ॥
एह फुअड, बोलें सदा कूड ॥
घरमा दीसें धूड, धणीमा पिण चूड ॥
परसाले चूइं, आगणै सूइ, रीट रालो लुई ॥
तितरें भिंतडा पडे, वइर बढें, वली वापडो उचो चढ़े ॥

१. खड ।

विणठी हाडी, ते पिण किनारे खाडी ॥
थाली नी पडें भांडी, पीसवानी वेलां मारे डांडी ॥
तुस ना ढोकलां ते पिण वही मोकलां,
माथे चढ़े जुना टोकला, रोवं छोकरां, समझावे डोकरा ॥
खावा न मिले धान, देखीनें भडकें सान, देखीने जाइं डील नुं चान ॥
(स्वा०)

आगणे कुतराना घुरघुराहट, रहेता महा उचाट ॥
सुवा न मिले खाट घणा माखी ना भिणाभिणाट ॥
वारणे पिण तुटी त्राटी न मिले एक सूतनी आटी, दिले पछोडी पणफाटी,
आगणे रोडी ॥ गाठे न मिले कोडी, घणी धणीयानी नी सरखी जोडी ॥
आंगणें काटानी वागर, जातां न मिलै आदर ।
वेसवां न मिले किहा पाधार, जातां ऊपपजे डर ॥
घणा अजगर, शरटीना घर ॥
उदेही ना भर[१] अनेक कोल ना दर ।
उंदरना भर, एहवा दरिद्री ना घर ॥
इति दरिद्र घर वर्णनम् ॥ ५ ॥ (क.) (कु.)

---

(३१) जुआरी

निरंतर जू रमइ, आपणउ सयर दमइ
सकाल धन गमइ, भीख भमइ,
अलीख (क.) भाषण करइ, निज कुटुंब परिहरइ
अपमान आदरइ, अनर्थ परम्परा वरइ
जाणी पाणी दिव्य करइ, अनेक नीच कर्म समाचरइ
सात पूर्विज तणी ऋधि (ऋद्धि) क्षयं करइ, आपणा मस्तक ताइ रमइ ॥२॥

(३२) चोर

विविध वेस, करइ विवरि प्रवेसु ।
चडइ अटालि मालि, पइसइ परनालि खालि ।
महा निसंकु, अतिहि त्रिबंकु ।

१—चर ।

छाने पगि चालइ, कुणहइ हुइ ! आपणु चित्त नालइ ।
चार चश्म उपवाड़इ, कमाड़ नी कोडि उघाडइ ।
नउल ना साकल वाढइ, भुइरा ध्याकेकाण-काढइ
दीहइ सूइ, राति पग हंठिइ करइ,
नगर सहु सूअइ न मिलइ कहि नइ साथि, रुधइ जाइ ताली देई हाथि ।
राय ने भंडारि, खात्रि पाडइ, पग रमाडइ
इसउ चोरु ।। १७ ।। जै०

(३३) चोर वर्णन (२)

विविध वस्तु हेरइ, बोलाव्यउ बोल फेरइ ।
चढ़इ माल अटालि, पइसइ परणाल खालि ।
कमाड ऊघाडइ, पणि सूतउ को न जगाडइ ।
अघोर निद्रा द्यइ, कान कोटिरा आभरण ल्यइ ।
कटारी यइ बधन वाढ़इ, पर्वत प्राय केकाण काढइ ।
चढिउ चोर पवाडइ, राउला भंडार फाडइ ।
खलक नइ घरि द्यइ खात्र, न छोडइ छइल नइ छन[१] थात्र (पा १) ।
घण जिस्यउ गाढउ गात्र, दारिद्र्य छेदिवा दात्र ।
दीसइ दीसइ शात, पणि रात्रिइं तउ साक्षात् कृतात ।
विणासीयइ तउ इइ न मानइ चोरी, बाध्यउ वाढी जाइ दोरी ।
लोहनी साकल त्रोडइ, घड़ी न रहइ खोडइ[१] ।
हाकिउ ऊठी ऊजाइ, रुंधिउ ऊधसी धाइ ।
करि कीधइ करवालि, ?ाइ लद्ध लोक विचाली ।
गढ़नी परनालि, पइसतउ बाधउ झालि[२] ।
पाणि ए महापापी, जेणइ प्रजा संतापी[३] । सू०

---

१ छात्र

१ कु० विशेष पाठ इसके बाद—सीसम ना किमाड फोडइ, मरण सीम ओडइ।
दीठु काइ न छोडइ, पगे छलोहउ दोडइ, डीलइ जोर, कर्महि शोर ।
मननउ कठोर, जाणे खा परउ चोर ।

२ इसके बाद का विशेष—काठउ वाधउ, पोता नउ कमायउ लाधउ ।

३ कहिये सी वात, गणि धीर कहइ ए चोर अवदात ।

(३४) वृद्ध वर्णक

जिवारइ जरा चांपइ, तिवारइ कर वेवे कापइ, पग थरहरइ ॥
कडि थाइ कूवी, वांसा नीसरइ दूवी,
तडपडइं···थीमीट, तास कायइ वहइ रीट,
माथउ धूजइ, चालता सासन पूजइ,
आंख गई ऊंडी, जेहवी धोवीनी कुंडी,
डांगडी झालइ, हलवे हलवे हालइ,
मुहडइ पडइ लाल, हंसई वाल नइ गोपाल,
टागे पडइ वल, सगले दीलइ सल,
दाढ दांत समला पड्या, काने तउ ताला जड्या,
खाजखिरोइ जिसइ, पीहिरणुं खिसइ तिसइ,
हाल हुकम न गालइ, डोकरा नु भाखइ कांनइं,
मांस गल्यउ, चांमडउ नीचउ ढल्यउ,
चिंता करी वल्यउ, माथज पल्यउ जुंआ रउ जालउ।
टावरां नउ ओस्यालउ ॥
सहू ना करइ विषास, इसउ वृद्धावास ॥
घणातण डोकरा दुखी, ना केईक पुन्यवंत सुखी ॥
मन संवेग आणउ, जउ इसउ वूढापणउ जाणउ,
गणि कहइ कुशलधीर, इम जाणि धर्म सू करिज्यो सीर,

इति वडपण वर्णनम् ॥ कु०

(३५) च्तांग मनुष्य

टूटा, पांगला, आंधला, असम, अनाथ, असरण।
हीन, दीन, खीण, राक, रोगी, बधिर, बोबड़ा, गुंगा।
गहेला, दोहिला, दूबला, भूखा, तरस्या, इत्यादिक ना जाण।

(३६) फूहड़ स्त्री

कानसियाली भरिया रालड़ा, फूहड़ा भरिउ साड़लउ।
ओघरसाला भरिउ ओढणउं, हाथि पाणिउ नही, पगि पाणी नहीं।

मलि मलिन सरीरि, दीठि ओकारि आवइ,
इसी फूहड़ी सुगावणी घरनारि कलिकालु प्रचुरु ॥ (पु० स०)

(३७) व्यक्ति कष्ट

तृषा, भूख, भावठि, ठाढि, यह तापता, वडो, लू उगाल,
धूसर, आरत, उच्चाट, अजो अजप, इत्यादिक भोगव्थाजीव ।

(३८) व्यक्ति आपद (२)

आपदा, कष्ट, कलेस, गड, गुंवड़, ताव, सीसक, मथवाय, आफरो, अजीर्ण, उपद्रव, मार, छल, छिद्र, भूत, प्रेत, पिशाच, साकिणी, डाकिणी, यक्ष, योगिणि, व्यतंर, वाल वेरि ।

रोग ८४ जाति ना वाय, ३६ जात ना फोड़ा, २१ जाति ना प्रमेह, २८ जातिना, आखना रोग १३ जाति ना सन्निपात, १२ जात ना ताव, ६ जाति ना श्लेष्म, ६ जात ना पित्त, दया पाली हो तो एती आपदा न पामियइ ।

रोग सोग वियोग ।

(३६) व्यक्ति रोग (३)

१२ ज्वर,	१३ संनिपात,	१६ प्रमेह,	५०० आमवत,
८४ वायु,	३६ महावायु,	८४ दोष	४५ खाधा विकार
१०८ फोडी,	५ गुल्म,	५ क्षयन,	२० श्लेष्म,
८ उदर,	१०८ व्याधि,	१०८ सइमउमृत्यु	७६ चक्षुरोग,
कास श्वास,	हरिषा, (हास)	अतिसार,	गुडगून्ड ।
देह रोगाः ॥	१०६ जो०,		

(४०) व्यक्ति रोग (४)

जलोदर, भगदर, क्षार, खयन, खास, स्वास, हडकी, हरस, हीक, कुलण, बलण, अजीर्ण आफरो, अतिसार, अमार, आधासीसी अतर्ग्रल, वाय, वेमचीवेग-वमन, वासी छडप्रमेह, पाणहिपीन सपघरी प्रवाला नासूर, नकलोही, नीनामी, गोलो, गुल्मगोलो, फीहो-फूलीफोडो, रागपित्ति रगतविकार, पाणी विकार, सोजो-श्लेष्म छाया, छाणी उदर विकार, कफ, कोढ़, कोरड, कहमीया लोहीगण,

संग्रहणी, सीतांग, सन्निपात, शूलसीसक, चांदी द्राद, वातपित्त, मूर्छा, मधुरो, वभूत, रांघण झोलो, दृष्टिदोष नेत्रदोष, धात, निर्धात, पुन्य थकी ए माहिलो एकेह प्रकासन पांमे । (वि०)

(४१) उपचारक प्रकार

वेद, वारा, जाणजोसी, देव, देवला, डाकोनरा भोपा, भरडा, भगत, भ्रामिक, भेषधर, भीखारी, भूश्रामडल, जोगी, जती, जंदा सोफी, सन्यासी, पछणा, इछणा, उजणा, उतारणा, डोरा मादलिया, तेल, आम्नाय उपचार इत्यादि ।

(४२) व्यक्ति कष्ट—दुस्काल वर्णन

दुष्काल वर्णन

एहवइ एक पडिउ दुकाल, ठामि २ दीसइ नर कपाल ।
रुंड मुंड मय धरा पीठ, चाचरि [1]लाली सकीयइ नीठ ।
नेरती वाय वाजइ, भूपति नांइ हीया भाजइ ।
मिल्या मेह नासइ, को केहनइ न रहइ पासइ ।
धनवंत पणि सीदाइ, तउ रांक री किमी[2] गति थायइ ।
मारग हुया महा विषम, संचरइ चोर विहुगंम[3] ।
गोरू विण दीसइ गाम देस, वाल्हा छडगया (वि)देस ।
माणस माणस नइ भखइ, आपण पारका नो लखइ ।
लोक वेचवा लागा पुत्र, छाडीजइ फूटराइ कलत्र ।
रोता बालक देखि, नूपजइ दया (नइ) रेख ।
लोक घणा निर्द्धन थया, उत्तमइ नीचनइ घरे गया ।
वडायइ जे जंगम जती तेहइ पणि ताकइ कोई सती ।
केईक जे धान रा धणी, तेहइ पणि वावरइ [4]धान मिणी ।
पाताल भोग लीजइ, सागउ सगानइ न पतीजइ ।
पहिलुं जे लेता वनस्पती, तेह पणि न दीसइ रती ।
लोक भला लाज छोडी, मांगवा लागा हाथ ओडी ।
(जो०)
वीजा भोग सर्व भागा, सत्तु[5] धानरइ ध्यानि लागा ।
जे कहीजता दातार ते पगि मांगइ कही करतार ।
वीसर्यासर्व कला गीत, घरि घरि कीजइ अन्नरी चींत ।

---

१. चाली २ किसी ३ चिडु ४ अन्न ५. सहू

रूडायइ राउत राजा, ते पणि ताकइ लोक ताजा ।
सविलोक निर्द्धन हुया, बाप बेटा रहइ जुजूआ ।
वंचिवा लागा लोक, सगपण [1]संधि हुई फोक ।
धणुं किस्युं जे पतिसाह, ते पणि करइ धान ऊमाह ।
कितलुं कहीयइ ए सरूप, जेहनी बात भव रूप ।
एहवइ महा दुकालि, [2]जगडू दीयइ दान विसाल । सू०

इति दुर्भिक्ष वर्णन ।

---

१. सेंध सहू २ धीर पुन्यवत धरिदीयइ दान सालि । (कु०)

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन संग्रह

विभाग ८

जैनधर्म सम्बन्धी वर्णन

(१) तीर्थंकर

जगद्भूषण, जगदेकरक्षण ।
तीर्थंकर, सर्व पाप क्षयंकर ।
विस्तीर्ण ससार सागर, गुण रत्नाकर
करुणा निधान, सकल देव प्रधान,
त्रिभुवनाधिप रूप, प्रकाशित संसार रूप ।
लोकोत्तर चरित्र, गंगाजल पवित्र गात्र ।
परमानंद दायक, सकल कर्म घायक ।
निर्दत्सित दोष, निःप्रतिम संतोष ।
सकल कल्याण कारक, आठमद निवारक ।
आठकर्म जीपक, पेंतीस वाणीगुण कथक । आर्यदेश भविक जीव उपदेशक।
चउतीस अतिशय विराजमान, बार गुण विराजमान ।
सहवा वीतराग देव (पू०) ।

(२) प्रथम ऋषभदेव जिन वर्णन

युगला धर्म निवारणु, संसार समुद्र तारणु ।
मरुदेव्या स्वामिनी कुक्षि सरोवर राजहंसु, इक्ष्वाकु कुलावतसु ।
श्री नाभि नरेन्द्र नंदनु, मुक्ति श्री हृदय चंदनु ।
शत्रुंजय मौलि मंडनु दुष्टारिष्ट खंडनु ।
केवलज्ञान भास्करु, सर्व सौख्य करु ।
अशरण शरणु, कुगति हरणु ।
अनाथु नाथु, जगपति श्री जुगादिनाथु ।
अयश हरण, परम सौख्य नउ देणहारु तउ दानु देवउं अति चारु ॥१३॥ (जै०)

(३) आदिदाथ (१)

नाभि नदनु, सकल जगत्त्रय[1] मडनु ।
पचशत धनुष मान,[2] तापोत्तीर्ण सुवर्ण समानु ।
अति[3] श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कधु, जगत्त्रय तणउ बंधु ।

---

१ मही । २. प्रमाणु । ३. हरगल गवल ।

केवल ज्ञान लक्ष्मी सनाथ, भव्य लोकन्हि मुक्ति मार्ग तणउ दिखाडइ साथ।
संसार कूपि पड़ता प्राणि वर्ग[1] हुइ दिइं हाथ।
युगला धर्म निवारवा समर्थ, परमेश्वर[2] सदर्थ।
श्री आदिनाथ श्री संघ तणा मनोरथ पूरउ।१। जो०

(४) जिन बिंब (१)

नासाग्र न्यस्त दृष्टि युगल, श्रीवत्सलांछित वक्षस्थल।
पद्मासन विधृत कर युगल, प्रकटी कृत वस्त्रांचल।
शरीर तेजच्छटा छोटिताधकार जाल, त्रैलोक्य सुखाल वाल। ६३।जो० (२)

नासाग्र विन्यस्त दृष्टि युगलु,
श्रीवत्स लांछित वक्षस्थलु,
पद्मासनोत्संग विधृतकरकमलु,
प्रगटीकृत वस्त्रांचलु
शरीररश्मिच्छटाच्छोटितान्धकारु। अस बिंबु। (पु. अ.)

(५) परमेश्वर की नख कांति

जिसउ गुंजा तणउ अर्द्धभाग, जिसउ पद्मरागु।
जिस्यउ मंजीठ रगु, जिसउ जासू णउ पुष्प, जिसउ प्रवाल भंगु।
जिसउ चोल मजीठ, जिसी राती टसरि।
जिसी अशोक तणी कूंपलि, जिसी कुपति कपि कपोल।
जिसउ बिंबी तणउं फूलु, जिसउ अभक्तक।
जिसउ सिंहरु, जिसउ ऊगतउ सूरू।
जिसउ कुंकुम, जिसउ कुसुंभउ।
जिसउ हिंगुल, जिसउ शुक चंचु।
तिसी परमेश्वर तणी चरण नख कांति॥ ८६॥ जै०

(६) केवल ज्ञान से देखा हुआ अन्यथा नहीं होता (१)

कदाचित् समुद्र मर्याद मेल्हइ,
कदाचित् आदित्य पश्चिम ऊगइ।
,, अमृत विपु परिणमइ,

१. पड़ता। २. भगवत।

कदाचित् चन्द्रमा अंगार वृष्टि करइ ।
,, पाणी माहि पाषाण तरइ ।
,, मेरु चूलिका चलइ,
,, वाचस्पति वचन फलइ ।
,, शिला तलि कमल विकसइ,
,, गगा जलु पश्चिम वहइ,
,, अभव्य हृदय धर्मोपदेश रहइ ।
,, मानुस सरोवरु सूकइ,
,, सत्पुरुष प्रतिपन्नु चूकइ ।
,, मेदनी मडलु पातालि जाइ,
केवलज्ञानु दृष्ट तोइ अन्यथा (न) थाई । पु० अ०

७ केवल ज्ञानी के वचन अन्यथा नहीं होते [२]

कल्हारइं[1] समुद्र मर्यादा मेल्हइ, नदी तणां वृंद[2] पाछां पभेलइं[3] ।
क० सूर्य घोरांधकार करइ, क० चंन्द्रमा अंगार तणी वृष्टि करइ[4] ।
क० पाषाण[5] खड जल माहिं लागमा[6] तरइ, निर्भाग्य मनुष्य हइ लक्ष्मी वरइ।
क० सकल दिशा मंडल फिरइ, क० मेरु पर्वत्त वाय[7] करी साचरइ ।
क० वेद विद्या[8] विदग्ध पुरुष मरइ, क० पवन वन माहि स्थिर पणउ आदरइ ।
क० वेलू माहि पीलता तेल नीसरइ, क० पूर्व भवान्तर नउ कर्म साभरइ ।
क० सूंकडं रूख फल फूलि करी विस्तरइ, क० सूकडं इक्षु खंड रस झरइ ।
क० कैलास चूला चलइ, क० बृहस्पति[9] वचनि करी स्खलइ।
[10] क० कुलाचल एक स्थानि मिलइ, क० अघटतउ सयोग मिलइ ।
क० गगाजल पश्चिम वहइ, क० अभव्यनइं[11] मनि धर्म रहइ ।
क० मानस[12] सरोवर सूकइ, क० सत्य हरिश्चंद्र प्रतिज्ञा थकइ चूकइ ।
क०पृथ्वी[13] मडल पातालि जायइ, केवल ज्ञानी कथित तउ ही—अन्यथा न थाई ।।५।।

(जो०)

---

१ किवारे २ नां उद्धरण ३ ठेलइ ४ झरै ५ जलमा पत्थर तरै ६ लगारेक तरइ ७ फेरव्यो फिरें ८ ब्रह्मा वेद न उच्चरे ९ सुगुरु १० खल ११ पाखण्डी १२ रत्न कवक दहें अन्य प्रति में इसके वाद "कुलवती भर्तार मुके" पाठ अधिक है । १३ आकाश ।

(८) केवलज्ञान

विशेष अतिशय निधान, सकल ज्ञान[1] प्रधान।
मोहांधकार विच्छेदन भानु, त्रोटिता शेष कर्म संतानु।
त्रिभुवन जन सकल संदेह छेदक, अच्छेद्योभेद्य प्राणी-गण हृदय भेदक।
अनंतानंत विज्ञानु, इसिउं ऊपंनउ केवल ज्ञान[3] ।। ३ ।। जो०

(९) समवसरण (१)

उत्पन्न दिव्य विमल केवल ज्ञानावलोकित सकल लोकालोक स्वरूप।
सुवर्ण सिंहासन छात्र चामरादि अष्ट महा प्रातिहार्य्य शोभमान समानरूप।
देवाधि देव, विहित सुरासुर सेव।
त्रिभुवनैक नायक, सकल सौख्य दायक।
त्रिभुवन जन नयना प्यायक, निर्जित पंच सायक।
चउत्रीस ३४ अतिशय सहित, पात्रीस ३५ वचनातिशय परिकलित।
चउसट्ठि ६४ इन्द्र सहित, अष्टादश १८ दोष रहित।
घात्य कर्म चतुष्टय मुक्त, देवता कोटि युक्त।
यदा कालि नगर समीपि आवइ, तिवारइ आपणइ भावइ।
चतुर्विध देव निकाय समोसरण नीपजावइ।
तिहा पहिलू देव निर्मित, संवर्त्तक वायु विस्तरइ।
तृण काष्ट, कचवर अपहरइ, आकाशि मेह पटल पसरइ।
सुगंधोदकि वृष्टि करइ, फूल पगर भरइ।
योजन एक प्रमाण भूमिका, विरचित अगर धूमिका।
मणि रत्न सुवर्ण सिउं साधी, गुरूड रत्नमय पीठ बांधी।
ऊपरि जानु प्रमाण पंच वर्ण कुसुम वरसइ, चिहुदिसि दिव्य परिमल विलसइ।
उदार रत्न, १ सुवर्ण २ रूप्य ३ मय त्रिणि प्रकार।
मणि, रत्न, हेम मय कोसीसे करी सदाकार, समस्त विस्व मॉहि सार।
पुण्यावतार, तेजि करी पूस्कार।
च्यारि (४) प्रतोलीद्वार, जिहा देवज प्रतीहार।
तिहां विहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ।

---

१ किहवारइ २ लगारेक तरइ ३।

इंद्र धनुष मान मूरण, तिसिउं रत्नमय तोरण ।
ऊपरि प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक तणी पालि, तिसी वंदर माल ।
अति पवित्र, विशाल छत्र ।
उदार स्वरूप, कनक रत्नमय पूतली तणा रूप ।
नयनइ जोता उपजावइ सुख, इस्या इद्रनील निर्मित मगर मुख ।
जिहा लिख्या सिंह, शार्दूल, गज, हंसा निर्म्मल नीरज पंचवर्ण धज ।
एहवा समोसरण विचालि, मणिवद्ध पीठ विशालि ।
सकल मागलिक मुख्य, बार गुणउ अशोक वृक्ष ।
तेह तणइ तलइ, स्वर्ण रत्नमय सिंहासण, जगन्नाथ नइ वइसण ।
तेजि करी जोई सकीयइ नीठ, इस्यु, सुवर्णमय पायपीठ ।
जिस्या हुवइ धवल कमल सहस्र पत्र, इस्या पनरह (१५) आतपत्र छत्र ।
व्यतर मध्यस्थ अमर, देवाधि देव न इं ढलइ चमर ।
अधरी कृत दित्य मंडल, तीर्थंकर लक्ष्मीकर्ण कुंडल ।
जगदीस पुठिइ झलकइ भामडल ।
जेहनइ दर्शनि मिथ्यात्व पटल टलइ, तिस्युं आगलि धर्म्मचक्र झलहलइ ।
आकाशि मधुर ध्वनि देव दुदुभि वाजइ, गाजइ ।
तेह नइ निर्घोषि करी गगनागण ।
पारतीर्थिक तणा भडवाय भाजइ, पापीजन पइसता लाजइ ।
रूडा सवे विरूद बाजइ, सहस्र योजन उच्चैस्तर इंद्रध्वज लहलहइ ।
धूप तण परिमल मह महइ, इद्रादिक देवता गहगहइ ।
वाजित्र तणी कोडा कोडि द्रहद्रहइ, मनुष्यनी कोडि आवइ मननइ रहरहइ ।
इसिइ प्रवसरि, एक देवगति गान करइ, एक श्रुति धरइ ।
एक सिंहानाद उच्चरइ, एक जगनाथ पासइ फिरइ ।
एक विचित्र वाजित्र वा यइ, एक रग करिवा सज्ज था यइ ।
अप्सरागण नाचइ, तीर्थंकर तणी भक्ति करीवा राचइ ।
दुष्ट वनचर आपणा आपणा जाति वइर परिहरइ,
परस्परइ प्रीतिवत हूता सचरइ ।
एणइ एहवइ समोसरणि, मार्गि काटे ऊवे थाइते ।
पृष्ठानुगामी पवने वाइते, पोखी ए प्रदक्षिणा वर्त्तिजाइते ।
परमेश्वर, तीर्थंकर ।
नव सुवर्णमय कमलि पाय स्थापतउ, तेजिकरि दसइ १० दिसि व्यापतउ ।
पूछिया तण ऊत्तर आपतउ, जन परम्परा नइ पाप थकी मूंकावत्तउ ।

गज गतिइ चालतउ समस्त भव्य लोक तणा लोचन नइ आनंद उपजावतउ।
भव्य जीव तणइ हृदय कमलि बोधि बीज वावतउ ।
पूर्व दिसि तणइ द्वारि पइसी, पूर्वाभिमुख सिंहासनि वइसी ।
चतुर्मुख होइ, भविक सम्मुख जोइ ।
बारइ (१२) परिषद् पूरी, मिथ्यात्व मान मूरी, पापकर्म चूरी ।
सर्व सत्त्व साधारिणी, योजन नीहारिणी, अमृतानुकारिणी ।
वाणीयइ करी, लोक ऊपरि हित आदरी ।
चतुः प्रकार, सर्वसार, जग त्रयनइ आधार ।
धर्म्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक तणइ हीयइ वसइ ।
अनेक भव्य जन आदरइ धर्म्म, त्रूटइ जिणथी अशुभ कर्म्म ।
पामीयइ मोक्ष सर्म्म, इति समव सरण । (सू०)

(१०) समवसरण (२)

योजन लगइ खेहनुं विस्तार । देव कृत कचवरा पहार ।
गंधोदक सींचवइ । सौचाभ्यसार । पंचवर्ण जानु प्रमाण जिह कुसुम सभार
देव कृत मणि कनक रूप्यमय त्रि प्राकार ।
विशाल शाल भंजिका सहित रत्न मय दो जेहनु द्वार ।
यथा स्थान स्थित गणधर देव देवी प्रभृति वार सभा परिवार ।
उच्चैस्तर तोरण पताका किंकिणी नउ झात्कार ।
धूप घटिका निर्गच्छत् । कृष्णा गुरु कुंदरुष्क तुरुकनो जिहाँ धूपोद्गार ।
चतुर्द्वार । एवं विध समवसरण ॥ छ ॥ पु०

(११) समवसरण (३)

ज्ञानि इन्द्रादिक देव आवइ, समवशरण तणी भक्ति भावहि ।
एक देव स्फार नीपजावइ, रूप्यमय प्राकारु, एकदेव विस्तारित तेजः प्रकारु
निपजावइ स्वर्णमय प्राकारु ।
एक देव मणि रत्नोद्योत विघटितांधकार निपजावइ, रत्नमय प्रकारु ।
एक देव अति उदारु, नीपजावइ प्रतोली द्वारु ।
एक देव लोक लोचन समुल्लासन, नीपजावइ सिंहासन ।
एक देव प्रकाशित दिग्मण्डलु, नीपजावइ भामंडलु ।
एक देव विस्मापित जगत्त्रय, नीपजावइ छत्र त्रय ।

एक देव पल्लव निकुरंब पूरितान्तरिक्षु, नीपजावइ किंकिल्लि वृक्षु ।
इसं धजविंध पताका समलकृतु समवसरणु रचहि । पु० अ०

(१२) समवसरण में देवों की विविध भक्ति

ज्ञानि ऊपनइ, इद्रादिक देव आवइ समवसरण तणी भक्ति साचवइ[१] ।
एकि देव अतिस्फार, नीपजावइ प्राकार ।
एक तेजः संभारभासुर सुर करइ सुवर्ण प्राकार ।
एकि रत्न द्युति विघट्टिताधकार करइं रत्न प्रकार ।
एक उदारस्फार नीपजावइं प्रतोलीद्वार ।
एक लोचन समुल्लासन नीपजावइं ।
सिंहासन प्रसारित दिग्मडल, नीपजावइ भामंडल ।
विस्मापित जगत्रय, नीपजावइ छत्त्रय ।
कोई संपादित भुवनोत्कर्ष, करइं कुसुम वर्ष ।
के० भूमि स्थित धवल ढालइ चमर युगल ।
के० दत्रेक्षण करइ प्रेक्ष (ण) ।
के० विस्तारउं सर्व सार, वीणा झंकार ।
केई अति स्फीत, गायइं परमेश्वर नउ गीत ।

१३ जिनवाणी वर्णन (१)

बारइ परिषद पूरि, मिथ्यात्व मान मूरि, पाप कर्म चूरि ।
सर्व सत्व साधारिणी, योजन नीहारिणी । (२)
चतुर्द्धा धर्म्म प्रकाशिनी, च्यारि कषाय निर्नाशिनी ।
भव्यजन कर्णामृत स्राविणी, कुमत विद्राविणी ।
ससार समुद्र तारिणी, आश्चर्य्य कारिणी ।
पर दर्शन क्षोभिणी, चतुत्रीस वचनातिशय शोभिनी ।
सकल क्लेश विध्वंसिनी, उत्तम चतुर्विध सघ प्रशसिनी ।
अष्ट कर्म्म बल विदारिणी, दुर्गति पतज्जनतोद्धारिणी ।
सभा जन संसय हारिणी, मोक्षोपाय विधायिनी, सर्व वंछित दायिनी ।
इसी वाणीयइ करी, लोक ऊपरि हित आदरी ।
चतु: प्रकार, सर्वसार, जगत्रनइ आधार ।
धर्म्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक तणइ हीअइ बसइ । सू० ।

१ भावहि २ रूप्पमय प्राकारू ।

(१४) जिन वाणी वर्णक (२)

श्री जिनवाणी, सुणिज्यो भविक प्राणी ।
एछइ मुक्ति अहिनाणी, परभव नउ सवल जाणी ॥
आदरउ विवेक आणी, छोडउ अवर विकथा कहाणी ।
जउ वाछउ मुक्ति रूप पटराणी, घणुं स्युं कहु ताणी ।
जिसी सिद्धांतइ वखाणी, अमिय समाणी ॥
वाणी बारह परषद पूरी, मिथ्यात्वमान मूरी ।
पइत्रीस वचनातिशय सनूरी, पापकर्म-पूरी ॥
सर्वसत्वर्धारिणी, योजनानुहारिणी ।
भव्यजन कर्णामृत स्राविणी, कुमति विद्राविणी ॥
संसार समुद्र तारिणी, महा आचार्य कारिणी ।
अष्टकर्म वल विदारिणी, दुर्गतिपतज्जनतोद्धारिणी ॥
सभा जन ससय हारिणी, मोक्षोपाय विधायिनी ।
चतुर्धा धर्म प्रकाशिनी, च्यार कषाय निर्नाशिनी ॥
मालव कौशिक राग शोभिनी, पर दर्शन क्षोभिनी ।
सकल कर्म ध्वंसिनी, कलिमल रुयालिनी ॥
उन्मार्ग भेदनी, मिथ्यात्व छेदनी ।
इसी वाणीयइ करी लोक उपरि हित आदरी ।
चतुः प्रकार, सर्वसार, जगत्र नइ आधार ॥
धर्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक बगाइ "धीर" हीये वसइ ।
एवं विध भगवद्वांणी- सर्व वानछि दापनी । स० कौ०

(१५) जिन वाणी—(३)

वीतराग तणी वाणी, भव वेलि कृपाणी ।
ससार सागर समुत्तरणी[1], महा मोहाधकार[2] दिनकरानु कारिणी ।
क्रोध दावानलोपशम्मिनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी ।
कलिमल प्रक्षालनी, मिथ्यात्व छेदिनी ।
त्रिभुवन पालिनी, पाप विशोधिनी, मन्मथ प्रतिपंथिनी ।

---

१ ससार समुद्र तारणी । २. विध्वसनी ।

अमृत रसास्वादिनी, हृदयाल्हादिनी
आक्षेपकारिणी, विक्षेप विस्तारिणी।
सर्वजनचित्त चमत्कारिणी[1] जगत्त्रयोपकारिणी।
आगमोद्धारिणी, योजन विस्तारिणी। भग[2]वद्वाणी। रा० जो०।
आगे अन्य प्रति से—

सर्व विघन हारिणी,	संसारोच्छेद कारिणी।
चतुर्विध सघ मनोहारिणी,	चतुर्विध धर्म प्रकाशनी।
चतुः कषाय विनासनी,	भव्य जन कर्णामृत श्राविनी।
सकल कुमति विद्राविणी,	त्रैलोक्य आश्चर्य कारिणी।
सर्व संसय निवारिणी,	योजन भूमि विस्तारणी।
विक्षेप विस्तारिणी,	योजना विस्तारिणी।

(१६) जिनवाणी वर्णन (४)

चतुर्धा धर्म प्रकाशिनी। च्यारि कषाय निर्नाशिनी।
भव्य जन कर्णामृतस्राविणपाना हारिणी। संसार समुद्र तारिणी।
आश्चर्य कारिणी। योजन हारिणी।
अखलित, पात्रीस वचनातिशय परिकलित ॥ ८ ॥ जै०

(१७) धर्म उपदेश

निद्रान्ते परमेष्ठि संस्मृति रथो देवार्चन व्यावृतिः।
साधुभ्यः प्रणतिः प्रमाद विरतिः सिद्धान्त तत्त्व श्रुतिः।
सर्वस्योपकृतिः शुचि र्व्यवहृतिः, सत्पात्र दाने रतिः।
श्रेयोः निर्मल धर्म कर्मणि रतिः, श्लाघ्या नराणा स्थितिः॥
तुम्हें सदैव पुण्य कर्त्तव्य करिवु, मनुष्य जन्म नउ फल लेवउ।
निद्रा प्राति पच परमेष्ठि नमस्कार गुणिवउ, श्री सिद्धात सुणिवउ।
श्री सर्वज्ञ देव पूजियउ, नवनवे स्तवने स्तविवउ।
श्रीसद्‌गुरु सेवविउ, कुसंग मेल्हिवउ,

---

१ सम्मोहकारणी। २ वीतरागवाणी।

विकथा प्रमुख प्रमाद—टालिवउ । मनि धर्मोद्यम आणविउ ।
सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावना प्रभावनादिक पुण्य कार्य करिवो ।
निद्रादिक[1] पाप करणीय परिहरवां ।
मन उन्मार्गि जातउ वालवुं ।
वैश्वानर नउं[2] कर्म वन बालिवउं ।
परोपकार करवउ पुण्य भंडार भरिवउ ।
शुद्धव्यवहार आराधिउ, मोक्ष, मार्ग साधविउ ।
न्याय उपार्जित वित्त क्षेत्र[6] नइ विषइ वेचिवउ ।
तीर्थयात्रा प्रमुख पुण्य लाभ लेवउं ।
जीवदया कीजइ, उचित दान दीजइ ।
'सकल लोक माहि प्रसिद्धि लीजइ, पूर्वोपार्जित पाप खीजइ ।
मनुष्य भव कृतार्थ नीपजावीयइ, श्रावकाचार साचवीइ ।
सर्व दुःख प्रमाजीय । ईण परि श्रीधर्म समाराधया जिम उत्तर मंगलीक
माला पामउ तिम भी धर्म नइ विषइ सदैव सावधान हुया ।। इत्युपदेश।।

(१६३ जो०)

(१८) जिनोपदेश (२)

सत्संगत्या १ जिनपति नुत्या २ गुरु सेवया ३ सदा दयया ४
तपसा ५ दानेन ६ तथा तत्सफलं सुकृतिभिः कोपं ।।
तन्मानुष्य जन्म लब्ध्वा यो विफली कुरुते स एवं कुरुते ।।
भस्मकृते स दहति चारुचंदनं जे मनुष्य जन्मेद कामार्थे
नयते सततं धर्म परिमुक्ताः । २ । अतत्सफली कार्य मेवा यतः ।।
पुष्णाति गुणं मुष्णाति दूषण सन्मते प्रबोधयते
शोधयते पाप रजः सत्संगतिरंगिना सततं ।। १ ।। कीरद्वयवत्
माताप्येका पिताप्येको ममतस्यच पक्षिणः
अहं मुनिभि रानीतः सचानीतो गवाशनै ।। २ ।।
सद्यः फलंति कामा वामा कामा भयं नयतते ।
न भवतिर्भव भीति जिनपति नति मति मतः पुंसः ।। २ ।।

---
१ निंदा २ तउ ४ क्षत्री

कुमारपालाशोकमालिवत् गुरु सेवा करण परो नरो नारागै
रभिद्रुतो भवति ।
ज्ञान सु दर्शन चरणै राद्रियते सद्गुण गणैश्च ॥ ३ ॥
केशि प्रदेशि वत् । नरय गइ प्रौढ स्फूर्ति निरुपम मूर्त्ति, शरदिंदु कुंद
सम कीर्ति ।
भवति सि सौख्य भागी सदा दयालंकृत: पुरुषः ॥ ४ ॥ दामन्नक वत्
पूर्व भवे जालिकः जलमिव दहनः स्थलमित्र
जलधिर्मृग इव मृगाधिप स्तस्य इह भवति
जे न सतत निज शक्त्या तत्यते सु तपः ॥ ५ ॥
सनत्कुमार दृढ प्रहारि वत् । तं परिहरति भवार्तिः
स्पृहयति सुगतिर्विमुंचते कुगतिः यः पात्रता
कुरुते निज्ञ कन्यायार्जित वित्तं ॥ ६ ॥
चतुस्सुत जनक जिनदत्तः श्रेष्टी च शालि भद्र
चदना श्रेयास धन सार्थवाह वत् ॥ ६ ॥ इत्युपदेशलेशः समाप्तः ॥ १६८ जो०

(१८) धर्म कृत्य

देव पूजनु, गुरुवदनु, तीर्थयात्रा गमनु,
शील परिपालनु, अध्ययनु
स्वाध्याय, ध्यानु, तपोविधानु
अनुष्ठान, दानु
सुधी भावना, जिन शासन प्रभावना

(पु० अ०)

प्रमुख धर्म कृत्यः—

(२०) धर्म कृत्य

यथा शक्ति दान दीजइ । शील पालीइ । तप तपीइ । भावना भावीइ ।
सम्यकत्व पालीइ । मिथ्यात्व टालीइ । देय पूजीइ । गुरु सेवा कीजइ ।

सिद्धान्त सांभलीइ । तत्व अभ्यासीइ । विचार पूछीइ । वंदनक दीजीइ । सामायक लीजीइ । अधीत शास्त्र गुणीइ । धर्मना फल लुणीइ । पर स्त्री परिहरीइ । नियम सपौषध लीजइ । तीर्थ यात्रा कीजइ । जिन शासन नी प्रभावना कीजइ । अट्ठाही महोत्सव कीजइ । गुरु सन्मान दीजइ । एवं विध जिन धर्म भाव सहित कीजइ ।। पु० ।

(२१) दान वर्णन

दानु, विश्व रंजनु ।
भवांभोधि निस्तरण शोकु,
यशः प्रकाश केतु
कीर्ति नर्त्तकी रंगभूमि, सकल सौख्य बीजांकुर क्षेत्र रग भूमि ।
कल्लोल कमला वशीकरण, समग्र गुण गणामंत्रण ।
करइ लोक गान, जिणइं लाभइ सन्मान ।
निः समान, वधारइ कीर्ति विमान ।
रुड़उ भावइ संतान, पामीइ शुभ स्थान ।
भदांवातर लहीइ घणु धान, प्रतापि करी जीपइ भान ।
आपणइ उदारु पणइ वसावइ रान, लक्ष्मी नइ उछइ वान
जिह नइ मनि हुयइ सान, तिणि माहि मानि दान,
देइवउ दान ।। ८८ ।। जै०

जै०

(२२) दाने पुण्य संख्या

यदि मेघस्य धारा संख्या भवति । दिवि तारा संख्या ।
भूतले रेरु कण संख्या । समुद्रे मत्स्य संख्या । मेरु गिरौ स्वर्ण संख्या ।
मातृ स्नेह संख्या । सर्वज्ञ गुण संख्या । दुर्जने दोष संख्या ।
आकाशे प्रदेश संख्या । जीवस्य गति संख्या ।
सत्पात्र दाने पुण्य संख्या भवति ।। छ ।। पु.

(२३) शील वर्णन

तीर्थ विण स्नान, दत्त[1] विण बहुमान।
चंदन विण विलेयन, अलंकार विण विभूषण।
लोके लेई न सकीयइ एहवु निधान।
मुक्तिदान, सावधान, अमूलमत्र वसीकरण, दुर्गति हरण।
अमूत्तु शृंगार, सयम श्री हार।
भवाभोधि तारण, संकट निवारण।
मोह महीपाल सिरि कील, करइ पुण्य कउ[2] उन्मील।
नासइ मदन रूपीउ भील, उन्मूलइ अवेसास रूपी[3] उखील।
न करवी एह नइ विषइ ढीलि। तिण पालिवउ निर्मल[4] शील॥ सू०॥

(२४) शील वर्णन (२)

शील, अति सुशील।
विण स्नात्र पवित्री करणु, विण अलकार आभरणु।
जग त्रय वश्य करु, दुर्गति हरु।
विश्वास तणु कारण, अकीर्त्ति निवारण॥१४॥ जै०

(२५) परस्त्री गमन दोष—

परदार संग लगी घरबार चूकियइ।
" " धनधान्य चूकियइ[5]।
" " खाएवा पीएवा चूकियइ।
" " ओढेवा पहिरेवा चूकियइ।
" " स्वजन परजन चूकियइ।
" " देह वान[6] चूकियइ।
" " आचार व्यवहार चूकियइ।
" " सत्य शौच चूकियइ।
" " देवगुरु चूकियइ।
" " धर्ममार्ग चूकियइ।

---

१ अदत्त बहुमान २ नउ ३ रूपीयउ ४ श्री शील। ५ मूकियइ, ६ स्नेहवान।

परदार संग लगी इहलोक परलोक चूकियइ
„ „ एक नरक ढूकियइ[1] ॥ + पु. अ.

(२६) तप वर्णन

तपु, साक्षात् परम जपु ।
अष्ट कर्म क्षयंकरु, महा शोक हरु ।
मुक्ति श्री वशि करिवा परम मंत्रु, मदन गढ गाजिवा मगर वइ यन्त्रु ।
मुनि जन शृंगार, अरिष्ट तरु कुठार ।
इस्यउ तप ॥ १५ ॥ जै०

(२७) अथ तप

त्रिभुवन वशीकरणु मंत्रु, कन्दर्प्प दर्प ग्रहोच्चाटन परम यंत्रु ।
लोभार्णव शोषण वड़वानल, मोक्ष श्री कमल ।
माया वल्ली कुठारु, दुरितोपताप तस्कर, धर्म महाराज नगरु,
मानाचल चूलिका वज्र धातु, केवलि श्री कान्तु,
जु वहइ तपु, ते (ध) लहइ संसारि संतापु ॥ ६० ॥ जै०

(२८) भावना

मुक्ति श्री प्रति सगलाइ भावे जाणे हाव भावना ।
स्यूं घणइ वादि, भावु हुइ तउ स्या जईय प्रासादि ।
भावु मूलगउ योगु, भावु लगी वइठा पुण्य नु समायोगु ।
ध्यान ध्येय धारणा, भावु लगी सगलाइ कारणां ।
एवं विध भाव ॥ १६ ॥ जै०

---

१. एक निःक्षेवल नरक दुख देखइं + एक अन्य प्रति में—"खढत्वमिं द्रिव्य० म्रव रत्नहरणं वंच०"—पाठ अधिक मिलता है ।

भावना

जिम तुग प्रासादु दण्ड कलश प्राग्भार, जिम स्त्री सोहइ कठ कंदलि हारि।
जिम मस्तक सोहइ केश प्राग्भारि, जिम कमल सोहइ वारि।
जिम कर्ण सोहइ स्वर्णालिकारि, जिम सोहइ गुहु नारि।
जिम नेत्र सोहइ कज्जल सारि,
जिम विवाहि सोहइ कूरि, जिम सोहइ उच्छव तूरि, जिम वीडउं कपूरि।
नदी जल पूरि,
रात्रि चद्र मण्डलि, जिम हारु मुक्ताफलि, जिम सरोवर सोहइ कमलि,
जिम मुख सोहइ तंबोलि, जिम पृथ्वी सोहइ वेलाकूलि।
जिम सोहइ रसवती जिम सोहइ सरस्वती वचनि
तिम सोहइ धर्म भावना ॥ ६१ ॥ जै०

(३०) दया धर्म प्रधानता

धर्म माहि दया धर्म वीतरागि भाखिउ मुख्य[1] जाणिवउ।
जिम[2] पर्वत्र माहि मेरु, तुरंगम माहि पंच वल्लह किसोर।
हस्ति[3] माहि ऐरावणु, दैत्य माहि[4] रावणु।
वृक्ष माहि[5] कल्प वृक्ष।
रत्न माहि[6] चिन्तामणि, अलंकार माहि चूडामणि।
क्षीर[7] माहि गोक्षीर, नीर माहि गंगा नीर।
वस्त्र माहि[8]चीर, पटसूत्र माहि[9]हीर।
पुष्प माहि कमल,[10]वाद्य माहि शख यमल।
काष्ठ माहि चंदन, वन मांहि नदन ॥ २४ । जो० +

---

१ ते २ जिसो ३ हाथी ४ जिम ५ जिम ६ जिम ७ खीर ८ जिम ९ जिम
१० रंग माहि धवल

+ एक अन्य प्रति में "वाजित्र माँहि भभा, स्त्री माँहि रभा।
शास्त्र माहि गीता, सती माँहि जिम सीता"
यह पाठ और मिलता है।

(३१) जीवदया रहित धर्म (६)

जिय लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती ।
दधी[1] रहित ओदन[2], घृत रहित भोजन ।
कठ रहित प्रासाद, माधुर्य रहित साद ।
खंड रहित मोदक, आधार रहित गंगोदक ।
कंठ रहित गायनु, छंद[3] रहित वायनु ।
शक्ति रहित पौरुष[4], ध्यान रहित गौरुष[5] ।
मद रहित रावण[6], वेद रहित ब्राह्मण[7] ।
परिवार रहित नायक, शास्त्र रहित पायक ।
फल रहित वृक्ष...... ।
वस्त्र रहित श्रृङ्गार, सुवर्ण रहित अलंकार ।
तीम[8] जीवदया रहित धर्म न शोभइ ॥ १२, स० १

(३२) जीवदया रहित धर्म (२)

जीव दया रहित धर्म न शोभइ,
जिम मद रहित[9] गजेंद्र, लज्जाहीन कुलवधू, नीति विकल[10] राजा ।

---

१ दधि । २ उदन । ३ नृत्य रहित वादनु । ४ पुरुष । ५ गुरुव । ६ हाथी, सेवा सहित साथी । ७ इसके बाद "गुण रहित मागण" विशेष ८ इसके बाद "तप रहित भिक्षुक" वि० फिर—वेग रहित घोडे, केस रहित मोडे ।
प्रेम रहित सगम ।
दान रहित राजा, खड रहित खाजा ।
तेज रहित सविता, वाणी रहित कविता । (विशेष)

८ जिम एतला वाना विना न शोभे, तिवा जाणवो । (सू० ३)

'पु०' प्रति के प्रारंभ में इतना पाठ अधिक ॥धर्म वर्णक॥ अहो धार्मिक लोकउ । फल्गु भाषित परित्यजी क्षण मात्र । एक तात्विकी वृत्ति । मन सावधान करी कथ्य मानहूँ तउ धर्म नु सरवस्व साभलउ ।

९ हीन १०. हीन+इसी पु० प्रति में इतना पाठ और अधिक मिलता है :— धृत रहित भोजन । लवण रहित रसवती । आकृति हीन सरस्वती । छंद रहित कवि । क्षमा रहित मुनि, जिम एतला पदार्थ मृत्युलोकइ न शोभइ ॥
तिम जीव दया रहित धर्म न शोभइ ॥छ॥ पु०

बद्ध मुष्टि नायक, शस्त्र रहित पायक ।
अति निष्ठुर वाणिउ, खासणउ[1] चोर ।
आलसू कमारउ, दुर्विनीत चेलउ, ध्वजरहित देवकुल ।
जिम गाव्रडि छोटउं ऊंट, उसियालइ (अनइ) खुंट ।
वेग पाखइ[2] घोडइ, गृहस्थ माथइ वोडइ ।
एक स्त्री[3] अनइ बूटी, एक ध्वज अनइ अंतरालि त्रूटी । (स.१)

(३३) धर्म महात्म्य

परम मंगल धर्मो धर्मो बुद्धि[4] समृद्धि दः
इष्टार्थ साधको[5] धर्मो धर्मो मोक्ष दायकः ॥
भो भविक लोको, निर्मल विवेको, श्री सर्वज्ञ प्रणीत पुण्य कर्त्तव्य करवउं ।
आपणा मनुष्य तणउं फल लेवउ ।
ए धर्म परम उत्कृष्ट मंगलीक कहियइ, एह प्रसादिइं सर्व कल्याण लहियइं ।
जिम तेज सघलाई सूर्य तेज माहि समाइं ।
जिम नदी सघली समुद्र माहि माइ ।
जिम पग सघलाइ गजेंद्र पगि अंतर्भवइं ।
जिम आकाशि माहि सर्व पदार्थ आवइं ।

तिम दधि, दुर्वा, ऽक्षत, चंदन, कुसुम कंकुम, पूज्यवृद्धाशीर्वाद द्वादश तूर्य निनाद । विवाहादि हर्षणाकल अनेराइ पुत्र जन्मादि महोत्सव सानुकूल ग्रह बैरि निग्रह, भला स्वप्न, शुभ शकुन, प्रमुख प्रमुख सकल मंगलीक माहि अंतर्भवइं देखउ ।

ज्ञानत्रय सहित श्री तीर्थंकर तणइ गर्भावतारि माता अद्भुत १४ स्वप्ना लहइं । चलितासन देवेन्द्र तेऊ फल कहइं ।

देवता गृहागणि निधान संचारइं, रत्न मणि, मौक्तिक, प्रवाल, पद्मराग, दक्षणावर्त्त संखे करी भंडार भरइं । कण कोठार वृद्धिवत हुइ । गज तुरंगम रथ पदाति समधिक थाइं, अनेक देश सविशेष आपणइ वसि संपजइ, राज्य संपदा वृद्धिवंती नीपजइ । अनेक राय राणा आज्ञा[6] मानइ । जन्म समइ छप्पन्न दिक्कुमारिका सूति कर्म करइ, आपणी[7] रली चउसठी देवेन्द्र जन्माभिषेक करइ ।

---

१. खापणउ, खोसणउ २ रहित ३ स्त्रीकानि ४. वृद्धि ५. ऽनिष्ट बाधका । ६.आणा ७. आणी

मेरु पर्वति मिली सुवर्ण, रूप्य, वस्त्र नी वृष्टि निरंतर करइं, जं जं जोइंइं तं तं आणी। नृपांगण भरइं आलपणि देवागना लालइं। देव सवे दोहिलां टालइं, अंगुष्ठि अमृत संचारइ, देव पंच धात्री वधारइं, यौवनि जं जोइंय तं संपाड़इ, सहू काज कीधउं, जि दिखाडइं, दीक्षा लेतां महा महोत्सव करइं।

परमेश्वर तणी स्तुति समाचरइ, केवलि ज्ञानि ऊपनइं
समवसरण रत्न, सुवर्ण, रुप्य मय प्रकार रचइं।
अढइं गाऊ तीह नोघडा[1] वंध खचइं।
जानु प्रमाण पुष्प प्रकर भरइ, त्रिन्नि छत्र परमेश्वर नइ मस्तकि धरइं।
व्यंतर च्यारि रूप्यं करइं, अंगुष्ठि अमृत संचारिइं।
रत्नमय दंड चामर ढालइं, हर्ष लगइं आप न संभालइं।
नव सुवर्ण कमल पाय हेठि संचारइ, अष्ट मंगलीक नवा अवतारइं।
इन्द्र ध्वजादि ध्वज लहलहइ, धूप[2] घटी परिमल महमहइं।
हर्ष प्रकर्ष लगइं देव गाजइं, असंख्ये भव तणा संदेह भाजइं।
रंभा तिलोत्तमा अप्सरा नाचइं, सविहु न मन पतीजइं साचइं।
चउत्रीश अतिशय, अष्ट महा प्रातिहार्य सहित
अढार दोष रहित, ३५ वाणी ना गुण सहित, इम तीर्थंकर देव
धर्म लगइं सदीव मंगलीक महोत्सव अनुभवइं।
अनइ दश विध भवन पति निकाय, सोल व्यंतर तणा निकाय,
पंच ज्योतिषी निकाय, बार देवलोक देव,
पंच अनुत्तर विमानं देव जं संपूर्ण सुख अनुभवइं।
तेउ धर्म हीन नउ निःकेवल माहत्म्य जाणिवउं। (१६३ जो.)

(३४) वीतराग धर्माराधन

देव श्री वीतराग देव प्रणीत धर्म्म तेउ एकाग्र मने आराधीइ
एहु जिन धर्म दश लक्षणोपेतु, भवारण्य वनइ पइलइ परि जाइवा सेतु।
सर्व सौख्य दायकु, समस्त जीव लोक नउ नायकु।
निर्मलु, पाप प्रति सबलु।
विश्व वात्सल्य करु, दारिद्र हरु। त्रैलोक्य छुइं आदारु

---

१. नउखडा २. घटी।

चिन्तामणि कल्पवृक्ष कामधेनु तेहनु केवल उद्यापारा जेहना ।
आदेश कराया चन्द्रमा सूर्य जलधरु, स्वर्ग्य विवर्ण्य करु ।
इसउ धर्म्म आराधिइउ ॥ ३१ ॥ जै०

(३५) जिन धर्म

जिम देव मध्य इन्दु, तारा मध्य चन्दु ।
स्नग्ध मध्य घृतु, औषध मध्य अमृतु ।
बुद्धिमत मध्य वृहस्पति, निरीह मध्य यति ।
तिम धर्म मध्य जिन धर्मु ।

(३६) धर्म महात्म्य

जे गया विदेश, पडिया सनलह क्लेश,
ताणया पाणी नइ पूरि आक्रम्पा अक्रूर,
चाप्या सधरि, डसिया विसधर,
धरिया राये, लेल्या धण धाए
मुरडिया भोगे, दूहविया रोगे,
पाडिया वंदी, पडिया विछुटी,
तिहा सविनइ धर्मनौ आधार, एह साचो विचार,
'धीर' वदई बारम्बार, बीजऊ कारिमउ व्यवहार ॥ (कु०)

(३७) धर्माधार

जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि ।
ताणया पाणी नइ पूरि, आक्रमण क्रूरि ।
चाप्यास धरि, डसीया विषधरि ।
धरीया राए, लेल्या धण धाए ।
मुरडीया भोगे, दूहवीया रोगे ।
पाडिया वंदि, पडिया विछंदि ।
तिहा सविहु नइ धर्म्म नउ आधार । ए साचउ विचार, बीजउ कारिमउ व्यवहार ।

(३८) धर्म

ससाराभोधि तरण हेतु, यशः प्रसाद केतु ।
विचक्षण कीर्ति नर्त्तकी रंगभूमि प्रदेश । सकल सौख्य बीजाकुरोद्गम क्षेत्र निवेस
जलधि लोल कल्लोल चपल लक्ष्मी तणु वशीकरण । समग्र गुण गणामत्रण

(पू०)

(३६) युगलिया सुख वर्णन

हिव युगलिया नां सुख सांभलउ
अति रुडी नित्योद्योति रत्नमय भूमि, तिहां दश विध कल्पद्रुम मनोवांछित पूरइं,
एकि कल्पद्रुम अष्ट भूमिका रत्न निर्मित आवास तणाऊ आकार धरइं,
तेहि मांहि नित्योद्योत पल्यक रत्नमय सिंहासन सहित
एकि चंद्र सूर्य नी प्रभा आपणी कांति करी पराभवइं।
एकि स्त्री पुरुष योग्य दिव्योपभोग्य आभरण विस्तारइं,
एक चक्रवर्त्तीनी रसोइ पाहिइं अनंत गुण सुस्वाद।
अष्टोत्तर सउ खाद्य, चोसठि व्यंजन रूप आहार आपइं।
एकि स्थाल विशाल वाटुंला वाटुली सीप कच्चोल भृंगारादिक,
भाजन सवे समोपइं।
एकि क्षोभ, पट्टकूल, चीनांशुक, क्षीरोदक,
प्रमुख पंच वर्ण विचित्र भाँति स्वच्छ[1] निर्मल वस्त्र पूरइं।
एकि बल बुद्धि आयु,
वृद्धिकारक शीतल सरस आप्यायक पाणी आपतां तृषा चूरइं।
एकि वीणा, वेणु मृदंग, यमल, शंख,
पटह कंसाल[2] प्रमुख अगुण पंचास वादित्र स्वर सांभलावइं मधुर।
एकि तिलकु, वकुल, अशोक,
चम्पक, कुंद, मचकुंदादि, पुण्य प्रकर संपाड़इ प्रचुर।
एकि १ दीवानी परि उद्योत करइं, रात्रि ना अंधकार निराकरइ।
तेह युगलीया ना च्यारि भेद छप्पन अंतर दीवा,

१ हेमवंत, ऐरण्यवंत[3] २ हरिवास रम्यक तणां ३ देवकुरु उत्तर कुरु ४ एकेकि पाहिइं अनुक्रमिइं, अनंत गुण बल, रूव, सुख ते आठ सय धनुष १ एक गाऊ २ बि गाऊ ३ तिन्नि गाऊ ४ ऊँचा। एक १ एक रत्रि ३ त्रिन्नि ४ दिन अंतरि भोजन इगुणासी इगुणासी चउसट्ठि ३ अगुण पंचास ४ दिन अंत्य कालि अपत्य लालना। चउसट्ठि १ चउसट्ठि २ अट्ठावीसं सउ बि सय छप्पन ४ पृष्ठ करंडा। त्रीजा १ बीजा २ त्रीजा ३ पहिला ४ आरानी सुखिया। पल्योपम आठमउ भाग १ एक पल्य २ बि पल्य ३ त्रिन्नि पल्य ४ आयुः।

ते सवे जुगलीया दिव्य रूप, चउसट्ठि लक्षण लक्षित देह स्वरूप, सम

---

१. स्वच्छ। २. कंसाला

पाठा—३ तणइं प्रमादिइं

चतुरस्त्र संस्थान, वज्र, ऋषभ, नाराच, ४ प्रधान परम सौभाग्य सहित वलिपलित विवर्जित, अशिक्षित सर्व कला तणा जाण। केवलउ पुण्य नउं प्रमाण। जन्म माहि रोग, शोक, दुःख, जरा, मरण छींक, बगाई, ऊपमरण, अल्प कषाई, ऊपजइ देव माहि। तेह माहि कुण हूँ न स्वामी, न दास, न मूक, न ऊमसूक, न बधिर, न विधुर, न कूबडा, न वामणा, न हुंठा, न छोटा, न पांगुला, न आंधुला, तिहा डास मुसा माकुण जू प्रमुख न उपजइं। साकर पाहिइं धूलि ना सुस्वाद अनत गुणा पूजाइं। ए इस्या सुख सत्पात्र दानिइं युगलिया लहइ। कुपात्र दान लगिइं पट्ट हस्ती, पट्ट तुरगम थाइ। अधिकी सद्गति न जायइ[3]। अनइ अभय कुमार जिम च्यारि बुद्धि धर्म प्रभावइं लाभइं, अनइ धर्म नइं प्रसादिइं लक्ष्मी वृद्धि, कुटुंब वृद्धि, स्वजन परिजन वृद्धि, गज तुरगम, वृषभ, रथ घण, ढोर, वृद्धि हुई। देखउ तुम्हे अशोक माली नव पुष्पनी पूजा लगइ नव भवे क्रमिइं नव द्राम लक्ष, नव द्राम कोडि, नव स्वर्ण लक्ष, नव स्वर्ण कोड़ि, ४ नवरत्न, लाख ५ नव रत्न कोड़ि ६ नव ग्राम लाख ७, नव ग्राम कोडि ८ तणउ स्वामी हूयउ। श्री पार्श्व कन्हइ दीक्षा लेई, अनुत्तर विमानि गउ, तेउ मोक्षि पुण जाइ सिइ। इम धर्म नइ प्रसादि धर्म-वृद्धि संप इ। अनइ धर्मe समृद्धि ऊपजइ, अत्रुट अक्षय लक्ष्मी चिंतामणि, दक्षिणावर्त्त शंख, सौवर्ण पुरिसा नी सिद्धि, अभीष्ट मंत्र सिद्धि, अचिंतित देवता वर, अद्भुत निधान, लाभ, राज सन्मान, उचित दान, एहसि अनेक समृद्धि होइ, अनइ ज ज वाछिइ इष्टार्थदुस्साध, सर्व कार्य रूप सौभाग्य अद्भुत भोग महा सुख, ते ते सहू धर्म महात्म्य लगइ, नीपनउ हीज दीसइ, अनइ विघ्न क्षुद्र उपद्रव, रोग, हानि दारिद्रय दुःख, शोक, चिन्ता अरति प्रभृति अनिष्ट कोई धर्म लगइं न सम्भवइं। घणुं किस्युं कहीयइ एह धर्म लगइं, अनंत सौख्य, मोक्ष पुण्य लहियइ। एह भणी तुम्हें पूजा प्रभावना दान शील, तप, भावना, अमारि प्रवर्त्तना, तीर्थयात्रा, सामायिक, पौषध, संवेग, वैराग्य, परोपकार प्रमुख पुण्य कार्य नइ विषइ तिम उद्यम करवउ जिम उत्तरोत्तर सकल मंगलीक माला पामउ। यतः—पुंसा शिरोमणियते धर्मार्जन परा नराः॥ इत्युपदेश छः॥ (१६५०) जो।

(४०) पुण्य माहात्म्य।

पुण्य लगइ पृथ्वी पीठि प्रसिद्ध, पुण्य लगे मन वछित सिद्धि।
पुण्य लगे निर्मल बुद्धि, पुण्य लगे घरि २ वृद्धि[1]।

---

१ ऋद्धि वृद्धि पुण्य-सुपरिवार तणा योग (अधिक पाठ)

पुण्य लगें नवे निद्धि, पुण्य लगे घरि थिर रिद्धि ।
पुण्य लगे शरीर निरोग, पुण्य लगे अभंगुर भोग ।
पुण्य लगे नव नव[१] रंग, पुण्य लगे चढ़ीयइ[२] तुरंग ।
पुण्य लगे सुकलत्र संयोग, पुण्य लगे टलइ सहु सोग ।
पुण्य लगे सिगला थोक, पुण्य लगे वसि सहु लोक ।
पुण्य लगे घरि गज घटा, पुण्य लगे सउदा सटा ।
पुण्य लगे उलटा पटा, पुण्य लगे रहइ विकटा ।
पुण्य लगे लहइ चउहटा, पुण्य लगे[३] चंदन छटा ।
पुण्य लगे सूर सुभटा, पुण्य लगे सेवक थटा ।
पुण्य लगे निरुपम रूप, पुण्य लगे मानइ भूप ।
पुण्य लगे अलख सरूप, पुण्य लगे पुत्र अनूप ।
पुण्य लगे सुभ[४] आवास, पुण्य लगे पूजइ[५] आस ।
पुण्य लगे रहइ उलास, पुण्य लगे तेज प्रकास ।
पुण्य लगे नेक[६] शृंगार, पुण्य लगे मानइं कार ।
पुण्य लगे शुद्ध[७] आहार, पुण्य लगे रहइ आचार ।
पुण्य लगे जस सोभाग, पुण्य लगे द्रव्य अथाग ।
पुण्य लगे बाधइ भीर, पुण्य लगे बांधव सीर ।
पुण्य लगे चतुर सुजाण, पुण्य लगे अविरल वाण ।
पुण्य लगे तान नइ मान, पुण्य लगे फोफल पान ।
पुण्य लगे मुंहडइ वान, पुण्य लगे अमृत पान ।
पुण्य लगे 'धीर[८]' सुभ ध्यान, पुण्यइ पामीयइ केवल ज्ञान ।

इति पुण्य फल । (कु०)

(४१) पुण्य प्रभाव (२)

सर्वोपार्जित पुण्य प्रभावि, जे सौख्य लहइ ते सम्भावि ।
जिस्यउ निर्मल शशांकु, तेहं पाहिइं कुल निकलंकु ।
तिहा जन्म लहइं, नीरोग थ्यउ रहइं ।

१, नवा २ पल्हाणीयइ ३. चालंता दीजइ । ४. वसिवा प्रधान ५. पुण्यइ पुजइ मन चींतवी । ६. अनेक ७. भला । ८ सर्वत्र बहुमान ।

+ दूसरी प्रति में पाठ बहुत कम हैं उसी का यह विस्तार किया गया हैं । निम्नोक्त पाठ उसमें अधिक है ।

"पुण्यइ आनन्ददायिनी मूर्त्ति, पुण्यइ अद्भुत स्फूर्ति ।

अगो पांग करी प्रौढ, हुई यौवनाधिरूढ ।
सर्व शास्त्र करी परिकलितु, विज्ञान न इ विषय अश्वलितु ।
सर्व लक्षणो पेतु, कुल हुइं केतु ।
विविध भोग तणी प्राप्ति, अनि भोगविवानी जाणइ युक्ति ।
शालिभद्र नी परि, विविध स्त्री घरि ।
आलन सूंभव्या गजेन्द्र मद झिरइ, तुरंगम हेखारव करइ ।
विबुध जन बइठा शास्त्र वाचइ, आगलि त्रिवेली पात्र नाचइं ।
ती—ता गुण करी प्रबल, नागवल्ली दल ।
ते अश्रान्त बीडां समाणीइं, ऊग्या आथम्या अतरु न जाणीइ ।
स्वजन तिडइव्या, रहइ निष्पृहा । सप्त भूमिक धवल गृह,
ऊपरी स्वर्णमय कलश झलहलइ, बारि बदिजन कलकलइ ,
देवदूष्य व पहिरीइं । चदन काष्ट विहरीइ ।
दुर्जन ना नासइ पक्ष, नीपजई चतुर्मुख गवाक्ष,
सारि पासे रमीइं । इम दिन नीगमीइ,

सूआ सालही हस मयूर लही तिहनइं विनोद लागीइ । जइ माग्यउ लाभइ, तउ वीतराग कन्हलि इ ए सौख्य मागीइ ॥ ३० ॥ जै०

(४२) पुण्य प्रकार (२)

नाणुं, भाणु, खाणुं, पीणुं, कयाणुं, वसाणुं, दोझाणुं, वीयाणु, इत्यादिक पुन्यना प्रकार छे । वि०

(४३) पूर्वभव के पुण्य से प्राप्ति

बेटा, बेटी, बइयर, बल, बुद्धि, सोना, रुपा, मणी, माणिक, मोती, मुगीया, मान, मही, मयगल, मोटाई, मर्यादा, हर्ष, कुटम्ब, परिवार, स्वजन, सम्बन्धी, सपदा, मोहणवेल, चित्रावेल, कामकुंभ, कल्पवृक्ष, कामधेनु, दक्षिणावर्त शंख, पारसपाषाण, एतला वाना पूर्वला भवनि पुन्याई होई तिवारे पामीइं ॥

(४४) पुण्य बिना नहीं मिले

माता, पिता आइ, काका, बाबा, मामा, मामी, भाई, भत्रीजा, भोजाई, भाडरु, मित्र, कलत्र, पुत्र, पुत्री, पौत्र, प्रपौत्र, भाणेज, पीत्राई, पडपीतराई, सगा सणीजा, सम्बन्धि, कुटंब, परिवार, नफर, चाकर ।

कांम कुम्भ, कामधेनु, कल्पद्रुम, चिंतामणी, चित्रावेल, मोहणवेलि, रुद्रुवती, तेजमतूरि, स्पर्शोपल, सुवर्णफरसो, रत्न कंबल स्यालशृंगी, व्रणसंरोहिणी, पद्मिनी स्त्री, भद्र जातिनाइस्त्री, ए योगवाई पुन्य विना न पामें । वि०

(४५) विना पुण्य नहीं मिले—(२)

सुठाम, सुगाम । सुदान, सुमान । सुजात, सुभ्रात । सुतात, सुमात, । सुकुल, सुबल । सुस्त्री, सुपुत्र । सुपात्र, सुखेत्र । सुरुप, सुविद्या । सुदेव, सुधर्म, सुगुरु । सुदेश । सुवेश । ए योगवाई पुन्य विना न पामीइं ॥

(४६) अथ पाप फल ॥

पाप लगइ मध्यम जाति, पाप लगे भमइ दिन राति ।
पापथी पामियइ प्रियवियोग, पापथी पामिये रोग ॥
पापथी पामियइ सोग, पापथी पामिये कुनारि नउ संयोग ।
पापथी पामिये क्षय, पापथी पामिये भय ॥
पापथी पामियइ परवस, पापथी पामियइ अजस ॥
पापथी पामिये धनहाणि पापथी पामिये दुख खाणि ॥
मुनि धीर मुखिनी वाणी, ए पापना फल जाणि
इति पापवर्णक ॥ कु.

(४७) धर्म में प्रमाद

जे कोई जिन धर्म तणे प्रमाद करें
ते नांणे ठीकरी कारण अमृत कुम्भ फोड़े [1] ॥
निष्कारण आजन्म तणो स्नेह त्रोडें ।
कामधेनु अलीठी मेल्हीइं
चिंतामणी रत्न आवतो पाय फेंडइं ॥
कल्पद्रुम आ णा घरथी उन्मूलें ।

"डेआ, आई, बहिन, भाई भूआ, फूफा, फूफी, देवर, जेठ, स्त्री, पुत्र, नानो, मोटो, गरवो, चूढो, खावो, पिवो, पहरवुं, वरसवुं, जावुं, आँवु स्याल विनोद ए पुण्याइवें पामवा पाठ अधिक मिलता है ।

[1] ठीकरी कारणि कोई कामकुम फोडइ

प्रवहण आपणा समुद्र मांहि बोले ॥
सोनातणे कारणे पीतल ल्यावें ।
अमृत नीगाइगा विस घोले ॥
इत्यादिक जिन धर्म जाणवो ॥ पू०

(४८) प्रमाद (२)

अजइ व्याघ्रि ससाईउ दीजइ, सर्पि सउं क्रीडा कीजइ ।
अनइ हालाहलु पीजइ, महाविष तणउ कवलु लीजइ ।
अग्नि मध्य पवसियइ, शत्रु सउं वसियइ ।
पुण प्रमादु न कीजइ ॥

(४९) जिन धर्म छोड़ मिथ्यात्व ग्रहण स्थिति

यो जिन धर्म मुक्त्वा मिथ्यात्वं प्रतिपद्यते, स स्वर्णस्थालेन रजः पुज मुद्धरति ।

,,	,,	,	कल्पतरुणा छाया लाभं वाछति ।
,,	,,	,,	चंदन वन ज्वालनेन भस्म लाभं ।
,,	,,	,,	अगरु काष्ठेन लागूलं ।
,,	,,	,,	सुवर्ण पिंडेन कुर्शी सभी ।
,,	,,	,,	चिन्तामणिना काको डुायंन विघत्ते ।
,,	,,	.	अमृत धारया पाद शौचं चिंतयति ।
,,	,,	,,	मत्त करीन्द्रेण काष्ट भारः ।
,,	,,	,,	कस्तूरीका वीणा[1] केन सिंखी ।
,,	,,	,,	कदली स्तभेन गृह भार मुद्धतु मिच्छति ।
,,	,,	,,	कमल तंतुभिः मत्त वारणं वध्नाति॥

(१६ जो०)

(५०) असाध्य शुद्ध धर्म

शुद्ध सर्वज्ञोक्त धर्म करी न सकीयइं ।
जिम मेरु पर्वत्त तुलाग्रि धरी न सकीयइं[2] ।
जिम समुद्र भुजा दंडि तरी[3] न सकीयइ ।
जिम लोह मय[4] चिणा चर्वण करी न सकी यइ ।

---

१. त्रीणा कन मषी—त्रीणाकेन मर्षी । २ सकीइ । ३ तरिउ । ४ चात्री ।

जिम खड्ग धारा ऊपरि फिरी[1] न सकीयइं ।
जिम वैश्वानर मध्य[2] प्रवेश[3] करी न सकीयइं ।
जिय राधावेध[4] साधी न सकीयइं ।
जिम पाणी पोटलइ बांधी न सकीयइं ।
जिम वायनउ कोथलउ भरी न सकीयइं । ४३ जो०

(५१) नवकार महिमा (१)

त्रिभुवन माहे सार, धर्मकल्पद्रुम प्रकार ।
समरण मात्र, करे भवापहार । प्रकृति ही उदार ।
लक्ष्मी निवास, निजि श्रीया वास'
रूडां धर्मफल देखि, प्रमाद उवेखि ।
आलस परिहरी, आदर करी ॥ (पू०)

(५१ अ०) नवकार महिमा (२)

पुण्य तणे विषे भावना सहित लाभ लेवो, जिण कारण भणी इस्यूं कहीइं—
जिम प्रसाद सोहें कलस सहित, जिम सरीर सोभे शील श्रृंगार ।
जिम सरोवर सोभे कमल, जिम पुष्प सोभे परिमल ।
जिग मुख सोभे निर्मल नेत्र जुगल, जिम रात्र सोभे चंद्र मंडल ।
जिम विवाद सोभे कूर, जिम उछव सोभे तूर, जिम नदी सोभे पूर ।
जिम हृदय सोमे हारि, जिम गृह सोभे श्रम नारि ।
जिम मस्तक सोहें केस प्रागभारो, जिम कर्णे सोहे स्वर्णालकारी ।
जिम समकित सोभे भावना,
तिम मुख सोमे नवकार । एहवो पंचपरमेष्ठि नवकार''
(विनयसागर प्रति)

(५२) संघ

संघु, वंदनीयः वन्दनीयु, पूजनीय इइ पूजनीयु
महनीय इइ महनीयु, स्पृहणीइइ स्पृहणीय

---

1. चाली । 2 माहि । 3. पइसी । 4 वेधु वीधी ।

+एक अन्यप्रति में—"तिमए गन्ड व्रत पाली न सकियइ" पाठ अधिक मिलता है ।

अभिषणीय हइ अभिषणीय, अनुगमनीयहइ अनुगमनीय ।
मान्य हइ माननीय, गरुयाहइ गरुयउ ।
(पु० अ०)

(५३) तपोधन

अनुवरतु ग्रामानु ग्रामि विहार क्रम करहिं, अढार सहस सीलाग धरइहि ।
अनुवरतु परमेश्वर तणी आज्ञा अनुसरहिं, अनुवरतु गुरूपदेसु स्मरहिं ।
अनुवरतु पुण्य भंडार भरहि, अनुवरतु मोक्ष लक्ष्मी स्मरहि ।
अनुवरतु तपु तपहि, अनुवरतु कर्म क्षपहिं,
खड्गधारा चंक्रमण कल्पु, निर्विकल्पु ।
व्रतु परिपालहि, इसा महासत जंगम तीर्थ तपोधन भणियहिं ॥ (पु. अ.)

(५४) तपोधन वर्णन

पाँच भरत पाँच ऐरावत पाँच महाविदेह, सत्तरि सउ आर्य क्षेत्र ॥
पइतालीस लाख मनुष्य क्षेत्र माँहि जे साधु ॥
साधु रत्नत्रय साधइ, जिनाज्ञा आराधइ ॥
च्यारकषाय परिहरइ, नवकल्पी विहार करइ ॥
अढार सहस सीलाग धरइ, दस विधि यती धर्म आचरइ ॥
बाईस पसह ऊपनइ न डरइ, चवदह उपगरण धरइ ॥
पंचमहाव्रत पालइ, छाठउ रात्री भोननचार[1] ऊचालइ ॥
तेत्रीस आसातना टालइ, आठे मद गालइं ॥ वर्त्तमान कालइं,
इग्यार अग सूत्र प्रकासइ जिणइ करी मिथ्यात्व पडल नासइ ।
तेरह क्रिया ठाण वरूपइं, सत्रे विध सजम धुराअइ जूंपइ ।
सत्तावीस गुणे संयुक्त माया मिथ्यात्व नीयाणादि साल विप्रमुक्त ॥
बइतालीस दूषण रहित आहार ल्याइ पांच दोष मांडलना लागवा न द्यइ ।
पच सुमतइ सुमता, त्रिहुं गुपतइ गुपता ।
संयम रमणी सुंरमता, दुक्कर पंचेंद्री दमता ।

१—टारइ ।

क्रिया कलाप सावधान, सदा धर्म ध्यान ।
महा एक तपोवना, करंत देह सोघना ।
एहवा मुनीसर, अपीहर जीवना पीहर
अनाथ जीवना नाथ, मेलइ मुक्ति नउ साथ ।
सकल जीव अभय दायक, सर्व ओपमा लायक ।।
जांणी ससार असार, ओपण पइंथ...।।
नव.. थापक, उन्मार्ग ऊथापक ।
साधु भगती दया पालइ, अतीचार सर्वथा टालइ ।।
मेरुनी परइ अप्रकंप, आकासनी परे निरालंब ।।
वायनी परइ अप्रतिबंधु भारंड पंखीनी परइ अप्रमत्त ।।
सूरो इव तेज लेस्या, चंद्रो इव सोम लेस्या ।।
सागर नी परे गंभीर, कुंजरनी परे सोंडीर ।
खीरो इव अखधारे, जलोइव सच्च फासे, संखो इव निरंगणे ।
संसार समुद्र तारण तरं गुण करंड ।
सचरित्र, गंगाजलनीर नी परे पवित्र ।।
सर्व दोष रहित, चिंतवइं सकल जीव हित ।।
चारित्र करी पवित्र गात्र, संसारोदधि यान पात्र ।।
दुःकर्मवल्ली वन छेदन दात्र, सुकृत तणू एक पात्र ।
जेहनइ दर्शन हुइ पाप अल्प मात्र, तपइ करि सांखित गात्र ।
वली ते तपोधन केहवा आगम माहे गुणधरे गुथ्या जेहवा† ।

(५५) मोक्षार्थी (१)

वाल लगी सिर मुंड मुंडन कीजइ, खारा तोरां पाणी पीजइ ।
अंत प्रान्त आहार लीजइ, सीत वात आतप सहियइ ।
एकत्र सदैव न रहियइ, यथावस्थित धर्म कहियइ ।
एतदर्थ स्य (स्वं) कर्म उठहियिइ ।
शुक्ल ध्यान धरिउ अनंतर मरिउ, मुक्ति पय सरिउ ।
ईणइं परि सिद्ध होइयइ, सकल त्रैलोक्य टगमग जोईयइ ।।१।।

---

† इसके बाद चित्तवाला गच्छीय देवेन्द्रसूरि के सुदसण कथा की तपोवन के वर्णन वाली गाथाएं हैं ।

(५६) मुनि वर्णन (२)

संसार समुद्र तारण तरण्ड, गुण करण्ड ।
सच्चरित्र, गंगाजल नी परि पवित्र ।
सर्व दोष रहित, समस्त जीव हित ।
शान्त, दान्त ।
विचित्र चारित्र करि पवित्र गात्र, ससारोदधि यान पात्र ।
दुःकर्म वल्ली वन छेदन दात्र, सुकृत तणूं एक पात्र ।
जुइनइ दर्शनि हुइ पाप अल्प मात्र, तपस शोषित गात्र ॥६॥ जै०

(५७) गुरु वर्णन

पाँच इन्द्रिय ना व्यापार सवरणु, नव विधिआ ब्रह्मचर्य आभरणुं ।
चउहि कषाये विनिमुक्त । पाच महाव्रत सयुक्त ।
पांच समिति समितु, त्रिहुंगुप्ति गुपितु ।
शान्तु, दान्तु ।
सर्व सिद्धान्त तणु जाणनहार, धर्मोपदेश नु देणहार ।
तरण तारण मूर्ति, पुण्य नइ विषइ स्फूर्ति ।
अभव्य जीव प्रतिबोधकरु, शुद्ध चारित्र धरु ।
श्री जिन शासन शृंगार हारु । अतिहि सुविचारु ।
अति सुरूप, क्षमा रूपु ।
सम तृण मणि लोष्ठ काचनु, पाप निकदनु ।
इसउ सद्गुरु ॥ २५ ॥ जै.

(५८) गुरु (२)

गुरु क्रियानुष्ठान परु, जिन वचन धुरंधरु ।
सरस्वती लब्ध प्रसाद वर ज्ञान दर्शन चारित्र प्रतिपालन तत्परु ।
सकल गुण मणि भंडारु विज्ञान सार तरागम विचार ।
श्री गच्छ श्री सघ आधार, स्फुरद्रूप साहित्य तर्कालंकार ।
सुविज्ञात व्याख्यात, जीवाजीवादि तत्त्व विचार ।
विद्वज्जन सभा शृंगारहार, अमंद सौर्द (१ सौहार्द) सह दयालंकार ।

अक्रोध, अविरोध, विबुद्ध, विशुद्ध ।
आदेयोदार स्फार तर वचन, दतात्यंत साशीति निर्वचन। एवं. गुरु ॥४। जो.

(५९) तपोधना महासती साध्वी

पुण्यवंति तपोधना, करइ देहनी साधना ।
सदैव भणिवा गुणिवा नउ आक्षेपु, नथी लागतउ विलेपु ।
श्राविका हूई भणावइ, धर्म्म भाव भावई ।
अत्युत्तम नारि, महासती चंदनबाला नइ अवतारि ।
गच्छ चिन्ता चतुरि, विज्ञान विद्या विदुरि ।
जीह कन्हलि प्रति बोधनी शक्ति एवड़ी, रह्यु हुंतउ मान गजेन्द्र चडी ।
वचन छलि प्रतिबोधउ बाहुबलि ।
श्री युगादि देव नइ समवशरणि आणउ,
केवल श्री अलंकरतउ देखी जगदीसि वखाणउ ।
ते ब्राह्मी सुन्दरि, जेह आचार करी ऊपरी ।
एवं विध महासती ॥ ५८ ॥ जै.

(६०) साधु (१)

उत्तम नगर, गुरु क्रियानुष्ठान पर,
जिन वचन धुरंधर, सरस्वति लब्ध प्रसाद वर,
त्रिण तत्व पालन तत्पर ।
सकल गुण भंडार, विज्ञ आगम विचार,
सकल संघ आधार, शास्त्र ना अलंकार ।
जीवादि तत्व विचार, विद्वज्जन सभा शृंगार हार,
त्रिण गुप्ती कारक, पंच सुमति पतिपालक ।
बैतालीस सदोष टालक, अढार सहस्र स्त्री सीलांग रथ धारक ।
तेर काठीया जीपक, अष्ट कर्म छीपक ।
त्रिगुण गुप्ति प्रवर्तक ॥ (पृ०)

(६१) श्रावक (१)

द्वादस व्रत धारक, शुभ ध्यान मन चालक ।
श्री जिन पाद आराधक, अगणित पुण्यकारक ।
षडदर्शन पोषक, दान शील तप भावना भावक ।

एकवीस गुण सयुक्त, उत्तमोत्तम कार्य प्रसक्त । पितृ मातृ भक्त ।
दक्ष विवेक विधि, दक्षिण उदधि ।
भली भावना भावक, सर्व जीव आवर्जक ।
गुरु वचन आराधक, जिन शासन प्रभावक ।
धन धान्य समृद्धि, अत्यत संमृद्धि ।
दानेक वीर, अति ही गभीर ।
देव गुरु चरण मधुकर, सर्व कार्य धुरंधर । एहवा श्रावक ।

(६२) सु श्रावक वर्णन (२)

पाप नइ विषइ विरक्त चित्त, शत्रु मित्र समं युक्त ।
शुद्ध व्यवहार नउ करण हारु, सन्मार्ग नुं सचार हारु ।
धर्म धुरन्धर, सेवक जन सुखकार ।
उचित उलखइ ।
दया दान पूरउ, सुकृत साचिवा तरउ ।
आचार वंतु, हाटि बइसइ तउ कृतान्तु ।
कुणइ प्रतिकूटउं न चवइं, त्रिकाल देव पूजा साचवइ ।
सुश्रावकु, बारह व्रतु प्रति पालक ।
सद्गुरु नी आगा वहइ, पुण्यवत माहि लीह लहइ ॥ २६ ॥ जै.

(६३) श्रावक वर्णनम् (३)

श्रावक धुरा सूधउ समकित धरइ, विकथा च्यारे परिहरिइ ॥
परभव थकी डरइ, सद्गुरु ना पाय अणुसरइ ॥
जीवनी जयणा करइ, सकृत भडार भरइ ॥
विसेष ना जाण, गुरु मुख सुणइ वखाण ॥
राखइ सहूना प्राण, जिन वचन करइ प्रमाण ॥
बारह व्रत राखइ, पर मर्म न भाखइ ॥
आपना अवगुण दाखइ, सहूनी साखइ ॥
उपगार कइ अवसर लही, साहमी सुं धरणइ बइसइ नही ॥
कुणही नु आलि न द्यइ, नव तत्वादिक नउ अर्थ ल्यइ ॥
देवाधि देवनी करइ अरचा, न करइ कुणही री चरचा ॥
उत्तरासण घाली, लाबांत्नमाश्रमण द्यइ मन वाली ॥
आपण पर नी विगत जाणइ, तउ सद्गुरु श्रावकनइ वखाणइ ॥

व्यवहार शुद्ध पालइ, चउवीसासउ अतीचार टालइ ।।
खडावयस्क साचवइ, सूत्र अर्थ सूधउ लवइ ।।
कुणही सुं न बोलइ कूर, कपटथी रहइ दूर ।।
एवडी अंग माहे लाज, आप बोटउ षमी सारइ परना काज ।।
रिद्धमंत आचारवंत, वंचनार हित, चितवइ सहूनइ हित ।।
कर्यउ उपगार गिणइ हरसी, दीरघ दरसी ।।
धरम साग्री धुरंधर, सेवक जन बंधुर ।।
उत्तम संगति रहइ, साहमीवछल विरुद वहइ ।।
साधुना छल छिद्र न जोवइ, पर्व दिवस भूमिका सोवइ ।
कुणहीनुं न विगोवइ, अम्मा पिउ मीसाषाण होवइ ।
आ...साखा, भाषइ भगवन भाष ।।
दीठउ अदीठउ करी, एकातइ लेई सीख घइषरी ।
वस्त्र पात्र वहिरावइ भरपूर, तउ गुण दाखी......।
पुण्यवंत नु नावइ कईयइ तोटुं ।।
पहिलुं वहिरावी नइ जमइ, घणुं बोल्युं न गमइं ।।
साधुनी न करइं दुगंछा, चारित्र लेवा धरइ वंछां ।।
पालइ निर्मल सील, लहीयइ भवांतरइ अधिकी लील ।।
साघ छइ बीजइ खंडइ, एहवी संका छंडइ ।।
तरतम योग परखइं, उचित उलखइ ।।
गुरुनी आण वहइं, पुन्यवंत सोभ लहइ ।
एकवीस गुण श्रावकना 'कुशल ।।
वीर'ए कह्या, आगमथकी लह्या । को कहसी इमहींन बोलियउ ।।
ना आगे सगवतइं सराह्यउ आणंद नइ कंड को लियउ ।।

इति श्राद्ध वर्णनम् । कु०

(६४) श्रावक (४)

जैन प्रासाद करण, प्रतिमा प्रतिस्थापन, आचार्य पद स्थापन,
जीर्ण प्रासादोद्धरण, पौषध शाला निष्पादन, पंच परमेष्ठि महामंत्र स्मरण,
तीर्थ यात्रा करण, अष्टमंगलीक ढोकन, संघ जन पूजन
पुस्तक ज्ञान लेखन, पठन वाचन धर्म कथन, महापूजाकरण
महा ध्वजारोपण, चैत्य परिपाटी उद्यापन, धूप धूपन,

श्रीखंड लेपन, पुष्पमालारोपण, नाना धान्य मेरू भरण[1],
नाटक प्रेक्षणक करण, आरात्रिक मगल प्रदीप दीपन,
खंड खाद्य भक्ष्य भोज्य ढौकन, त्रिकाल देव पूजन,
उभय काल प्रतिक्रमण, गुरू चरण नमस्करण,
पूजा प्रभावना तत्पर, विचार सार कृतादर,
दान ददन, शील पालन[3], तपस्तपन, भावना भावन,
साधार्मिक जनावष्टभ प्रवण[4], सीदमान सदनुष्ठान,
जन भरणादि कार्य रत, सु श्रावक जाणिवउ ।

(७२ जो.)

(६५) श्रावक (५)

श्रावक सम्यक्त्व मूल द्वादस व्रत प्रतिपालिक, पूर्वोभवोपार्जित पाप मलक्षालक ।
श्री जिनेंद्र पद पंकजाराधक, अगण्य पुण्य कार्य प्रसाधक ।
अवसरि षट् दर्शन भक्तिवंतु, दान शील तपो भावनालंकृतु ।
सप्त व्यसन परा मुक्त, एकविंशति गुण सयुक्त ।
उत्तमोत्तम कार्य प्रसक्त, पितृ मातृ परिवार भक्त ।
दाक्षिण्य महोदधि, प्रधान विवेकावधि ।
परोपकार कारक, मित्थात्व व्यापार निवारक ।
भव्य भावाना भावक, सर्व लोक आवर्जक ।
गुरु वचनाराधक, जिन शासन प्रभावक ।
धन धान्य समृद्ध, अत्यंत प्रसिद्ध ।
दानैक वीर, अत्यंत गंभीर ।
बुद्धि मयरहरू, साक्षात कल्पतरु ।
देव गुरू चरण मधुकर, सर्व कार्य धुरंधर । एवं विध श्रावक । ६ जो०

(६६) दस श्रावक नाम (६)

१ आनद । २ कामदेव । ३ चुलणी पिता । ४ सुरादेव । ५ चूल सत्तक । ६ कुड कोलिउ । ७ सद्दाले पुत्र । ८ महा सत्तक । ९ नदिणी पिता । १० लेइणी पिता, इत्यादि । वि०

१—भण २—भार ३—डीलन ४—प्रकोप

(६७) श्राविका वर्णन (२)

सुश्राविका, पुण्य प्रभाविका, आचारवंत, विवेकवंत।
सुशील, सहजइ [1]सलील। तप उपधान रहा विषय न करइ ढील,
ढीढारु दीसइ डील सुविचार, अवसरनी उलखणहार।
समस्त कुटुंब सौख्य करिवा बुद्धि, त्रिपक्ष शुद्ध, स्वभावि मुग्ध। +
भर्तार नउ मन राखीइ, न रह सकइ अध घड़ी घर पाखइ।
सहू जिमाड़ी जीमइ, घणुं बोल्यु न गमइ।
कण रा विकण करइ, देव गुरूना पग अणुसरइ।
चालइ पूर्वज रीति, न करइ किणहनी [2]कफीति।
करइ सासू ससुरानी सार, सरिखी मोटा घर नइ भारि।
पछइ सूयइ, पहिलेउ जागइ, आपणइ मुखि काई न मागइ।
इस्यो काई सरज्यौ माणस पूरऊं, किणही नउंन बोलइ अपूरूं[3]।
एवड़ी अंग माहि लाज, आपणऊ अर्थ बिनासी सारइ कुटुम्ब ना काज।
गोलनी पीडि लीजई, पुण्यवन्त नइ पतीजै।
आपण परनी विगति जाणइ, सद्गुरू न्यायि श्राविका वखाणइ।
को कहिसइ गुरू" चाटूया बोल बोलई इस्या।
पणि परमेश्वरे वखाणी, रेवती नइ सुलसा। (सू० और जै०)

(६८) सात क्षेत्र

इस्यइ दुःषमाकालि, पसरइ पाप नइ जालि।
सुकृत ना आचार साचवइ, सप्त क्षेत्रीयं वित्तु वावइं।
अतिहिं पवित्रं, वहिलउ क्षेत्र।
करावइ श्री वीतराग ना प्रासादु, लिय जगत्रय जयवादु।
बीजउं क्षेत्र बिंब भरावइं,
जइ मनि वार एक प्रथम श्रावकु भरतेश्वर वेह न्हइ हरावइ।
त्रीजउ क्षेत्र तपोधनु, किसी परि रंजवइ तीह ना मनु।

१.तदन्तर अधिक—अतहिं, लक्ष्मीनइ अवतारी चित्तनीउदार, अवसर नी ओलखलहार। सुलपम ढलकार, करन्सा,—वटउघरिमहा—

द्वादशव्रतधार। अवसरइ उपकार नी छूटी, ए वातनथी कूडी। सर्व स्त्री रोषरहित, शीलादि गुणेसहित। १. सील+वाणी बोलइ मीणी जाणइ मिश्रीनइ दुग्ध। २. अफीति ३. अपुरं ४. पीडा ५. स्त्री ६. कुशलधीर।

चउमासि रहावइं, धर्मकथा कहावइं ।
पोसाल करावइं, ओखध वेखद, वस्त्र, पात्र । अनी उपगरावइ छात्र,
सयनासननीं चिंता आजु लगइ दीसहु दीसइ देववा
चउथउं क्षेत्र तपोधना
कहीयए, तेहना भारण हजि पुण्यगते वहीयइ ।
पाचमउ क्षेत्रु श्रावकु जाणउ,
नेहनी सार पर्युपास्ति करता देखी विस्मउ करइ ।
छट्ठउ त्रिनेत्र नउ
सातमउ क्षेत्र, पुस्तक भरावइ, प्रशस्ति लिखावइ ।
ए सात क्षेत्र वावइं प्रशस्य, नीपजइ पुण्य रूपिया शस्य ।
भली तीर्थ यात्रा करइ, कलिकाल गर्व हरइं ।
भला तीर्थोद्धार, करावइं सुविचार ।
विबुध जन इसुंजि कहइ, जिन शासन नउ भारु एहेजि निर्वहइ ।
इसा, तुम्हा जिसा ।
सुश्रावक, पुण्य प्रभायकु ।
देव गुरु नइ आशीर्वाद जयवंता वर्त्तउ ॥ २९ ॥ जै०

(६९) गच्छ

तपागछा १, ओसवालगछ २, जीराउल ३, वडगछ ४, गागेसराय (!) ५, मेरटीआ ६, भरुचा ७, आनपूरा ८, ओडविया ९, गूंदवीआ १०, दिकाऊआ ११, भिन्नमाला १२, मोडासीया, १३, दासरुआ १४, गछपाल १५, घोषवाल १६, भगडीया १७, ब्रह्माणीआ १८ जालोरा १९, वोकडीया २०, मढ़ाका २१, चित्रोडा २२, साचोरा २३, कुचडीया २४, सिद्धातीया २५. रामसेणीया २६, मलधारा २७, आगमीआ २८, नवराजीआ २९, पल्लवीया ३०, कोरंडावाल ३१, नागेन्द्राक ३२, धर्मघोषा ३३, नागोरा ३४, उछितवाल ३५, नाणावाल ३६, साडेरा ३७, मंडोरा ३८, सूराणा ३९, खंभायता ४०, बडोदरा ४१, सोपारा ४२, मांडलीआ ४३, कोटिपुरा ४४, जागडा ४५, छापरीया ४६, वोरमंका ४७, दोवदनीक ४८, चित्तावाल ४९, वेगडीआ ५०, चाअडगव गछ ५१, विज्जाहारेगछ ५२, कतनपुरा गछ ५३, कावेलागछ ५४, सदोलिया गछ ५५, महुकरा गछ ५६, कन्नरसा ५७, मुणतेला ५८, रेवईआ ५९, धूंधूखा ६०, छाभाणीया ६१, पचंनलीआ ६२, पालणपुरा ६३, गंधारा ६४, गूंदेलीया ६५,

सार्द्धपूनमिया ६६, नगरकोटीया ६७, हंसकोटिश्रा ६८, भट्टनेरा ६९, जालोरा साठिया ७०, भीमसेणिया ७१, तांगडीया ७३, कंबोजा ७४, सेवंत्रीया ७५, वल्लेरा ७६, वहेडा ७७, सिंघपुरा ७८, घोघरा ७९, संजाती ८०, वारेजा ८१, मोरंडवाल ८२, नाडोलीया ८३, चोलीया ८४, इति चौरासी गच्छ नाम। (वि०)

(७०) तपागच्छ शाखानाम

विजय १, विमल २, कुशल ३, रुचि ४, हंस ५, सुदर ६, सौभाग ७, सागर ८, आणंद ९, हर्ष १०, राज ११, सार १२, रत्न १३, पुत्र १४, धर्म १५, उदय १६, चंद १७, सोम, वर्द्धन १८, एवं १८ शाखानाम्। (वि०)

(७१) जैनमत

दिगम्बर, आगमीया, पूनमीया साढ़पूनमीया, लूंका, पासचंदीया, अध्यात्म-मती, वीजामती, ब्रह्मामती, कोथलामती, कडूआमती, सागरमती, काजामती, ढूंढ्यामती, इत्यादि मत जाणवा। (वि०)

(७२) ११ अंग सूत्र

अथ एकादशांगा—

आचाराग, सुगडाग, ठाणांग, समवायाग, भगवती, ज्ञाता धर्मकथांग, उपासा-गदशाग, अंतगडदशांग, अणुत्तरोववाई, प्रश्न व्याकरण, वियाकसूत्र इत्यादि— एकादशांगा।

(७३) १२ उपांग

उववाई, रायपसेणी, जीवाभिगम, पन्नवणा, जम्बूदीव पन्नत्ति, चंदपन्नत्ति, सूर पन्नत्ति, कप्पिया, कप्पविडंसया, पुप्फिया, पुप्फचूलीया, वण्हीदशा, इत्यादि वार उपाग।

(७४) १० पयन्ना

देवंदथओ, तंदुलवेयालियं, चंदाविज्जियं, गणिविज्जा, आउपच्चक्खाण, महापच्चक्खाण, मरण समाधि, चउसरण, मरण विभत्ति, गच्छाचार, इत्यादि दश पयन्ना।

(७५) छः छेद

निशीथ, महानिशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, पंचकल्प, दशाश्रुतस्कंध, इत्यादि छःछेद ग्रथ।

(७६) मूल आगम

आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, पिंडनियुक्ति इत्यादि मूल सूत्र च्यार। नंदी सूत्र, अनुयोगद्वार, इत्यादि पैंतालीस ४५ आगम जाणवा। वि०

(७७) नवतत्व

(१) जीव, (२) अजीव, (३) पुण्य, (४) पाप, (५) आश्रव, (६) सवर, (७) निर्जरा, (८) बंध, (९) मोक्ष।

धर्म-अधर्म। हेयज्ञेय, उपादेय। निश्चय, व्यवहार। उत्सर्ग अपवाद। आश्रव, परिश्रव। अतिचार, उपचार। अतिक्रम, व्यतिक्रम। इत्यादिक साभल्या विना शास्त्र ना भेद न जाणिइं। (सभश्रृङ्गार की द्वितीय प्रतिका प्रथम पत्र)

(७८) विगय

तेल, गुल, घृत, दूध, दही, कडाविगय, आमिष, माखण, मधु ९ विगयनाम।

(७९) संमूर्च्छित उत्पत्ति १४ स्थान

(१) लघुनीति, (२) बडीनीति, (३) श्लेष्म, (४) वमन, (५) पित्त, (६) राधि, (७) थूक, (८) लोही, (९) वीर्य, (१०) वीर्य खरडीया वस्त्र, (११) मृतक, (१२) स्त्री नर संग में, (१३) नगर ने खाल, (१४) अने अशुचि, इत्यादि में संमूर्च्छिम पंचेद्री ऊपजें।

(तीर्थंकर माता देखे) चतुर्दश महास्वप्न वर्णन क्रमेण।

(८०) गज वर्णन—(१)

सप्तग प्रतिष्ठितु। शुण्डा दण्डि परि कलितु

मत्तु; मदोन्मत्तु।

प्रचण्ड, उदण्ड।

विन्ध्याचल समानु, उज्ज्वलवानु।

कोपारुण, जिसउ हुई ऐरावण।

उज्ज्वल; प्रधान दन्तूसल।

छूटउ हूँतउ पर्वत प्राकार पाडइ, कुण तिहस्यउ पइसइ अखाडइ।

कुम्भस्थलि सिन्दूर नू पूर; ऊपरि कपूर।

सुवर्णमय शृंखले करी अलंकरउ, गज वस्त्रा परिवरिउ।

रूप्यमय घंटा निनादु, जेहनउ जगत्र जयवादु।

पगि थोरु; श्रम करतउ दीसइ जाणे तउ लक्ष्मी नउ मोरु
सारसी करतउ; जय श्री वरतउ
इस्यउ गजेन्द्र मरुदेव्या स्वामिनी कुक्षि अवतरिउ श्री ऋषभु ॥ ४३ ॥ जै०

(८१) वृषभु (२)

बीजउ स्वप्न देखइ वृषभु ।
उद्दाल धवल, प्राणि करी प्रबल ।
रोम राइ करी सुकुमालु, पूठिइं सुविशालु ।
पृथ्वी नउ भार वहउ समर्थ, परमेश्वरि सिरिज्यउ एणि अर्थ ।
कांधि मोटउ, पूठि घोटउ ।
नथी हीणु, इस्यउ धुरीणु ॥ ४४ ॥ (जै)

(८२) सिंह (३)

अकलु अबीहु, त्रीजउ स्वप्न देखइ सीहु ।
जीणं करि सघणीइ वनु, परिपूर्ण पंचाननु ।
तीखी दाढ़, सविहु जीव मांहि ऊगाढ़ु ।
अतिहिइं सूरउ, सर्वांगि पूरउ ।
उल्लालित पुच्छच्छटा छोपु, सकोपु ।
मुख सुविकासु, अनइ देखता सप्रकास ।
छइ वीहामणउ अनइ नहरालउ, सौर्य वृत्ति नउ आलउ ।
आवे नलि घाती वइठउ, राणीइं स्वप्न माहि दीठउ ॥ ४५ ॥ जै०

(८३) लक्ष्मी देवी (४)

त्रिभुवन स्वामिनी, चउथउं स्वप्न देखइं अनी ।
रंगरेलि, मूर्तिमती कल्पवेलि ।
विभूषण नं सहस्ती करी अलंकरी, हाथिए परवरी ।
सुवस्त्र सुवेष, जेहनी अत्युत्तम रूपनी रेख ।
जगत्त्रय जीवनु, सुहणइ दीठइ अने मउ थाइ मन ।
सर्व दुःख निर्नाशिनी, पद्मद्रहनिवासिनी ।
सकल सौख्य कारिणी, महा मनोहारिणी ।
परम दैवत्तु, इह लोकि परम तत्तु ।
परमेश्वरी, इसी स्वप्न मांहि राजी अनुसरी ॥ ४६ ॥ जै०

(८४) पुष्पमाला (५)

पाचमउ पंच पुष्प माला, पाचमउ स्वप्न देखइ बाला ।
भरीइं परिमल ना केउल, एह्वा बउल ।
गंधिकरी गाढा लापा, इस्या चापा ।
सेवत्रा, सौरम्य गुण भरया ।
लोचने नाशिका पुट अनुहरा, वेल विकस्वर ।
पहिरिवा दरिद्रीइ, थाइ वाही उर ईश्वर ।
अनेरा पुष्प प्रति कंटक, इसा पुष्प कोरटक ।
पाखलि फिरइ भ्रमरना वृंद, इसा कुद मुचकुद ।
अति हिइं बहु मूल, जाइ ना फूल ।
मस्तकि पहिरता करणी, बिवणी शोभा थाइ करणी ।
सोनडी हइं कइ जासूना, जूजउ फुलीजा सूना ।
अति सुविशाल, राणी देखइ प्रधान पुष्पमाल ।। ४७ ।। जै.

(८५) चंद्र (६)

जेह नइ नथी कलंकु, इसउ शशाकु ।
छट्ठउ स्वप्न देखइ, अमृत नइ उवेखइ ।
नक्षत्र माहि नाथु, शीतत्व गुणि करि ऊभ्यउ हाथ ।
जगत्रय न्हइं आणंदकरु, भालस्थल थ्यु न मेल्हइं अध घडीइ ईश्वरु ।
रोहिणी नउ भर्त्तार, ज्योत्स्ना करी अपार ।
अमृत नउ कुण्ड, महिणारभु ।
मथी देवे मेल्हउ हुइ, जिसउ मारवण नउ पिंडु ।
सूर्य ने किरणे गलिवा बीहइ, तउता अधिक न दीसइ ते दीहइ ।
जल निधि रुपीया ज भमतु, थ्यउ बडवाग्नि बीहंतउ ।
जाणे भडयउ पारउ, लोचन नइ पियारउ ।
आकाशि महिषी ना मुख फेणु, वाहणि पणु ।
इस्यउ चन्द्रमा दीठउ ।। ४८ ।। जै.

(८६) सूर्य (७)

अति हिया वणउं, सुयणु सातमउं ।
तेज नउ भरु, देखइ दिनकरु ।

जिसउ केसू प्रधान, अथवा गुन्जार्ध राग समानु ।
अति हिंगुलो नउ रंगु, ऊगतउ एहतउ सुरंगु ।
अंधकार हरु, जगत प्रकाश करु ।
आकाश विभूतिइं ओटहयउ, प्रलयाग्नि जिसउ हुइ रह्यउ ।
सत्कर्म साक्षात्कु, दिग्वधू ना नाक नउ जिसउ मौक्तिकु ।
लोचन विसमउ, सुहणउं सातमउ ॥ ४६ ॥ जै.

(८७) ध्वज (८)

पंच वर्ण पानड़े करी गहगह्यउ ।
साथीए करी सनाथु, जिस्यउं हुई साचउ सुकृत नउ हाथु ।
वली पुष्प वृक्ष नउ अंकूरउ, दानव वंश दलिवा सूरउ ।
वाइ करि फरहरइ, जय श्री वरइ ।
विज्ञान करी विचित्तु, स्वप्न मांहि पवित्तु ।
देवीइ इसउ ध्वज दीठउ ॥ ५० ॥ जै.

(८८) कुम्भ (६)

स्वप्न मांहि निर्दंभु, सुवर्ण मइ कुम्भु ।
गूंहली उपरि मांडउ, अलक्ष्मी छांडउ ।
महामानि, अलंकरयउ आंबा ने पानि ।
चिहुँ वाटि करि पट्ट वड़ी, ऊपरि प्रधान दीवड़ी ।
मागलिक मांहि पहिलउ, आवउ वहिलउ ।
तडि आठ मागलिक अविद्ध मोतीना, किम न उल्हसइं स्त्री जोतीना ।
स्वामिनि मरुदेव्या, पूर्णकलश सुं नव स्वप्न अनुभव्या ॥ ५१ ॥ जै.

(८६) सरोवर (१०)

महा मनोहर, दशमउ देखइ सरोवर ।
पाणी भरिउं, राजहंस ने युग्मे अलकरिउं ।
चकोर चक्रवाक नासइं, महा मत्स्य हसइं ।
आडिनी उलि एक लग, बहु चित्र दीक बक ।
सार कुटलइं, पर्वत प्राय मगर गल लइं ।
माहे कमल उन्निद्र, जाणेच्छइ समुद्र ।
चन्द्रमा मिलवा नइ करइ कल्लोल ।
हिम वर्ण दीस्यइ पालि वली, जिहां छइ सच्छाइ वृक्षावली ।

तिहा बइठा बल कण लागइं, साथ कहइ ईहा रही स्यकइ आगइं।
पृथ्वी माहि पामीइ, मार्ग श्रमु गमीइ।
इस्यउ सरोवर दीठउ ॥५२॥ जै०

(९०) रत्नाकर (११)

महारत्न नु आगरु, इग्यारमउ स्वप्न देखइ सागरु।
मच्छ, कच्छ, पाठीन पीठ जलचर जीव अनीठ।
महा निरवधि, क्षीरोदधि।
अतिहिं उद्दण्डु, डिंडीर पिण्ड।
तेहे विराजमान, मर्यादा करी प्रधानु।
गंभीरिमा गुणि करि गाजइ, आपणी मर्यादा रह्यउ कहइन्ह न विराजइ।
महालक्ष्मी धरु, इसउ स्वप्न देखइ स्वामिनी प्रवरु ॥५३॥ जै०

(९१) देवविमान (१२)

रहित शोकु, जिसउ बारमउ हुइ देव लोकु।
इसउं विमानु, सुरागणा ससेव्य मानु।
स्वर्णमय कुंभ सहस्रि परिकलितु, दिसि एकइ नही जिहा तोरण टलतु।
जिहा बार सूर्य ना उदय, रत्नजटित इसा चद्रोदय।
दीठो हरइ अलच्छि, इसी चिहु पखे परीयच्छि।
परिमल करी विशाल, माहि लंबायमान फूल नी माल।
अगर गधि उच्छलइ, जबावि ना परिमल मिलइं
कपूर महकइं, कस्तूरी महकइ, जय पताका लहकइ।
भ्रमर गुणगान करइ, बारमु स्वप्न देखइ॥ (जै०)

(९२) रत्न राशि (१३)

चन्द्रकान्त, पद्मकान्त।
पद्मराग, पुष्प राग।
हीरिताक्ष, लोहिताक्ष।
कर्केतन मणि, वैडूर्य मणि।
गुरडोद्गार, पुलकोद्गार।
हीरा मणिकला, अविद्ध मौक्तिक भला।
त्रास रहित, तेज सहित।

रत्न तणी राशि, प्रवेश करती आवासि ।
जिसउ सूर्य होइ अनभ्र, तिसा हंस गर्भ ।
जिसा लोक चितरंजन, तिसा अजन ।
सविहुं रत्न प्रति मल्ल, इसा मसार गल्ल ।
तेज ता चुलक, इसा पुलक ।
इसम तेरमउ स्वप्न दीठउ ॥५५॥ जै०

(९३) निर्धूम अग्नि शिखा (१४)

तेज प्रखरु, चउदमम स्वप्न वैश्वानरु ।
सप्त ज्वाला करालु, देखता सौख्यकारु ।
उर्द्ध मुखु, धूप नइ विषइ विमुखु ।
धग-धगाय मानु, स्वप्न मांहि प्रधानु ।
होतव्य द्रव्य नउ प्रसरणहारु, तेहतु वर्त्तइ लोक व्यवहारु ।
घृति करि सींच्यउ, इसंतिका रच्यउ ।
मर्यादा ज्वलंतु, निद्राना वलइतउ ।
राणीइं इस्या स्वप्न दीठां, मनन्हइं लाग्या मीठा ।
श्री कल्प मध्ये चतुर्दशस्वप्न वर्णनानि ॥ १४ ॥ ५६ ॥ जै०

(९४) वैमानिक देववर्णन

अति सुकुमाल, रसाल ।
दिव्य देह, अति सस्नेह ।
निरामय शरीर, अतिधीर ।
महामानी, भागी,............।
अमृता हारी, सोख्य व्यापारी ।
अति प्रोढ़ा, विमानाधिरूढा ॥ ७ ॥ जै०

(९५) सौधर्म देवलोक स्थिति

साभलउ सौधर्मेन्दू तणी स्थिति । सौधर्म ।

रत्नमय भूमि, शक्र सिहासन, सूर्य जिम झलकतउ, तिहां बइसइ शक्र इसिइ नामिइं सौधर्मेन्द्र । दक्षिण लोकार्द्ध स्वामी, एरावण वाहण, बत्रीस लाख विमान तणउ अधिपत्य पालइ, लीला लगइ वैरि दुःसह स्फुलिंग (सह) सहस्र वरस तउं ज्वाला ना सहस्र झरतउं, देदीप्यमान दक्षणहस्ति वज्र ऊलालइ। चउरासी सहस्र अति स्वच्छ निर्मल वस्त्र मस्ति, चन्द्र मंडल सम त्रिन्नि छत्र कनक दंड चमर दिव्य आभरण डंबरन इन्द्र सामाजिक देव सपरिवार तेत्रीस त्रायस्त्रिंश इसिइं

नामइ दुगु दुग देव, ४ लोकपाल। पद्मा, शिवा, अजू श्यामा सुलसा, अचला कालिंदी भाणू ए अठ अग्र महिषी, सोल सोल सहस्र देवी परिवृत्त, १२ सहस्र अभ्यतर सभा तणा देव, १४ सहस्र मध्यम सभा तणा देव, १६ सहस्र बाह्य सभा तणा देव, ७ कटक नास्य, गधर्व हय, गज, वृषभ, रथ, पदाति रूप ७ कटकतणा स्वामी। नीलंजणारि जसहरि एरावण मातलि दामिद्दी हरिणेगमेषी ७ सर्वा गि सन्नाह पहिरि, दृढकशा बधि बाधी धनुषि गुण चडावी रहया, ग्रीवा भरण विभूष्य मस्तकि। नेत्रादि वस्त्र मय अथवा सुवर्णमय टोप धरता सज्जी कृत चेप्यास्त्र, गृहित अक्षेप्यास्त्र मध्यि त्रिहु पासि एवं त्रिहु स्थानकि नम्यां। त्रिहु स्थानकि साध्या इस्या वज्र मय कोटि धनुष मुष्टि स्थानकि सारहिया, नील वर्ण, पूष पीत वर्ण, रक्त वर्ण, पुंख इस्या बाण हाथि धरता, केतलाइ अनारोपित चाप हाथि लेइ रहिया, केइ खेडा हाथि, केइ खाडा हाथि, केइ दड हाथि, केई पाश हाथि, केतलाइ नील वर्ण, पीत वर्ण, केतलाइ रक्त वर्ण, केतलाइ त्रिवर्ण चाप प्रमुख शस्त्र धरइं छइं।

सर्वे स्वामी शरीर रक्षा सावधान, अनेथि मन अणकरता, मडली नी स्थिति आलोपता[1] परस्पइं आतरु पडतुं टालता, परस्पर संबद्ध, सदा विनयवंत्त, अत्यन्त भक्त, इस्या त्रिन्नि लाख छत्तीस सहस्र अगरक्षक देव सम श्रेणी निरंतरि इन्द्र पाखती रहिया छइं। इम सौधर्मेन्द्र धर्म तणइ प्रसादि[2] महासुख अनुभवइ, इम अनेराई देवेन्द्र ना सुख जाणिवा।छ०॥ (१६४ जो.)

(६६) देवलोक सुख

देवलोकणी, केवडी ऋद्धि, केवडउ सुक्ख,
जहि मनोवाछित विमान संपजइ,
मनोवाछित आहार, मनोवाछित सिंगार, मनोवाछित अगभोग,
मनोवाछित, आभरण, मनोवाछित रत्न, मनोवाछित नायका,
मनोवाछित प्रेक्षणक मनोवाछित नाटक,
अनै अनेक परि क्रीडावन, सरोवर, पुष्करिणी,
वैक्रिय लब्धि सपन्न हूता विचित्र क्रीडा करइ,
शरीरि प्रस्वेद नहीं, फूला कुर्माइ नही, वस्तु मइलियइ नहीं,
फूटरा पहिरणा चागण चोटा थका देव सुक्ख अनुभवइ,

१—अलोपता २—प्रभावि।

(९७) देववर्णक (१)

अति सुकमाल, विसाल भाल ।।
करता झाकझमाल, अतिरसाल ।।
दिव्य देह, रूप रेह ।।
मयण गेह, अति सस्नेह ।।
निरामय शरीर, धीर वीर ।।
महामानी, दीसता जेहवा जानी ।।
विराजमान कुंडल, दर्प्प जिमा गल्लस्थल ।।
महा भोगी, साक्षात देखइ जोगी ।।
अमृताहारी, स्वेच्छाचारी ।।
मदय सनूरा, कुद्दइ करी पूरा ।।
मलमूत्र रहित अवितशक्ति सहित ।
विमाने वइठा वहइ, भूमिथी च्यार अंगुला ऊचा रहइ ।।
मुनि 'कुशल धीर कहइ', देव, ... ।।

इति देव वर्णक ।। कु०

(९८) मोक्ष इन बातों में नहीं

मोटी छोटी कछोटी मोक्ष नहीं, कापाय धोती मोक्ष नहीं ।
विकट जटा मुकुटि मोक्ष नहीं, निष्कारणि[1] शिखा मोक्ष नहीं ।
कंठि जनोई मोक्षि नहीं, हाथि अनति मोक्ष नहीं ।
अखंड त्रिदंडि मोक्ष नहीं, कन्हइ कमंडलि मोक्ष नहीं ।
मस्तकि मुडिइ मोक्ष नहीं, वन वासि मोक्ष नहीं ।
किन्तु रागद्वेष परिहारि शुद्धिइं मनि मोक्ष हुइ ।

रागी बध्नाति कर्माणि वीतरागो विमुच्यते ।
जना जिनोपदेशोयं संक्षेपाद्बंध मोक्षयो ।।८७। जो०

(९९) मोक्ष इन बातों में नहीं

नच्छोटी कछा मोक्ष, न विकटि जटा मोक्ष ।
न कण्ठ कंदर स्थित यज्ञोपवी मोक्ष न अखण्ड त्रिदण्डी मोक्ष ।
न विशालि कपालि मोक्ष, न स्वदर्शन मुण्डनि सिरे खुडनि मोक्ष ।
न नियंत्रित सर्व करणि विकृष्ट तपश्चरणि मोक्ष ।
किन्तु राग द्वेष परिहारि सुद्धइ निर्मल मनि पावीइ ।

---

१. शिखा

(१००) लक्ष्मी देवी वर्णन

पुण्य लक्ष्मी पवित्र, एह भरत क्षेत्र। परइ हिमवत पर्वत सुवर्णमय छइ। एक सहिस्र बावन जोअण अनइ बार कला जे पिहुलउ। सउ जोअण ऊंचउ। तेह उपरि पद्म द्रह छइ। जे किसउ ? निर्मल जल परिपूर्ण। दस जोअण ऊंचउ। पाँच सउ जोअण पिहुलउ। सहिस्र जोअण लाबउ। वज्रमय पासा। तेह पद्मद्रह माहि श्री देवता वसिवा योग्य कमलइ। ते किसिउ ? एक योण पिहुलउ, एक जोअण लाबउ। जोअण माहि विकासे पाणी ऊपरि। त्रिणि जोअण सविसेष तेहनी परिधि। वज्रमय तेहनूं मूल। रिष्ट रत्नमय कंद। वैडूर्य नामइ जे निल रत्न। तेह मय नाल। रक्त सुवर्णमय तेहना बाह्य पत्र। किंचि रक्तमय जाबूनइ नाम सुवर्ण तेह मय अभ्यतर पत्र। तेह कमल माहि बीज कोस रूप। सुवर्ण मय कर्णिका छइ। ते किसी ? रक्त सुवर्णमय तेहना केसर। त्रिकोस तेलाबी अनइ पिहुली। एक कोस ऊंचो। त्रिणि कोस सविशेष तेहनी परिधि। तेह कर्णिका नइ मध्य भागि श्री देवता योग्य भुवन छइ। ते किसउ ? एक कोस लाबू, एक कोस पिहुलु, माहेरउ कोस अंचउ। त्रिणि द्वार तेह भुवन तणां—एक पूर्व दिशि—एक उत्तर दिशि—एक दक्षिण दिशि। ते बारणा पाचसइ धनुष ऊचा, अठीसइ धनुष पिहुला। तेह माहि अढीसइ धनुष प्रमाणमणि मय वेरका। जे ऊपरि श्रीदेवता योग्य सयन छइ। हिवइ जे मूलिगउं कमल कहिउ ? तेह कमल अनेरे अहोत्तर सउ कमले वलयाकार पणइ वीटउ छइ। ते सघलाइं कमल मूलगा कमल त्तउ–अई प्रमाण जाणवा तेहे सविहु कमले श्रीदेवता तणा आभरण रहइ। तेइ वलय पाखतोइ बीजउ कमल नउ वलय छइ। बिणइ वलय श्री देवी तणा च्यारि सहस्रि जे छइ। सामान्य देव तेहणा वायव्य ईशान उत्तर दिशि च्यारि सहस्रि कमल छइ। ते मुख्य कमल नउ अर्द्ध प्रमाण जाणवा। तथा श्री तणइ महा मंत्रि कल्प छइ। जे च्यारि महत्तरादेवी तेहना च्यारि कमल पूर्व दिशि जाणिवां। श्री देवी तणइ अभ्यंतर पर्षद तणा आठ सहस्र छइ जे मुख्य स्थानीय देव। तेहणा दश सहिस्र कमल आग्नेय कूणिवा। श्रीदेवी तणइ मध्य पर्षद तणी दश सहिस छइ ते मित्र स्थानीय देव। तेहणां दश सहिस कमल दक्षिण दिशि जाणिवा। श्री देवी तणा बाह्य परिषद बार सहिस्र छइ जे किंकर स्थानीय देव तेह तणा बार सहिस्र नैऋत्य कूणि कमल जाणिवा। श्रीदेवी तणइ हस्ति अश्व रथ पायक। महिष नाम गधर्व रूप जे सात कटक तेह तणा जे सात स्वामी तहे तणां सात कमल पश्चिम दिशि जाणिवा। तेह त्रीजा कमलनइ वलय पाखतीइ त्रीजउ वलय छइ, विहा श्रीदेवी तणा जे सोल सहिस्र अंग-

रक्षक देव तेह तणा सोल सहिस्र कमल जाणिवा। तिवार पूठइ त्रिणि वलय वलि कमल ना जाणिवा। तिहां अभ्यंतर वलय श्रीदेवी तणा—छत्तीस लाख जे आभियोगिक देव तेह तणा छत्तीस लाख कमला जाणिवा। मध्य वलय श्रीदेवी तणा—४०००००० आभियोगिक देव तहे तणा ४० लाख कमल जाणिवा। वाह्य वलय श्रीदेवी तणा—४८ लाख आभियोगिक देव, तहे तणा ४८ लाख कमल जाणिवा।

एवं एक कोड़ि वीस लाख पचास सहिस्र एक सउ वीसोत्तर कमल जाणिवा। एवडा कमलवासी देव अनैं देवी एह सगलउ श्री देवी तणउ परिवार जाणिवउ।

देह प्रभामर विभासुर देव देवी, ससेव्यमान वलमान् छिनाभ हस्ता। रत्नौ-ज्वला भरण मंडल मंडिताङ्ग। श्री तीर्थराज पदपंक संग भृंगा दारियभू "१" इति श्री लक्ष्मी देवता ऋद्धि वर्णन। पं० हर्ष रत्नमुनि पठनार्थं।

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग १

सामान्य नीति वर्णन

(१) कौन किसके लिए सुखकारक नहीं (१)

इंदुः स्वैरिणीना न सुखायते, उद्योतचौराणा न सुखायते ।
दीपः पतंगाना न सुखायते, सूर्यः कौशिकानां न सुखायते ।
वृष्टिर्जवासकाना न सुखायते, चद्रोदयश्चक्रवाकान ना सुखायते ।
गर्जितं सरभाना न सुखायते, वर्षा प्रावहणिकाना न सुखायते ।
मृदंग शब्दो अन्न रोगिणां न सुखायते, घृतं प्रमेह रोगिणा न सुखायते ।
मूर्खानां विशाः न सुखायते, असत्या सती न सुखायते ॥ १–२ ॥

(सु० १)

(२) सुख रूप नहीं (२)

इन्दुः स्वैरिणीना न सुखायते ।
उद्योत चौराणा न सुखायते ।
टीपः पतंगाना न सुखायते ।
सूर्यः कौशिकाना न सुखायते ।
सत्कवीनां विषयादि वसनं न सुखायते ।
वृष्टि पर्वासिकाना न सुखायते ।
चन्द्रोदयश्चक्रवाकाना न सुखायते ।
सुभिक्ष धान्य संग्रहिकाना न सुखायते ।
मेघ गर्जित सरभाणा न सुखायते ।
चंदनं विरहिणा न सुखायते ।
वर्षाकालः प्रवासिकाना न सुखायते ।
मृदंग शब्दोऽक्षि रोगिणां न सुखायते ॥ ८१ ॥

(मु०)

(३) सुख रूप नहीं (३)

इदुः स्वैरिणीना न सुखायते । उद्योतश्चौराणा । दीपः पतंगाना ।
सूर्यः कौशिकाना । दिवसोनक्तचराणा । चंद्रोदयश्चक्रावकानां ।
सुभिद्द्य धान्य सग्रहिणा । गर्जितं शरभाना । चंदनं विरहिणीनां ।
वर्षाकालः प्रवहणिकानां । मृदग शब्दः शोकाकुलानां ।
गुरु वचः कु शिष्याणा । शृंगार वार्ता महात्मना । मयूर नादो वियोगिनां ।
दुर्ज्जन गोष्ठी सज्जनानां । तीव्रा तपः सुकुमाराणा ।
दान वार्ता कृपणाना । शूर वृत्तिः कापुरुषाणा । पर स्तुति खलाना ॥

असुख वर्णन ॥ स० २ ॥

(४) इनमें ये दोष

चंद्रस्य कलंको दूषणं, सूर्यस्य प्रतापः
समुद्रस्य क्षारत्वं, शरीरस्य रोगः ।
तपसः क्रोध, जलधरस्य श्यामत्वं, ससारस्य दुख भंडारत्वं ।
धनवतां कृपणत्वं, दानिना निर्धनत्वं ।
पुण्यवंता अग्रहित्वं, स्त्रीणां यदस्था ।
मेघस्य चपलत्वं, कमलेतु कटकित्वं । एवं विधातुर्दोषा ।

|| १० || जो०

(५) कोई न कोई कसर सब में (१)

विष्णु दशावतारण रुडडि भागऊ, ईश्वर नागऊ, ब्रह्मा पंचमा मस्तक नो चूको, चंद्रकोरो, शुक्र कांणो, शनीच्चर कूबडो, आदित्य संतापकर सूर्यसारथि पांगुलो, मगल-त्रिकोणो, रावण परस्त्री कारणे विगूतो, राम सीताप्रति वनवास हुओ, पांडव कौरव विरोधवाधिओ, कर्णराजाइ आपणे[1] जिह्वा[2] घोडो वाध्यो, विक्रमादीत्य काग मांस खाधो तोही अजरामर न हूओ, नल राजा परघरि सूयारपणो करे, हरचन्द चंडाल ने घरि पाणी भरे, परसराम आपणी माय तणो शिर कमल छेदे, माघ जेवडो विद्वास पगरखुभि भूखि मूऊ, गांगेय जेहवो सुभट पुत्र ने वरा से पडें, सगर चक्रवर्ति साठसहस्र वेटा तणो दुख देखे, वासुदेव बलदेव द्वारिकानो दाघ उदेखे, भरतेश्वर बाहुबलि संग्राम (स) आप माहि करे, मृत्यु पग हेठल वसि संसार माहि सहुयइ इंद्रयाल दीसे, तेह कारण शास्वती कीर्ति उपजावची, जगत मांहि प्रसिद्ध लेवी, इत्यादि जाणवी । (पू०)

(६) दोष सब में (२)

संसारे नैव कर्त्तव्यः केनाप्यत्र महोदयः ।
येनो विधिर्न कस्यापि सहते शास्वत सुख ॥
विष्णु दशावतारि तणइ भडडि भागउ, ऐश्वर नागउ ।
ब्रह्मा पांचमा मस्तक तउ चूकउ ।
चंद्र कोचरउ, शुक्र काणउ ।
शनेश्वर कूबडउ, आदित्य सतापक ।

१–आपणे २–जिह्वा

सूर्य सारथि पागुलउइ, मंगल विक्रउ, समुद्र खारउ।
रावण परस्त्री कारणिय विगूतउ।
राम सीता प्रति वनवास हूउ।
पाडव कौरव विरोध वाधिउ।
करणि राई आपणी जिह्वा घोडउ बाधउ।
विक्रमादित्य काग मास खाधउ, तुही अजरामर न हूयउ।
नल राजा परायइ घरि सूयार पणउं करइ।
हरिश्चंद्र चाडालनइ घरि पाणि भरइ।
फरूसराम आपणी माइ तणुं शिरः कमलच्छेदइ।
माघ जेवडउ विद्वास पग सूझी भूख मूयउ।
नागार्जुन रस सिद्धि पूठि घाठउ।
गागेय जेवडइ सुभट पुत्र नईं वरांसइ पडइ।
सगर चक्रवर्ति जेवडउ साठि सहस्र बेटा तणउं दुख देखइ।
भरतेश्वर बाहुबलि आप माहि सग्राम करइ।
वासुदेव बलदेव द्वारिका तणउ दाघ ऊवेखइ।
मृत्यु पग हेठि बसइ, संसार माहि सहूयइ इद्रजाल दीसइ।
तीह कारणी शाश्वती कीर्ति ऊपार्जवी, जगत्राय माहि प्रसिद्धि लेवी॥

(७) अनुसार (१)

संतोष सारु सुख, सत्य सारु वचनु
प्रत्यय सारु लेख, आज्ञा सारु राजु
विनय सारु शिष्य, पुत्र सारु कलत्रु
दान सारु विभवु, दया सारु धर्म। (पु. अ.)

(८) अन्योन्याश्रित (२)

जेहवो राजा तहवी नीत, भीत सारूचीत।
रोग तेहवी नीत, कुल सारु रीत, मन केडे प्रीत॥
वाप तेहवो वेटो, वड तेहवो टेटो॥
घडो तेहवी ठीकरी, मा तेहवी दीकरी॥
[1]जाल जेहवा मछ, व्याधि तेहवा पथ्य॥

---

१. जल जेहवो ठाम।

घन तेहवा व्यय, सैन्य तेहवो जय, चोर तेहवो भय ॥
कंठ तेहवो राग, कर्मानुसारु भाग ॥
व्यापार तेहवो लाग, बालण तेहवी आग ॥
राग तेहवो रंग, अकल सारु ढंग ॥
डेरा सारू तंग, सरीर सारु[1] ढंग ॥
आहार तेहवो डकार[2], अन्याय तेहवो मार ॥
विनय तेहवो कार, कर्म प्रमाणे आचार ॥
इत्यादि । ५.

(९) परिमाणानुसार (३)

जाति मान समाचार,[3] विवेक मानि विचार ।
घर मानि प्राहुणउ, कयाणा मानि आध्नु ।[4]
खांडा मानि पडियार, धनुष मानि पणच ।
सयर[5] मानि छाया, पग मानि पाणही ।
आँखि मानि भरणु, जाख मानि बलि ।
भिराडी मानि पूडा, गुण मानि तिम माणुस पूजा ॥ रज जे.

(१०) परिमाणानुसार (४)

खांडा मानि पडियारु, धनुष मानि पडंच ।
सयर मानि छाया, पग मानि पाणही ।
आंख मानि भरणु, रूंख मानि फलु ।
जाख मानि बलि, भराडि मानि दीवेलु ।
घर सारइ प्राहुणउ, जाति मानु समाचारु ॥ (पु. अ.)

(११) परिमाणानुसार (५)

सकल कल्याण वल्लि पुष्करावर्त्त मेघ जिन धर्म ।
जीणइं मानि दया, तीणइ मानिइं धर्म ।
जीणइं मानि कर्म, तीणइं मानि फलियइ[6] ।
उपक्रमा जिसियां कुल, तीणंइं मानि वचन ।
जिसी भीति, तिसीउ चित्राम ।

---

१ प्रमार्ण । २ उद्गार । ३–आचार । ४–ग्राम सारु सिहिणो । ५–सरीर । ६ फलिइ ।

जिसी आकृति तिसिया गुण
जीणइं मानिइं वय, तीणइं मानिइं बुद्धि।
जिसिउ भाव, तिसी सिद्धि ।
जिसीयां[1] जल, तिसिया[2] कमल ।
जिसीउ आहार, तिसियां बल ।
जिसिया वृक्ष, संसालियइं[3] तिसिया फल[4] ।
जिसी अंतकालि मति, तिसी गति ।
जीणइं मानि दान, तीणइं मानि कीर्त्ति । ९१ । जो०

(१२) अन्योन्याश्रय (६)

जिसोवास, तिसो अभ्यास ॥
जिसी सीख, तिसी मति ॥
जिसो आहार, तिसी डकार ॥
जिसो वावीइं, तिसो लुणीइं ॥
जिसो कमावीइं तिसो पामीइं ॥
जिसो दीजे तिसो फल लीज ॥
जेहवी करनी तेहवी पार उतरणी
इत्यादिक जाणवी । (पू.)

(१३) अन्योन्याश्रय (७)

जिसिउ वास, तिसिउ अभ्यास ।
जिसी दीख, तिसी सीख ।
जिसिउ आहार, तिसिउ उद्गार ।
जिसिउ वावीयइ तिसिउ लूणीयइ ।
जिसिउ कमाईइ तिसिउ प्रामीयइ फलु ।
जिसिउ दीजइ, तिसिउ लीजइ ॥ २६ ॥ जो०

(१४) अन्योन्याश्रय (८)

जिसउ वासु, तिसउ अभ्यासु ।
जिसी दीख, तिसी सीख ।
जिसउ आहारु, तिसउ उद्गारु ।
जिसउ वावियइ, तिसउ लूणियइ ।

---

१ जिसा २ तिसा ३ सेसालिइ ४ फजल

जिसं थवियइ, तिसं खणियइ ।
जिसउ दीजइ, तिसु लाभइ
जिसं कमाईय, तिसं अमाई ॥ (पु. अ.)

(१५) ये इनको जानते हैं (१)

मनु जाणइ पाप, माता जाणइ बाप ।
गारुडी जाणइ साप, वाणिउ जाणइ माप ।
आसंदउ[1] जाणई घोड़ा, कडीउ जाणइ रोडा ।
सोनार जागइ सोना कडा, कंदोइ जाणइ वडा ।
हंस जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर ।
मुख जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा ॥ २७ ॥ जो+

(१६) ये इनको जानते हैं (२)

मन जाणइ पाप, मा जाणइ बाप ॥
हंस जाणइखीर, मच्छ जाणइ नीर ॥
मुँह जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा ॥
पग जाणइ पागी, राग जाणइ रागी ॥
दाव जाणइ दासी, कायर जाणइ नासी ॥
नारद जाणइ हासी, डोकरउ जाणइ खांसी ॥
गारुडी जाणइ मन्त्र, कापडी जाणइ जंत्र ॥
जाचक जाणइ लीयउ, दाता जाणे दीयउ ॥
वडउ जाणइ कीयउ, छोरू जाणइ हीयउ ॥
चोर जाणे पात्र, ओझा जाणइ छात्र ॥
जंगम जाणे जात्र, पुण्यवंत जाणे पात्र ॥
करसण जाणइ जाट, सोनार जाणइ घाट ॥
कवित्त जाणइ भाट, खरादी जाणइ खाट ॥
तंबोली जाणइ पाननी चोली, स्त्री जाणइ पोलो ॥
कूड जाणे कोली, मयेण जाणइ बोली ॥
माया जाणे गोली, बाहर जाणे रोली ॥
वाणियउ जाणइ जोखी, दूषण जाणइ टोपी ॥
मोची जाणे जूती, कपट जाणइ दूती ॥

(१) असवार + पट जोगे उगु ।

सकुन जाणइ सिद्धि, पुण्य जाणइ रिद्धि ॥
सराफ जाणे परखी, वस्तु जाणे निरखी ॥
दलाल जाणे साट, तिम 'धीर' गुरु जाणइ धर्म नी वाट ।
इति जाति वाक्यानि । कु०

(१७) ये इनको जानते हैं (३)

हस जाणइ खीरु, मच्छु जाणइ नीरु ।
आमदउ जाणइ घोडा, महिरालु जाणइ महु मोडा ।
कदोई जाणइ वडा, सोनारु जाणइ कडा ।
गारुडिउ जाणइ सापु, मनु जाणइ आपु, मा जाणइ बापु ।
महु जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा । (पु० अ०)

(१८) इनसे यह नहीं हो सकता

(१)

पंगुर्यथा बहु योजनाटवी लंघयितु (न शक्नोति) ।
वामन स्ताल फलानि लातु न शक्नोति ।
यथा कुब्जः प्राव्वरी[1] भवितु[2] न शक्नोति ।
वात भग्न शरीरश्व विषम किरणानि दातुं न शक्नोति ।
विद्यारहि तश्चाकाशे गंतु न श० अधः पुस्तक वाचयित्तुं न श० ।
बधिरः पर्यालोच कर्त्तुं न शक्नोति ।
तथानिर्भाग्यापि धर्म कर्त्तुं न शक्नोति ।

(१५४ जी०)

(१९) अशक्यता

(२)

जडोप्यह गुरु प्रसादाद्वक्तुं शक्नोमि,
वामन आम्र फलानि गृहीतु कथं शक्नोति ।

---

१. साध्वरी । २. भावितु ।

अंधश्चित्रशालिं चित्रयितुं कथं शक्नोति ।
बधिरो वाणी निनादं श्रोतुं कथं शक्नोति ।
पंगुस्तीर्थानि अवगाहयितुं कथं शक्नोति ।
पाषाणः सौकुमार्ये स्थातुं कथं शक्नोति ।
निंबो माधुर्ये स्थातुं कथं शक्नोति ।
काको हस संसदि स्थातु कथं शक्नोति ।
क्रमेलक करि वरेषु स्थातु कथं शक्नोति ।
एवं मुर्खोंपि पंडितत्त्वे स्थातुं कथं शक्नोति ।

(३१ जो०)

(२०) स्वाभाविक

सत्पुरुष परोपकार किसिउं सीखवीयइ ।
सालि किसिउं खाडीयइ, रूपि किसिउं माडीयइ ।
हीर किसीउं जडीयइ, मोती किसिउं छडीयइ ।
अमृत किसीउं कढीयइ, सारश्वत किसीउं पढीयइ ।
शंख किसीउं धवलीयइ, दूध किसीउं गलीयइ ।

(३० जो०)

(२१) ऐसा प्रयत्न व्यर्थ है

सरस्वती किम पाढियइ, अमृतु किम कढियइ ।
माणिकु किम घडियइ, मोती किम छडियइ ।
निर्गुण किम वंदियइ, सुगुण किम निंदियइ, वाउ किम बाधियइ ।
हरिण तणा नेत्र किम आंजियइ, कुर्कट तणा चरण किम रंजियइ ।
कल्पद्रुम किम रोपियइ, साखु किम धवलियइ ।
सूयरु किम वालियइ, ऐरावणु किम दामियइ ।
चिन्तामणि किम पामियइ, कामधेनु किम वाहियइ ।
हिंग किम वघारियइ, वेदु किम सत्कारियइ ।
रुपिणि किम माडियइ, सालि किम छडियइ ।

हारु किम शृंगारियइ, लक्ष्मी किम निवारियइ ।
स्वर्ण किम उजालियइ, हीरउ किम पखालियइ । पु० श्र०

(२२) असंभव प्राय:

वांमणो आवें पोंहचे, मूर्ख काइं सोचे, अधक भींति चित्रे, धूर्त्त कोइ न छित्रे । वहिरो वीण सांभले, जूआरी वचन पालें । अंधलो अख्यर वाचे, आडि जलमा छूडे[1] पागुलो, पाधरो हींडे, तो कृपण दान आले । इत्यादिक जाणवो ॥ ५

(२३) असभव

यदि मेघ धाराणा संख्या भवति ।
यदि भूतले रेणुका संख्या भवति ।
यदि सुमुद्र मत्स्य संख्या भवति ।
यदि मेरुगिरि सुवर्ण सख्या भवति ।
ततः असुक सख्या भवति ।। ८२ ।। जै.

प्रतिज्ञा वर्णक (२४) प्रतिज्ञा अन्यथा नहीं होती

कदाचित् समुद्र मर्यादा चलइ । कदाचित् वाचस्पति वचन खलइ ।
कदाचित् शिला तलि कमल विकसइ ।
कदाचित् महीमंडल पाताल जाईं ।
अथवा प्रतिपन्न अन्यथा न थाइ ।। छ ।। पु.

(२५) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (१)

यदि समुद्रस्य तृष्णास्याचदा तां कः स्फोटयति ?
यदि भूमिः[1] कम्पते तदा कः स्तभयति ?
यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा कः उपचार ?
यदि नभ स्फुटति तदा की हश रेहणं ?
चौरेण राजा गृह्यते तदा कस्यापि को रक्षकः ?
यदि हिमाचलः शीतेन कम्पते तदा किमावरणं ?
यदि सरस्वती सन्देहं न भंजयति तदा को अन्यः ?

---

१ बूड ।

यदि बृहस्पतिर्मतिहीनो भवति तदा को मति[1] दास्यति ?
यदि चन्द्रादगारं वृष्टि र्भवति तदा को रक्षकः ?
यदि वाटिका चिर्भटानां भवति तदा को रक्षकः ? । ८४ जै.

(२६) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (२)

जो राजा चोरी करे तो बीजौ कुण राखे
जो सत्यवत खोटुं भाखें तो बीजो कुण न भाखे ।
जो चन्द्रमा शीतल न होइ तो बीजो कुण शीतल होइ ।
जो सूर्य अंधकार न निवारे तो बीजो कुण निवारे
यदि सारदा संदेह न भाजै तौ बीजो कुंण भाजै
जो बृहस्पति मतिहीन तो बीजो कुंण मति देस्ये
जो शेषनाग धरती मूकई तो बीजो कुंण धारस्ये
जो समुद्र मर्यादा मेले तो बीजो कुण राखे
जो आकाश पडे तो बीजो कुंण थंमे ।।
जो सज्जन उपकार रहित तो बीजो कुंण उपकार करें ।।
जो लक्ष्मी भंडार तोडस्ये तो बीजो कुंण भरस्यै
इत्यादिक जाणवौ ।। पु० ।।

(२७) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (३)

यदि राजा चोरी करोति तदा को रक्षकः ।
समुद्रस्य तृष्णा कः स्फोटयति ।
यदि हिमाचलः शीतेन म्रियते तदा किं द्दग प्रवरणं ।
यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा किं द्दगुपचारः ।
यदि सरस्वती सदेह न भजति तदा को भजति ।
यदि लक्ष्मी भांडागार द्रव्यं सात्रोटं तदा कः पूरयिष्यति ।

१—मूर्ध्नी २—दक्ष 'पु०' प्रति में यह पाठ अधिक है—

यदि लक्ष्मी भंडागारं द्रव्यं सत्रुटं तदा कः पूरयिष्यति । यदि सत्पुरुष उचित रहितः तदा कः शिक्षा दास्यति ।।

यदि बृहस्पतिर्मतिहीनस्तदा को मति दास्यति।
यदि पृथ्वी कपते तदा कः स्तभः ।
यदि नभः स्फुटति तदा की दग् रेहणं ।
यदि पुत्रो भक्तिं न विधास्यति तदा को विधास्यति।
यदि शिष्यो विनयं न करिष्यति तदा कः कर्त्ता ।
यदि सत्पुरुष उपकार रहितस्तदा कः शिष्या (क्षा) दास्यति ।।२४।। जो॰

(२८) इनकी त्रुटि इनसे पूरी नहीं हो सकती

द्राक्षा तणी[1] आकाक्षा, किसिंउ महूडे फीटइ ।
शर्करानी श्रद्धा कि गुलि पूजइ ।
अमृत काजि किं काजी पीजइ ।
आम्रा तणउ डोहलउ कि आलीए पूजइ ।
कस्तूरी वान[2] किं काजलि कीजइ ।
इंद्र नीलमणि काजिं[3] किं काचु लीजइ ।
वल्लभ माणुस तणो उमाहउ किसिइ अनेरइ पूजइ ।
(११६ जो॰)

(२६) अंत (सीमा)

कलशात प्रासाद, गजान्त लक्ष्मी, ध्वजात धर्म ।
नरकात राज्य, गोरसात भोज्य ।
बधनात व्यापार, हारात[1] शृङ्गार ।
व्यलीकात, स्नेह, कलहात गेह ।
क्षय रोगान्त देह, शरत्कालात मेह ।।२३।। जो॰

---

(१) नी २ नू काज ३ नइ

(पु॰ प्रति) १—हीरात
"वियोगात छेह" इत्यादि जाणनो ।
प्रत्यतइ में पाठ अधिक मिलता है ।

अंत सीम (३०) अंत (२)

कल शान्त प्रासादु, राज सभान्त वादु ।
प्रवासान्त स्नेह, नामान्त केवली ।
स्वर्णान्तु शृङ्गार ग्रान्त गुणितु,
नर्कान्त पठितु पदान्त दुर्जन स्नेह,
गवान्त लक्ष्मी, नायकान्त युद्ध,
हट्टान्त व्यवहार कसवटांत स्वर्ण ॥१०१॥ जै०

(३१) गुण प्रधानता

समुद्रच्चंद्र इव कृमिकुला दुकूल मिव ।
उपलात्सुवर्णमिव, गो रोम तो दुर्वावित्[1] ।
पंकात्ताम रसमिव, गोमया दिंदीवरमिव ।
काष्ट कोटरात् वह्निरिव, नाग फणादिव मणिः ।
गो पित्ततो रोचनावत्, चंद्रकांतादमृतवत् ।
मृगात्कसतूरी केव, द्राक्षाया इव माधुर्य ।
शर्करात इव पित्तोपशमः, चंदनादिव शैत्यं ।
मंजिष्ठाया इव रागः, मेघादिव विद्युत् ।
तथा सर्वोपि जनो गुणैरेव ख्यातिमान भवति ननतु कुले ।
शीलं प्रधानं न कुलं प्रधानं,
कुलेन किं शील विवर्जितेन,
वहवो नरा[2] नीच कुलेषु जाता,
स्वर्ग गती शीलमुपास्य धीरां ॥ १ ॥
गौरवं लभते लोके नीच जातोपि सद्गुणैः ।
सौरभ्यात्कस्य नाभीष्टा कस्तूरी मृग नाभिजा ॥ ६३ ॥ जो०

(३२) संग से वृद्धि (१)

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते । इंदु दर्शनने समुद्र । शृंगारेण रागः । विनयेनगुणाः । दानेनर्कीर्तिः । उद्यमेन श्रीः । सत्येन धर्मः । पालनेन उद्यानं । अभ्यासेन विद्या ।

---

1. दुर्वं, दूर्वा 2. बहुवोन र+चंदनादि वा शैत्य ।

न्यायेन राज्य। उचितेन महत्वं। औदार्येण प्रभुत्व। क्षमया तपः। पूर्ववायुनाः जलदः। वृष्टिभिर्धान्यानि। घृताहुत्या वह्निः। भोजनेन शरीरं। वर्षाकालेन नदी। लोभेन लोभः। ताड़नेन कर्णौं। पुत्रदर्शनेन हर्ष। मित्रदर्शनेनाह्लाद। जिन दर्शनेन पुण्यवर्द्धते। सर्वत्र संबधः।

दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते। तृणै वैश्वानरः। नीचसगेन दुःशीलता। उपेक्षया रिपुः। कड्डूयनेन कड्डूः। असतोषेण तृष्णा। व्यसनेन विषयाः। निंदया पापं। प्रवासेन राजा। विरहेण रात्रि। शोकेन दुख। ज्वरो घृतेन। सर्वत्र संबंध।

(३३) संग से वृद्धि (२)

सुवचने प्रीति वाधे, दुर्वचनें कलहो वाधे।
नीच दर्शने कुशीलता वाधे, वेरी करी दुष्टता वाधे।
अपथ्ये रोग वाधे, व्यसने विषय वाधे।
न्याइ राज्य वाधे, विनयें गुण वाधे।
दाने करी कीर्ति वाधे, उदार्यें प्रभुत्व वाधे।
क्षमाइं तप वाधे, निर्दयें पाप वाधे।
घृते ताव वाधे, तिम सत्यकरी विश्वास वाधे।
इत्यादिक संगथी वाधवुं जाणवुं।

उद्यमें लक्ष्मी, सत्येकरीधर्म, वनमालाइंकरी वनं, शृंगारें राग वाधे, भोजने करी शरीर, व्यापारे धन वाधे, जल पूरे नदी वाधे, लाभे लोभ वाधे, घृते वह्नि वाधे इत्यादि जाणवो।

(३४) संग से वृद्धि (३)

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते, दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते।
नीच दर्शनेन कुशीलता, उपेक्षया अरि कुटुंबं।
अपथ्येन रोगोवर्द्धते, कड्डूयनेन् कंड्डूवर्द्धते।
असंतोषेन तृष्णा, व्यसनैर्विषयाः, निंदया पापं।
घृतेन ज्वरोवर्द्धते, सत्समाचारेण विश्वासो वर्द्धते।
अभ्यासेन विद्या, न्यायेन राज्यं।
विनयेन गुणाः, दानेन कीर्त्ति।

औचित्येन महत्वं, औदार्येण प्रभुत्वं ।
क्षमया तपो वर्द्धते, उद्यमेन श्री वर्द्धते ।
सत्येन धर्मो वर्द्धते, पालनेनोद्यानं वर्द्धते ।
चंद्र दर्शनेन समुद्रो वर्द्धते, शृंगारेण रागो वर्द्धते ।
पूर्व वायुना जलदो वर्द्धते, वृष्टि भिर्धान्यानि ।
घृताहुत्या वह्नि वर्द्धते, भोजनेन शरीरं ।
जल पूरेण नदी, लाभेन लोभो वर्द्धते । (३६ जो०)

(३५) विनाश (१)

तप क्रोवे विणसे, सनेह विरहे विणसे ।
व्यवहार अविश्वासे विणसे, गर्वइ गुण नासे ।
धान्य अवरसणे नासे, रूप दूर्भाग्ये नासे ।
भोजन तेले नासे, सरीर अयत्ने नासे ।
तिम धर्म प्रमादे नासे, इत्यादिक जाणवा ॥ पू० ॥

(३६) विनाश (२)

तप क्रोधेन विनश्यति, स्नेहो विरहेण विनश्यति ।
व्यवहारो अविश्वासेन विनश्यति, गुणा गर्वेण विनश्यति ।
कुल स्त्री अरक्षणेन विनश्यति, धान्यं अवर्षणेन विनश्यति ।
रूपं दुर्भाग्येन विनश्यति, भोजनं तैलेन विनश्यति ।
शरीरं अयत्नेन विनश्यति, धर्मस्तथा प्रमादेन विनश्यति । ३७। जो०

(३७) किससे किसका विनाश—३ इणां विना इणांरो विनाश

अनभ्यासेन विद्या नश्यति, प्रमादेन द्रव्यं नश्यति ।
दुर्वचनेन मैत्री नश्यति, लोभेन विवेको नश्यति ।
अनौचित्येन महत्वं नश्यति, अन्यायेन कीर्त्तिर्नश्यति ।
कुसंगेन धर्मो नश्यति, आलापेन कुलस्त्रीत्वं नश्यति ।
अनायत्तेन नैन्यं नश्यति । ३२ जो०

(३८) विनाश—४

जिमि विलंबइ विणसइ काज, कुप्रधानइ विणसइ राज ।
अणबोल्या विणसइव्याज, कसतूरी विणसइ प्याज ।
पडषि विणसइ दान कंठ विण विणसर गान ।
लूअइ विणसइ पान, लूण विण विणसइ धान ।
कुमरणइ विणसइ अवसानु, व्याधइ विणसइ सुखान ।
पिसुनइ विणसइ राज सनमान, कुसंगत विणसइ संतान
दवानल विणसई उद्यान, आर्त्तइ विणसइ ध्यान ।
कुपंडितइ विणसइ छात्र, व्ययनि विणसइ गात्र ।
वृक्षइ विणसइ प्रसाद, सिंदूरइ विणसइ साद ।
वेगइ विणसइ नेत्र, तीडइ विणसइ सेत्र ।
विषप्रयोगि विणसइ रसवती, पाक चमडोये विणसइ कणक वाक ।
कुव्यसनइ विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसाअइ विणसइ सद्धर्म ।

इति विनास वाक्यानि । कु०

(३९) इनके बिना ये नहीं (१)

गुरु बिना वाट नही, द्रव्य बिना हाट नहीं ।।
सूतार विना खाट नहीं, सण विना त्राट नहीं ।।
काष्ठ विना पाट नहीं, घात विना काट नहीं ।।
कुंभार विना माट नहीं, सोनार विना घाट नही ।।
माथा विना ठाट नहीं, बाजा बिना नाट नहीं ।।
जव बिना वाट नही, सोग बिना उचाट नही ।।
स्त्री बिना पुत्र नहीं, रू विना सूत्र नही ।।
ग्राम बिना सीम नहीं, मन विना नीम नहीं ।।
धन बिना नर नहीं, मां बिना पीहर नहीं ।।
दान बिना जस नहीं इक्षु बिना रस नहीं ।।
आकश विना मेह नहीं, बाधव बिना स्नेह नहीं ।।
दरसन बिना सिद्धि नहीं, पुण्य बिना रिद्धि नहीं ।।
झाड विना साखा नहीं, रोग बिना राखा नहीं ।।
सील बिना धर्म नहीं, पाप विना कर्म नहीं ।

सूर्य बिना तेज नहीं, परीणि बिना हेज नहीं ॥
भणया विना मर्म नहीं, कुल बिना सर्म[२] नहीं ॥
तिम दया विना धर्म नहीं ।

(४०) इनके बिना ये नहीं (२)

पुण्यं बिना सुख नहि, अग्नि बिना धूमो नही ।
वीजं बिना अंकूरोद्गमो न, सूर्यं विना दिवसो न ।
सुपुत्रं बिना कुलं न, गुरुपदेशं बिना विद्या न ।
भाव सिद्धि बिना धर्मो न, धनं बिना प्रभुत्वं न ।
दानं विना कीर्त्ति न, भोजनं बिना तृप्ति न ।
वीतरागं बिना मुक्ति न, साहसं बिना सिद्धि न ।
जलं विना पावित्र्यं न, उद्यमं बिना धनं न ।
कुलांगना बिना गृहं न, वृष्टिर्विना सुभिक्षं नही ।
धर्म्मेण विणा जइ चिंतियाइं, ॥ (६५ नो०)

(४१) थोड़े के लिए अधिक विनाश मत कर

काच खंड कारणि म नीगमि चिंतामणि
वाटी कारणि अरहट्ट म वीकणि
अंकार[३] कारिणि कल्पवृक्ष म धारि
कागिणी कारणि कोटि म हारि
कीलिका[४] कारणि देवकुल म चालि
विषय सुख कारिणि मानुषउ[५] जन्म म हारि+ ॥ पु. श्र.

(४२) अल्प के लिए बहुत का नाश (२)

अल्प के लिये बहुत का नाश
जुको जिन धर्म लही प्रमाद करइ ।
ते जाणे ठीकरी कारणि अमृत कुंभ फोडइ,
निष्कारण आजन्म तणउ स्नेह त्रोडइ ।

---

१ सर्म २ गर्व । ३ अंकार वदि ४ खीली ५ मानखउ
+"कोचिन्नूवदि ऋद्धि च इउ दासत्तणं अहिलसइ
सुंदं चिंतारयण, कायमणिं कोवगि एहेर ॥
उक्त पाठ एक अन्य प्रति में अधिक मिलता है ।

तेम० कामधेनु अलीढ़ी[1] मेल्हइ,
चिंतामणि रत्न आवंतउ पाय पेलइ।
कल्पद्रुम आपणा घर तउ उन्मूलइ,
प्रवहण मेल्ही आपण पउ समुद्र माहि बोळइ।
ते सतु० सोना तणइ कारणि पित्तल तोलइ,
अमृत तणी आस लगइ विस घोलइ। ७। जो.

(४३) थोड़े के लिए अधिक विनाश (३)

ठीकिरि कारणु कोइ काम कुंभु फोड़इ, निष्कारण[2] कोइ आत्म स्नेह तोडइ
कामधेनु कोइ ढीली मेल्हइ, चिन्तामणि कोइ हाथी पेल्हइ
कल्पद्रुम कोइ उन्मूलि नाखइ[3] लक्ष्मी आवती न कोइ राखइ
जिन धर्म लही कोइ प्रमाद सेवइ[4]। पु. अ.

(४४) अति (१)

निरमलन ते नीठवानइ, अतिघणु मार ते धीठवानइ ॥
अतिघणुं नेह ते त्रुटिवानइ, अतिछणुं विलोइवु ते फूटिवानइ ॥
अति घणु खाइवुं टिवानइ, अतिघणुं ढील ते छूटिवानइ ॥ (खृ)
अतिघणुं तानिवुं त्रुटिवानइ, खड़ भड़इ चोर ते फाटिवानइ ॥
अतिघणुं गरथ ते खाटिवानइ, अति बुरी बातते टाटिवानइ ॥
इति वचनानि ॥ कु.

(४५) अति (२)

अति ताणिउ त्रुटइ, अति भरिउ फूटइ।
अति लइउ वाडि फडइ, अति माथिउ काल कूट हुइ।
अति चाविउ कूचा थाइ।

(४६) करने में असमर्थ

छीतरि छासि[5] केतलउं पाणिउ खमइ[6]
पातलि छाया केतलउ आतप[7] गमइ।
कातरु केतलु रणांगणि जूझइ।
निरक्खरु केतलु कहिउ बूझइ।

१–अलाढी २ निक्कारणि, ३ लाखइ ४ राचइ ५. छिद्रीच्छासी, छीदरी ६ सहइ
७. नीगमइ।

कृपणि केतलु दानु दीजइ ।
अपरोधि केतलु तपु कीजइ ।
आदि केतलु तूरु वाजइ ।
पाछिलउ मेहु केतिलउ गाजइ ।
तिणि प्रकारि कारिमउ नेहु केतलउ छाजइ (पु० अ०)

(४७) करने में असमर्थ २

छीदरी छासि त्रि पाणी न खमंइ ।
पातली छाया केतलउं आतप गमइं ।
आदकइं केतउं वाजइ, कृपण पुरूषि केतउं दीजइ ।
गर्दभ केतउं वूझइ, कातर केतउं झूझइ ।
वाझि गाइ केतउं दूझइ, समुद्रपाणी केतउं पीजइ ।
दुर्जन केतउं वचनि लीजइ, पापी घणे उपदेशे तिम न भीजइ ।
स्वभावोनोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा ।
संतप्तान्यपि तोयानि पुनर्गच्छन्ति शीतताम् ॥ १-१ जे०
स्वभाव अपरिवर्तन दुग्ध धौतोपि काकः किं हंसायते । सुपुष्टो अश्वा किं सिंहायते । सुष्टु अचरित्तोपि खलः किम श्वायते । सुघट्टितोपि काचः किं वैडूर्य मणि लीला वहति । इक्षु रसैः सिक्तोपि निंबः किं द्राक्षा फलानि प्रसते । सम्यग् उत्तेजितापि । री री किं सुवर्णच्छायां विभर्ति । सु संस्कृता अपि यवाः किं शालि लीला मा कालयंति । सुपूजितोपि खलः किं सज्जनायते । जलपूर्णोपि पल्वलः किं समुद्रायते ॥ ॥ छ० पु० ॥

(४८) बराबरी कैसे करेगा

चहूप चरित्रोपि दुर्जन एव, दुग्धधौतोपि काकः किं हंसायते ।
सुपुष्टोपि श्वायते, इक्षुरस सिक्तोपिनिंबः किमुद्राक्षयते ।
सुष्टु उपचरि तोपि खरः किमश्व लीला विभर्त्ति ।
सु श्रृंगारिनो पि मयुः किमु गज साम्यं लभते ।
सुष्टु उत्तजितोपि री री सुवर्णच्छायां विभर्त्ति ।
गंगाजल स्नापितोपि मार्जार किमु भगवच्छुचिर्भवति ।
सुधौतमपि मुराभाडं किं पवित्रतामियर्त्ति । ४० । जो०

(५०) अधिकस्य सार्थकत्वम्

यदि शक्तवो बहव स्ततः किं समुद्रे प्रक्षेपणीया ।
यदि तैल बहु ततः किं पर्वता लेपणीया ।
यदि बीजं घनं[1] ततः किं ऊषरे वपनीय[2] ।
यदि सुवर्णं बहु ततः किं गवा श्रृंखला कार्या ।
यदि चन्दन बहु ततः कपाटं कार्यं[3] ।
यदि दुग्धं बहु ततः किं सर्पाय देयं[4] ।
यदि घनानि रत्नानि ततः किं कउद्दापनीया[5] । उ०

(५१) अधिक होने पर भी व्यर्थ खोने को नहीं होता

सत्पुरुष घणी हुई लक्ष्मी ।
सुपात्र इ हीज माहि वावरइं, किंतु न जिहा तिहा सर्वथापि न नाखइ ।
जउ किमइ घग्गा सातू, तउ किसउ समुद्र माहि घातिवा ।
जउ घणउं तेल, तउ किसउं पर्वत चोपडवा ।
जउ घणउं बीज, तउ किसउं ऊखरि वाविवउं ।
जइ घणइ सुवर्ण, तउ किसउं साकल कराववी ।
जउ घणउं दुग्ध, तउ किसउ सर्प पाइवउ ।
जउ घणा गजेन्द्र, तउ किसउं भार वाहविवउ ॥११ जो०

(५२) विनाश करके विचार करना

प्रथमं शिरच्छित्वा पश्वादग चुंबनं ।
प्रथमं गृहं प्रज्वाल्य तस्यैव गृहस्य कुशल वार्त्ता पृच्छनं ।
पर प्राण हरण पश्चादनुशोचनं ।
पदभ्या मीनान्मारयंति मुखे वेद वचनं ब्रूते । सू०
यथा स्वयं समुद्रे जलानि स्वयं मेरकल्पदृगुमोद्गमः ।
जले पावित्र्यं लक्ष्म्याः सौभाग्यं[6] तथा स्वयं पुण्यवंता सर्वांगे सदयः ।
१०३ जो०

---

१. बहु । २ क्षेप्यं । ३. युग्म । ४ स्पेक्षेपणीय । ५. काकोडायेनेन ।
+यदि गजा बहवस्तदा किं ईंधनाहरेण प्रयोज्या. ॥छ॥ एह दान समस्त प्रधान ॥पु०॥
पु० प्रति में उक्त पाठ अधिक मिलता है ।
६. इसके बाद । स्वयंक कुमेरणा स्वयं कर्पूरे सौभाग्यं ।

(५३) अंतर

मिथ्यात्व सम्यक्त्व जिम अंतर
सज्जन दुर्जन जिम अंतर
सुख दुख ने जिम अंतर
पुराय पापने तिम अंतर,
छासि दूध ने जिम अंतर,
कपूर लवण ने जिम अंतर
करतूरी कज्जल जिम अंतर
कुंकुं केसर जिम अंतर
सुवर्ण पीतल जिम अंतर
गज उंटनें अंतर
आंब नींब ने जिम अंतर,
कइर कल्पद्रुम ने जिम अन्तर,
समुद्र कूप ने जिम अंतर,
खीर कांजिने जिम अंतर
कथिर रुपाने जिम अंतर,
तिम परस्पर अंतर जाणवो ॥ पू०

(५४) महदन्तर (२)

मिथ्यात्व सम्यक्त्वयोर्महदंतरं, सुजम दुर्जनयोर्मह० ।
सुखदुःखयोर्महदन्तरं, पुराय पापयोर्महदंतरं ।
छाया तपयोर्मह०, कर्पूर लवणयोर्मह० ।
कस्तूरिका अंजनयोर्मह०, कुंकम केसरयोर्मह० ।
सुवर्ण पित्तलयोर्मह०, गजोष्ट्रयोर्मह० ।
आम्र निंबयोर्मह०, करीर कल्पद्रुमयोर्मह० ।
सूर्य खद्योतयोर्मह०, समुद्र कूपयोर्मह० ।
क्षीर कांजिकयोर्मह०, रूपक टंकक सुवर्णयोर्मह० । २० । जो०

(५५) अंतर (३)

जेतउ अंतर मोक्ष नइ संसार, कृपण नइं उदार, ।
शोक नइ उच्छव, शालि नइ कोद्रव ।
सम्मान नइ परिभव, मेरु नइ सरिसव ।

साचउ नइं कूड़उ, समुद्र नइ कूपउ ।
लाख नइ रूपउ, राम नइ रावण ।
राणी नइ दासि, आछण नइ छासि ।
स्वर्ण नइ पीतलु, स्वर्ग नइ भूतलु ।
आदित्य नइं खजूयउ, राय नइ राकु ।
नक्षत्र नइ शशांकु, आतप नइ छाया ।
तेवड़उ अंतरु स्वभाव नइ माया ॥ ८७ ॥ जै०

आंतरा वर्णक

किहा मेरु, किहां सर्षप । किहा राम, किहा रावण ।
किहा नूपुर, किहा दामण । किहा सीह, किहा सिआल ।
किहा सुवर्ण, किहा इगाल । किहा कर्पूर, किहा कर्पास ।
किहा सामी, किहा दास । किहा द्राम, किहां रुउ । किहां सागर, किहा कुउ ।
किहा सामो, किहा सालि । किहा मुगदालि, किहा वल्लदालि ।
किहा सुपात्रदान, किहा मनः प्रधान ॥ छ ॥ पु०
जेवडउ अंतर द्राम नइ रुआ, जेवडउ अतर समुद्र नइ कुआ ।
जेवडउ अंतर राम रावण, जेवडा अंतर लाडू लवण ।
जेवड़ा अंतर साकर खाड, जेवडा अतर खडी खाड ।
जेवड़ा अतर सीआल नइ सीह, जेवडा अतर गुल खल ।
जेवडा अंतर पर्वत स्थल, जेवडा अंतर सुवर्ण लोह ।
जेवड़ा अंतर तरुण वृद्ध, जेवड़ा अंतर अकिंचन समृद्ध ।
जेवड़ा अंतर पंडित मूर्ख, जेवडा अतर प्रसाद पीडहर ।
जेवड़ा अतर पागड़ पाघ, जेवडउ अतर हरिण नइं वाघ ॥ छ ॥
किहा मेरु लक्ष योजन प्रमाण, किहा परमाणु ।
किहा क्षीर सागर, किहा लवण सागर । किहा काला गुरु किहा हीरा गुरु ।
किहा कल्पतरु, किहा अब तरु । किहा ताम्रपर्णी नदी प्रदेश,
किहा मरु देश । किहा उच्चैःश्रवा तुरंगम सार, किहा टार ।
किहां मुक्ताफल, किहा शुक्तिका शकल ॥ छ ॥ पु०

(५७) अंतर (५)

जेवडो अतर मेरु अने सरसिव ।
जेवड़ो माननें अपमान । जे० लोह अनें कंचन ॥
जे० रामनें रावण । जे० गर्दभनें ऐरावण ।
जे० हाथिनें ऊंट । जे० सीहने सीयाल ।

जे० गाइनें नोलीयो ।
जे० आंब[1] ने नीबोलियो ।
जे० राणीनें दासी, जे० दूधने छासि,
जे० [2]गोल ने खल, जे० गरुड ने घूअड [3]
जे० सुसील ने फूअड, जे० गाय ने छाली
जे० बहिन नें साली
जे० दीवाली नें होली, जे० वहू अने गोली ।
जे० हंस ने काग, जे अलसीया ने नाग ।
जे० वृद्ध नें वाल, जे० मल्लाखाडा ने पोसाल ।
जेहवो अंसर जीवनें काया, जे० मारि नें ।
जे० रत्न नै काकरै, जे० भिखारी नैं राजा
जे० धर्म नइ अधर्म, जे० शिव नै जैन ।
दयातेहवोअंतरजाणवो पू०.

(५८) अंतर (६)

जेवड़उ अंतर मेरु अनइ सरसव ।
जेवडउ अंतर मान अनइ परिभव ।
जेवड़उ अंतर लोह अनइ कंचन, जेवडउ अंतर राम अनइ रावण ।
जेवड़उ अंतर भइंसा अनइं एरावण ।
जेवड़उ अंतर हाथि अनइं ऊंट,
जेवड़उ अंतर पाथरसी अनइ खूंट ।
जेवड़उ अंतर सींह अनइ सीआल,
जेवड़उ अंतर गोल अनइ विआल ।
जेवड़उ अंतर राणी अनइ दासी, जेवड़उ अंतर दुध नइ छासि ।
जेवड़उ अतर लूण अनइ कपूर, जेवड़उ अंतर खजुआ नइ सूर ।
जेवड़उ अंतर पर्वत्त नइ स्थल, जेवडउ अंतर गुल नइ खल ।
जेवड़उ अंतर गरूड़ अनइ घूअड़, जेवड़उ अंतर फूटरसी नइ फूहड़ि ।
जेवडउ अंतर गाअ अने छाली, जेवडउ अंतर बहिन नइ साली ।
जेवडउ अंतर दीवासा नइ दीवाली, जेवड़उ अंतर पुण्यवंत नइ हाली ।
जेवड़उ अंतर हंस नइ काग, जेवडउ अंतर अलसिया[4] नइ नाग ।
जेवडउ अंतर वृद्ध नइ वाल, जेवड़उ अंतर मल्लाखाडा नइ पोसाल ।
जेवड़उ अतर जीव नइ काया, जेवड़उ अतर मारि नइं दया ।

(१६७ नो०)

---

१. नोकलि वेलीवाट २ लोकन्द ३. आंब नींब । ४ अलसला ।

(५८) अन्तरा (७)

जेवड अंतर मोक्षनइ संसार, कृपणनइ उदार ॥
शोक नइ उच्छव, शालिनइ कोद्रव ॥
सन्सानिनइ परभव, मेरुनइ सरसव ॥
साचिनइ कूड, तेजन तुरी ने धूड ॥
रामनइ रावण, सुमत्रनइ कामण ॥
राघणनइ दासि, दूधनइ छासि ॥
स्वर्णनइ पीतल, स्वर्ग नइ भूतल ॥
रायनइ राक, मसकनइ वाक ॥
नक्षत्रनइ शशाक, तोलउनइ टाक ॥
आतपनइ छाया, लुभावीनइ माया ॥
आदित्यनइ षजूअउ, वइरागीनउ जूअउ ॥
लाषनइ रूअउ, समुद्रनइ कूअउ ॥
एवडउ अंतर हूअउ ॥

इति अंतरावर्णन ॥ कु०

(६०) परीक्षा

दान दुर्भिक्षे परीक्षते, सुवर्ण कषपट्टे परीक्षते ।
पौरुषं रणे, वृषभ धौरेयत्व पके ।
वाग्मिता पर सभाया, परीष साहस दुर्दशायां परीक्षते ।
कुमित्रं आपदि प०, सन्मित्र व्यसनावस्थाया प० ।
पुत्रत्वं वृद्धत्वे प०, भार्या सपत्नी समागमे निर्द्धनत्वे च परीक्षते ।
विनयोच्चये शिष्यः परी०, बाधवत्वं पृथक् भावे परी० ।
तपस्वित्वं क्रोधे परी०, ज्ञान निरहकार त्वे परी०
तथा धर्मोपि निर्दंभत्वे प० ।
यतः—तद्भोजन यन्मुनिदत्त शेष सा प्राज्ञता या न करोति पापं ।
तत्सौहृद यत्क्रियते परोक्षेदभैर्विनायः क्रियते सधर्मः ॥ १८ । जो०

(६१) सहज वैर (१)

सहज वैर, जल वैश्वानरयोः ।
देव दैत्ययोः, आखु[1] मार्जारियोः ।

---

१ सारमेय

सिंह गजयोः, गो व्याघ्रयोः
काक घूकयोः पंडित मुर्खयोः ।
सुजन दुर्जनयोः, विप्र वाचंयमयोः ।
सर्प नकुलयोः, महिप तुरगयोः ॥ ३३ । जो० +

(६२) सहज वैर (२)

जलनें अगनि प्रीति, देव दैत्य नें प्रीति ।
मुषक मार्जार ने प्रीति, सिंह गजने प्रीति, गो व्याघ्रने प्रीति
पंडित मूर्खनें प्रीति. सजन दुर्जनने प्रीति ॥
सर्प नोलनें प्रीति, सौक सौकनें प्रीति ।
महिप तुरंगने प्रीति ॥
इत्यादिक अमेल जाणवो । पू०

(६३) ॥ गुण के साथ दोष भी रहता है ॥

जिहा गुरुआ[1] तिहां गाजणउ ।
जिहां कुलीन तिहां खापणउं ।
जिहां भाणउ[2] तिहां भउ[3] ।
जिहा भूंभ तिहां खउ ।
जिहां चोरी तिहा दोरी ।
जिहा चडणं, तिहां पडण ।
जिहां जन्म तिहां मरणु
जिहां रूलण तिहां भरण ।
जिहा रंग तिहा विरग ।
जिहां संयोग, तिहां वियोग ।
जिहा लाहउ तिहा छेहउ ।
जिहां रूसणउ, तिहां तूसणउं ॥ २८ । जो० +

+ 'पतिव्रता स्वैरण्योः' पाठ पु० प्रति में अधिक है

१. गुरुतर। २. मार्णाति। ३. भय।

+ जिसु वास तिसु अभ्यास। जिसी टीख तिसी मीख। जिसु आहार तिसू डकार। जिसु वार्वाद तिसु लगीट। जिसु पुण्य पाप कीजइ तिसू भोगवीइ। यह पाठ पु० प्रति में अधिक है।

जत्र तत्र तां खोजानइ खान, जा जीमइजांसक ज्ञान तां० भट्टारक भगवान ।
जां जी० तां गीत नइं गान, जा जी० तां तान नइ मांन ।
जा जी० तां विवाहनइ जांन, जा जी० तो फोफल नइ पांन ।
जा जी० ता । धर्म्म नइ ध्यान, जा जी० तां तपनइं उपधान ।
जा जी० तां, दरनइ मान ।
जा जी० ता लगिसरवाकान, जां जी० ता लगि मुंहडइ वान ।
जा पेट न पड़इ रोटिया, ता सवे गल्ला खोटिया । ततः ।

(६५) काम कोई करे फल अन्य को मिले

दंताश्चर्वंति उपकारो रसनायाः ।
क्रमेलको भारं वहति उपकारः पुण्यवता ।
खरश्चदन वहति भोगश्च भोगिनामेव ।
लिखनं लेखकस्य फलमागम वेदिना ।
मृदंगो घन घातान् सहते फलं तु श्रोतृणा ।
युद्धयंते सेवकाः पर जयः स्वामिन्न एव ।
वृक्षा फलति उपकारस्तु पाथाना ।
वर्षंति वारिदाः फलं तु कर्षकाणा ।
कदर्यो पात्र वित्तानां भोगो भाग्यवताभवेत ।
दंता दलंति कष्टेन[1] जिह्वा गिलती लीलाया ॥ ६६ नौ०

(६६) संसार

इस ससारि कवण एक आपदि नहीं आवी
बलि जेवडउ दानवु बाधउ
नलि जेवड़उ राजा विहलिउ
पाडव जेवडा वनवासु हूयउ
बलदेव जेवड़उ भाई विछोहु
रावण जेवडउ मृत्यु
माघ जेवड़उ पंडित भूख पाय सूणा
हनुमत एक कछोटड़ी
अनइ ससारि कोई सुखियउ नत्थि
शुक्र काणउ, सनीछरउ पागलउ

१. कष्टेन

चंद्रमा क्षयउ, समुद्र वड़वानलि दहयउ
रोहिणी गिरितणा कंद खणिया
कसं कीजइ कहा जाइयइ
आकास निरालम्बु, पातालि प्रवेश नहीं
मृत्युलोक असोच, वन सभय
समुद्र खारउ, इसउ जाणिउ धर्म कीजइ (पु आ०)

(६७) संसार के दो छोर

एगमा धवल मंगल, बीजागमा कलह कंदल ।
एक गमा शोक, बीजी गमा विव्वोक ।
एक गमा आनंद, बीजा गमा आक्रंद ।
एक गमा कुतहलना[1] आरंभ, बीजा गमा भूभना[2] संरंभ ।
एक गमा सस्नेह कोमलालाप बीजा गमा वियोग विप्रलाप ।
एक गमा अद्भुत श्रृंगार, बी० सर्वस्वायहार ।
एक गमा मादल ना धोंकार, बी० शोकना हाहाकार ।
एक० शंकना[3] ओंकार, बीजा० रोग तणां विकार ।
एक० विद्वांस नी गोष्ठी, बी० मद्यपना कल कल ।
एक० वीणा तणा निनाद, बी० दुःख तनु विषाद ।
एक० अद्वितीय रूप, बी० विभत्स कदर्य विरूप[4] ।
एवं विध संसार, दुःख तणउ भंडार ।
सर्वथापि असार जाणिवउ ॥ १४ । जो०

(६८) ससार स्वरूप (२)

एक गामि धवलमंगल, बीजे गांमे कलह कदल ।
एक गामे आनन्द, बीजे गांमे आक्रन्द ।
एक गामे विचित्र क्रीडारंभ, बीजेगांमे समरसरंभ ।
एक गांमे आलाप संलाप, बीजे गांमे खावाना कलाप ।
एक गांमे मोटाहार, बीजे गामे रहिवाना उत्पाट ।
एक गामे नवनवा श्रृंगार, बीजे गांमे शोकना भंडार ।
एक गामे मादलना धोंकार, बीजे गांमे रोवाना हाहाकार ।
एक गांमे शंखना ऊंकार, बीजे गांमे रोवाना रोंकार ।

---

१. विचित्र क्रियारंभ । २ समर । ३. सखना । ४. कुरूप ।

एक गामे भलो आहार, बीजे गामे पाणीना विकार ।
एक गामे भला स्वरूप, बीजे गामे दीसैं माहाकुरूप ।
एक गामे विविधना सुख, बीजे गामे अनतना दुख ।
एक गामे उत्तमनी शोभा, बीजे गामे नीचनी कुशोभा ।
एक गामे भलो बाजार, बीजे गामे दुःखना भंडार ।
एक गामि दीसे झलामल बीजे गामे महा हलाहल ।
एक गामे मोटा महल, बीजे गामे झुंपडा माहि (पणि) खलभल ।
इति[1] संसार असार, महादुखदातार इत्यादिक जाणवा । पू०

(६६) शरीर

शरीरु बाहिरि कुंकुम कस्तूरिका वासियइ,
अभ्यंतरि अशुचि रसि विणासीचइ ।
सरीरु बाहिरि[2] पहिरइ सुवरण[3] घडिउ,
अभ्यतरि अस्थि खडे जडिउ ।
सरीरु बाहिरु श्रीखडि गोलामि अभ्यगियइ,
अभ्यतरि रुधिर रसि रगियउ ।
सरीरु बाहिरि पाटु वस्त्र पहिराविइ,
आभ्यंतरु मांसि पिण्डि भावियइ ।
मुख लीजइं सर्व सारु आहारु,
महानीसइ खाटउ उद्गारु ।
नासिका सुगंध गध प्रतिसरइ,
महापुण सूगावणउ श्लेष्म नीसंरइ ।
गानि साभलियइ मधुर गीत पटलु,
महा नीसरइ तउ पकु समानु मलु ।
लोचनि लगाड़िय स्निध कज्जलु,
महा नीसरइ पीहे सहितु जलु ।
कुड़ि खडहड़ेवा मणी[4], आयुष्क तूटण मणी[5] ।

पाठान्तर—१. इम २. वाह्य ३. सोनउ ४ हामणी ५ त्रूटण

हंस तउ ऊडस मणउ, इसउ असारु,
सरीर संयोग ईय ऊपरि ईमहि लोक व्यामोह करइ । † पु० अ०

(७०) अर्थ

सविहु परि समर्थ, अर्थ लगी महत्त्व । अर्थ नउ प्रभुत्त्व ।
जेह हुइं द्रव्य, तउ सविहु हुइ संसेव्य ।
द्रव्य लगी अणहूंता गुण, द्रव्य तउ सगलाइ जाइ अवगुण ।
द्रव्य लगी पूजइं आस, सहु कोई द्रव्य नु दासु ।
द्रव्याढ्यना विता करइं लोकु, द्रव्याढ्य तउ वसइ वेगलउ शोकु ।
द्रव्य तउ उपरोधीइं वांका, द्रव्य नउ धणी बोलइ फांकां ।
सहू को सांसहइ, अदत्तु हूतउ प्रतिष्ठा लहइ ।
इस्युद्रव्य ॥ ३२ ॥ वै०

(७१) द्रव्य की अशाश्वता

द्रव्य ऊपार्जिउ कुणहि नणउं शाश्वतउ न हुई ।
कुणहि नउ द्रव्य उपार्जिउ चोर हरइ [1] ।
कुणहि नउ द्रव्य राउलि उपगरइ [2] ।
कुण० द्रव्य अग्नि उपद्रवइ ।
कुण० समुद्रमांहि द्रवइ ।
कुणहिनउ नट विट फेडइ ।
कुणहि० खूंट खरड झगडइ त्रोडइ ।
कुण० द्रव्यि वाट पडइ कुण० भुहिं सडइ ।
कुणहइनउं रोलि जाइ, कुण ० वाणउत्र खाइ ।
कुणहइनउ' साझइ [3] त्रूटइ, कुण० द्रव्य गुणि [4] फूटइ ।
इसी परिद्रव्य ऊपार्जिउ' शाश्वततउ' कुणहिनउ' न हुइं ॥ ८२ ॥ जो०

(७२) धनोपार्जन रक्षण

चड़ कष्टि धनुऊपार्जियइ
कवणु हल खेडि, सयर तणउ ठाउ फेड़ी धनु ऊपार्जइ

---

[1] इदं नगीर कस्तूरी कर्पूर प्रभृतीन्यपि
द्रा यत्नेन पायोद पयाम्भूपट भूरि च ॥
१. उपगरइ २. उपहरिरि ३. साम्फइ ४. गुणे, गूणि

कवणु हाट तणउ पासउ माडी आपणपउ धर्महूतउ[1] खाडिउ धन ऊपार्जइ
कवणु सीय[2] तापु वाउ सहिउ देसांतर रहिउ[3] धनु ऊपार्जइ
कवणु समुद्र माहि थाइ ऊपरि तिरीइउ धनु ऊपार्जइ
कवणु पर घरि काम करिउ छाण पूंजउ ऊधरी धनु ऊपार्जइ
कवणु आठ पाउ सचिउ आपणउ पेटुवंचिउ धनु ऊपार्जइ
आपुणि नइ सुपात्रि न वेचइ तउ अप्रमाणु
नाम धन शास्वतु, कवणहइ उपार्जियउतं चोर हरइ
कवणहइ राखे उपगरइ
कवणहइ अग्नि उपद्रव करइ
कवणहइ विट्ठ० नाट्ठ०विद्रवइ
कवणहइ झगड़इ जाइ
कवणहइ वाणत्रु खाइ

(७३) अथ लक्ष्मी चचलत्वं

जिसउ पिप्पलु तणउ पत्रु[4], जिसउ हाथीया[5] तणउ कर्णु[6] ।
जिसी चिहुं प्रहर तणी छाया, जिसी रावण तणी माया ।
जिसउ संध्या तणउ रागु, जिसउ दुर्जन तणु विरागु ।
जिसउ तरुणी तणउ कटाक्ष विक्षेपु, जिसउ संग्रामि[7] कातर तणउ आक्षेपु[8]
जिसउ वीज तणउ झलकार[9],
जिसुं इंद्रियाली तणउ इंद्रियालु, तिसउ विभवु आलमालु ॥

(७४) राजा के चंचलत्व की उपमा (२)

"अथ राजानें धर्म चचल" सारिषा
जेहवो पीपलनोंपान, जिम कुंजरनो कान ।
जिम असतीनु मांन, जिम अदातानुं दांन ।
जेहवो अर्कंठीयानो कान ।

---

१. सयर २ शीतवात ३ भमी

÷ अधिकपाठ—कुणहू परायइ घरि दास कर्म करी छाण पूजेउ महतरि वरी द्रव्य ऊ०
कुणहू भूख त्रस सही मार्ग माहि रही द्रव्य ऊ०
कु० कूड कपट करी पापि आपणउ पिंड भरी द्रव्य ऊ०
कुणहू परायउ रण भाजी आपणउं पुण्य गाजी द्रव्य ऊ०
कुणहू भीखी भमाडी आपणउ सपरू विनडी द्रव्य ऊ०

४ पात, पर्ण ५. हस्ती ६. कान कर्ण ७. रण ८. विक्षेप ९. अलकलउ ।

जिसो संध्यानो राग, जिसो भ्रमरीनो पाग ।
जिसो माकडनो वइराग ।
जिसो विजलीनो स्यात्कार, जिसो पाइणिनोपान ।
जिसो पांणीनो ठवको[1] जिसो लवा लीनी जीभनो लटको ।
जिसो खावानो गलको, जिसो पाणीनो खलको,
जिसो कागनो डोलो, जिसो समुद्रनो कल्लोल
तिसो राजा चचल जाणवो ।। पू०

(७५) थोड़े समय के लिये—(३)

जिसिउं संध्या तणउ राग, पाणी तणउ माग ।
जि० इंद्रधनुष, जि० वातोद्धूत तूल पटल ।
जि० वाताहृ ताभ्र पटल ।
जि० का पुरुष ना बोल, जि० पोला जांगी ढोल ।
जि० नदी तणउ वेगु, रात्रि पद्मीया नउ संयोगु ।
जि० हाथियां तणउ कान, ठाकुर नउ (राज) मान ।
जि० छोरडांनउ दांन जि० कंठहीन गान ।
जि० काला नी सान ।
जि० रानि रोइउ, दृष्टि बंधनउ जोइउ ।
जि० सउणानउ राज, अण बांधिउ छाज ।
जि० पानी पाज, जिसिउं निरभाग्यनउं काज ।
जि० सुईनो धाडि, जवासानी वाड़ि ।
एणइं परि कुमाणसनी लक्ष्मी ।
अश्व तरीणां गर्भो दुर्जन मैत्री नियोगिनां लक्ष्मी ।
स्थूलत्वं स्वयथुभवविना विकारेण न भवति ।। १०० जो०

अस्थायी व चंचल (७६)

नायका कटाक्ष विक्षेपवत् । विद्युल्लता विलासवत् ।
संध्या आडंबरवत् । वातां दोलित् तूलवत् । पवन प्रेखोलित ध्वजाग्रवत् ।
सज्जन कोपवत् । दुर्जन मैत्रीवत् । वेश्या स्नेहवत् ।
गिरि नदी वेगवत् । गजकर्णवत् । शरत्काल मेघवत् । इंद्रचापवत ।
कादिशिक नयन मेखोन्मेखवत । हरिद्रा रागवत् । इंद्रजालवत्, ।

---

१. ठबको

स्त्रीजन मानसवत् । वायु वेगवत् । मर्कट चेष्टितवत् ।
प्राणी गण जीवितवत्, कुशाग्र जल बिंदुवत् ।।छ। पु०

(७७) क्षणिक चंचल

आभातणी छाइ, कुपुरुष तणी बाह । आसाढ तणउ तूर, नदीतणउ पूर ।
राय तणउं प्रासाद, मर्कट तणउ विषाद ।
इद्रजालनउ पेखणउ सूप तणउ उठीगणउं ।
हरिद्रा तणउ रग, दासी तणउं सग ।
आबातणउ मउर, सीयाला तणउ प्रहर ।
गोदडा तणी वाट, पोइणा तणीसाट ।
पीपल नउं पान, राधउ धान ।
वडपण तणउं जायुं, ढीकूया तणउं पायउं, निगथ तणउ साटउं[1] ।
दीवानउ[2] तेज, मित्रनउ[3] हेज ।
कारटानउ भाग जमाई नउ लाग ।
मूर्खनउ पढ़िउ, जल कोसनउ मढ़िउं ।
उभा खरउ मोर, खासणउ चोर ।
ऊखरली खाट चद्रूउ, एजाणे पूरउ विगोउ ।
संध्यातणउ मेह, स्त्री तणउ नेह, तिसइ[4] लाभइ छेह ।

यतः

अग्नि[1] रायः[2] स्त्रियो[3] मूर्खाः[4] सर्पराज[5] कुलानि च[6] ।
नित्य यत्नेन सेव्यानि सद्यः प्राणि हाणि षट् । ९८ जो०

(७८) चंचल (२)

अभ्रच्छाया वच्चंचल, दुर्जन प्रीति वच्चचल, तृणाग्नि वच्चचल,
स्थलजल वच्चंचल, वेश्या राग वच्चंचल ।
कामिनी नयन विभ्रमवत् , विद्युल्लतावत् ।
संध्यासमय रागवत् , वाता दोलित पताका वत् ।
समुद्र कल्लोलवत् , संजन कोपवत् ।
गिरि नदी वेगवत् , करि कर्ण वेगवत् ।
शरत्काल मेघ इव, अभाग्यवता विभव इव ।
द्यूतकारालंकार वत् , पतंग रंगवत् ।

---

१ साट २ दीवाली ने ३ मात्रेई ४ तिमइ

चंचल वित्तं अतएव सुपोत्रे नियोज्यं । यतः---

उत्तम पत्तं साहू मज्झिम पत्तं च सावया भणिया ।
अविरय सम्म दिठी जहन्न पत्तं मुणेयव्वं ॥ १ ॥
व्याजेस्या द्विगुणं वित्तं व्यवसाये चतुर्गुणं ।
क्षेत्रे शत गुणं प्रोक्तं, पात्रेनंत गुणं पुनः ॥ २ ॥ ६२ जो० ।

(७९) चंचल वाक्य

जेहवउ चंचल कुंजर नउ कान, पीपल नउ पान ।
संध्यानउ वान, दुहागणनउ मान ॥
त्रिपहर नी छाया, रावणनी माया ॥
गोदंतीनी वाट माटीनउ घाट ॥
रावनउ भुउ, राकनउ भउ ॥
बादलनी छांह, कापुरुषनी बांह ॥
आढनउ तूर, पर्वताश्रिनदीनउ पूर ॥
वैद्यनउ पंडीगणउ, सूपडा नउ ठीगणउ ॥
इन्द्रजाल नउ पेपणउ, स्वाननउ धीवणउ ॥
छालीनउ ऊझ, स्त्रीनउ गूझ ॥
दासीनउ स्नेह, ऊन्हालू मेह ॥
ठारनउ त्रेह, धूलिनी वेह वेक्रीय देह, ॥
जेहवउ चंचल बीजलीनउ झबकउ ॥ मधुबिंदुआ नउ टबकउ,
मत्रेईनउ हेज, जेहवौ खजूआ नउ तेज
पाणीतणौ तरंग, पतंगनउ रंग ॥
माकडनउ विषाद, रावनउ प्रसाद ॥
जिसी चंचल स्त्रीनीजाति, उन्हालू राति ॥
त्रिणानी आगि, दुर्जननउ राग ॥
जिसउ चंचल मन जिसउ चंचल परेवन ।
जेहवउ चंचल तुरंगम, तेहवउ चंचल थीर संसारनउ संगम ।

इति चंचल वाक्यानि ।

(८०) मन

मन[1] चपल चंचल, देवताए पुण धरी न सकीयइं ।
क्षणि हिं जायइ सागरि, क्ष०[2] आगरि ।
क्षणहिं नदी-परि-सरि[3] क्ष० सरोवरि ।
क्षणहिं नगरि, क्षणहिझगरि[4] ।
क्षणहिं अंबरि, क्ष० भूधरि ।
क्षणहि पातालि[5], क्ष० कुद्दालि ।
क्षणहि भूतलि[6], क्ष० कुतूहलि[7] कुंभकार चक्रवत्[8] ।
मन एव मनुष्याणा कारण बंध मोक्षयोः ।
बंधस्तु विषया सगे मुक्तिर्निर्विषयं मनः ॥ ८६ ॥ जो.

(८१) ससुराल की स्थिति

वच्छे सासुरा तणी इसी स्थिति जाणिवी ।
सुसरउ ऊवेषइ, जेठ नीचउ देखइ[9] ।
वर[10] पुण लडइ[11], देवर नडइ ।
जेठानी कुसइ, देअरानी हसइ ।
नणद नर-नरावइ, सासु काम करावइ । +

(८२) विशिष्ट पदार्थ

(१)

लीला तउ महेश्वर तणी, सृष्टि तउ ब्रह्मा तणी ।
प्रज्ञा तउ बृहस्पति तणी, प्रतिज्ञा तउ राम तणी ।
त्याग तउ पाधि पति तणउ, पवनवेग तउ हनुमंत तणउ ।
मान तउ दुर्योधन तणउ , तेज तउ सूर्य तणउं ।
परिमल तउ पारिजात तणउ , निर्मलता तउ गंगा तणी ।
विवेकता तु नारायण तणी, बल तउ सुद्रिका वीर तणउ ।
सम्यक्त्व तउ श्रेणिक तणउ, ऋद्धि परिहारू तउ श्री शातिनाथ तणउ ।
अभय दानु तउ श्री शांतिनाथ तणउ, शील तउ श्री स्थूलिभद्र तणउ ।

---

१ मनु दइवि २. क्षणिजाइ ३. द्वीपान्तरि ४. झगडि ५. कुहिली ६. पातालोदरि ७. भूतलाभ्य तरि ८. तणा चक्र तणीं परिफिरतउ अछइ ९. अवढेठइ १०. वरदतु ११. भिडइ + सुख कहाछइ (अधिक पाठ)

अलोभता वेर स्वामि तणी, प्रति बोधता जंबू स्वामि तणी ।
तपु तउ दृढ प्रहारि तणउ ।
अल्प देशना प्रतिबोधु तउ चिलाती पुत्र तणउ, क्षमा गयसुकुमाल तणी ।
अति भोगता शालिभद्र तणी, अभिग्रह प्रतिपालना वंकचूल तणी ।
महा अर्थु तउ उघ पंत तणउ, चउवीस जिणालय तउ अष्टापद तणउ ।
सिद्धि क्षेत्र तउ विमल गिरि तणउ, शास्त्र विचारणा हरिभद्र तणी ।
देव भक्ति प्रभावती तणी, द्यूत-व्यसन नल तणउ ।
मद्य व्यसन यादव तणउ, सत्य वचन कालिकाचार्य तणउं ।
अनुमोदना मृग तणी भावना इलाती पुत्र तणी ।
जैन प्रभावना विष्णु लती तणी, नदी वर्णना गंगा तणी ।
स्नेह तउ लक्ष्मण तणउ, निस्नेहता नेमिनाथ तणी ।
जैन भक्ति राय कुमारपाल तणी, नगरी वर्णना लंका तणी ।
राज वर्णना मलती तणी, श्री पुरुष वर्णना श्रीविष्णु तणी ।
राज वर्णना श्री राम तणी, काव्य वर्णना माघ पंडित तणी ।
चित्र निर्मलता कुमार विहार तणी, शीलु राजिमती तणउ ।
लब्धि श्री गौतम स्वामी तणी, दानु धन सार्थवाह तणउ ।
स्थिति ऋषभदेव तणी, शीलु सुदर्शन तणउ ।
शीलु सुनंदा तणउ, पुण्य चंदन बाला तणउं ।
धर्म दया तणउं, गणधरता पुंडरीक तणी ।
बलु बाहुबलि तणउ, चक्रवर्त्ती पदवी भरतेश्वर तणी ।
बुद्धि अभय कुमार तणी, एवं विध नामा निसीम ॥६८॥ मु०

(८३) विशिष्ट पदार्थ (२)

(२)

माटीवान, पाटणी पान ।
आहेडीउ सणाहु, हथियार धनुहु ।
अगरिउ लाकडूं,........।
सोरठी गाय, मलउसी जाइ ।
कस्मीरउं केसर, मरहट्टूं वेसर ।
पूर्व दिसिउ भाट, शवन तणउ पाट ।
मेघाडंबर छत्र, सिंघल उरउं पत्र ।

आबू तणउ देवड़ो, पाटण तणो सेवडो।
उजेणी तणु ढोर, अजयमेरु तणो मोर।
वाणारसीउ धूर्त्त, काश्यप गोत्र।
चडाउलउ ठिगु, मालवीउ बगु।
नान्हा बोलो लाड उत्तरापंथउ चाड।
छत्रीस नाणा, त्रिणिसइ साठि क्रियाणा।

(स० २)

(३)

माणिक दंडउ हस्ती, खुरसाणिउ घोड़उ।
मरुस्थली नउ ऊँट, दंडाहि नउ बलद।
भीमसेन नउ कर्पूर, जागड़उं कुंकुम।
काकतुंडउ अगरु, दस[1] बंधउ धूप।
सिंहलउ दीवउ हार, बावर कुलनी गजवडि।
गाजणी गोजी, वाणारसी काची।
खेडावहा चाउल[2], मालविउ माडउ।
पाडवसिंडं खाडउ, गूजरउ लोटउ।
आबूउ रोटउ , अबूउ[3] दही।
एउ वस्तुना आकरु। १५८। (स. १) (१५८ जो०)

(८५) विशेषताएँ (४)

प्रथम पिण्ड पाणी रौ, रूपौ तौ जावर रो, दरसण तौ परमेसर रो, ताड़[4] मानसरोवर रो, हस्ती तो कज्जली वनरो, पदमनी सिंहलद्वीप री, चतुराई गुजरात[5] री, वासौ तौ हिन्दुस्थान रौ, स्वाद तो जीभ रो, मतो तो पंचो रो, खेती तो वाड़ री, घीणो तो भैंसरो +, देणो तो माथा रो, गालतो माता री, चूड़ौ दाँत रौ, विसवास गरो हथियार डाग रो, आदर माया रो, गढ लंकारो, वाणी व्याकरण री ×, तिलक केसर रो, भगतबच्छल रो, वाजो नीसान रो, हटवाड़ो कटक रो, चोहटा भीड दिल्ली री, युद्ध जरासंध रो, वाण अरजुन रो, गदा तो भीम री*,

१ दम। २ चउल। ३ आवूउ।

४ थाट। ५. ग्वालेर + हाट कोड को (विशेष) × कवित्त पिंगल को।

मरणो महा पुरुष को, सभा इद्र की, ग्वालनद को, निद्रा कुमकरण की, भेष वद्री को, सेव भगवत की (विशेष)।

* गाहड़ खत्री को, कूख कुता की, यौवन भानुमतो को। मृग मडोवर को, ऊंट जालोर को।

कंकण केदार री, घोड़ी पाणी पंथरी, पुरष पंजाब रो, माडा मालवारा, मेहतो मेवाड़ रा, राजा तो भोज; राणी तो दैंमती, ढाल तो गैडारी, बरछी ऊमट री; कटारी सिकरोदावाद री, रूप तो कामदेव रो, तेज सूरज रो, अमृत चंद्रमा रो, ऋद्धि सिद्धि गणेश री, वड़ पिराग रो, चावल[1] कचरी बागड़ री, लूण[2] सैंधवरो, दया मारु खडरी, सहिर तो लाहौर, दरवाजा अहमदाबाद रा, छाली परबत राजरी, भैंस वडाणा री, वलद हडवी जात रो[3], वेटो तो कलंबी[4] रो, घात तो कंचन री, पुण्य परव रो, सत सीता रो, हूकड़ाइ जाट री, झगड़ो गूजर रो, चोरी थोरी वागरी मीणां री, बुद्धि तो मुगल महाजन री सदासुबुद्धि जतीरी, कुबुद्धि ब्राह्मण री, साचो हीयो धोबी गाडरी रो, भाजणो कायर रो, चोट गोली री, देवल आबु रो, पान मघीया रो, वाव सोलीर रा, वाग नवलखो, तमाखू सूरत री, दिन तौ पुण्याइ रो, वार तो राजा रामचंदरो। कौ०

(८६) अपने वर्ग में विशिष्ट पदार्थ

देव मध्यि इन्द्रः, तार मध्यि चन्द्रः।
पाखिया माहि हंस, जाति मांहि चौलुक्य वंशः।
देश मध्यि मगध देशः, दर्शन मध्यि जैन वेसु।
तिर्यंच माहि सिंघु, धान्य मांहि व्रीहि।
रागु मांहि पंचम रागु, वाणी मांहि तर्क वागु।
तेजस्वी मांहि सहस किरणु, समुद्र मांहि संयंभू रमणु।
राय मध्यि श्री रामु, हाथिया मांहि ऐरावणु।
वस्त्र माहि नेत्रु, काव माहि वेत्रु।

---

१. चोखा। २. वटाग। ३. कांकरेची। ४ उलंबी को।

पुनः विशेष—

मेघ वद्री को। सेव भगवंत की। गृद्वडा वडाणारा। मसीत शंकर की। माडणी रायपुर की। पीठ दिल्ली की। ऊचाइ मेरू पर्वत की। व्रत सील को। पर्व पजूसण को। पुहप चंपा को। लिखियो विधना को। फल नालेर को। फूल कमल को। न्याय रामचंद्र को। रूप कंदर्प को। तेज सूरज को। दान कर्ण को। पर दुख कातर राजा विक्रम। नीर गंगा को। जटा शंकर की। सीत उत्तर खट को। राव भुगली की। राग केदारो। मेह भाद्रवा को। धर्म मांहे धर्म दया। सेना चक्रवर्ती री। तीरथ सेत्रू जो। वल तीर्थंकर रो। सुख तो संतोष रो। बुद्धि अभय कुमाररी। रिद्ध शालि भद्र की। लवधि गोतम स्वामी री। केवलज्ञानी सामान्य। शास्त्र माहि सिद्धान्त। वाजित्र माहि भभान्त। (स ४)

कला माहि गीतु, धातु माहि पीतु ।
सुगंध माहि कस्तूरी, मृतिका माहि तूरी ।
नगरी माहि काती, पुष्प माहि जाती ।
रितु माहि हेमन्तु, तीर्थ माहि शत्रुंजय ।
पर्वत माहि मेरु, वृक्ष मांहि कल्पवृक्ष ।
रत्न माहि चिन्तामणि, नदी मांहि गंगा ।
तिम धर्म माहि जिन धर्म्म ॥ ८५ ॥ पु०

(८७) श्रेष्ठतर

जिम पर्वत मध्य वर्णियइ मेरु,
तुरगम मध्य पंच वल्लहउ किसोरु ।
हाथिया मध्य ऐरावणु, दाणव मध्य रावणु ।
पुष्प मध्य कमलु, पाषाण मध्य स्फटिकोपलु ।
तिम अमुक मध्य अमुक । (पु० अ०)

(८७) गुण में विशिष्ट पदार्थ

न्याये रामः
संधायां चाणिक्यः
माने रावणः सुयोधने
सौर्य्ये राम सिंहौ ।
साहसे विक्रमादित्य जीमूत वाहनो ।
महसि मार्त्तण्डः
धीरत्वे रामः
शक्तौ कार्तिकेयः ।
विद्याया भारती,
वाचालुताया वृहस्पतिः
दाने कर्णः
मंगलदाने कल्पद्रुम कामधेनु ।
चिन्तामणि घटाद
···राव वज्रकुमारः जीमूतवाहनः
वाग्या वाल्मीकिः
कलासु चन्द्रः

सत्ये हरिश्चन्द्रः युधिष्ठिरः
भक्तौ लक्ष्मणः
स्थैर्ये मेरुः
विवेके बृहस्पतिः
कीर्त्तौ······
······यां इन्द्रः
सौहार्दे सुग्रीवः॰
गाम्भीर्येऽब्धिः
सौभाग्ये कामः
दयायां युधिष्ठिरः
आज्ञायां लंकेश्वरः
लावण्ये समुद्रः
उद्यमे रामः
गतौ राजहंसः वृषभश्च
स्वरे पिक वीणा।
केके वंश मधुकराः।
रूपे जयन्तः
अनल कूबरा
विनेय पुरुष नकुलाश्च ॥ १०२ ॥ (मु०)

(८८) अनुपमेय पदार्थ

(१)

गंगा समउं जल नहीं,
माघव समउं देव नहीं।
रवि समउं तेज नहीं।
अथवा—
मेघ समउं जल नहीं,
बांह समउं बल नहीं।
अन्न समान हेज नहीं,
अग्नि समान तेज नहीं। ॥ ३५ ॥ स० १

(८९) अनुपमेय पदार्थ (२)

(२)

क्षमा समान धर्म नही[१], साचा समी पावडी नहीं ।
ओंकार[२] समउ मंत्राक्षर नहीं[३], मदन समउ धनुर्द्धर नही ।
लवण[४] समउ रस नही, सोना[५] समउ रूप नहीं ।
शील समउं शृंगार[६] नही । ॥ ल ८४ ॥ स० १

(९०) दुर्दशा-ग्रस्त होने पर भी विशिष्ट

जउ सूकी तोइ वउलसिरि ।
जइ वींधी तोइ मोतीसरी ।
जइ भागउ तोइ वाराहउ ।
जइ थकाउ तोइ सेराहउं अ. ।
जइ खांडउ तोइ चदु ।
जइ बालउ तोइ इदु ।
जइ ताव्यउ तोइ काचनु ।
जइ घसियउ तोइ चदनु ।
जइ कालो तोइ कस्तूरि ।
जइ एकइ कला तोइ पूरी ।
जइ वादलउ तोइ दीहु ।
जइ लहुडउ तोइ सीहु ।
जइ कुरमाणउ[७] तो नागरखंडु पानु ।
जइ थोडइउ तोइ सपात्रि[८] दानु ॥ ३ ॥ (पु० अ०)

---

१. पु० अ० में यहा तक का नहीं । २ ऊ ३. मत्रु ४ इसके पहले यह पाठ अधिक है—वाराणसी समउ विद्या ठाउ नहीं ५ नासिका ६ अलकारु
७ कुमलाणउ ८ पात्र (मु०)
थोड़ी तौं ही तेजन तुरी ॥ निगुणो तोही नाह; तूटो तोही साह ॥
जइ चूरो तोही साकर; निवलों तोही ठाकर ॥
जइ नान्ही तोही नागिण, निरसी तोही सुहागिण ॥
अ. थाकउ तोही राह । (कु० स०)

(६१) भला क्या ?

सरसती समरुं सामणी, वाणी देह विगत्त ।
समरुं गणपति सुमति, वा समरुं सिव सगत्ति ।
सक्ति गुरु की भली, भगती मेरी भली ।
आण फेरी भली, अब केरी भली ।
लूंब लागी भली, रंग रागी भली ।
अंत भागी भली, जोति जागी भली ।
उक्त उठी भली, आई तूठी भली ।
मोहर बूठी भली, भरी मूठी भली ।
आस पूगी भली, भंग ऊगी भली ।
लाल लूंगी भली, रात चंदरणी भली ।
पाग खांगी भली, केसर रंगी भली ।
अंग अंगी भली, चतुर चंगी भली ।
लाडी जाडी भली, भैंस पाडी भली ।
खेत वाड़ी भली, पंथ गाडी भली ।
घरां मेडी भली, तोरण तोडी भली ।
चंचल चेडी भली, गंग नदी भली ।
मोत मोड़ी भली, ममता थोड़ी भली ।
जोवन जोड़ी भली, कछा घोडी भली ।
लोह लाठी भली, जरा नाठी भली ।
कर्म काठी भली, भ्रम माठी भली ।
वीज चमकी भली, सीत चमकी भली ।
घंट रणकी भली, तंत भणकी भली ।
लूया वाजी भली, वहु लाजी भली ।
ऊनी भाजी भली, प्रीसी माजी भली ।
नोबत बाजी भली, जीत बाजी भली ।
रांधी राजी भली, देह साजी भली ।
कीया कीधी भली, नींद लीधी भली ।
रिद्ध सिद्ध लाधी भली, दबट टीधी भली ।
प्रीत बाधी भली, भोम साधी भली ।
रसवती ताजी भली, खीर खाधी भली ।

नदी आई भली, रेल वोही भली ।
लच्छ पाई भली, हार नाई भली ।
कांठल काली भली, सेभ चित्रसाली भली ।
स्त्री चिरताली भली, नाक वाली भली ।
हर हाथे ताली भली, भोजन थाली भली ।
वेस्या मतवाली भली, मंदर जाली भली ।
जीव दया पाली भली, भुइ उजवाली भली ।
पतिभ्रता नारी भली, त्रखा मारी भली ।
भ्रू की तारी भली, दृढ धारी भली ।
मोख वारी भली, क्रम कारी भली ।
चोरी साहरी भली, जारी विजारी भली ।
पदमण प्यारी भली, केसर क्यारी भली ।
आसका आइ भली, तेच्छा त्यारी भली ।
गाइ दूझी भली, गवर पूजी भली ।
छास गूंजी भली, पोथी वाची भली ।
हर कथा साची भली, पात्र नाची भली ।
केरी काची भली, धरा नीली भली ।
नारी झीली भली, मेलि खीली भली ।
सूंथण ढीली भली, अग आगी भली ।
आगी आती भली, चाक फरती भली ।
सघर छाती भली, देही माती भली ।
आख राती भली, भंग घूटी भली, लंक लूंटी भली ।
रोटी मोटी भली, भारी लोटी भली ।
काठी दोवटी भली, अमल गोटी भली ।
गुडी ऊडाई भली, समसेर वाही भली ।
धात ताई भली, भैंस व्याई भली ।
कुल वहतो भली, लाज रहती भली ।
जुहार जेती भली, हंती देती भली ।
कोरणी कोरी भली, नाव तरती भली, खिमा धरती भली ।
सखी रमती भली कसी कूटी भली
वास फूटी भली अवल ओरी भली
माह गोरी भली स्यांम दोरी भली

ऊंची ताणी भली जुगत जांणी भली
मौंज मांणो भली ब्रह्मवाणी भली
अती तारहणी भली कीरत कैहणी भली
भोजन चासणी भली भरी वासणी भली
साख पाकी भली घात ताकी भली
बोल वाकी भली किरण भिलकी भली
सुंड ललकी भली छांह ललकी भलो
चूड खलकी भली जलेबी फीकी भली
धार घी की भली निरमल कीकी भली
चंदण टीकी भली कोयल बोली भली
गाठ खोली भली नली वसत तोली भलो
जनस मोली भली दलि दीठी भली
गोठ मीठी भली मर्दन पीठी भली
नफर चोठी भली भाख फाटी भली
पहिल परखी भली घरे घरणी भली
धर्म करणी भली पुन्य तरणी भली
देव गुरु मांन्या भला गुष्ट छांनी भली
जोध जुवांनी भली पाय पानी भलो
ब्रह्म जनोई भली धोती धोई भली
जोति जोई भली सहरि सीरोही भली
चोरी राते भली वूठी वाते भली
पांत न्याते भली नाची नोते भउ हाडी डोई हाथे भली
पाव माथे भली वैर बाथे भली
माला मनकी भली सेव सिव की भली
धाख घन की भली सूरत अनकी भली
गरढां वड़ाई भली चदन आडाई भली
कड़ाही चढ़ाई भली वापड़े लड़ाई भली
भवानी मेटी भली फिकर मेटी भली
कमर पेटी भली बाल वेरी भली
बहू मोटी भली तरवार सांतरी भली
बरछी मोटी भलो छूरी वहणी भली,
वेणु दूभनो भली। (पुण्यविजयजी द्वारा प्रेषित २ पत्रों से)

(९२) भला क्या (२)

अमल खारा भला, खड्ग धारा भला।
हेत मा रा भला, घात पारा भला।
हाथ वहिता भला, माल खरचता भला।
दान मान सूं भला, काथा पान सूं भला।
खेत नीचा भला, घर ऊँचा भला।
राणी पाणी पातला भला, अमल जोर का भला।
नीसाण घोर का भला, बुध ज्ञान सूं भला।
चित्र मोर का भला, हीया चोर का भला।
बोल बाप का भला, बैसणा खाट का भला।
मरद् पतग का भला, तीर तीखा भला।
पहिरण पटकूल का भला, युद्ध वीर का भला।
घोडा कुमेद भला, कपडा सफेद भला।
रंग राता भला, दुरजन जाता भला।
हस्ती माता भला, पुत्र पोता का भला।
त्रिया ताजणा भला, ज्ञान प्रकाशता भला।
चेला विनयवंत भला। (कौ०)

(९३) द्विगुणित विशिष्ट

(१)

एक हरि अनै पाखरयो[1], एक सर्प अनै पखालो।
एक इष्ट अनै वैद्योपदिष्ट, एक औषध अनै मिष्ट।
एक सोनू अनै सुगध[2], एक गुण अनै गोविंद।
एक खीर अनै साकर कपूर, एक घेवर अनै प्रीस्या भरपूर।
एक चपक माला अनै माथे चडी एक मुद्रिका अनै हीरे जड़ी।
एक सालि नै प्रोसी सुवर्ण थाल ॥

(स० ३)

(९४) द्विगुणित विशिष्ट

एकु हरि, आयउ घरि।
एकु इष्ट, द्वितियो वैद्योपदिष्टु।

२ आविउ घरि २ सुरहउ। एक सीह अनै पाखरिउ (विशेष) (स० १)

एकु सीहु, पाखर लीहु ।
एकु आगइ घणा माकणी, पगि आवी कांकणी ।
एकु ऊमाही, अनइ मोर हीलव्यउं ।
एकु क्षीरान्नु, अनइ सर्करा संपर्कु ।
एकु मधु अनइद्राक्षा क्षेपु, एकु प्रेयसी अनइ गुणवंती ।
एकु विद्वांसु अनइ विनीतु, ए वस्तु किंहा लाभइ ॥ ६७ ॥ (मु०)

(६५) द्विगुणित शोभा (३)

हरि, अनइं आवो घरि । एक इष्ट अनइं वैद्योपदिष्ट ।
एक सुवर्ण अनइं सुगंध । अेक सीह अनंइ पाखरिउ ।
अेक घृत परिपूर्ण अनइ निक्षिप्त शर्करा चूर्ण ।
एक शालि दालि परिसी सुवर्ण थालि ।
अेक रूपवंत अनइं कामदेव सदृश लहकंत ।
अेक ऋद्धि कलित अनइं दान करी अस्खलित ।
अेक योद्धार अनइं शस्त्रे अजित ।
अेक वसंत नइं घरि आविउ कंत ।
अेक यौवन भर अनइं चच्चरि घर ।

(स० २)

(६६) निकृष्ट पदार्थ (१)

वृषभ मारीकणउ, ठाकरु चूकणउ, हाथिउ नासणउ ।
तुरंगम काढणउ, मृत्यु रूसणउ, स्त्रीजनु ब्रोलणउ ।
दूरि वर्जेवउ । (पू० अ०)

(६७) निकृष्ट पदार्थ (२)

आछी छासि केतलउंएकु पाणी खमइ, पातली छाया केतुएकु आतप गमइ ।
कातर केतउं एकु रणांगण जूझइ, निरक्षर केतुएकुं कहिउं बूझइ ।
कृपणि केतउं दानु दीजइ, अपराधि केतउएकु तपु कीजइ ।
आदि केतउएकु तरु वाजइ, कारिमउ नेहु केतलउंएकु छाजइ ।

(६८) सार्थक पदार्थ

ते द्रव्य साचउ जे सुपात्रि वेचियइ[1], ते काव्य जे सभां पढियइ ।
ते आभरण जे हीरे जडियइ, ते सोनउ जे कसवटइ नीवडइ ।
ते वैद्य जे व्याधि फेडइA ते आमात्य जे बुद्धिबलि लक्ष्मी जोडइ ।।
तेउ धर्म जिंहा पर न संतापियइ, ते सयर[2] जे रोगि न व्यापियइ ।
ते शास्त्र जे जीवदया वर्तावइ, ते राज्य जे अन्याय निवर्त्तावइ ।
ते कापड जे धोइउ सूझइ[3], ते कार्य जे बुद्धि सारु[4] ।
ते बुद्धि जे पहिलउ ऊपजइ, ते तुरंगम जे वेगि पूजइ ।
ते सुभट जे संग्रामि झूझइ, ते धेनु जे सर्वदा दूझइ ।
ते उत्तम जे धर्म बूझइ । ८१ ।(स० १)

(६६) ऐ किण काम रा

गोदंता नी वाट, माटी नउ घाट ।
मद्य नउं पड़िवउं, आहेड़ी ना उद्यम धर्म नउ ।
रात्र नउ ध्रउ, मान नु भउ । ऊफाणउ
आभा नी छाह, कुपुरुष नी बाह ।
आढनउ तूरउ, पर्वताश्रित नदी नूं पूर ।
वेद्य नउं पडीगणउं, सूपडानउ ओंठीगणउं ।
छाली नउ झूझ स्त्री स्यउं गूझ ।
दासि नुं स्नेह, उन्हालु मेहु ।
तृणानि आगि, एतला स्युं लागि ।। २२ ।। मु०

(१००) एता किसी काम का नहीं (२)

उन्हाला नो मेह; दासी नो नेह
रोगी नो देह; स्त्री विण गेह
पर[5] घरनी छासि; कंठ विहूणो रास[6]
अवसर विना भास; कुकुल नो दास
फूसनी आग; जमाई नो भाग

---

१. वावि २. शरीर ३ सूकइ ४ मीठे ।
A सुवैद्य जे अष्टोत्तर शत व्याधि फेडउ
सुराजा जु प्रजा पालइ (विशेष) (पु० अ०)
५ पिराया, ६ बिना,

काचो ताग; पाणी नो साग
दीवा[३] नो तेज, दुर्जन नो हेज
उधारा नो व्यापार; राड नो सिणगार
पखैया नो प्यार, एता किसी काम का नही। (कौ०) +

(१०१) द्विगुणित निकृष्ट (१)

वरसइ मेघ नइ राति अंधारी। कउही राव अनइ माहि कंसारी।
यवनी रोटी अनइ कागइं त्रोटी। ....
आगइ काली अनइ मसी लाई। डाकिणी नइं राउल चाई।
उखरड़ी खाट नइ डाभि वणी। सासू जूठी नइ नणंद घणी।
पालि चीखल नइ कड़ि कीकली।..........।
वडपण नइ फोफल घूंट। अतिसार नइ आसखि ऊंट।
दुख अनइ डाकिणी खाधउ। वानर नइ वीछी खाधउ।
आंगणइ कुउ नइ कुटुंब आंधलू।..........।
साप नइ पंखालउ, कादव नइ कंटालउ।
काणी नइ रीसाली, राडी नइ विरुआ बोली।
सरड़ी नइ श्लेष्मली।..............।

(स० २)

(१०२) द्विगुणित निकृष्ट

एकं विदेश गमनं, अन्यत्तत्रापि दारिद्र्यं।
एकं सेवा वृत्ति दुष्करा अन्य तत्रापि पिशुन समागमः।

---

३ दिवाली।
+ एक अन्य प्रति में निम्नांकित पाठ और अधिक मिलता है।
दहीनो पटगनो; लुपटानो ऊंटिगणो
ढींकुआनो पायो; पडपणनो जायो
पागलानो धायो; गहिलानो गायो
कागल नो कटायो;
काग्टानो भाग; वैश्यानो राग
पर त्रियाप्यार; खड़ी नो सिणगार
एहवा अवगनो संगन कीजे; धर्म विना म्तलावानां सोभै नहीं॥ (स० ३)

एक दूरारण्ये गंतव्य तत्रापि शंबलं नहिं ।
एकं पान पात्र भगे द्वितीयोमकारणमुपद्रवः ।
एकं कुभोजनं अन्यतुः प्रथम कवले मक्षकापातः ।
एक कुथितारब्धा, अंतर्गता च कसारिका ।
एकं यवानो रोटिका अन्यत्काक भक्षिता च ।
एकं पकुला रथ्या, द्वि. कद्यां कु सुता ।
एकं भोजनस्य असंपति, द्वितीयं प्राघूर्णक बाहुल्यं ।
एक दुःख अन्यत् शाकिनी ग्रस्तं ।
एक कुग्रामवासोऽन्यल्लाभोपिन ।
एकं कन्या बहुत्व दुर्मुखी च भार्या ।
एकं उच्छिष्ट अन्यद्मूत्रं दुग्धस्योपरिस्फोटक ।
तथा एक मिथ्यात्वं, अन्यन्मौर्ख्यं ॥ ६४ ॥ (स० १)

(१०३) अच्छा दिखने पर भी बुरा

मृष्टमपि यथा क्षारं, विषं मधुरमपि प्राणहरं ।
यथा कल्याण्यपि अकल्याणकारिणी ।
भद्राप्यभद्रा, यथा मंगलोप्य मंगलयो वारः ।
यथा केतुरपि कल्याण सेतुः । यथा अमृतवाल्यपि गुडूची ।७५। जो०

(१०४) निरर्थक (१)

कुपुरुषे उपकारो निरर्थकः ।
शुष्क नदी तरणमिव, वालुका चर्वणमिव ।
मृत खडनमिव, भस्मनिहुतमिव ।
आकाश कुट्टनमिव, तुष खडनमिव ।
जल विलोडनमिव, उर्षर वर्षणमिव ।
शुष्क काष्ठ सेचनमिव, यम निमंत्रणमिव ।
द्यूत कटकोपार्जनमिव ॥ २२ ॥ (स० १)

(१०५) निरर्थक (२)

कुपात्रस्य विद्या वृथा, कुशिष्याय व्रतं वृथा ।
धनाढ्ये दानं वृथा, भुक्तस्य भोजनं वृथा ।
चर्वितस्य चर्वणं वृथा, पिष्टस्य पेषणं वृथा ।

मथितस्य मथनं वृथा, अचिंतितं श्रुतं वृथा ।
ऊखरे वापितं वृथा, समुद्रे वृष्टिर्वृथा ।
मुनीनामाभरणं वृथा, बधिरस्याग्ने वीणा वादनं वृथा ।
अंधस्याग्रे प्रेक्षणकं वृथा, अभव्याया जैन धर्मो वृथा ॥ ३६ ॥ (स० १)

(१०६) निरर्थक (३)

कुपुरुष ने उपकार कर्‍यो निरर्थक जाणवो
सुकी नदी नायाजनी परिं, वेलु चावनानी परिं ।
मृतकना शृंगारनीपरिं, अंगनिहोमवानीपरिं ।
भस्ममि नाखवानीपरिं, भस्म आकाश कुट्टन परि ॥
तुस खांडवानो परिं, पाणी विलोवानी परि ॥
[1]ऊखरना वरसवानीपरिं, शुक काठ नासीवानी परिं ।
जूअटानाधननी परिं, कुपात्रनीं विद्यानीपरिं । इत्यादिकं जाणवो ॥ (स्० ३)

(१०७) विहीन

किसो आरति विहूणो काम ?
किसो प्रेम विहूणो मान, किसी जाचक विहूणी जान ।
किसी हूँकार विण वात, किसो छयल विहूणो साथ ।
किसो नल विहूणो नाण, किसो तरवर विण पान ।
किसी वादल विण वीज, किसी पोहच विण खीज ।
किसो विगर दीठां कहणो, किसो कागद विहूणो लहणो ।
किसी त्रीया परतीत, किसो कंठ विहूणो गीत ।
किसी निर्लज्ज नारी, किसो अवसाण चूको हथियार ।
किसी लूगड़ा विण चूंप, किसो वागा विण खूंप ।
किसो उन्मान विण आघो, किसो सधण विण वागो ।
किसी चंद विहूणी राति, किसी अमल विहूंणी आथ ।
किसो छुंडारो घर वासो, किसो नुखता विण हासो ।
किसो अतीत विण चोरो, किसो गर्त विण पोहरो ।
किसी पूंजी विण लाभ, किसो समभ्या पखे जाब ।
किसो पूत पखे घर, किसो सपत्ति पखे नर ।
किसो तोय पखे जन, किसो भाव पखे भोजन ।
सत्य शष्ट भविजन कहें, कहा जीव्यो जिन नाम विण । (स० ४)

---

1. उपरना ।

(१०८) चूका (१)

एहवो षष्ट पंड्यो दीसै ।
उचपेटा आहणीऊ माकड[1], जिम डाल चूको वानर
जिम घाव चूको सुभट, जिम दाव चूको जूवारी ।
जिम विद्या चूको विद्याधर, जिम फाल चूको दादरि ।
जिम ठाम[2] चूको भडारी ।
यूथभ्रष्ट चूको हरिण, चोर जिम अरुण अशरण ।
राज्य चूको राजवी, पद[3] चूको पदवी
लाज चूकी नारि, भीख चूको भीखारि ।।
इत्यादिक षष्ठ[4] पड्यो जाणवो । (स. ३)

(१०९) चूका (२)

जिसउ घाय चूकउ भड्ड हुइ, जिसु डाल चूकओ वानरु हुइ,
जिसउ विद्या चूकउ विद्याधरु हुइ, जिसउ ठाम चूकउ भडारिउ ।
जिसउ दाइ चूकउ जूआरी, जिसउ जूथ परिभ्रष्ट हरिणु ।
तिसउ विच्छाइ वदनु ।

(११०) कौन किससे शोभा पाता है ? (१)

रजनी[5] चद्रेण शोभते । नभः सूर्येण ।
प्रसादो देवेन । पुष्प भ्रमरेण । युवती यौवनेन । वल्ली कुसुमेन ।
कुल पुरुषेण[6] । मुख ताबूलेन । नेत्र कज्जलेन । कुल-वधुः शीलेन ।
प्रेक्षणीक गीतेन । मुख नासिकया । मयूरः केकया । राजा छत्रेण ।
नगर दुर्गेण । काननं कल्पवृक्षेण । योगी ध्यानेन ।
धनी दानेन । यती निर्ममत्वेन । सूरः सत्वेन । गजो मदेन ।
तुरंगमो जवेन । सरो राजहंसेन । मस्तक मवतसेनेति ।।छ।।

सिंहेन वन, वनेन सिंह । मुख नासिकया, नासिका मुखेन ।
कमल जलाशयेन, जलाशयो कमलेन । सुवर्णं रत्नेन, सुवर्णेन रत्न ।
अमात्येन राज्यं । राज्येनामात्याः । नंदनेन मेरुः, मेरुणा नदन ।
सुपुत्रेण कुल, कुलेन सुपुत्रः । दिनेन भानु, भानुना दिनं ।

---

१. ऊमाकड २. वाम ३. पदस्व, ४. कष्ट । ५. निशा ६. सतपुत्रेण

शशाकेन निशा, निशाया शशांकः । नयेन राजाः, राज्ञा नयः ।
व्यसनेन मूर्खता, मूर्खतया व्यसनं । मदेन नारी, नार्या मदः ।
नदी जलेन, नद्या जलं । परिमलेन पुष्पं, पुष्पेन परिमलः ।
नादेन वीणा, वीणया नादः । दंतैर्मुखं, मुखेन दंताः ।
विद्युता मेघः, मेघेन विद्युत । तोरणेन मंडपः, मंडपेन तोरणं ।
हारेण हृदयं, हृदयेन हारः ॥ (स. २)

निर्दन्त करटी हयो गत जवश्चद्रं विना शर्वरी
निर्गंध कुसुमं सरोवर गत छाया विहीनस्तरु
रूपं निर्लवणं सुतो गत गणश्चारित्रहीनो यतिः
निर्देवं भुवन न राजति तथा धर्मं विना पौरुषं ॥१॥
(पाठ पु० प्रति में अधिक मिलता है ।) (पु०)

(१११) कौन किससे शोभा पाता है ? (२)

कुलवहु ते सीले शोभे, रजनी चंद्रमाइं शोभे ।
आकाश सूर्यइं करी शोभे, वन चंदने शोभे ॥
कुल सुपुत्रे शोभे, कटक राजाइं शोभे ॥
प्रधान राजाइं शोभे, राजा प्रधाने शोभे ॥
ध्वजा देवले शोभे, देवल ध्वजाइं सोभे ॥
स्त्री भर्त्तारइं शोभे, भर्त्तार स्त्रीइं करी शोभे ॥
तिम परस्पर शोभा जाणवी ॥ (स. ३)

वेल फूले सोभैं, मुख तंबोलैं सोभैं ।
मोह कम त्रोले सोभे, सीह वनै सोभै ।
मुख नासिकाइं सोभैं, तिम मनुष्य धर्मइ शोभे ॥
कमल जले शोभे, जल कमले शोभे,
सुवर्ण रत्ने शोभे, रत्न सुवर्ण शोभै ।

(११२) किससे कौन शोभा पाता है ? (३)

जिम प्रासाद सोभे ध्वजधारी, जिम हृदय सोभे हारी ।
जिम गृह सोभे उत्तम नारी, जिम मस्तक सोहे केस प्रागभारी[1] ।

---

[1]. प्राग्भारि

जिम कर्ण[1] सोहै स्वर्णालकारी, जिम सरीर सोहे शील शृंगारी।
जिम सरोवर सोहै कमलि, जिम पुष्प सोहै परिमलि।
जिम नेत्र सोहै युगलि, जिम रात्रि सोहै चंद्रमडलि।
जिम विवाह सोहै कूरे, जिम उत्सव सोहै तूरें।
नदी सोभै पूरि, तिम सम्यक्त्व सोहै भावना भूरि।
इति भावना वर्णनम्।   (स. ५)

(११३) कौन किससे शोभित होता है? (४)

घर ओपइ घरणि, गगन ओपइ तरणि।
वृक्ष ओपइ पल्लवि, ताम्बूल ओपइ चूर्णलवि।
वस्त्र ओपइ रंगि, मउड ओपइ मस्तक सगि।
माणुस ओपइ शृगारि, व्यजन ओपइ वघारि।
राजा ओपइ भडारि, हाथिउ ओपइ मदवारि।   ३१ (स. १)

(११४) कौन शोभा नहीं पाते (१)

शस्त्रहीनो यथा सूरो न शोभते।
मत्र हीनो मंत्री। धुरा हीना गंत्री।
प्राकार हीन नगर। स्वामी हीनं बलं।
दंत हीनो गज। कलाहीन पुमान्।
तपो हीनः मुनिः। तेजो हीनो मणिः।
बाण हीन धनुः। धारा हीनं कृपाण।
वेद हीनो विप्रः। कपिशीर्ष हीनो वप्रः।
गंध हीनं कुसुमं। नयन हीन वदनं।
लवण हीनी रसवती। चैतन्य हीनं वपुः।   (स. २)

(११५) कौन शोभा नहीं पाते (२)

बुद्धि हीन मुख्य नायकु, अति निष्ठुर वणिकु।
स्वासणउ चोरु, कलापु हीन मोरु।
आलसउ कुमारउ, अध अनइ भरालउ।
दुर्विनीत शिष्यकुलु, ध्वज रहितु देवकुलु।
घृतु रहितु भोजनु, स्नेह हीन स्वजन।
तेज रहित आरीसउ, गृहस्थ त्रोडउ।

---

१. कान सोभै।

महिला कानि छूटी, ध्वज अंतरालि तूटी ।
भाग्य हीन मुक्ति, क्षमा रहित मुक्ति ।
एतली वस्तु शोभा न पामई ॥६६॥ (मु.)

(११६) कौन शोभा नहीं पाते (३)

मद हीनो हस्ती न शोभते, कुल स्त्री निर्लज्जा न शोभते ।
नीति विकलो राजा न शोभते, कृपण धनाढ्यो न शोभते ।
रूप रहितः स्त्रीजनो न शोभते, आकृति रहिता सरस्वती न शोभते ।
लवण रहिता रसवती न शोभते, क्षमा रहितो मुनि न शोभते ।
शर्करा रहितो मोदको न शोभते, कण्ठ रहितं गानं न शोभते ।
छंदो रहितो भङ्गः न शोभते, विवेक रहित मन. न शोभते ।
निर्विप्रं पुरं न शोभते, निर्विद्या विप्रः न शोभते ।
निर्नायकं सैन्यं न शोभते, निफलो वृक्षः न शोभते ।
निर्वृष्टिर्मेघः न शोभते, तपो रहितो मुनिः न शोभते ।
प्रेम रहितः संगमः न शोभते, निर्नाशिकं मुखं न शोभते ।
निर्वस्त्रं शृंगारः न शोभते, निः स्वर्णोऽलंकार न शोभते ।
ताम्बूल रहितो भोगः न शोभते, रूप सिद्धिः प्रयोगः न शोभते ।
निःकंकणो बाहुदण्डः न शोभते, प्रत्यंचा रहितः कोदण्ड न शोभते ।

(११७) कौन शोभा नहीं पाते (४)

मद रहित हाथी, चोख रहित साथी ।
लज्जा रहित कुलवधू, जल रहित सिंधू ॥
बुद्धि रहित नायक, चूकण्ड पायक ॥
खासण्ड चोर, कला रहित मोर ॥
आलस्क मारड, पाणी रहित गारड ॥
खान (स्थान) भ्रष्ट गमार, तेज रहित टार ॥
आकृति रहित सरसती, लवण रहित रसवती ॥
रूप रहित छवि, छंद रहित कवि ॥
गंभीरता रहित धुनि, क्षमा रहित मुनि ॥

जल रहित बूटी, ध्वज विचाला त्रूटी ।।
घृत रहित भोजन, संज्ञा रहित मन ।।
तेल रहित मज्जन, स्नेह रहित सज्जन ।।
मनुष्य रहित घर, विज्ञान रहित वर ।।
चतुराई रहित कला, पुरुष रहित महिला ।।
कण्ठ रहित गान, सोहाग विण मान ।।
आभरण रहित कान, वर विना जान ।।
वृक्ष विना पान, जलवर्षा रहित धान ।।
वला रहित छान, कलावंत रहित तान ।।
भाग रहित भागवान, पात्र रहित दान ।।
वेग रहित घोडउ, गृहस्थ माथइ मोडउ ।।
पाठरउ छेलउ, दुर्विनीत चेलउ ।
तेज रहित आरीसउ, नेह जिसउ दारीसउ ।।
प्रसाद रहित छाजा, नीसाण रहित वाजा ।।
घृत रहित खाजा, प्रताप रहित राजा ।।
पासा रहित सारी, पुत्र रहित नारी ।।
क्रिया रहित जती, सत्व रहित सती ।।
धन रहित गेही, तिम श्रीजिन धर्म रहित देही ।।

।। इति रहित वर्णनम् ।। कु०

(११८) अनावश्यक (१)

मुनिराभरणेन किं करोति, मर्कटो नालिकेरेण किं करोति ।
काको रत्नमालया[१] किं करोति, मत्स्यादको जलच्छादन केन किं करोति ।
वानरी हारवल्या[२] कि करोति, विधवा स्त्री कंकरणेन किं करोति ।
वणिग खड्गेन किं करोति, दिगंबरः पट्टकूलेन[३] किं करोति ।
असती शीलेन किं करोति, व्याधो जीवदयया किं करोति ।
तथा निर्भाग्य जीवः सदुपदेशेन किं करोति ।। १७ स. १

(११६) अनावश्यक (२)

शुद्ध ऋषीश्वर आभरण ने स्यु करे, मर्कट नालेर नें स्यु करें ।

१ रत्नेन २. मुक्ताफलेन ३ दुकूलेन

काक रतन नें स्युं करें, वानरो हार ने स्युं करें ।
असती शील ने स्युं करें, वणिकाकूराज्य ने स्युं करें ।
नपुंसक स्त्री ने स्युं करे, दिगम्बर पटकूल नै स्यूं करै ।
जीव आजीव नैं स्यूं करै, अधर्मी धर्म ने स्यूं करै ।
साजन दुर्जन ने स्यूं करैं(दुर्जन सज्जन नइ स्यूं करइ)+

+ "मूर्खः पुस्तकेन । पापी सुकृतेन । अंधा अंजनेन । पंढोदयितया । दुर्जन उपकारेण । वको मानस सरसा । सालूरः कमलेन । ग्रामीण पंडित ०गोष्टया । रजकः क्षपनक ग्रामेण, मक्षिका यक्ष कर्दमेन । कापुरुषः संग्रामेण । पण्यांगना निर्धनेन । पतित कुचा हारेण । गतवयाः शृंगारेणेति (पु०)
उक्त पाठ पु० प्रति में अधिक मिलता है ।

सभा शृंगार

विभाग १०

भोजनादि वर्णन

(मंगल, वर्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्रालंकारादि)

(१) मांगलिक

दधि, दूर्वा, कुसम, अक्षत, चदन, नदितूरु[1], सिद्धार्थ,
गोरोचना, कुकुम, पूर्णकलस, गूंहलिय, तोरण, चमर, जवारा ।
अहिव तणउ मगलुचारु, घट्ट प्रदीप मणिमाला, प्रवाल,
वंदरवाल ए द्रव्य मगलीक ।
देवपूजन गुरुवंदन प्रमुख भाव मगलीक ।

(पु०)

(२) वर्द्धापनकं

नगर तणा प्रधान नर तेडावइ, महोत्सव करावइ ।
स्वर्णमय दीप ज्वाल्या, घर तणा कूट अजूआल्या ।
स्वर्णमय मूसल ऊभ्या, सुवर्ण कलश स्थाप्या ।
घर धवल्या, भित्ति भाग कडल्या, तिलिया तोरण बाध्या ।
प्रसादि वैजयन्ती झलकावी, गोति मेल्हावी, अमारि करावी ।
सर्वत्र मगलाचारु दीजइ, तूर वाजई ।
अक्षत पात्र साचरइ, तबोल वापरइ ।
अर्थ व्ययना साभल नही, इसउ वधामणउ हूसही ॥ ७७ ॥ (जै०)

(३) महोत्सव देखने की उत्कंठा

तेण महोत्सवि समय बालिका—
हार त्रूटते, वेणीदड छूटते ।
नेऊरि फूटते, पटउल फाटते ।
घट जुअल विणसते, अनेकि आभरणि खिसते ।
मुक्तालकारि पडते, स्वेद बिंदु चडते ।
जोवा तणइ कारणि चालिउ । (८६ जो०)

४ पुत्र जन्म महोत्सव

राउ करावइ, दण्डपाक निरोक हूउ ।
सर्वत्र मार्ग वोर वालिया, गोमयपाणी सींचिया ।
मञ्चोन्मच्च बाधा, वानरवालि बाधी ।
हट्ट शोभा सर्वत्र रची, सिद्धार्थ स्वस्तिक भरिया, पूर्ण कलश स्थाप्या ।

---

[1] बीजपूर २ जुअल दीप । १३८ जो० में नदितूरु और घट्ट के बाद ये अधिक हैं।

जमली चूर्ण रंगावलि दीजइं, सुवर्णमय हल मूसल ऊभवीजइ।
घट जूअल बांधीयइं, समग्र मार्ग सोधियइं।
रत्नमय प्रदीप बालियइ, गोतिह रातउ बंदि तणां वृंद टालियइं।
कर्पूर कुंकुमि चंदन रसि मार्ग सीचियइं, अर्थी लोक सर्वथापि न वंचियइं।
जिन भवनि पूजा प्रभावना कराविय‍इं, नव नवां पुस्तक भराविय‍इं।
लोक अकर कीजइं, आखे भरिया स्थाल लीजइं।
लोक तणां वृंद मिलइं।......................
वाजित्र तणा सहस्र वाजइं, कलकलि करी आकाश मंडल गाजइं॥
६४ (जो.)

५ धात्री

१ क्षीर धात्री, २ मज्जन धात्री, ३ मंडन धात्री
४ क्रीड़ा धात्री, ५ उत्संग धात्री, ॥पच धात्री॥छ॥
१२८ जो.)

६ पुत्र पालन

जिम देडाऊ तुरंगम सभालइ[1]।
जिम वणिक-पुत्र हथेली नउ फोडउ सु सालइ[3]।
जिम तंबोली पान चालइ[4]।
जिम रथी रथ नइ चालइ।
जिम मुक्ताफल रहइ थालइ।
जिम साधु प्राणी ने हालइ।
जिम पंखिया रहइ मालइ।
तिम माता पुत्र नइ पालइ॥ (कु.)

७ बालक्रीड़ा

हिवइ ते रह्या (?) महादुख थया॥
घरनै विषै एहवा चयन करवा लागौ॥
किवारइ पाणीना घड़ा ढोलै, किवारे घइसे मानै बोलै॥
दहीनी गोलि घोलै, किवारइं तरितो मालण छासि माहि बोलै॥
माता साकडानै भालि आणै, किवारे स्त्रियोनो कांचुयो ताणइं॥
किवारइं जातो साप सारइं, किवारइ आगीनइं हाथि वाहैं।

१. पालइ २. वणिगु ३. सभालइ ४. सभालइ (जै)
जै. प्रति में प्रथम की तीन पंक्तियों के बाद की चार पंक्तियां नहीं हैं।

किवारइं हंसिनइ मा सामो जोवइ, किवारइं रूसणो माडिनइं रोवइं ॥
किवारइ सूतो उठाणता आलस मोडइ, किवारइं रीसाणै उत्रेवड फोडें ॥(मो०)
इत्यादि बालक्रीडा वर्णनम् ॥

८ विवाह समय

लग्न ऊपरि विहउं पखा हर मारि कूटि साम हियइ
मूडसए आखे उडद केलवीयइ
मूडसए गोहू केलवीयइ
मूडसए चोखा केलवीयइ
मूडसए मूंग केलवीयइ
घड सइ घृत विसाहियइ
कोडिया सइ कापडा
चोला भरा पान, झउला भरिया फोफल,
गोरस तणा द्रह, वड़ा तणा उकरुड़
खाजा तणा खला, गडि महत्तरि वहिल
चउरासी सुखासण, विसुत्तरुसउ भडार गाडा
सातसइ सेजवाली, चउदसइं वाहण, पांचसइ साढि,
तेजी, वेसर, नीलडा, हरियडा, पायल लोक सख्या नही, सरसी
कोठी। जगऊपणि माल्हणि सर्व गिलि प्रमुख अनेक सरसी कडाही
वाहण तणी धोरणि- सेजवाली तणइ सेतु अंधि सीकिरि तणइ अडमड
घोडा तणइ थाटि, पायक तणइ पहट्टि, चक्रवर्त्ति जिव चालियउ।
नेउर तणइ ऊकारि, घाघर वालि तणइ घर्घरारवि
पच-शब्द तणइ निर्घोषि, लोक तणइ हलबोलि
कानि पडियं कोई न साभलियइ ॥ (पु. अ.)

९ भोजन

अनेक जाति तणी फलहलि।
जिम मोटा छाजा, तिम खाजा।
जिम महद्भूत गाङ्ग, तिम लाड्डू।
विविध वाणी तणउ पक्वान्न, वि आगुली कलम शालि।
मुगनी दालि, परीसी सुवर्णमय स्थालि।

पाखलि सालणां तणी पालि, माहि सुगंध घृत तणी नालि।
विहुं पहुर तणइ कालि, परीसइ आंखड़िआलि नारि। (६६ जो.)

१० श्रेष्ठ भोजन

जेहि दूलेसरा चोखा तणउं पीठु
सीघरउली खाड तणउ दलु
पारिहेटि महिसिं तणउ दूधु
एल तज तमालपत्र करिउ चमचमा
काचइ कपूरि करि मगमगाय मान इसा वरसोला
जहि आस्वाद खास तणउं उद्धेद नहीं
श्लेष्म तणउ प्रकोप नहीं
रस तणउं विकारु नहीं
आसा नीरोग निर्दोष
अमृत घटित, देव निर्मित। (पु. अ.)

११ रसवती वर्णन

ऊपलइ मालि, प्रसन्नइ कालि।
भला मंडप नीपाया, पोइणि ने पाने छाया।
केसर कुंकुम ना छड़ा दीधा, मोती ना चुक पूर्या,
ऊपरि पंच वर्णा चंद्रूआ बाधा, अनेक रूपि आछी परीयछि ना रंग साध्या।
फूल ना पगर भरया, अगर ना गंध संचरया।
प्रधान गादी चाउरि चा कलाणा, बइसणहारा बइठा पातला।
सारूआ धाट, मेल्हाव्या आगलि पाट।
ऊंची आडणी, झलकती कुंडली
ऊपरि मेल्हाव्या सुविशाल थाल।
वाटा वाटली सुवर्णमइ कचोली।
रूपा नी सीप ढूकी, इसी घाति मूकी।
जीमणहार किसा—
छत्रीस लक्षणोपेत
अलिकुल कज्जल श्यामल केश पाश
चन्द्रार्ध भाल-स्थल।
कामदेव कोदण्डाकृति भ्रूभग।
विकसित कमल दल समान लोचन

सरल तरल नाशा वंश
हिंडोला समान कान ।
प्रवाल सम कान्ति अधरोष्ठ ।
दाडिम नी कुली जिसा दांत
पूर्णिमा चंद्र सदृश वदन कमल
शंख नी परि त्रिरेखांकित कण्ठ कंदल
समांसल स्कंध प्रदेश
प्रथुल वक्षस्थल ।
कूप समान नाभि
आनाभि ऊर्द्ध पाताल कटि यंत्र
कदली स्तंभोपमान जंघा युगल
सुकुमाल कर कमल
कूर्मोन्नत चरण
लाडता लोडता लडसडता रूपवंत,
प्रवीण जाण, सौभाग्यवंत ।
गुणवंत, विनयवंत ।
लीला विलास, पुण्योल्लास ।
इन्द्रसमान दीठा, इसा पुरुष आरोगिवा वइठा ।

प्रधान स्त्री परीसणहार आवी—

हंस जिम चालती, मयगल जिम माल्हती ।
वाकू जोयती, जन आल्हादती ।
आखडी आली, अति सुविशाली ।
सुवर्णमय कुरूउ हाथि धरती, चिन्ता हरती ।
सुगंध वासित पाणी, ढाक्या आणी ।१हाथि धोयण दीधा—
श्रृंगाल नइड मालि, परीसिवा लागी उजमालि ।

फलहुलि किसी परीसिइ छइं ?

अखंड अखोड़
मनोज्ञ वायम
विविध देश ना बदाम

चारु चारउली
खारकि ना खंड ।
कसमिसि द्राख
आदनी खजूर
बीबाला वरसोला
हीरालग साकर
नालेयर तणी चीरी बुरहड़ी
सरस सकोमल सेलडी तणा बुटका
तेह तणी कातली, दाडिम नी कुली
करणा, जंबीर, बीजुरा, चुरड़ी
नारिंग तणी फाड़ि, सहकार तणी कातली

किस्युं ते सढकारु—

वनस्पति राउ, कन्दर्प देवतानु भाउ ।
रस तणी ऋद्धि, मीडिम तणी अवधि
साकर दूधि नीपायउ, काइलि ने समूहि छायु ।
घुडि घोरू, पथिक जनवधू चित्त चोरू ।
तेह आंबा तणी कातली निवृति परायण, नीकोल्या रायण
खाडिस्यउं ओल्या, घी स्युं मिल्या ।
कूंकणा केलां, गात्रि वांका, भेला पाका
इसा वेला नी कातली—
स्वास स्यूं जाइ, घणाइं उदरि समाइ ।
एवं विध फुलहली परीसी, परीसणहारि सजगीसी ।
अतिदी असमान,

हिव पकवान आणइ ते केहवा ?
मालपुडा, खाजा, तुरत कीधा ताजा ।
मदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रसाद ना छाजा ।
पछइ प्रीसया लाडू, जाणे नान्हा गाडू ।
कुण कुण ते नाम, जीमता मन रहइ काम (न ठाम) ।
मोतिया लाडू, दालीया लाडू ।
सेविया लाडू, कीटी रा लाडू ।

नादउलि रा लाडू, तिल ना लाडू ।
त्रिगड़ ना लाडू, मगरीआ लाडू, झगरिआ लाडू, सिंह केसरिया लाडू ।
वली बीजा आप्या पकवान, जीमता वाधइ मुख नउ वान ।
(आ) व्या पकवान
सतपुडा खाजा
सुकोमल सुहाली
फगफगती फीणी
दूधवना
देहींथरा
घृत मय घारी
पडसूधी नी साकुली
मुरकी माडी
मनोहर मोदक
सु तलया सेधत्रा
साकर सहित घेउर
तिली तिलवटि
चासद्र चूरिया
पचधार लपनश्री
पछइ आवी पडसूधी नी पोली, खाड घृत झबोली ।
रत्नु मालि, महा सालि ।
कमल सालि सुगंध सालि ।
सुद्ध सालि, कोमोदकी सालि ।
कूंकणी सालि, तिलवासी सालि ।
जीराउलि सालि, सुवर्ण सालि ।
राय भोग सालि, गुरडा सालि ।

एवं विधि सालि ना कुरुड—
अणीआलउ, सरहरउ, फरफरउ ।
सरसु, सुकोमलु, ऊजलउ, बि आगुलउ ।
दूबलउ, पेटि बइसइ, फूटी नीसरइ ।
इस्यइ पीरस्यइउ
तुष रहित मुडोरा मूग नी पहिति,

तत्काल तापितु घृतु
सुगध सुवर्ण
परिघल मनि परीस्यूं, जिमणहार नू मन ऊलस्यूं

किस्यांएकु शाक—

कोरा वडा । राईता वडा, हलद्रुआ वडां ।
घारी, घारड़ी, वड़ी, पापड़ी । ईडरी, पटीडरी ।
पूरण पलेव खाटां, भरयां वाटा ।
वालहुलि, तिड्रूरा, काचरी, कोकला ।
डोडी, रामडोडी, कयर, सागरी, भली भाजी, मरीनी माजरी ।
प्रधान पीपरि, वेणकडां वाउलिया, निपुण नीलूआ ।

एवं विध सालणा परीस्या—

पहिलुं फलिहलि प्रीसइं, सगलां रा मन हीसइ ।
पाका आंबा नी कातली, ते बूरा खांड सुं भरी अनइ वली पातली ।
पाका केला, ते वली खाड मूं कीधा भेला ।
सखरा करणा, ते वली पीला वरणा ।
नीलइ नारंगी, रंगइ दीसइती सुरंगी ।
नीकोली रायणी, प्रीसी भाइणी ।
दाडिम नी कली, खाता पूजइ रली ।
······जानइ ·····, खाता पूजइ कोड ।
द्राख नइ बिदाम, कोइ कागदी स्याम ।
सलेमी खारक नइ खजूर, ते प्रीस्या भरपूर ।
नालेर नी गरी, मालवी गुल सू भरी ।
नीबू घाटा नइ प्रीसीया, एहवा तो केथे न दीठीया ।
चारोली नइ पिसता, लोक जीमइ हसता ।
वली सेल्हड़ी नइ सदाफल, ते पिण प्रीस्या परिघल । (११-१२ जै०)

१२ रसवती वर्णन (२)

ऊनले मालि, सुवर्णमइ स्थालि, प्रसन्नइ कालि ।
वारु मडप नीपाउ । पोणिने पाने छाइउ ॥
कुंकुना छावडा (छडा), मोती ना चउक ।
तेह माहि साम्यार घाट, मेल्हाव्या पाट ।

नदीया समान नीझरण ।

गगा समान नीर । सीता समी (मई) न भार्या, लक्ष्मण सुमु न वीर ॥१॥

बील १ ग्राहेडा २ आमला ३ चउथा (साचा) गुरु वयण ।

पहिला हुइ कसाइला पछइ हुइ गुलीया ॥ २ ॥

चाउरि चातुला । चूडिया प्रमुख नाना विध आसन्न ढूका ।

चउरस चउकी वट । ऊची आडणी । जाल कोशीसा कुडली ना प्रयोग पूरा हुआ ।

तदतर ग्राट । वाटा । वाटी । कचोला कचोल वटी । सीप । सूनवटी । ढूकी ।

तदनतर । लडहीय लडसडतीय लीलावतीय सुवर्णमई करवइ । बरवीय । खलकतइ, चूडइ । झलकतइ ककणि । ढलकतइ हाथि । सीतलि गंधोदकि । हस्तोदकि दीधा ।

तदनतर । ऊपलेइ मालि । प्रसन्नइ कालि । सुवर्णमइ स्थालि । मोटइ झमालि । आवी ऊजमालि । परीसइ फलहुलि-अखोल खड । मनोन्यवायम । चारुली । साकरलिंगा । वेकस्या वरसोला । होरालग साकरना चूरि । कोलत्री नालिकेरनी पुडहडी । छोहारी खारिक । जालिकी । पिछानी खारिना कुट-कडा । किसमिस द्राख । कचोले मधु फडद खजूर । हरमजी मधुरु । माकड़ उटी पसिख समान । सरस फणस सेलडी ना कुटकडा । दाडिम नी कुली तरुणा । करणा । जम्बीर । बीजपूरक । नीघणी । चडउडी फरग नारगी फालि । अति गुलि भावि । सूरीइ रगि मधुकलश अम्बानी कातली । परीसइ पातली । किसउजु आवउ । वनस्पती राउ । कदर्प देव सहाउ । इसा मधुकलश अम्बानी फालि । नीकोल्या रायणा, निवृत्ति परायण । खाडइ लुल्या । घीय भिल्या । अनइ कूकणा केला । सोनेला । राजेला । मूछेला । नारि सिंवेला । तीह कदली फल बीट थका गल्या । लीला लीलावती नाहाघत् उटल्या । इसी कूकणा तणी कातली । ग्राटि शोभइ तीहनी परीसणहारि । शामागि नारि, सपन्न शृगारि । कठाभरण हारि । जिसी रभा नइ वश । देव कन्या नइ अंसि । इसी फलहुलि । परस्त्री परस्त्री परीसइ । जइ जइ लीला विलसइ । तदनतर सस पडा खाजा, खाडीं किसा ति ग्राजा । जिसा प्रासाद तणा छाजा । तदनतर । भल भला लाडू जिसा रसवती लक्ष्मी-अमीना गाडू । घृतमइ पाकि तल्या । साकर सिउ मिल्या । मरिचना चम-त्कारि । अत्यन्त सुकुमार । कपूर परिमल सार । स्थल बहुलाकार । महो-ज्वल । इस । सेवईया लाडू । मोती लाडू । दल लाडू । वाजण लाडू । अमृत हल । खंड भल खड । प्रभृति मोदक मूक्या । जे से मुहि मिलइ ।

घणउ किसउं एवं विध अमृत वट मोदक शोभइ । अनंत मुसमसती मुरकी । शिव शिवती सुहाली । फगफगां फीणां-दुग्ध वर्ण दहीथरां । घृत वर्ण घारी । सुकुमाल सांकली । अखंड माडी । संतल्या सेवेत्र्या प्रभृति पकवान्न परीस्यां, खाड माडा । पूरण माडां । मोकला माडा । कुरकुरा माडां । पत्र वेलीया माडा । खादउं चूरिमूं । सुदलित सुललित लापसी । वरनारि परीसइ पातली । तदनंतर शालि । महाशालि । कलम श्यालि । तिलवासी शालि । राजन्यक शालि । साटिया प्रमुख मेन ईप्सित । अखड शालिना चोखा । दूबलीइ खाड्या । वलिष्टइ छड्या । नखूतीइ वीण्या । अलवेसरि आण्या । समर्ताइ सोह्या भगवतीइ समारिउ । ऊन्हउ तीन्हु । सरसरउ । भरहरउ । अणीआलउ । सकोमला । ऊजलउ । जिसिउ केवड़उ । ऊडेली जेवड उ । दूवलइ पेटि पिसइ । फूटी नीसरइ । घृतमइ पहति नइ संयोगि । मन नइ ऊलटी । मंडोअरा मूंगनी दालि । बभुद्वा नी कालि । फोतिरे छाडि । हत्थीहत्थीइ खांडि । त्रिछट् कीधी । घण पाणी इसीनी । वानि पीअली । परसामि सीयली । जिमतां स्वादिष्ट । परीसणहारि अभीष्ट । सद्य-ताविउ घीय नामिउं । मजिष्ठा वर्ण । अवधारइ कर्ण । सरहरी धार । प्रीणइ जीमणहार । सोभागीउ । नाशा पटु पेउ । साख्यातु अमृतु । एवं विध घृत । अनंतर वडा । घणइ तेलि सीनां । हाथि तउ वलइ । मुहिं पड्या गलइ । स्वर्गथ्या देवता टलवलइ । इसा अनेक परि वड्या । आदा वडां । मोतीया वडा । कांजीया वडा । सुतल्या वडा । सालीया वडा । दालीया वडां । खाड वडां । कुहाडिया वड़ा प्रभृति । परीस्या । तदनतर मुंग नी वड़ी । उडद वड़ी । छमकावी वड़ी । पलेह वड़ी । सउंतली वड़ी । राब वडी । मांहि आदानुं वीरु । छमकावी डोडी । टलटलता टींडूरा । चम चमता चींभड़ा । भली वालुहलि । कलकलता कोसभा । मुड़हड़ती सागरी । सडसड़तां डोडिका । छमछमती भाजी । रुडा राइत्ता । चिहुवानी पलेह । कडूआ । कसाइला । तीखा । मुधरा । जिसी पाडोसणि तणी जीभ । इस्या कडुआ । जिमु दगर तणउ उपदेश इस्या कसाइला । जिसी सुकि नी जीभ इस्या तीखां । जिसउ माता नु चित्त इस्या मधुरा । कउठ कउठ वडी कइरवंदा । अंबाहुलि । गूरण । पूरण । मांडमी । ईढडा । प्रभृति शाक मूक्या । तदनंतर वान्न साल्योदन तणां करंबा । कपूर तणउ वास । एलची नउ उल्हास । भोज्य लक्ष्मी नउ निवास । माहि दही तणउ प्रयोग । जीणइ हुइ जीमणहारि रइ अभयोग । इसु करंबउ । अमृत मय बोल । क्षीर समुद्र कल्लोल । प्रीणइ मुखकमल । तदनंतर-अथाणा । महमहती मिरी मजरी आंबे अरु आदउ प्रधान पीपलि आम्बी आंबी । तदनंतर पाणी । तदनंतर पान

नागर खडा, कपूरा वेलीया । आधी गामा चेयउला मागुरा बीटि साकडा । अल्पनसा जाल मनोहर पान वारूरा जागर खाडी व पूरवट्टरि वटिका प्रमुख मुख वास दीधा । अनेक वृध वारू पट्टकूल तेह दिवराणा इति भला । वस्त्र दीधा । एवं विध स्वजन परजन सतोख्या ॥ रसवती संपूर्णा ॥

(पत्रांक १२ वाँ, संग्रह में १७ वीं लिखित)

१३ रसवती वर्णनम् (३)

गगोदक शीतल, थाल नइ धोवण दीधा जल ।
पछइ नीली फलहलि परीसी, ते किसी किसी ।
आवा, राइण, केला, खरबूजा, फूट मतीरा,
दाडिम, दाख, वीजोरा मीठा खाटा, खाटा मीठा नींबुया ।
सेलडी जम्बीरा, डागरा, फणस, अन्ननास, सेव,
मधुरा कालींगडा, नारिंगी, नीला नालेर, खारिक,
खजूर, खरसूया, अखोड़, वाइम, विदाम, वेदाणा,
पिस्ता, किष्टा, कमल काकड़ी, सींघोडा, चारोली, चारवी,
जूना करणा, मीठा कमरक, साख पका आबा,
के छोली, के मउली, के घोली, के कातली करी
खाड घृत संयुक्त, बूरा तणा पूर ।
कर्पूर वासित वरसोला, वेकरीया वरसोला ।
खाडइ भेल्या, घीयइ मिल्या, कूकणीया केला ।
सोनेला, राजेला, हाथेला, तेहनी पातली कातली ।
तेहनी परीसणहारि, श्यामाग नारि ।
संपूर्ण श्रृंगारि, कठाभरण हारि ।
जाणइ रभा नइ वशि, देव कन्या रइ असि । इसी नारि परीसइ ।

पकवान तणी जाति—

सतपुडा खाजा, सर्व साजा ।
जिसा प्रसाद ना छाजा, ते जिमता लागइ ताजा ।

तदनंतरि लाडू आवइ—

मोती लाड्डू, दाल लाड्डू, सेवइया लाड्डू, चारोलिया लाड्डू,
भगरीया लाड्डू, सिंह केसरिया लाड्डू ।
नादहल, इंद्ररसा, दहिवड़ा दहिवडी, फीनी, सोट, सुंहाली, सेव, भुगटी,

प्रमोदक, सोधक, मोदक, गलगलता घेउर, उन्हउ कंसारु, तल्या गूंद, दधिवर्ण दहीथरा ।
पडमूर्धानी साकुंली, दीठइ जीभ थाइ आकुली ।
परीसणहारी नहीं वाउली ।
माडी, मुरकी, जलेबी, मगद वरनारि, श्यामा, मृगमद धारि, मुख पद्म दलाकारि, ऐहवी जे चतुर नारि, ते नाना विध पकवान परीसइ ।
हिवइ मांडा आवइ—खाड माडा, मोकला माडा, गूद माडा, आछा माडा, आकासिया मांडा, कपूरिया माडा ।
चरिमउ, गलिउ चरिमउ, साकारिउ चरिमउ
पाखलि मूकिउ, आंबिल वाणी,
द्राखवाणी, साकर वाणी, खाडवाणी । तदनतरि सालि

(१) सुगंध सालि	(२) सुवर्ण सालि,	(३) कुंयारी सालि
(४) चंद्रणि सालि	(५) श्वेत शालि	(६ रक्त शालि
(७) नील शालि	(८) पीत शालि	(९) महाशालि
(१०) शुद्ध शालि	(११) कौमुदी शालि	(१२) कलम शालि
(१३) कुंकणी शालि	(१४) तिलवासी शालि	(१५) जीरा शालि
(१६) कुद शालि	(१७) रामभोग शालि	(१८) मरूड़ा शालि
(१९) देवजीर शालि	(२०) धूममोगर शालि	(२१) केतकी शालि
(२२) नीलोत्री शालि	(२३) साठी चोखा	(२४) मूजी चोखा
(२५) अखंड चोखा ।		

इसी सालि नउ कूर—

अणियालउ, सुहुयालउ, सुरहउ, सुगन्ध, फरहरउ, दूबलियइ खाडियउ, सबलियइ छडिउ, हलवइ हाथइ सोहयउ, नखवती वीणिउ, फूटर सखि स्त्रीयइ धोयउ, हितुई स्त्रीयइ ओराव्यउ, चतुर स्त्रीयइ ओसाव्यु, सरस, सुकोमल, उजलउ, त्रि अंगुल उस्यउ कूर परीस्यउ ।
मडोवरा मूग तणी, त्रिछडी दालि, माधुर्य तणी पालि, वानि पीयली, परिणाम सीयली । इसी दालि परोसी ।
सद्य सतपित, परमामृत, मजिष्ठा वर्ण, वघारइ कर्ण, सरहरी धार, वडी वार, प्रीणयित जीमणहार, सौभाग्य अजेय, नासापुट पेय, साक्षात् अमृत समान । एहवउ घी परीस्यउ । पट सुधीनी आछी पोली, खाड घृत स्युं ओली । त्रिहु पोलीए एक कवल थाइ, फूकनी मारी फलसा लगि जाई ।

हिवइ सालणा आवइ । ते किसां ?

डोडी, टींडूरा, टींडरा, चीभडा, वच्चीडा, कोहला, कारेला, कर्म्मदा, कर्प्पटा, कालीगडा, करणा, केला, ककोडा, गिलका, गोल्हा, खेलरा, सेलरा, सरघूनी फली, आमला, आयरिया, आबिली, घीसोडा, मतीरा, तोरीया, चुसडी, डागरा, खरबूजा, वृताक, मोगरी, नीबूया, जीड्या, वालहालि, कउठ, कोठीमडा, चउलाहली, मरिच नीली, पीपरि नीली, नीलूया चिणा, चदलेवउ, बथूउ, सोया, सरिसव, अजमउ, मेथी, कयरफूल, चीलिरी भाजी, सागरी, काचरी, आमलेठी, आवहलि, कयर, भोरडा, पेठा, दूधीया, पटींडरी, चोली, काचरी, वलिनी, फोग, फोगड़ी, बाउलीया ।

वड़ां आवइ, घणइ तेलि सीना, घणइ-घोलि भीना, मरिचना चमत्कार, अत्यन्त सुकुमार, हस्तिपद प्रमाण, हाथ तइ उछलइ, मुँह पञ्या गलइ, स्वर्ग थी देव देवी टलवलइ । आदा बडा, डोंडीया बडा, काजी वडा, घोलवडा, मिरिपाली बडी, छमकाली बडी, तली वडी, कूर वडी, पेठावडी, रूडा राईता ।

हिवइ पलेव–सूठिया पलेव, हलदिया पलेव, मरचिया पलेव, पीपलीया पलेव ।

वारू खाड पीस पीपलिया तीमण, समरिचीया तीमण, सलवणा तीमण, सचोपडा खाटा बघार वहुल, तदनतरि परिसीयइ घणा । वारू वघारिया, दही तणा घोल, तिणि भर्या कचोल । सघरा दही, शाल्योदन तणा कदब । कपूर तणउ वास, भोज्य लक्ष्मी तणउ निवास । सींधव जीरा तणउ प्रतिवास । एहवा करंबा परीस्या । अमृतमय घोल, खीर समुद्र तणा कल्लोल । अत्यत धवल, प्रीणियइ मुख कमल । एवं विध रसवती ।

उपरात चलू नइ काजि–केवडीया काथ वाणी, पाडल वासित पाणी, कपूर वासित पाणी, चदन वासित पाणी, सुगन्ध पाणी, एलची पाणी, चपक वास्या पाणी । हिम जिम सीतल जइ करी मुख हस्त पवित्र कीधा । तदनतरि, सुरभि अबीर, गुलाल, केसर छाटणा कीधा ।

हिवइ पान जाति–नागर खंडा, अडागरा, मागल उरा, चेउली, कपूरीया, आधीगमा, टोडारा, ग्वालेरा, तेह तणा बीड़ा ।

कपूर, लवगी, एलची, मृगमद, सोपारी, जाइफल, जावत्री, खइखड़ी, सखचूर्ण, मोतीरउ चूर्ण, केवडीउ काथ, तेह सहित बीडा मुख वासि दोधा, जाची जबाधी महमहइ, अगर तेल सहित गधराज गहगहइ । शीतल वाय नइ काजि वारू वीजणा ।

तदनंतरि। सुगन्ध पंच वर्ण पुष्प पगर फूल। जाइ, जूही, कुंद, मुचकुंद, केतकी, केवडा, चंपक, मोगर, मालती, जासूल। कमलादिक बहुविध फूल दीपइ।

तदनंतरि बहु विध वस्त्रे करी पहिरावणी, अत्र वस्त्र नामानि अष्टम पदे पंचम कथायां लिखितानि वाच्यानि।

१४ भोजन वर्णन (रसवती) (४)

मांड्यउ उत्तंग तोरण माडउ, तुरत नउ कस्यउ नवउ।
ते कहवउ ? ऊंचउ दल-वादल तंबू जेहवउ।
तेहनइ तलइ आंगणउ, तेतउ नील रत्न तणउ।
तिहाँ सखरा मांड्या आसण, तउ वइसवा नी सी विमासण ?
आगइ मूंकी सोना नी आडणी, ते कहउ किम जाइ छाडणी ?
ऊपरि धरया स्वर्णमय थाल, अत्यन्त घणु विसाल।
विच्चिमइ चउसट्ठि वाटकी, नव-नव घाटकी।
थालइ गंगोदक धोवण दीधा, तिणसुं कर पवित्र कीधा।

परीसणहारी

सिगली पाति बइठी, तितलइ परीसणहारी परीसिवा पइठी।
ते केहवी ? रूपइं रंभा जेहवी।
सोल शृंगार सज्या, बीजा सर्व काम तज्या।
रूप नी रूडी, हाथे खलकइ सोना नी चूड़ी।
लघु......ला, मन कीधा मोकला।
चित्त नी उदार, अतिहि दातार।
पहिरया गलि नवसर हार, मुख पद्म दलाकार।
अनछरा नइ अणुहार,..... .।
...सर दिहइ मिलइ तेहने उसास, ...।
सर्व दूषण रहित, सीलादिक गुण सहित।
भमभमती आवी, सहु नइ अति भावी।
पहिली फलहलि परीसइ, सिगला ना हीया हीसइ।
पाका आंबारी कातली, निपुण पणइ कीधी पातली।
के छोली के मोली, के मृग घृत सूं घोली॥
अखरोली...... परीसइ सहेली, नेह गहेली॥

भोज्य पदार्थ

वली पाका केला, घृत सुंखंड सु कीया भेला ॥
वर सोला, वेकिरीया वरसोला ॥
कूंकणीया केला, सोमेला वेला ॥
जूना करणा, पीला वरणा ॥
नीला नारंगी, रंगई दीसता सुरगी ॥
रूडी राइणि, परीसइ भाइणि ॥
दाडिम नी कली, खाता पूजइ मनरली ॥
......जिमता......द्राख नइ विदाम के कागदी के स्याम ।
सलेमी नइ खजूर, ते परीसइ भरपूर ।
चावडली नइ पिस्ता, लोक जिमइ हस्ता ॥
गलवी गुलसु भरी, आगे लइ धरी ॥
सखरा सदा फल परिस्या परघल ॥
कात्रिली खरबूजा अउर देसाई दूजा ।
मीठा उ .. छू खाटा नइ मीठा, ते पुरीसता दीठा ॥
हिव परिसइ पकवान नी जाति, भरि२ आणीये पराति ॥

तेहनी परीसणहार, स्यामावतार ॥
कठाभरणहार, देवकन्या नइ असि ॥
इसी नारि परीसइ पकवान, जिमता वाधइ सुखवान ॥
सतपुडा खाजा, चतुर नारि कीया ताजा ।
मदलानइ साजा, जेह ॥
जिमता लागइ ताजा, मोहीयइ राउत राजा ॥

लाडू वर्णन

पछइ परीस्या लाडू, जाणे नान्हा गाडू ॥
जिण दीठा न रहइ मन ठाम, हिव सुणउ तेहना नाम,
केसरिया वेसरिया,......... . ... ॥
सेविया, मु ठिया, मोतिया, मगदिया ।
मूगिया, कीटिया, कसेलेया, मेथिया ॥
किसमिसीया, तेलिया ॥
त्रिगडूआ, भगरिया ।
हल, परीसी परिघल ॥

वली पकवान आणइ, तेहना नांम वखाणइं ॥
सुंहाली नइ सेव, परीसी रूडी टेव ॥
वलि परीस्या फीणा, अत्यत भीणा ॥
सद्धर ... , नही का खोट ॥
ठमकते नेउर, परीसइ घेउर ।
तलिया गूंद, जाणे अमृत ना बूंद ॥
भरि २ आणइ तब्राकँ, सखरा गूंदपाक ॥
पडगूंधी नइ साकली, जिंमता नह थायइ आकुलि,
वली गुलगुला, स्वादइ भला ॥
दही वडा, गूढ वडा ॥
माडा नइ मुरकी, ऊपरा ल्यइ भस्मार्कनी भुरकी ॥
ऊन्हा कंसार, ... ॥

सूंखडी

परीसइ मोहन भोग, वृद्धा नइ जोग ॥
परीसइ चूरिमा, जिमता वाधइ ऊरिमा ।
दधिवर्ण दहीथरा, जिमता .. ।
खुरमा नइ खीर, जिमता वाधी भीर ।
पेठा नइ पेडा, गुंदवडे कीया निवेडा ॥
मइंगल ज्यु माल्हती, चिहुं दिसइ चालती ।
हसगति हालती, मानीना गर्व गालती ॥
स्यामा मृगमदधार, मुखपद्म दलाकार ॥
सकल सहेली परिवार, एहवी चतुर नार ॥
अंगिताकार, पकवान परीसइ सुविचार ॥
हिव माडा आणइ, भलइ टाणइ ॥
कवीसर वखाणइ, जेहवा एक जाणइ ॥

मांडा वर्णन

खाड माडा, मोकला माडा,
गुल माडा, गृड माडा,
आनिया माडा, कपूरीया माडा ॥

पाणी वर्णन

विचइ पावइ पाणी, झारी भरि २ आंणी ॥
आंबिल वाणी, द्राख वाणी ।

खाड वाणी, साकर वाणी ।
एलची वाणी, कपूरवासित पाणी ॥
करती झाकझमाल, हिवइ परीसइ साल ॥
नवनवी भाति, पिण कहुं कितरीक तेहनी जाति॥

शालि वर्णन

सुगध शालि, कुंकु शालि ।
कलमली शालि, तिलवासी शालि ॥
जीरा शालि, कुढ शालि ।
राय भोग शालि, गुरुडा शालि ॥
देवजीर शालि, धूम मोगरा शालि ।
केतकी सालि, नीलउत्री सालि ॥
चद्र शालि, स्वेत शालि ॥
पीत शालि, सद शालि ॥
नील शालि, भद्दा शालि ॥
शुद्ध शालि, कौमुदी शालि ॥
साठी चोखा, मुजी चोखा, अखड चोखा ॥

शालिकूर

इसी शालि कूर, आणीयइ भरपूर ॥
अणीयालउ, सूआलउ, सुरहउ, फरहउ ।
सुगध, परीसइ मुध ॥
दूबली स्त्री खडयउ, सबलीये छडयउ ॥
हलवे हाथे सोहयउ, जा लगें मन मोह्यउ ॥
नखवती वीणीया, सुघड स्त्रीये चीणीया ।
फूटरी सी स्त्री धोया, हितूई स्त्रीयइ जोया ॥
भली भाँति ऊराया, राधता जब कस आया ।
तब चतुर स्त्री उतारी, भलइ वस्त्र सुं झारी ॥
सरस सुकोमल उजलउ, त्रि उगलउ ॥
एहवउ कूर, परीसइ भरपूर ॥

हिव परीसइ दाल, सोहइ स्वर्णनइ थाल ॥
मडोवरा मूंगतणी त्रिछडी दालि, माधुर्य तणी पालि ॥
नानि पीली, परिणाम सीली ॥

दाल नाम

सुणज्यो सहू ते दालिनी जाति, बहू काविली चणानी दालि ॥
तूअरनी दालि, मसूर नी दालि, उडद नी दालि॥
झालर नी दालि, मटर नी दालि ॥
भली विफाड दली, एहवी दालि परीसी वली ॥
हिव ऊपरा परीसइ घी, सहू कहइ जी जी ।
सांझ ना जमाव्या, परभातिना ताव्या ॥
सद्य तपित, परमामृत ॥
मंजिष्ठा वर्ण, वधारइ कर्ण ॥
सरहरी धार, वडी वार ॥
अत्यंत सुखकार, आणीयइ जीमणवार ॥
सौभाग्य अजेय, नासापुट पेय ॥
साक्षात अमृत समान, जिम्यां वाधइ देह नउ वान ॥
सुरहउ अतिवास, तावीयउ खास ॥
हिव परीसी आछी पोली, झाझा घृत सुं झकोली,—
त्रिहु पोलीए एक कवल थाइ, फूकरी मारी फलसा लगिजाइ ॥

सालणा

हिव सालणा परीसइ, सहूना हीया हीसइ ॥
कवण २ सालणा, हिव तेहनी चालणा ॥
नीली छमकाई डोडी, जिमइ होडाहोडी,
पटीरडी वडी, सेलरा खेलरा ।
सरगूनी फली, मूंगफली, चउलफली, ग्वारफली
केला, करेला, कोहला, आमला ॥
नारंगी, वंगा, टींडसा, पर्पटा, कर्पटा ॥
करणा, वरणा, नीलवणा,—
खाटा सालणा, मीठा सालणा
तल्या, गल्या, चीमडा, कालिगडा ॥
भुरडा, तूसडा, पटीरडा, कोटीवडा ॥
मतीरा, खीरा ॥ खरबूजा, तरबूजा, करमदा, घरमदा ॥
सिंघोडा, ककोडा । मोगरी, सागरी ॥
वृताक, नीलाशाक । निंबू, जंबू ॥

तुरी, सणहारी, सनूरी ॥
चाउलिया, आयरिया ॥
दूधिया, सझोलिया ॥ आम्रहल, वालहल ॥

अथाणा

नवनवा अथाणा, जिणइ जिमता रीझइ राउ राणा,
सालणा ॥ कदमूल, अनइ कपर फूल ॥
नीला कयर, परीसइ बयर ॥
चणा काबिली, अनइ आंबिली ॥
मागइ घेठा, तिवारइ परीसइ पेठा ॥
रूडा राईता, मन भाईता ॥
पीपरि पीली, मरिच नीली ॥
काकडी, वली धावडी ॥
कउठ, छमक्या मउठ ॥
काचर, मुठकाचर ॥ कोचला ।
. . काचरी, ऊभ काचरी ॥
परीसिवा जोग, केवस्यउ फोग ॥
बघारया, धू पघारया ॥
अनेक छमकाया, सालणा ल्याया ॥

भाजी

झाझा घी सु ं साजी, स्यु करइ भाजी,
जिणा जिमता म थायइ राजी ॥
सरसवनी, सोवानी, पूलानी वथुवानी ॥
चणानी, मेथीनी, तेजारानी, चंदलेवानी ॥

वड़ी

हिव आवइ वडी, एवडी पेठा वडी, आदा वडी ॥
मरिच वडी, छमका वडी, घोला वडी, पापड वडी ॥
काट वडी, दधि वडी, सिरावडी ।

वड़ा (दालिया)

हिव ल्यावइ, दालिया, वस्या हीया ।
ते एहवा, पणु वखाणीये जेहवा ॥
घणइ तेलइ सीना, घणइ घोलइ भीना ।

मरिच ना चमत्कार, अत्यंत सुकमार ।
.... , ... तल्यां सुजाण ॥
......दही.... .दही, मउला दही ।
हाथ लीधी ऊछलइ, मुहडइ घाल्या गलइ ॥
सर्गना देव देवी टलवलइ, देखंता डाढ गलइ ॥
आदा वडा, काजी वड़ा, घोलवड़ा,
मूंगिदाल वडा, मउठि दालि वडा ॥
उडद दालि वडा, डोडीया वडा ॥

पलेव

हिवइ आवइ पलेव, जिमता टेव ॥
चोखानी पलेव, पीपलिया पलेव ।
हलदीया पलेव, सूंठिया पलेव,
मिरचीया पलेव ॥
वारू वघारया घोल, परीसियइ भरि कचोल ॥
सीधा जीरा तणउ प्रतिवास, भोज्य लक्ष्मी...॥
प्रीणियइ मुखकमल, ...
जाणे क्षीरसमुद्र ना कल्लोल, एहवा अमृतमय घोल ॥

दही

हिव परीसइ दही, तउ जिम्या सही ॥
गाइ ना दही, भइंस ना दही, लिगार मइला नहीं ॥
कर्पूर तणउ वास, एहवा परीसइ दही खास ॥
वीजणे वाउ घालइ, गरमी सहूनी टालइ ॥
इम भोजनरीति अप . ... .।

पाणी

चलू कांजि पाणी अणावइ, झारी भरि २ ल्यावइ ॥
हिम जिम सीतल, अतिहि निर्मल ॥
कर्पूर वासित पाणी, पाडल वासित पाणी ॥
केवडीया पाणी, चंदन वासित पाणी ॥
एलची वासित पाणी, सुगंध पाणी ॥
एहवा जल दीधा, तिणसुं मुख हस्त पवित्र कीधा ॥

तंबोल

तदनतर दीजई तबोल, सुरभनइ बहु मोल ॥
टोडेरा, ग्वालेरा, अजमेरा, नागर खडा, मागल,
कपूरिया, मागही, इत्यादि पान नी जाति कही ॥
वाकडी सोपारी फाल, पिवल सोपारी फाल ॥
कर्पूर वासित, केसरादि सोभित ॥
मृगमद गटिगल, जावत्री नइ जाइफल ॥
खडचूर्ण, मोती चूर्ण ॥
केवडा काथ, इत्यादिक तबोल द्यइ सहू नइ हाथ ॥
कास्मीरी केसर ना छाटणा कीधा, इम लाछि ना लाहा लीधा ॥
अगर तेल सहित गध राज गहगइ, जा चीज वाधि गहमहइ ॥
ऊछाल्या अबीर नइ गुलाल, भला तिलक कीधा भाल ॥
हरख्या बाल नइ गोपाल , हिव सुणउ ...।
· मुख आभा उली, मिहर कुली, कलमली, सिणली ।
अर्कतूल, पट्टकूल, बहुमूल, कपूरधूल ॥
रत्न कबल, मारु कवल, गगाजल .. ॥
.. धूनउ जूनउ ठटाई जोडी, किणही न विखोडी ॥
सिंधू दोटी, महीन नइ मोटी ॥
गउडीयउ, चउडीयउ ।
गगोदक, सोधक, खीरोदक ।
दुरंगी, सुरगी ।
सो नार गामी, धरण गामी,
थानेसरी, अधउतरी वडवरी अउधी ।
अमृती, बुलबुल चुस्मा बहुमती ॥
कपूर वाटी, मोछण लसखासी ।
कोरी, बोरी, साडउ, ठेपाडउ ।
खासउ नइ खेस, पूरवी सुविसेस ॥
नवनवी पाथडी, पचवर्ण कास्मीरी पामडी, टूकडी,
चरणा नइ चूनडी ॥
पलिंग पोस, सतोस, सूफ सकलात, विलाइती विख्यात ॥
भइरु खान जाई, नीलक नइ दरीआई ॥

देश परदेस ना सालू, बंधण नइ रंगालू ॥
मालदही, मावा पिण सही ॥
मजीठी दोटी, पलाली मोटी ॥
करता भकभमाला, लाहोरी वाला ॥
मुलतान सलहटी, पटणी पटी ॥
हज्जारी नरमा, काबिली दुरमा
सूसी नइ सेला, गर्म सूत्र वीणी भेला ॥
कसवी चीरा, भलकइ जाणे हीरा ।
छींट अनेक भाति धरी, रंगइ खरी ॥
श्रीसाफ, श्रीवाफ, कथीया जरबाफ ॥
वास्ता, तास्ता ।
कुरता, रंग मइ नहीं का खता ॥
दुगजा, तिगजा । अदूष्य, देवदूष्य ॥
चीनाशुक, पट्टांशुक । सिरबंध, तनुबंध,
कमरबंध ॥ इकतारा, दुतारा ।
हीरागर, वइरागर फूलफगर, टसर, खसर ॥
चादर, वादर । अंबर, पीताम्बर ॥
नारीकुंजर; मसंजर । सारभार, रउंकार, दाडिमसार,
चउतार । वस्त्र पहिरावणी इत्यादिक सुविचार ॥
लइ मानुष अउतार, इम करइं भोजनाधिकार,
ते धार लहइ सुजस अपार ॥
इति भोजन विधि वर्णनम् ॥(कु.)

१५ घृत

सद्य तायिउं, धारइ नामिउं ।
मंजिटा वर्ण, वधारइ कर्ण ।
सरहरी धार, भीणइ जीमणहार ।
सौरम्य अमेयु, नासा पुट पेउ ।
साक्षात अमृत, इस्यु घृत ॥

१६ धान्य (१)

साल, माल, गोहूँ, जव, ज्वारि, तूर, चणा, चंवला, वटला, मूंग, मोठ,

माष, मसूर, मासो, मणचो, वरटी, बाठडो, समलाईया, कागणी, कोदरी, कूरी, कुलथ, वेकरियो इत्यादि धान । (वि.)

१७ धान्य (२)

जव, गेहूँ, साल, व्रिही, कोदरी, मूग, मोठ, चिणा, चौला, उडद, कागड़ी तिल, मसूर, तूर, अलस, कुलथ, तूअर, कार, (ग्वार) मक्की, माल, वरटी, बाजरी, मणची, सही, रायमख, वटला, काछाण, राल धान्य नामा ॥ इति सभाश्रृंगार सपूर्ण । स. १७६२ वर्षे फाल्गुन सुद सप्तम्या तिथौ भृगुवारे गणिमहिमाविजयेन लिपि कृताद श्रीरस्तु ॥
श्लोक ग्रथाग्रथ ७५६ एमि ग्रथ सख्या जायते ॥

(मोतीचदजी सग्रह प्रति)

१८ लाडू (१)

कसार ना लाडू, कसमसिया लाडू, कसेला ना लाडू,
मोतीआ[1] लाडू, कीटीना[2] लाडू, केना[3] लाडू,
मगदीआ लाडू, मोतीआ लाडू, मेथी ना लाडू,
मूंग ना लाडू, मेदा ना लाडू, चोखा नूं लाडू,
सिंह केसरिया लाडू, ओषधीया[4] लाडू, अडदीया लाडू,
आसध[5] ना लाडू, तिलना लाडू, त्रिगडू ना लाडू,
लाखण साही लाडू, धाणी ना लाडू, कुली ना लाडू,
कूलरिया लाडू—एहवी विविध प्रकार ना लाडू ।

१९ मोदक (२)

॥ तदनतर ॥ शुद्ध खानइ दलवाडइ केलव्या । घृत वर्ण पाकि तल्या । शर्करा पाकि बाध्या । मरी एलची ना चमत्कार ।
काचां कपूर ने वासे वास्या । स्थूल वाटला महोज्वल ।
इसा सेवईआ लाडू । दल लाडू । बीबा लाडू । मोतिआ लाडू
वाजण लाडू । नाद हल । अमृत हल । खल खड । भल खड ।
प्रमुख मोदक मुक्या ।
जाणिइ किरि भोज्य लक्ष्मी तणा क्रीडा-कदुक हुइ जिस्या ।
अथवा सुकृत द्रुम तणा परिणाम मनोहर फल हुइ जिस्या ।

---

१. मोतीचूर ना लाडू । २ कीटिया लाडू । ३ कणक ना लाडू ।
४. उखदीया लाडू । ५. आसधिया लाडू ।

परीसणहारि तणा पयोहर संपूर्ण हुइ जिस्या ।
अमृत घट हुइ इस्या मोदक शोभइ ॥

२० सुंखडी (१)

पुडी, पेंडा, पापड़ी, पात, पापड, खाजा, खाडकतेली, खाडखुरमा, दहीथरां, दमीदो, दोठा, गूदगणी, गाठिया, सकरपारा, सुंहाली, गूंदवड़ा, गूंदगणा, गूजा, गुलपापड़ी, गलेफी, मुरकी, मोतीचूर, सोष्ट, साकली, सेव, सेवगाठिया, साबूणी, सीरो, साकरिया चणा, हेसमी, घेवर, फीणी, जलेबी, पतासा, कल्याणसाई, बादरसाई, तल्या, ताया, कुल्या, करकरा, मोला, मीठा, गल्या, गलेफ्या, चीगटा, चूचूता, भरया, भरभराया, एहवी सुखडी ।

२१ सूंखड़ी नाम (२)

पूड़ी, पेड़ा, पापड, पापड़ी, खाजा, खांड, खुरमा, दहीथरा, दमीदो, दोठा, गुपचप, गुंदगणी, गाठिया, गुंद वड़ा, गुंजा, गुल, गलेफी, मुरकी, मोतीचूर, सोठ,साकली, सेव, सकरपारा, सुहाली, सीरो, साकरीया चणा, हेसमी, घेवर, फीणी, जलेबी, पतासी, कल्याणसाही, तल्या, तावा, कुंला, करकरा, मोला, मीठा, गल्या, गलेक्या, चूचूता, भर्या, भरभर्या एहवो स्वाद ।

२२ सूंखडी (३)

॥ सूखड़ी वक ॥ ऊपलिइ मालि । सुवर्णमय स्थालि । प्रशस्ति कालि । छोहारि, खारिक । वेकटा । वरसोला । हीरागल । साकर । किसमिसि दाख, दीपशाखा । खजूर । सरंग । नारंग । तरुण करण । सरस पनरु । सारस हकार । अमृत निर्यास । अंजास । सूनेला । राजेला । नारसखेला । केला तणी कातली । बीजोरा तणी चड़उडी । नालीयर नी खड़हडी । दाड़िम नी कुली । वारुं चारुली । घड़ूया सीवोंडा । मनगमी वायमी । इक्षु दंड । अखोड खंड । निउंजा । जंबीर । सुखा स्वादन प्रभृति स्वादइ नी पत्र फलहुलि ॥ (पु०)

२३ सालिजाति (१)

सुगंध साल, सुवर्ण साल, कुकणी साल, देवराजी साल,
रायभोग साल, सुद्ध साल, कमोद साल, कमल साल ।
रासुकी साल, धोली साल, राती साल, पीली साल,
जीग साल, राम केलि साल, पुनासी चोखा, अखंड चोखा ।
राजोग चोखा, माटी चोखा, दूधगिया चोखा, रायपाल चोखा ।
सुखदामी चोखा, सोनल साल, गरडी चोखा, एहवा चोखा ।

२४ सालि नाम (२)

सुगध, सुवर्ण, कुकणी, देवजीरी, राजोरा, जीरा, रायभोग, पाथरिया, साठी, कमोद, कमोल, धोली, पीली, राती, काली, इत्यादि सालि ।

(कौ०)

२५ शालि (३)

॥ तदनतर ॥ रक्त शालि । महाशालि । सुवर्ण शालि । सुगध शालि । तिलवासी शाली । राजान्न शालि । साठिग्रा प्रभृति । सुमनीप्सित ।

अखड शालितणा चोखा । दूवली खाडिग्रा । वाली छडसा । निपूती वीणिउ । अलवेसरि आणीउ । सुमनि सोहिउ । फूटरीइ धोयउ । वीहती चालिउ । तरुणी हईइ धग देई उसायउ । भक्ति समारिउ ॥

२६ तंदुल (४)

कापिउ दातु जिम ऊमिलता,
वयरागरउ हीरउ जिम झलकता ।
वडी खाडिया, वाली छड़िया
त्राटि पाटि वीणिया, संख कुदावदात
सुगंध, अंगुलप्रमाण, सुरभि, कलमसालितणा अखड तदुल (पु. अ.)

२७ कूर (५)

उन्हउ । तीन्हउ । सरहरउ । भरहरउ । अणीग्रालु । सुहालउ । सरस सोहामणउ । ऊजलो जिस्यो केवडउ । ऊंडेरी जेवडउ । वूबलइ पेटिं पइसतु फूटी नीसरइ इस्यु कूर । घृत पहित तणइ सयोगइ । मन तणी रगि ।

२८ दालनाम (१)

मूग नी, मसूर नी, चवलानी, वटलानी, उडद नी, मोठ नी, तूअर नी, इत्यादि ।
फीखी मंडोरा मग तणी दालि ।
फोतरे छाडि, हलूइ हाथि ऊखलइ खाडी ।
त्रिछडकी, घस्यइ पाणी सीधी ।
वानइं पीली, नेत्र सीली ।
जीमता स्वादिष्ट, परीसणहारि अभीष्ट ।
परीसि दालि ॥ (पु.)

२६—व्यंजन (१)

वडां, सालेवडां, सांगरि, मिरि, मांजरी ।
गलहलि, अंबहलि, पूरण, सूरण, इंडरी वडी
पापड, कंकोडां, घीसोड़ा, कारेलां, चीभड़ा, कोठीभडां,
आदां, करमदां । प्रमुख व्यंजन ।

(१४२ जे०)

३०—व्यंजन (२)

पुष्पागरु, नीलागरु
राजवड़ि, तुरंगवड़ि
हंसवड़ि, राजवड़ि
सोवन, पारेवा
मेघवना, पटहीर
संभारावा सोनछला, प्रमुख चीभडी
कोटीमड़ी घूसेड़ा
आदा करमंदा, प्रमुख व्यंजन ॥ पु· अ.

३१—साक नाम (३)

सागरी, मोगरी, चोराली, चोला, खेलरा, काकड़ी, मतीरा, टींडसा, कोहला, कालिगड़ा, काचरी, कोचला, सरधूवो, आरीया, तोरीया आंवली, आंवोल, आल, आमला, करमदा, कैर, कंकोड़ा, करेला, फोग, चीलडी, पातोड़, सीरावडी, वडी, भुजिया, चींव, परवल, किदूंरी प्रमुख ॥ (कौ.)

३२—साक सालणा (४)

सागरी, मोगरी, चोलेरी, चोला,[१] चिणा, छोला[२], सेलरा, सरथूड[३], निरंजणो, आरीआ, तुरीआ, आंविली, आला, आवोल, आंमला, डलिया, टिंडा, टिंडसा, कोहलां, कालिगड़ा, काचरी, कोचला, काकडी, काजी, केला, करमदां, कइर[४], कंकोडा, कारेलां, रायवडी, वडी, वटला, वैंगण, पावोडी, परवल, वालोळ, फोगफली, मूंग[५], मतीरां, मेथी, गलकां[६], भुजिआ, प्रमुख, अनेक जाति—

---

१. चवला । २. छोना । ३. सरगुड, सरथूओ । ४. कैर । ५. मूगी । ६गलीया ।

खारा, खाटा, मोथळा, मीठा, कडुआ, कसायला, तीखा, तमतमा, मधुरा, मिरचीला, फोलातां, रायता[1], धुगारयां, वघारयां, तलग, अथाणो आंबिलीयाला काचां, पाकां, सूकां, नीलां, ऊन्हा, टाढां, बोहल्यां, छूद्या, सेक्या, कास्या, कलकलता, सलसलता, चूचूता, छोल्या—एहवा सर्व साक नी जाति।

३३—वड़ा (५)

।। एवं विध वड़ा ।। मेथीआं वडा। कांजिआ वडा। हस्तिपद वडा। मालीआ। दालिआ। सु तल्यां पापडी। मुगवडी। उड़द वडी। छमकावी वडी। पलेह वड़ी। सूंतली वडी। आखांमिरी। फूलवघार नइ। वासि वास्या पूरण। वघारीइ घरी। मिरी भरी खांडमी।

३४—शाक (६)

अनेक वानी पलेव। छमकावी डोडी। टल टलतां टींडूरां। कलअलतां कोसूंभा। सुड-सुडती सींग। ड्रुसडुसतां डोडिकां। छमछमती भाजी। रूडा रायता। चमचमा चीभडां।

पत्रमय। पुष्प मय। फल मय। मूल मय। त्वचा मय।

वात हर। पित्तहर। श्लेष्म हर। रोचक। दीपक। आप्यायको। कामुक। तिक्त। कटु। कषाय। आम्ला। मधुर। जारक। अनेक गुण मय शाक परीस्या।

३५—अथाणा

आला, काचा, पाका, सूका, नील्हा, उन्हा, सेक्या, वास्यां, कलकलता, सलसलता, वलवलता, चूचूता इत्यादि

३६—भाजी

तांदळजा नी भाजी, पोचीआ नी भाजी,
चील नी भाजी, चिणानी भाजी,
पुंआडीयां[2] नी भाजी, वाथला[3] नी भाजी,
राईनी भाजी, सरसव नी भाजी,
अफीम नी भाजी, मेथी नी भाजी,
सूआ नी भाजी, रजायण[4] नी भाजी।
मूळा नी भाजी, चंदलेई नी भाजी,
लालरी नी भाजी, एहवी भाजी।

---

१. राईता २ पुआण नी भाजी ३. बथुआ नी भाजी. ४. रायणी नी भाजी

३७—घोल

॥ अनंतर ॥ प्रवणोल्वणी रसाल नाना वाटला। पाणीनां।

कचोला मूक्यां ॥

तदनंतर ॥ प्रधान। वारूगल्या घोल। सुदधि निष्पन्न। सुवासिवासित। इस्या घोल परीस्या ॥

ते किस्या ? दही सूं कढ़िकढ्यां। सु जाढ़ि जाम्यां।. सुहत्थि हत्थ संपनं। लत्रथंव थत्र कपडिअं। तंदहि अंकह न संभरइ।

कडुआ। कसायला। तीखा। मधुरा।

जिसी पड़ोसणि नी जीभ तिस्या कडुआ। जिस्यू गुरु तणो उपदेश, तिस्या कसाइला। जिसी सोकिनी जीभ, तिस्या तीखा। जिस्यु मान उचित, तिस्या मधुरा।

त्रिहु वानी नी छासि-धणादे। जगदे। पंचधर।

लापसी। खांड माडा। पूरण मांडा। दाडिमीआ मांडा। कुरु कुरु मांडा। पत्र मद्दा प्रधान। एलची पाटला। सीकरी वास वासित। सुगंध सीतल। मद्दा मनोहर। एहवा पांणी ॥

३८—पक्वान्न (१)

केला, बरसोला
खर्जूर, बीजपूर
आंबिली, दाड़िमकुली, चारउली
इक्षुदंड, द्राक्षाखंड
मोदक, गुड़मोदक
इसा पक्वान्न ॥

३९—पक्वान्न (२)

पापड़ी, चुड़हडी, काकरियां, सलवलिया, कंसार, घृतपूर, सुंहाली, सेव, साकुची सातपुड़ी, खंडमोदक, गुड़मोदक, दोहठा, दही वडी, मांडी मरकी, सिंह केसर, पंच धार लपनश्री। एवं विध पकान ॥ छ ॥

१४४. जो

४०—पक्वान्न (३)

खडोतली, सुहाली, सेव, गणा, मोदक, माडी, मुरकी, फीणी, पापडी, साकुची, सांकुली, खांरि, खाड़, घृत, लचलची लापसी, सालिदालि। घृत नालि, व्यंजन पालि।

१ घोर

घलेह, पानक। माधुर, चुरासी सालसा। चउसठि खांटां। वीस तेल ना छमकाविया। दाधी, भूगी। इडरी बड़क। पापड शालि पापड। कूर। दधि, दुग्ध। घोलड़ाहि ॥ ६२ ॥ जै.

४१—पक्वान्न (४)

॥ तदनंतर ॥ सतपुट जिस्यां हुइ छाजां, इस्यां हुइ खाजां। मसमसी मरकी। शशि विशद सुहाली। फगफगां फीणां। दुग्धवर्ण दही वडा। घृत वर्ण धारी। सुकुमाल। सुंहाली। अखंड मांडी। शर्करा निचित साकुचीस्यउं तल्यां सेवंत्तां। वारु दही वडी। मागलकीआं। प्रमुख पक्वान्न परीस्यां ॥

४२—पाक

चारोली पाक, चाखी पाक, अखोडपाक, बदामपाक, केसरपाक, करमदा पाक, निमजापाक, पिस्तापाक, केलापाक, कोहलापाक, केरी पाक, किसमिसपाक, कोंचपाक, गूंदपाक, गोखरूपाक, गुलाबपाक, अफीमपाक, आंबापाक, आमलीपाक, आसंधपाक, एलचीपाक, सुंठपाक, सेलडीपाक, विजयापाक, सीधोडापाक, सोपारीपाक, दूधपाक, दहीपाक, दहीथडापाक, द्राखपाक, विरहालीपाक, पिपरीपाक, तनमनीपाक, त्रिगड्डपाक, भिलामापाक, लसणपाक, हरडेपाक, मुसलीपाक, नालेरपाक, बिजोरापाक, जावंत्रीपाक, जायफलपाक, बडबोरपाक, खारिकपाक, खलखलापाक, खुरमापाक, हींगलूपाक, लविंगपाक, लींबूपाक, महुडापाक, मिरीपाक, चणापाक, फूलपाक, फीणीपाक, शतपाक, सहस्रपाक, लक्षपाक, कोटिका पाक, कनकबीजपाक इत्यादि जातना पाक ॥

४३—पांणी (१)

सुगंध केवडाना, काथाना, कपूरना, पाडलना, चंदनना, एलचीना, वालाना गुलाबना, पालर पानी, गंगोदक, शुद्धपाणी इत्यादि (कौ.)

४४—पांणी (२)

सुगंध पाणी, केवडा पाणी, काथा पाणी,
कपूर पांणी, पाडलना पांणी,

चंदनना पांणी, एलचीना पांणी,
वालाना पांणी, गुलाबना पांणी,
पालर पांणी, वाकल पांणी, गंगोदक पांणी,
एहवा पाणीनी अनेक जाति ॥

४५—मेवा (१)

नालिकेर, सहकार । जांबू, बीजपुर ।
नारिंग, करणां, कपित्थ, द्राखा, खर्जूर ।
खारिक, अखोड़ ।
वायम, दाड़िम ।
राजादन, वारुकलिका ।
कदलीफल, पूगीफल ।
प्रभृति फलुहलि ॥ ६१ ॥ जै०

४६—मेवा (२)

केलां वरसोलां, खर्ज्जूर, बीजपूर, आंबिली, दाडिमकुली, चारउली, इक्षु-दंड, द्राखाखंड, आंबा, रायण अखोड़, वाइम, निमज्यां जरगोजां ॥छ॥ इसां भक्ष्य ॥१४३॥ (जै०)

४७—मेवा (३)

अखोड, अंगूर, किसमिस, छुकेला, केला, कमरख, अनार, अखरोट, आलु, अंजीर, बदाम, बिही, बिजोरा, बरसोला, खजूर, खलहला, खारिक, खरबुजा, खिरणी, फालसा, नारंगी, निमजां, पीस्ता, सेव, सहतूत, सफलजल, सदाफल, श्रीफल, सोपारी, सिंघोडा, सरदा, चारोली, चारुबी, तूत, तरबूज, द्राख, फणस, फाल, जरदालु एहवो मेवो ॥

४८—मेवा नाम (४)

खारक, खोपरा, किसमिस द्राख, बिदाम, पिसता, निवजा, केला, कमरख, अंगूर, अनार, अखरोट, आलू, अंजीर, बीहि, बिजोरा, बरसोला, खजूर, खलहल, खरबूजा, खिरणी, नारंगी, सेव, सहतूत, श्रीफल, सोपारी, सिंघोड़ा, सरदा, चारोली, फणस, जरदारु एहवा मेवा (कौ०)

४९—मुखवास (१)

विचित्र पत्र । अतिस्थूल पूगीफल । परत्र प्रतिकूल सौगंधिक । तांबूल, कपूर वास वासित मिति भद्रम् ॥ (पु०)

५०—मुखवास (२)

पान, काथो, चूनो, सोपारी, लवंग, डोडा, एलची, जायफल, जायपत्री, तज, तमालपत्र, खेलड़ी, खइरसार, कपूर, केसर, चिणकबाब, कस्तूरी इत्यादि मुखवास।

५१—भोग्य

तेल, तम्बोल, चूआचंदन, कपूर, केसर, कस्तूरी, कसबोही, मर्दन, उद्वर्त्तन, न्हावा, धोवो, सोहवा, सिणगारवा, पालवा-पोसवा, पहिरवा, ओढवा, खावा, पीवा, इत्यादि भोग्य।

५२—सुगंध वस्तु

केसर, सूकड, चूऊ, चदन, अबीर, जवाद, गुलाल, मोगरेल, चांपेल, जाचेल, केवडेल, करमेल, कपूर, कस्तूरी, अतर इत्यादि सुगंध वस्तु।

५३—सुगंध तेल

केवडिओ तेल, कल्पकरण तेल, कुष्टकालानल तेल, कनकबीज तेल, करंज तेल, सरसीओ तेल, ओषधीउ तेल, अर्धांग तेल, निगुडीओ तेल, निबोली-तेल, धूपेल तेल, विषगर्भ तेल, वाघेल तेल, भींडीनु तेल, भीलामा तेल, पातालयंत्र तेल, मालकांगणी तेल, डोलीओ तेल, तिलनुं तेल, टोपरेल तेल, करड तेल, सतावरी तेल, चानली तेल, चांपेल तेल, दाणेल तेल, अलसिउ तेल, एरंडीओ तेल, इत्यादिक तेल।

५४—वस्त्र (१)

चीनांशुक, पटाशुक।
गोजीनर्म, नीलनेत्र।
सचोप, पाटणीपट, पटहीर, विलचलिया।
मुगवन, माडलिया।
वइराग, रहीराग।
जादर, मेघाडंबर।
नेत्रपट्ट, धौतपट्ट, राजपट्ट।
गजवड, हंसवड़।
बोरियावडि, सुवर्णवडि।
कपूरिया, चउकडिया।

पोतिया, वक्रकोटा ।
राजवटा, महिवड़ा, नागवटा । प्रमुखाणि ॥ ६३ ॥ जै०

५५—वस्त्र (२)

वस्त्र—एहवा भला वस्त्र पहिर्या ते केहवा छैः १—सालू, सेलां, सीरीसाप, सिणीया, सुसीं, सलहेती, (सण), सूप सकलांत, चौरसा, चीर, चुनडी, चीणी, मीठा, मलमल, छींट, सिंदूरी, मखमल, महिमुंदी, पांमडी, पटका, पछेडी, पाट, पीतांबर, पटोला, पांचपदा, पट्ट, अटाण, अतलस, अधोत्तर, एलाचा, खासा, खेस, खारा, भैरव, बाहदरी, विदामी, दरिआई, दो तारा, धरमा प्रमुख अनेक वस्त्र सोभइ छइ ।

५६—वस्त्र (३)

देव दूष्य । देवाग । चीनांशुक । पट्टांशुक । पट्ट दुकूल । नील नेत्र । पाट्टत्र । पट्ट हीर । पट्ट साउली । पंचराईआं । नर्म खर्व फूल पगर । जादर । नेत्र पट्ट । धौत पट्ट । राजपट्ट । गजवड़ि । सुवर्ण वडि । हंस वडि । काल पडि । सूहचित्रां । कपूरिआ । इत्यादि वस्त्राणि ॥ छ ॥ पु०

५७—वस्त्र (४)

वस्त्रनाम :—

सालू, सेला, सिरीसाप, सणीया, सूसी, सलेती, सूप, सिकलात, चोरसा, चीर चूनड़ी, चींणी, सिन्दूरी, छींट, मींठा, मलमल, मुखमल, मिसरु महमुंदी, पांमडी, पटका, पछेडी, पाट पीतंबर, पटोला, पट्ट, अटाण, अतलस, अधोतर, इलायचा, खासा, घिलू, बाफता, अदरस, भैरव, डोरिया, खेस, खाला, वहादरी, त्रिदामी, दरीयाई, दोतारा, चोतार, कथीपा, मसंजर, झिलमिल, अवरंगजेत्री, कीमखाप, चकला, सीरसकर, थिग्मा, काला, पीला, धोला, नीला, राता, पंचवर्णा अनेक वस्त्र पहिर्या छइ ॥ ४ ॥ कौ

५८—परिधापनिकोपयोगी वस्त्र वर्णन (५)

अदूष्य	देवदूष्य	रत्नकम्बल	खीरोदक
तनुबंध	शिरबंध	कमरबंध	कठ
पीठ	पट्टाणी	अटाण	नर्म्म
खर्म्म	वज्र	प्रताप	जादर
नाडला	चउरसा	उलवेला	मेघाडंबर

दाडिमसार	हीरागर	वइरागर	फूलपगर
चीर	कथीपा	सानबाफ	जरबाफ
कमखाब	अघोतरी	तनसुख	मनसुख
गगाजल	खानजाई	अमृती	चीनाशुक
पट्टांशुक	गजवेडि	सुवर्णवेडी	हंसवेडि
नीलवेडि	कालवेडि	नीलनेत्र	मूगवन्ना
सचोप	पाटखी	पटा	पाटू
पटंबर	पट्टकूल	पीतांबर	नारीकुजर
वालाचूनड़ी	घाट	कमखा	दरीयाखानी
चूलिया	सटली	नाटी	अतलस
दरीयाई	लाहि	नाख्वटा	धौतवटा
चक्रवटा	चारसा	हसलीया	पोपटिया
पोपतिया	भइरविया	चापानेरिया	खाडकी
आसाउली	कोची	सालू	भइरव
बास्ता	सिरीसाप	श्रीबाप	टूकडी
खइरावाटी	सम्माणा	थानेसरी	घरणगामी
सोनारगामी	खासा, भूना	दहीकोड	दुगजउ
दु तारउ	चउ तार	चुपटा	गउडीया
टसरिया	पूरिया	सिखीया	मिणीया
एरंडी, चाप	चारोलिया	चलवलिया	प्रवालिया
गजिउ	कपूरधूलि	अर्कतूल	पाम्हडी
खेस	रोंकार	धटी	मुहमूटी
कसबी	चीरा	मुकमल	नीलक
तास्ता	दुरंगा	मसज्जर	चीनी
सूसी	टोटी	साडी	सेलउ
खासर	खरवास	सूप	सकलात
लोवडी	कंबल	लोलिया	भोटकंबल
नेपाली	काश्मीरी	मावा	कोरी
चोरी	सेत्रुंजी	गिलम	त्रापड़
खरड़ी	पाटी	वोरीया	कमलवन्ना (१२०) (सू०)

५९—स्त्री वस्त्र

चोलीवरणा, कसवी, कसीदा, कमखा, कुसूंबल, पटोली पटोला, पीतांबर, थाट, साडी, सखाली, अमरी, बाइल, जूई, राता, पीला, धोला, काला इत्यादि स्त्री ना वस्त्र।

६०—आभरणानि (१)

हार, अर्द्धहार।

त्रिसर, चतुःसर।

षट्सर, अष्टसर।

नवसर, अढारसर।

एकावलि, कनकावलि।

मुक्तावलि, विज्ञावलि।

प्रवरावलि, सूर्यावलि, नक्षत्रावलि।

कटीसूत्र, रसनासूत्र। मुकट।

पट्ट, शिखर चूडामणि कुंडल कटक।

कंकण, अंगद।

मुद्रानंदक, दशमुद्रक।

अंगुलीयक, हस्तांगुल कटंब।

कर्णपलिका, संकलिका।

पादका, ग्रैवेयका।

प्रभृति आभरण ॥६४॥ (जै०)

६१—आभरण (२)

हार, अर्द्धहार, प्रालंब, प्रलंब, मुकुट, कटक, कंकण।

केयूर, वाहरां, पीड़ला, टोडरा, नूपुर, कुडल।

एकावली, कणकावली, मुक्तावली, सूर्यावलि, चंद्रावली, नक्षत्रावली, सोभाग्यावली, श्रोणीसूत्र, काची कलाप, चूड़ामणि, अंगुष्टक, अंगुलीयक, मुद्रिका, नवग्रहा। बहुरखां, वलय, वालला, नगोदर, नागुला, खीटला, छत्रीटियां, घडि, मोतीमगी ॥ ६८। (जो.)

६२—आभरण (३)

आभरण

हार, अर्द्धहार, प्रलंब, प्रालंब; एकावलि, मुक्तावलि कनकावलि, रत्नावलि, सूर्यावलि, चन्द्रावलि, झलक, तिलक प्रमुख आभरण॥ (पु० अ०)

६३—आभरण (४)

अणवट, अंगूठी, वीछीया, पोलरी, कडी, कांबी, कांकण, कटिमेखला, झाझर, बाजूबंध, बहिरखा, पूची, छाप, वींटी, हार, अर्द्धहार, दुलड़ी, चौकी, माला, मोरड़ी, घड़ी, चीरु, साकली, तेहड, जिहडा, पाइल, मोतसिरी, सीसफूल, तलो, नवरंग, नवग्रही, त्रोर, अकोटा, झाल, खवगाली, खीटली, पानड़ी, नकफूली, नकवेसर, सिंघो, घूघरी, राखडी, सहेली।

टीकी, काजल, कूंकू, हींगलू इत्यादि ॥ (कौ.)

६४—पुरुष अलंकार, स्त्री आभरण (५)

तदनंतरि **पुरुष अलंकार** पहिरावइ तन्नामानि। १ हार २ अर्द्धहार ३ त्रिसर ४ चतुःसर ५ अष्टसर ६ नवसर ७ आरसर ८ एकावलि ९ मुक्तावलि १० ब्रजावलि ११ नक्षत्रावलि १२ टंकावलि १३ प्ररावलि १४ झूंवणा १५ पदकड़ी १६ माला १७ कुतरी १८ वाली १९ वेढ़ला २० तुगल २१ मोरला २२ कड़ी २३ गंठोड़ा २४ कर्णपूर २५ कुडल २६ पट्ट २७ मुकुट २८ चूडामणि २९ छोर ३० बाजूबन्द ३१ वहिरखा ३२ पेसदस्नी ३३ गिजाई ३४ नवग्रहु ३५ हथसांकला ३६ दसागुलिक ३७ मुद्रा ३८ अगुलिमुद्रा ३९ वेढ़ ४० वींटी ४१ वेलिउं ४२ नवघरी ४३ छाप ४४ कडली ४५ कटिमेखला ४६ कन्दोरा ४७ कडी इत्यादि।

स्त्री आभरण—१ राखडी २ वेणी ३ सहेलडी ४ झाबउ ५ सइथउ ६ टीलउ ७ चांदलऊ ८ चांक ९ शीशफूल १० फूली ११ मोरिला १२ पनड़ी १३ अरहट्ट १४ नकवेसर १५ काटउ १६ नकफूली १७ कुंडल १८ घडि १९ वींटला २० अकउटा २१ नागला २२ तांडक २३ त्राली २४ हारादिक २५ नींत्रोली २६ मादलीया २७ हांस २८ चीड २९ दुलड़ी ३० सांकली ३१ वालियां वालमी ३२ चूडो ३३ कांकण ३४ कांकणी ३५ त्रहिरखा ३६ प्रहुंचीया ३७ हथवालड़ा ३८ कांचूवा ३९ कटिमेखला ४० झांझर ४१ नेउर ४२ कड़ला ४३ त्रेघडि ४४ घूघरी ४५ घूघरा ४६ पाउलि ४७ कांत्री ४८ वींछीया ४९ मुद्रा इत्यादि स्त्रीजनाभरणा नामानि। (सू.)

६५—धातु नाम—

मृगाक, धातवर्द्धन, त्रंग, त्रंगेश्वर, पारद, अभ्रख, ताम्र, तावेश्वर, तेजानो, रूप रसरस, रमाग, अमलगोली, विजया, पुडी, लोहचूरण, लोहसार।

पंचर, पंचरत्तिरस, छमाणिक्य, रसपाचक, रसरूप औषध, वेषध, इत्यादि धातु नाम, (वि०)

६६—चाँदी का कटोरा

उघसियं नीघसियं पोतासियं चोखं चखं
ऊजलं नीमलं जसं पूनिम तणउ चन्द्र मंडलु
तिसउं रूपा नउं कचोलउं । (पु० अ०)

६७ रत्न (१)

पद्मराग	पुष्पराग	मकरतमणि	कर्केतन
वज्र	वैडूर्य	चन्द्रकांत	सूर्यकांत
जलकांत	नील	महानील	इंद्रनील
रागकर	विमचकर	ज्वरहर	रोगहर
शूलहर	विषहर	हरिन्मणी	चूनी
लोहिताक्ष	मसारी	नल	हंसगर्भ
विद्रुम	अंक	अंजनरिष्ट	मुक्ताफल
अहिमणि	चिंतामणि ।		

इति रत्न जाति नामानि ॥ (१२४ जो०)

६८ रत्न [२]

इंद्रनील । महानील । पद्मराग । पुष्प राग । लोहिताक्ष । कर्केतन । मगासगल्ल । पुलक । कौस्तुभ । सश्रीक । रत्नाकर । श्रीपति । देवानंद । पुष्टिकर । ज्योतिकर । गुणमालि । सोगंधिक । कर्कोटक । हंस-गर्भ । अंक । वरिष्ट । शिवप्रिय । सौभाग्य कर । विषहर । अंजन । पुलक । अरिष्ट । अमालि । तिकर । सूरल । शत्रुहर । जल निलय । पदक । सुभग । चंद्रकाति । सूर्यकाति । वैडूर्य । सूर्यमणि । चद्रप्रभ । सागर प्रभ । भद्रंकर । प्रभंकर । मद्रंकर । अशोक । प्रभा नाथ । इत्यादि रत्न ॥ छ ॥ (पु०)

६९ रत्न [३]

नील, महानील, चन्द्रकाति, सूर्यकान्ति, वज्र, वैडूर्य, कर्केतन, ज्योतीरस, सौगंधिक, प्रमुख अशेष, रत्न विशेष । (पु० अ०)

७० रत्न [४]

चिंतामणी, वैडूर्य, सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, जलकांत, कर्केतन, नील सासग, लोहिताक्ष, मसारगल, हंसगर्भ, पुलक, प्रवाला, सौगंधिक, सुभग, स्फटिक

ज्योतिर्मय, तरुप, अंजण, अंजण पुलक, अंकमणी, मणिरिष्ट, मरकत इत्यादि जाति ना रत्न। (वि०)

७१—रत्न (५)

अश्वरत्न, गजरत्न, पुरुषरत्न, स्त्री रत्न।

पद्मराग, पुष्पराग, माणिक, गुरुडोद्भवोद्गार, मरकतरत्न, कर्केतन, वज्र, वैडूर्य, चंद्रकांत, सूर्यकांत, शिवकांत, चद्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाथ, अशोक, वीत अशोक, अपराजित, गगोदक, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलग, सौगंधिक, सुभग, सौभाग्यकर, विषहर, धृतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अंजन, ज्योतिरस, शुन्नरुचि, स्थूलमणि, गोमूत्र, गोमेद, लसणिया, नीला, तृणचर, वज्रधर, षटकोण, कणी, चापडी, पीरोजा, प्रवाल, मौक्तिक प्रमुख रत्ने करी हाट भर्या दीसै छइ॥ (पू०)

७२ रतनमाला

आद श्रीनारायणजी।

देवां वडो तो देव	१	राजारिख तो विश्वामित्र	१९
वडा वडी तो प्रथमी	२	काल तो महाकाल	२०
बोह (बहु) रतना तो विसंधुरा	३	गुणवंत तो गुणेस	२१
देवता तो विश्वनाथ	४	जखराव तो कुमेर (कुबेर)	२२
देवी तो पार्वती	५	गधर बीना तो तुवर	२३
त्रबध कामनी तो गंगा	६	पंखराव तो गुरुड	२४
दईत दलण तो कृष्ण जी	७	नगरी तो अमरावती	२५
खेत तो आदखेत	८	पुहप तो पारजातग	२६
महाखेत तो वाणारसी	९	व्रख (वृक्ष) तो कल्पवृक्ष	२७
पछम खेत तो प्रभात	१०	हस्ती तो ऐरापति	२८
मुकत खेत तो गया जी	११	तुरंगम तो उचास	२९
सिध खेत तो श्रीधान	१२	भडारी तो धनादि	३०
आद खेत तो पोहकर	१३	पुरष तो पुरुषोतम	३१
तीर्थराव (तीर्थराज) तो प्राग (प्रयाग)	१४	आरंभ तो राम	३२
व्याकरण तो पु न्पान	१५	परलंग्या पुरण तो परसराम	३३
वेद वंत तो ब्रह्माजी	१६	अप्रोहित तो सूक्र	३४
ब्रह्मारिख तो दुरवासा	१७	अहंकारी तो रत्णो रावण	३५
कलहप्रिय तो नारद	१८	माण तो दुर्जोधन	३६

धनखधारी तो अरजन	३७
अदष्टांत तो भीवसेन	३८
खत्री तो दशरथ	३६
आरोहित तो भंगदत्त	४०
निरवाहण तो कुंभकरन	४१
सुधापत तो इन्द्रजी	४२
स्यांम भगत तो करण	४३
बंध (वीधु) भगत तो लखमणजी	४४
मंत्रभगत तो सदावछ	४५
भरतार भगती तो दामोवती	४६
जुग तो सतजुग	४७
चक्रवंत तो मानधाता	४८
वास वसतो तो जीव	४६
सुरता तो मनतंत	५०
अरथ तो जागवड़	५१
होमदेव तो होतासण	५२
विप्रदेवता तो ब्राह्मण	५३
पुत्रवंती तो सावत्री	५४
पापहरणी तो गावत्री	५५
गिगनाधपत तो आदीत	५६
सोम सीतल तो चंद्रमा	५७
विद्याणीक तो वेद	५८
वेदायन तो सदापत	५६
वंत्राल तो नेत्रह	६०
क्रम दुलभ तो स्त्रीचिरत	६१
धूरत तो माल चक्रवंत	६२
फणदा तो सेस	६३
परवत तो मेर	६४
दातार तो दधीच	६५
भीच तो हणवंत	६६
गोत्ररिषी तो कानिप	६७
महाधनख तो वाणसुर	६८
कृष्णभक्त तो पैहलाद	६६
सहासीक तो विक्रमादीत	७०
सत तो हरचंद	७१
जोगणी तो हरसधी	७२
सिध तो आदनाथ	७३
जती तो गोरख	७४
सती तो कंकमारी	७५
तसकर तो खापरो चोर	७६
भाषा तो संस्कृत	७७
पख तो पिंतर पख्य	७८
परवत तो देवालक	७६
वार तो आदीत	८०
तिथ तो अमावस	८१
वरत तो एकादशी	८२
तरुण तो कसप	८३
जोतकी तो तोखड	८४
उग्रग्रह तो राह	८५
समरथीक तो मेघमाला	८६
अतरंत तो जीव	८७
मास तो कारितक	८८
रुत तो वसंत	८६
मुरत तो मगरधज	६०
प्रीत तो मद प्रीत	६१
वसतर तो सपेत	६२
अत चंचल तो वानरो	६३
वेगो आवै तो मन	६४
रुपवंती तो न्यासका	६५
चख तो अंतर ज्या	६६
परमला तो कस्तूरी	६७
उदगारता तो कपूर	६८

शृंगार तो तंबोल	६६	साच तो राजा जुधिष्ठिर	१२०
चंता तो राजचाता	१००	दरसणाग तो भाटराजा	१२१
वेध तो राजवेध	१०१	चतरंग तो चारण	१२२
राजा तो भोजराज	१०२	माली प्रिया तो माधव	१२३
राव तो परूर राव	१०३	उड़ण तो नंदणवण	१२४
दुख तो दलद्री	१०४	दान तो अन्नदान	१२५
आगारी तो कपा	१०५	भिख्या तो किण भीखा	१२६
विनासकारी तो पाप	१०६	सीख तो गुररी सीख	१२७
सत तो संतोष	१०७	अखई तो आकास	१२८
ग्यान तो मोख	१०८	अनत तो ऊतरपथ	१२६
सती तो सीता	१०६	खड तो भरत खड	१३०
नदी तो गगा	११०	जुंली तो लंका	१३१
उछह तो पुत्रवती	१११	अतरथ तो भरभज सेव	१३२
प्रभावती तो गोदवती	११२	श्रेष्ठ फल तो अन्न	१३३
रतन तो माणक	११३	ओखद तो अमृत	१३४
समद तो खार समद	११४	कूड तो कपलामोचन	१३५
पुत्र तो भागीरथ	११५	कठणं तो भैरव	१३६
रथ तो नदीघोष	११६	राग तो भैरुराग	१३७
वेस्या तो कामसेना	११७	कवि तो माधो	१३८
विभोगी तो वछराज	११८	कवि तो कालदास	१३६
सतपत तो आचारज	११६	नक्षत्र तो अभीच	१४०

(अनूप सस्कृत लाइब्रेरी प्रति से)

७३—शैया

मलय चंदन छटा छोटित भूमितल ।
दंदह्य मान काला गुरु ।
कर्पूर पारी मघमघायमान ।
पुष्प शय्य निरुपमान स्वर्ग लोक विमान समान ।
उभय पार्श्वोपधान शोभित, मध्यभाग गभीर ।
गंगा पुलिन समान, अत्यंत सुकुमाल शयनीय । (१५७ जे०)

७४—भवन (१)

प्रधानाहार वस्त्रालंकारैः वात्सल्य वर्णन

श्री युद्धिष्ठिर राजा श्री चंद्रप्रभ प्रसाद प्रतिष्ठोपरि साहम्मी वात्सल्य करइ ।

ते केहवइ कि भवनि ?
उत्तुंग तोरण मंडप । रत्नमय भूमि । स्वर्ग मय आसन ।
वैडूर्य्य रत्नमय आडणी, न जाइ किणही तै छाडणी ।
माणिक्य मय स्थाल, अति विशाल ।
चउसठि वाट्ली, समइ आवर्त्तइ वली ।

७५—घर नी ओपमा

मोटा घर, गया न लागइ कर । वित्त ना डोकर, घणा धानतो भर । चिहुं खूणे वासइ अगर, सेज फूलनी पगर । मोटा डागला, तिहां जड्या प्रवाला । मोटीसाला, सोना रूपानी टकसाला । मोटा किवाड़, तिहां केलिना झाड़ । जीमइ प्राहुणानी ओल, घूमइ विलोवणा झलझोल, सूहव नारी करइ रंगरोल । साधु नइ दीजे दान, घणा पकवान, उन्हा धान, रूड़ै वान, दया पालै, दुखिया ना दुख टालइ । भिख्यारी नइ दीजइ अन्न, तोल न पाम्यो धन्न । जाता आवता आदर करइएहवा साहूकार ना घर धन सहित छइ ।

७६—साहूकार रो घर

मोटा घर, गया न लागै कर ।
बइठा न को डर, घणा धान नो भर ।
चिहू खूणै वासै अगर, सेझे फूल ना पगर ।
मोटा आला, तिहां जड़ित प्रवाला ।
मोटी साल, तिहा खेले बाल ।
घरें घणा सोना ना थाल, जीमे साल नै दाल ।
सुरही घी नी नाल, तोरण मोत्यां री माल ।
…………, सोना रूपा नी टकसाल ।
मोटा कमाड, तिहां केलां ना झाड़ ।
जीमे प्राहुणा नी ओल, घूमै विलोवणा नी झमझोल ।
सुहृद नारी करें रगरोल, …………… ।
साध नै दीजै दान, घणा पक्वान ।
ऊन्दा धान, रुड़े वांन ।
दया पाळै, दुखिया ना दुख टाळै ।
भिखारी नै दीजै अन्न, तो भलै पाम्यो धन्न ।
जाता आवता आदर करै, पुन्य तणा पोता भरै ॥
एहवा साहूकार ना घर

परिशिष्ट

परिशिष्ट (१)

सभाशृंगारादि वर्णन संग्रह

रत्नकोष

सर्वशास्त्र मयं रम्यं, सर्वज्ञान प्रकाशकं
स्वल्प ग्रन्थ सुबोधार्थं, रत्नकोशं समभ्यसेत् १
तत्रै शतन सूत्राणा द्वाराणा सग्रहो यथा—
वाक् विशेषण विज्ञानं रत्नकोशे समाभेत् २
त च द्वार शतं प्रोक्त, नीति शास्त्र विशारदैः
तदह सप्रवक्ष्यामि, बुधाना हित काम्यया ३
रम्याणि भुवनान्याहुः विश्वेत्रीणि यथा क्रमम्
मनुजाना महाश्रेष्ठ, भुवन देव नागयोः ४
त्रिविधं लोकस्थानं कथ्यमानं तु श्रूयते
दान च मान सस्थानं, देव स्थानं निगद्यते ५
त्रिविधा भूमिरित्युक्ता उच्चनीच प्रदेशगा
समासुभूमि विज्ञेया, मुनिभिः परिकीर्त्तिता ६
त्रिविधा पुरुषा लोके, उत्तमा मध्यमास्तथा
अधमा जग विख्याता, ससारे संसरतिते ७
यथा चिंता त्रयः प्रोक्ता, पदार्थाश्च त्रयस्तथा
धातु रूपाश्च जीवाश्च तृतीयो मूल सज्ञकः ८
धर्मार्थ काम मोक्षेषु पुरुषार्थो नरोत्तमः
चतुर्थानि प्रधोनाय पुरुषः पुरुषोत्तमः ९

रत्नकोश

अथातो वस्तु विज्ञान रत्नकोश व्याख्यास्यामः—

सर्व शास्त्र मयं रम्यं सर्वज्ञान प्रकाशकं ।
स्वल्प ग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोश समभ्यसेत् ॥ १ ॥

तत्र शतेन सूत्राणां संग्रहो यथा–

१ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि
२ त्रिविध लोक सस्थानं
३ त्रिविधा भूमिः
४ त्रिविधा पुरुषाः
५ त्रय पदार्थाः
६ चत्वार पुरुषाणामर्थाः[1]
७ षट्त्रिंशद्राज वंशा
८ सप्तांग राज्यं
९ पणणवतिराजगुणाः
१० षट्त्रिंशद्राज पात्राणि
११ षट्त्रिंशद्राज विनोदा
१२ अष्टादशविधं स्थानं
१३ चतस्रो राजविद्या
१४ चतस्रो राजनीतयः
१५ सप्तविंशति[2] शास्त्राणि
१६ षट्त्रिंशत् दंडायुधानि
१७ द्विपचाशत् तत्त्वानि
१८ द्विसप्तति कला
१९ चतुराशीति विज्ञानानि
२० चतुराशीति देशा
२१ द्वात्रिंशल्लक्षण स्थानानि
२२ चतुर्विंशति विग्रहं
२३ अष्टोत्तरशत मंगलानि
२४ त्रिविध दानं
२५ पञ्चविधं यश
२६ सप्तविधा कीर्ति
२७ नव रसा
२८ एकोनपञ्चाशद्भावं
२९ चत्वारो अभिनया
३० चतस्रो वृत्तय
३१ चत्वारो नायका
३२ चत्वारो महानायका
३३ द्वात्रिंशद्गुण नायका
३४ त्रिविधा महानायिका
३५ अष्टौ नायिका
३६ द्वात्रिंशद्गुण नायिका
३७ त्रिविध[3] सौख्यं
३८ चत्वारि सौख्य कारणानि
३९ नवविधो गधोपयोग[4]
४० दश[5]विध शौचं
४१ द्विविधः[6] कामः
४२ दश कामावस्था
४३ विंशति रक्तस्त्रीणा लक्षणानि
४४ एकविंशति विरक्तस्त्रीणा लक्षणानि
४५ द्वाविंशतिकामिनीना विकारेंगितानि
४६ चतुर्विंशति असतीनां लक्षणानि
४७ षोडश दुष्टस्त्रीणा अपलक्षणानि
४८ अष्टौस्त्रीणां अभिसारिकाणि[7]
४९ अष्टौनार्यो अगम्या
५० अष्टविधो मूर्ख
५१ चतुर्विंशति विध नागरिक वर्णनम्
५२ त्रिविधं (त्रिविध[8]) रूपं
५३ त्रिविधं स्वरूप
५४ द्वादश विध प्रमोदोपचार
५५ पञ्चविधः परिचयः
५६ दशपुरुषाः स्त्रीणां अनिष्टा भवति
५७ दशभिः कारणै स्त्रियो विरज्यते
५८ त्रिभिः कामिन्यः सबध्यते

---

१. पुरुषार्थ २ मुक्तक ३ त्रिविध ४. पात्रोपभोग ५ द्वि ६ त्रिविध ७. अविश्राम ८ त्रिविध।

५६ सप्तविध कामुकाना क्रीडारभः
६० अष्टविध विदग्धानां सुरतं
६१ नवविधं सुरतावसानं
६२ नव शयन गुणाः
६३ दशविधं पार्थिवाना प्रमोद
६४ चतुर्विधः प्रबोध
६५ चतुर्विधा बुद्धि
६६ अष्टौ बुद्धिगुणा.
६७ चतुर्विध गन्धर्वं
६८ त्रिविध गीत
६९ षट्त्रिंशद् गीतगुणा
७० चतुर्विध वाद्य
७१ षोडशधा नृत्योपचार
७२ षोडशविधं वाक्यम्
७३ दशविध वक्तृत्व
७४ षट्विध भाषा लक्षण
७५ पंचविध पांडित्यम्
७६ चतुर्विंशतिविध वाद लक्षण
७७ षट दर्शनानि
७८ अष्टविधं माहेश्वरं
७९ दशविध ब्राह्मयम्
८० चतुर्विधं सांख्यं
८१ सप्तविध जैनम्
८२ दश[१]विध बौद्ध
८३ चतुर्विध चार्वाक
८४ चतुर्विंशति विधं विचारकत्वम्
८५ दशविधं गुरुत्व
८६ पच चरितं
८७ पंचविध पार्थिवानां पालनं
८८ सप्तविधं उत्तमत्वं
८९ नवविधा शक्तिः
९० सप्तविधा मुक्ति

९१ अष्टविधं अभिमान लक्षणं
९२ चतुर्विध वात्सल्यं
९३ पंच विधो महोत्सव
९४ सप्त विधा प्राप्तिः
९५ चतुर्विंशति विधं शौर्यं
९६ दशविधं बलं
९७ दशविध संग्रह
९८ पंच विधं प्रभुत्वं
९९ अष्ट विधो जय
१०० अष्ट विधो भोग
१०१ षोडश शृंगारा
१०२ षडविध परिच्छेद
१०३ चतुर्दश विद्यानाम
१०४ चतुर्विधा गति

अन्य प्रतियों में इस प्रकार नाम और मिले है—

१ षोडश विध नाट्यम्
२ चतुर्विध परिच्छेद
३ पचविध अप्रभुत्वम्
४ चतुर्विधा प्रीति
५ षडविधा भोज्यरसा
६ नवविधा भक्ति
७ पचविधा प्रताप:
८ द्विविध चातुर्यम्
९ त्रिविधं वीरत्वम्
१० द्विविध कृपा
११ द्वात्रिंशत् नायका
१२ नवविधो गात्रोपभोग
१३ दशविध प्रासाद
१४ चतुर्विंशति प्रमोद
१५ चतुर्विधं नाट्यम्

१ चतुर्विध।

१६ षोडश विध परिचय
१७ त्रिभिकारणै स्त्रीणाम विज्ञंते
१८ नवविध काव्यम्
१९ सप्त विधा भक्ति
२० द्विविधा भुक्ति
२१ एकविधा मुक्ति
२२ दशविध यशः
२३ पंचविध परिच्छेद
२४ पंचविधा गति
२५ पंचविधं विप्रत्वं
२६ अष्टादश मित्रस्थानं
२७ द्वात्रिंशद उत्तम गुण नायका
२८ द्वादश विध वक्तृत्वम्
२९ अष्टविधा भक्ति
३० सप्तविधं गृह
३१ अष्टौलब्धः
३२ अष्टादश विधं पुराणं
३३ सप्त विधः कामिनीनां सुरतारंभ
३४ अष्टविधं सुरतावस्थानां
३५ चतुर्विधत्वम् वाचाकित्वम्

इति सूत्राणां संग्रहः

वस्तु-विज्ञानं रत्न-कोशे समारभेत् ।

१ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि—सुर-भुवनं, मानव-भवनं, नाग-भवनं
२ त्रिविध संस्थानम—देवसंस्थानं, दानवसंस्थानं, मानवसंस्थानं
३ त्रिविधा भूमि—उच्च प्रदेश, निम्न प्रदेश, सम प्रदेश
४ त्रिविधाः पुरुषाः—उत्तम, मध्यम, अधम
५ त्रय-पदार्थाः—धातु पदार्थ, जीव-पदार्थ, मूल-पदार्थ
६ चत्वारः पुरुषाणामर्थाः—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
७ षट्त्रिंशद्र जवंशाः—१ ब्रह्मवंश[1], २ सोमवंश, ३ यादववंश, ४ कदम्बवंश, ५ इक्ष्वाकुवंश, ६ बाह्लीकवंश, ७ चोलुक्यवंश, ८ छुंदिकवंश, ९ चाहुवान-वंश, १० सैंधववंश, ११ डाभीवंश, १२ चापोत्कटवंश, १३ पडिहार[2], १४ लड्डुक, १५ राष्ट्रकूट, १६ शक, १७ करटपाल[3], १८ कोटपाल, १९ चंडिल्ल[4], २० गोहिल, २१ गुहिलपुत्र, २२ मौरिक, २३ मोरी, २४ मंकुया[5] २५ धान्यपाल, २६ राजपाल, २७ अनंग[6], २८ निकुंभ, २९ दाडिम[7], ३० कलिछुर, ३१ दधिमुख[8], ३२ हूण, ३३ हरितट, ३४ डोड, ३५ पमार, ३६ शिव, (सिल्लार, लूलु, पौलिक, कलरव)
८ सप्तांग राज्यं—१ स्वामी, २ अमात्य, ३ जनपद[9], ४ भाण्डागार, ५ दुर्ग[11], ६ बल, ७ मित्र[12]

---

१. [illegible] २ प्रतिहार, ३ [illegible] ४ लंठेल ५. मकियाण ६. अनक ७. दांभिक ८ [illegible] हरितोरस १०. देश ११. सेन्या १२ मन्त्र

९ षण्णवति राजगुणाः—१ विद्या, २ विनय, ३ विवेक, ४ विस्तार, ५ सदाचार, ६ सत्यं, ७ शौचं, ८ सम्मानं, ९ संस्थानं, १० समाधानं ११ सौख्यं १२ सौजन्यं, १३ सौभाग्यं, १४ रूपं, १५ स्वरूपं, १६ संयोग[13], १७ वियोग, १८ विभाग, १९ सांगत्यं, २० सपूर्णश्च, २१ सोमत्व[14], २२ सकलत्व, २३ सजलत्व, २४ प्रसन्नत्व, २५ प्रभुत्व, २६ प्राजलित्व, २७ पालकत्व, २८ पाडित्य, २९ प्रणयित्व, ३० प्रमाण, ३१ शरण, ३२ प्रमोद, ३३ प्रसाद, ३४ प्रताप, ३५ प्रारम्भ, ३६ प्रभाव, ३७ परिच्छेद, ३८ संग्रह, ३९ सदाग्रह, ४० निग्रह, ४१ विग्रह, ४२ अनुग्रह, ४३ तुष्टि, ४४ पुष्टि, ४५ प्रीति, ४६ प्राप्ति, ४७ प्रशंसा, ४८ प्रतिष्ठा, ४९ प्रतिज्ञा, ५० स्थैर्य, ५१ धैर्य, ५२ शौर्य, ५३ चातुर्य, ५४ गांभीर्य, ५५ बुद्धि, ५६ बल, ५७ अधीक्ष[15], ५८ विरोध, ५९ विषय, ६० विशेष, ६१ विनोद, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ काति, ६५, कीर्ति, ६६ विस्फूर्ति[16], ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ महोत्सव, ७० मत्र, ७१ रसिकत्व, ७२ भावकत्व, ७३ गुरुत्व, ७४ स्मृति, ७५ भुक्ति, ७६ युक्ति[17], ७७ आसक्ति, ७८ अनुक्रम, ७९ अनुराग, ८० अभिमान, ८१ दान, ८२ कारुण्य, ८३ दर्शन, ८४ स्पर्शन, ८५ रसन, ८६ श्रवण, ८७ घ्राण, ८८ मर्याद, ८९ मंडन, ९० उदात्त, ९१ उदय, ९२ उत्साह, ९३ उत्तम गुणाः, ९४ दाक्षिण्य, ९५ सत्व, ९६ वश ॥१॥

१० षट्त्रिंशद्राज पात्राणि—धर्मपात्र, अर्थपात्र, कामपात्र, विनोदपात्र, १ विलास पात्र, २, विद्यापात्र, ३ विज्ञानपात्र, ४ क्रीडापात्र, ५ हास्यपात्र, ६ शृङ्गार-पात्र, ७ वीरपात्र, ८ देवपात्र, ९ दानवपात्र, १० कर्मपात्र, ११ मंत्रिपात्र १२ सचिपात्र, १३ महत्तम पात्र, १४ अमात्य पात्र, १५ अध्यक्ष पात्र, १६ सेना पात्र, १७ सेनापाल पात्र, १८ प्रधान पूजा पात्र, १९ मान्यपात्र, २० राजमान्य, २१ पदस्थ पात्र, २२ देवीपात्र, २३ कुलपुत्रिका पात्री, २४ पुनर्भूपात्र, २५ वेश्यापात्र, २६ प्रतिसारका पात्र, २७ दासीपात्र, २८ देशपात्र, २९ गुणपात्राणि, ३० दर्शन, ३१ सत्य, ३२ राजमंत्री, ३३ आधान, ३४ नगर, ३५ पुण्य, ३६, कुलपति ।

११ षट्त्रिंशद्राज-विनोदा—१ दर्शन विनोद, २, गीत विनोद, ३ नृत्यविनोद, ४ वाजित्र विनोद, ५ वृत्त, ६ पात्र, ७ लेख्य, ८ वक्तृत्व, ९ कवित्त्व, १० वाद विनोद, ११ युद्ध विनोद, १२ नियुद्ध, १३ गज, १४ तुरंग,

---

१३. स्वयोग १४ सौम्यत्व १५ अध्यक्ष १६. स्फूर्ति १७. मुक्ति ।

१५ पक्षि, १६ खेटक, १७ द्यूत, १८ जल १९ यंत्र, २० महोत्सव, २१ पत्र, २२ फल, २३ पुष्प, २४ कला, २५ कथा, २६ प्रहेलिका, २७ पदार्थ-करण २८ तत्व २९ बल, ३० चित्र, ३१ सूत्र विनोद ३२ श्रवण विनोद, ३३ कृत्रिम विनोद, ३४ पठित, ३५ प्रकृति, ३६ खलित्व, ३७ शास्त्र, ३८ बुद्धि, अक्षर, गगन, मंत्र, कमल, काया, पाठित, केश क्रीड़ा।

१२ अष्टादशविधं स्थान-१ मल्लस्थान, २ आप्त स्थान, ३ हितस्थान, ४ स्निग्ध-स्थान, ५ मत्रि, ६ महत्वत्तम, ७ अमात्य, ८ बुद्धि सुख, ९ अभय सुख, १० आगमिक, ११ आम्नायिक, १२ देशी पुरुष, १३ धर्म पुरुष, १४ बन पुरुष, १५ काम पुरुष, १६ राजपुरुष, १७ विज्ञान, १८ विनोद पात्राणि च, शावोदक्ष, शाम्नक, संग्रामिक, ज्ञान पुरुप।

१३ चतुस्रो राजविद्या—१ आन्वीक्षिकी, २ त्रयी, ३ वार्त्ता, ४ दण्ड-नीति।

१४ चतस्रो राजनीतयः १ साम २ दान ३ भेद ४ दंड।

१५ सप्तविंशति शास्त्राणि—१ शब्द शास्त्र, २ छंद शास्त्र, ३ अलंकार शास्त्र, ४ काव्य शास्त्र, ५ कथा शास्त्र, ६ नाट्य शास्त्र, ७ नाटक शास्त्र, ८ निघण्टु शास्त्र, ९ धर्म १० अर्थ ११ काम १२ मोक्ष १३ तर्क १४ गणित १५ गांधर्व १६ मंत्र १७ वैद्यक १८ वास्तु १९ विज्ञान २० विनोद २१ कृत्य २२ कला २३ कल्प शिक्षा २४ लक्षण, २५ बुद्धिशास्त्र, २६ वाद-विद्या, २७ मंत्र, पुराण सिद्धान्त शास्त्राणि॥

१६ षट्त्रिंशत् दण्डायुधानि—१ चक्र, २ धनुष, ३ खड्ग, ४ तोमर, ५ कुंत, ६ त्रिशूल, ७ शक्ति, ८ पाश, ९ अंकुश, १० मुग्दर, ११ मक्षिका, १२ भल्ल, १३ भिंडिमाल, १४ मुषढि, १५ लुष्टि, १६ तुरिका[1], १७ पट्ट, १८ गुरज, १९ गदा, २० परशु, २१ पट्टिसु, २२ कुष्टिकरण २३, कपन, २४ हल, २५ मूशल, २६ हुलिका, २७ पत्र, २८ कर्त्तरि, २९ कोठाल, ३० तरवारि, ३१ दुस्फोट, ३२ गोफणि, ३३ डाह, ३४ डबूस[2], ३५ लुंठि। ३६ दण्ड शास्त्राणि, वज्र, छुरिका, थष्टि, शंकु. मुष्टि, यष्टि, करपात्र, कुदाल, असनि, सारंग।

१७ द्विपंचाशत् तत्वानि—१ पृथ्वी तत्व, २ अपतत्व, ३ तेजतत्व, ४ वायु-तत्व, ५ आकाश तत्व, ६ शब्द, ७ स्पर्श, ८ रस, ९ रूप, १० गन्ध, ११ रसन, १२, स्पर्शन, १३ घ्राण, १४ चक्षु, १५ श्रोत्र, १६ त्वक् १७, पाणि,

---

[1], तीरिका २, दुन्दुम

१८ पाद, १९ गुद, २० उपस्थ, २१ मन, २२ बुद्धि, २३ अहंकार प्रकृति, २५ पुरुष, २६ बिन्दु, २७ रक्त, २८ मांस, २९ मेद, ३० अस्थि, ३१ मज्जा, ३२ शुक्र, ३३ वात, ३४ पित्त, ३५ कफ, ३६ मल, ३७ काम, ३८ क्रोध, ३९ लोभ, ४० मोह, ४१ भय, ४२ मात्सर्य, ४३ राग[3], ४४ नयक[4], ४५ विद्या, ४६ शुद्ध विद्या, ४७ माया, ४८ ज्योति, ४९ नाद, ५० शक्ति, ५१ ईश्वर ५२ भक्ति, काल, दान, कला, परमयुक्ति ॥

१८ द्विसप्तति कला—१ गीत कला, २ नृत्यकला, ३ वाद्य, ४ बुद्धि ५ शौच, ६ मत्र, ७ विचार, ८ वाद, ९ वास्तु, १० नैपथ्य, ११ विनोद, १२ विलास १३ नीति, १४ शकुन, १५ चित्र सयोग १६ हस्त लाघव, १७ कुसुम, १८ इन्द्रजाल, १९ सूचीकर्म, २० स्नेह पात्र, २१ आहार, २२ सौभाग्य, २३ प्रयोग, २४ गंध, २५ वस्तु पात्र, २६ रत्न, २७ वैद्य, २८ देश भाषित, २९ विजय, ३० वाणिज्य, ३१ आयुत्र, ३२ युद्ध, ३३ नियुद्ध, ३४ समयवर्त्तन, ३५ हस्ति, ३६ तुरग, ३७ पक्षि, ३८ पुरुष, ३९ नारी भूमिलेप, ४० काष्ट शिल्प, ४१ वृक्ष, ४२ छद्म, ४३ उत्तर, ४४ शस्त्र, शास्त्र, ४५ गणित, ४६ पठित, ४७ लिखित, ४८ वक्तृत्व, ४९ कथा, ५० च्यवन, ५१ व्याकरण, ५२ नाटक, ५३ अलंकार, ५४ दर्शन, ५५ अध्यातम, ५६ धातु, ५७ धर्म, ५८ अर्थ, ५९ काम, ६० द्यूत, ६१ शरीर कलाश्चेति, ६२ कवित्व, ६३ वचन, ६४ छंद, ६५ ध्यान, ६५ दान, ६६ सौख्य, ६७ क्रीडा, ६८ सूत्र ६९ विनय, ७० पान, ७१ वर्ण, ७२ सैन्य, भिक्षा, प्रत्युत्तर, सत्व।

१९ चतुराशीति विज्ञानानि—१ हेतु विज्ञान, २ तत्त्व विज्ञान, ३ मोहन, ४ कर्म, ५ धर्म, ६ मर्म, ७ शंख, ८ दंत, ९ काच, १० गुटिका, ११ योग, १२ रसायन, १३ वचन, १३ कवित्त्व, १५ नैपथ्य, १६ मत्र, १७ मर्द्दन, १८ पत्रक, १९ वृश्चिक, २० लेप कर्म, २१ सूत्र, २२ चित्र, २२ रग, २४ सूची कर्म, २५ शकुन, २६ छद्म, २७ नैर्मल्य, २८ गध, २९ युक्ति, ३० आसन, ३१ शील, ३२ काष्ट, ३३ कर्म्म, ३४ कुभ, ३५ लोह, ३६ यत्र, ३७ वश, ३८ नख, ३९ तृण, ४० प्रासाद, ४१ धातु, ४२ विभूषण, ४३ स्वरोदय, ४४ द्यूत, ४५ अध्यातम, ४६. अग्नि जल विद्वेषण, ४७ उच्चाटन, ४८ स्तभन, ४९ वशीकरण, ५० हस्ति शिक्षा, ५१ अश्व, ५२ पक्षि ४३ स्त्री काम. ५४ रत्न, ५५ वस्त्राकार, ५६ पाशुपाल्य, ५७

३. रोग ४. नियति

कोष, ५८ वाणिज्य, ५९ लक्षण, ६० काल, ६१ शास्त्र, ६२ शस्त्रबंध, ६३ आयुधकार, ६४ नियुधकार, ६५ आखेटक, ६६ कुतूहल, ६७ केश, ६८ पुष्प, ६९ इन्द्रजाल, ७० पान विधि, ७१ अशन, ७२ विनोद, ७३ सौजन्य, ७४ सौभाग्य, ७५ शौच, ७६ विनय, ७७ नीति, ७८ आयुर्वेद, ७९ व्यापार, ८० धारणा ८१ लक्ष्मी, देव, दान, मुष्टि, इति विज्ञानानि, ज्योतिष, वैद्यक, मद्य, दर्शन, मस्तक, इष्टिका, लाभ, विचित्र, नारग, वैशिक, काव्य, वाद्य, काकरुत, सामुद्रिक । इति विज्ञानानि ॥

२० चतुरशीतिदेशा—१ पूर्व देश, २ अंगदेश, ३ वंग देश, ४ गौड देश, ५ कान्यकुब्ज, ६ कलिग, ७ गोष्ट, ८ वंगाल, ९ कुरंग, १० राठवारद्री, ११ यामुन, १२ सरयूपार, १३ अंतर्वेद, १४ मगध, १५ मध्य, १६ कुरु, १७ डाहल, १८ कामरू, १९ उड्र, २० पंचाल, २१ सोरसेन २२ जालंधर, २३ लोहपाद, २४ पश्चिम, २५ स्थल, २६ वालंभ, २७ सौराष्ट्र, २८ कूकण, २९ लाट ३० श्रीमाल, ३० अर्बुद, ३१ मेदपाट, ३२ मरु, ३३ कच्छ, ३४ मालव, ३५ अवंती, ३६ पारियात्र, ३७ कंबोज, ३८ तामलिप्त, ३९ किरात, ४० सेरटक, ४१ सौवीर, ४२ वीणक्काण, ४३ उत्तरापथ, ४४ गुर्जर, ४५ सिन्धु, ४६ केकाण, ४७ नेपाल, ४८ (भोट) रथ, ४९ ताजिक, ५० वर्बर, ५१ खस, ५२ कीर, ५३ काश्मीर, ५४ वज्रल, ५५ हिमालय, ५६ लोहपुर, ५६ श्रीराष्ट्र, ५७ दक्षिणापथ, ५८ मलय, ५९ शीघल, ६० पांड, ६१ कौशल, ६२ अन्ध्रु, ६३ विन्ध्य, ६४ द्रविड, ६५ श्रीपर्वत, ६६ वैदर्भी, ६७ विराट, ६८ ओरलाजी, ६९ तापीतट, ७० महाराष्ट्र, ७१ आभीर, ७२ नार्मद, ७३ कामाक्ष, ७४ कंडु, ७५ पापाणक, ७६ चौड़, ७७ आराध्य, ७८ वरेन्द्र, ७९ गगापार, ८० मौसख, ८१ काता, ८२ तिलंग, ८३ मलबार, ८४ पारकर, द्वीपदेशाश्चेति ॥

२१ द्वात्रिंशल्लक्षण-स्थानानि—१ स्वर्ग लक्षण, २ मृत्यु, ३ पाताल, ४ तत्त्व, ५ विद्या, ६ विज्ञान, ७ ज्ञान, ८ वास्तु, ९ विनोद, १०, वाद, ११ कला, १२ कल्प, १३ गीत, १४ वाद्य, १५ धर्म, १६ अर्थ, १७ काम, १८ मोक्ष, १९ देश, २० काल, २१ पात्र २२ पुरुष, २३ स्त्री २४ गज, २५ तुरग, २६ पक्षि, २७ रत्न, २८ सदव्यापार, २९ सत्व, ३० वस्तु, लक्षणानि ।

२२ चतुर्विंशति-विध गृहं—१ प्रासाद, २ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृहकोश, ६ कोष्टागार, ७ पानीय स्थान, ८ शौच गृह, ९ मालयगृह, १० मठस्थान, ११ सत्रागार, १२ शृंगार, १२ गृह, १३ धर्मस्थान, १४ विनोद स्थान, १५

मंदिर, १६ हस्तिशाला, १७ वासभवन, १८ मंडप, १६ महानस, २० भोजन-शाला, २१ अग्रासन, २२ अर्थस्थान, २३ राजागणच ॥

२३ अष्टोत्तरशत मंगलानि—१ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ महेश्वर, ४ स्कंद, ५ आदित्य, ६ लोकपाल, ५ अग्नि, ६ अमरसागर, ७ नदी, ८ पर्वत, ६ गगन, १० ग्रह, ११ गण, १२ गंधर्व्व, १३ चद्र, १४ विनायक, १५ ज्योतिष, १६ धर्म शास्त्र, १७ द्विज, १८ वर, १६ वेद, २० पद्म, १२ प्रदीप, २२ कौस्तुभ, २३ काचन, २४ रूप्य, २५ ताम्र, २६ घृत, २७ मधु, २८ मद्य, २६ सिद्धान्न, ३० चन्दन, ३१ सितवस्त्र, ३२ वेश्या, ३३ गोरोचन, ३४ मृतिका, ३५ गोमय, ३६ शास्त्र, ३७ अजन, ३८ औषध, ३६ अचत, ४० रत्नमणि, ४१ मोदक, ४२ शंख, ४३ प्रियगु, ४४ जव, ४५ श्वेत पुष्प, ४६ सर्षप, ४७ दधि, ४८ आम्र, ४६ उदम्बर, ५० छत्र, ५१ हस्ति, ५२ बीजपूरक, ५३ मुक्ताफल, ५४ दूर्वा, ५५ खंजरीट, ५६ वृषभ, ५७ ध्वज, ५८ हस, ५६ कन्या, ६० दर्पण, ६१ मत्स्य, ६२ तुरंगम, ६३ गीत, ६४ वीणा, ६५ ध्वनि, ६६ सिंघ, ६७ मेघ, ६८ स्वस्ति, ६६ तोरण, ७० कुम्भ, ७१ चामर, ७२ गौ, ७३ सवत्सा, ७४ आर्द्र मास, ७५ स्त्री, ७६ सपुत्र, ७७ वाहन, ७८ प्रदान, ७६ विद्या, ८० पानीय, ८१ पुष्टि, ८२ तुष्टि, ८३ प्रसाद, ८४ उल्लोच, ८५ पूर्णपात्र, ८६ आर्द्रशाखा, ८७ प्रियवाक्य, ८८ श्रीवृत्त, ८६ तालवृंत, ६० पूजानिधि, ६१ नर, ६२ सहस्र ६३ गौरी, ६४ गंगा, ६५ सरस्वती, ६६ नर्मदा, ६७ यमुना, ६८ कमला, ६६ सिद्ध पीठ, १०० कीर्त्ति । इति मंगलानि ।

२४—त्रिविधंदानं—१ अभयदान, २, उपकारदान, ३ द्रव्यदान ।

२५—पंचविधंयश—१ ज्ञानयश, २ प्रतापयश, ३ सदाचार यश, ४ पराक्रमयश, ५ वर्णनयश ।

२६—सप्तविधा कीर्त्ति—१ दान, २ शौर्य ३ पुण्य, ४ वर्तन, ५ विज्ञान, ६ काव्य ७ वक्तृत्व ।

२७—नव रसाः—१ शृंगार, २ हास्य, ३ करुण, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत, ६ शातरस ।

२८—एकोनपंचाशद्भावं—रति, हास्य, उत्साह, विस्मय, क्रोध, शोक, जुगुप्सा, भय, स्तंभ, स्वेद, भंग, व्रीडा, चपलता, हर्षता, जडता, मतिमूढी, आवेग, विषाद, औत्सुक्य, गर्व, अपस्मार, निद्रा, सुप्त, विबोध, अमर्ष, उन्माद, उग्रता, व्याधि, वितर्क, त्रास, स्वरभेद, रोमाच, वेपथु, वैवर्ण्य,

अश्रु, प्रलाप, निर्वेद, ग्लानि, शंका, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, अवहित्थ, विदाघ, मरणांतं । इति भावं ।

२६—चत्वारो अभिनया—वाचिक १ आंगिक २ आहार्य ३सात्विक ४

३०—चतस्रो वृत्तयः—सात्वती, भारती, कैशकी. आरभटी २८

३१—चत्वारो नायका—अनुकूल, दक्षिण, शठ, धृष्ट

३२—चत्वारो महानायका—धीरशांत धीरउद्धत, धीरोदात्त, धीरललित

३३—द्वात्रिंशद्गुण नायका—कुलीन, शीलवान, वयस्थ, शौचवान, स्वतंत्र, सावयव, प्रीतिमान्, प्रियंवद, सुभग, सत्ववान्, कीर्तिमान्, त्यागी, विवेकी, शृंगारी, अभिमानी, श्लाघ्यवान्, सुमुज्वल वेष, शयाज्ञ, सकल कला कुशल, मत्यावसह, सुगंध सुवृत मत्र, क्लेश सह, भाषा पडित, उत्तम, सत्यधर्मिष्ठ, महोत्साही, गुणग्राही, क्षमी, परि भावुकः ।

३४—त्रिविधा महानायिका—स्वकीया, परकीया, पण्यांगना ।

३५—अष्टौ नायिका—विरहोत्कंठिता, खंडिता, कलहांतरिता, विप्रलब्धा, प्रोषित-भर्तृका, अभिसारिका, स्वाधीन पतिका ।

३६—द्वात्रिंशत् गुण नायिका—सुरूपा, सुवेषा, सुभगा, सुरतप्रवीणा, सुसत्त्वा, वेषश्रिता, विनीता, भोगिनी, विचक्षणा, प्रिय भाषिणी, प्रसन्नमुखी, पीनस्तनी, चारुलोचना, रसिका, लज्जान्विता, लक्षणयुक्ता, वाक्यज्ञा, गीतज्ञा, नृत्यज्ञा, वाद्यज्ञा, सुप्रमाणशरीरा, सुगंधप्रिया, नीतिमानिनी, चतुरा, मधुरा, स्नेहवती, विमर्षवती, संवृत्तमंत्रा, सत्यवती, प्रजावती, चैतन्या शीलवती, गुणान्विता ।

३७—त्रिविध सौख्य -- शारीरिकं, वाचिकं, मानसिकं ।

३८—चत्वारि सौख्य कारणानि—योगाभ्यास कारणं, अभिमान कारणं, सप्रत्यय-कारणं, विषय कारणं ।

३६—नव विधो गंधोपयोग—तैलाधिवासः, जलाधिवासः, वस्त्राधिवासः, मुखाधि-वास, उद्वर्त्तन धिवासः, विलेपनाधिवासः. स्नानाधिवास, धूपनाधिवास, भोजनाधिवासः ।

४०—दश विधं शौचं—जलशौच, मृतिकाशौच, गध, स्मश्रु, संस्कार, पवित्र वाक्य, प्राखिदयाशौचं, अर्थशौचं, आचार शौचं ,स्नान शौचं ।

४१—द्विविधः कामः—स्वाभाविक, कृत्रिम ।

४२—दश कामावस्था—अभिलाष, चिंता, स्मृति, गुणकीर्त्तन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद. व्याधि, जडता, मरण ।

४३—विंशति रक्त-स्त्रीणा लक्षणानि—पूर्वं भाषते, दर्शनात् प्रसन्ना भवति समागमे तुष्यति, सभाषिता हृष्यति, गुणान् सखीजने कथयति, दोषान् छादयति, सन्मुखीशेते, पश्चात् स्वपिति, पूर्व्वमुतिष्ठति, मित्राणि पूजयति, अमित्राणि द्वेष्टि, प्रोषिते दुर्मनाभवति, स्वधनं ददाति, प्रथममालिंगयति, पूर्वं चुम्बन करोति, सम दुख सुखावलोकिनी, सदा विनीता, स्नेहवती, संभोगार्थिनी, हितार्थिनी।

४४—एकविंशति विरक्त स्त्रीणां लक्षणानि–चुम्बिता विमुख करोति, मुखं परिमार्ज्यति, निष्टीवति, प्रथम शेते, पश्चादुत्तष्ठति, परान्मुखी शेते, वाक्य नावमन्यते, मित्राणि द्वेष्टि, अमित्राणि पूजयति, सदा गर्विता भवति, उक्ता कुप्यति, गमने तुष्यति, दुःकृत स्मरते, सुकृत विस्मरयति, दत्त न मन्यते, दोषान् प्रकटी करोति, गुणान् छादयति सन्मुख न पश्यति, दुखिते सुखिता भवति, विप्रिय वदति, सभोगे सुख न वांछति।

४५—द्वाविंशति कामिनीना विकारेंगितानि–सानुराग निरीक्षण, श्रवण सयमनं, अगुलीस्फोटनं, मुद्रिका कर्षणं, नूपरोत्कर्षणं, गुप्ताग दर्शन, सख्यासह हसन, भूषणोद्घाटन, कर्णमोटन, कर्ण कडूयनं, केश प्रक्षरणं, पुष्प सयमन, नख विलेपन, वाससञ्जन, पश्धान सयमन, निश्वासोद्धसन मुख विजृंभिण, बाल चुम्बन, प्रिय भाषण, अतिक्रान्त प्रेक्षणं, परांक्षेनाम ग्रहणं, गुणव्यावर्णनम्।

४६—चतुर्विंशति असतीना लक्षणानि—द्वार देशे शायिनी, पश्चादवलोकिनी, पुंश्चली सखी, भोगिनी, गोष्टिप्रिया, राजमार्गाश्रिता, पति द्वेषिणी, पति रहिता, हीनाग भार्या, बन्ध्या, मृतापत्या, बहु देवरालिपिनी, बहु देवतार्चना, विनोदकारिणी, भोगार्थिनी, अति मानिनी, कृत्रिम लज्जान्विता, परप्रीतिरता, वृद्ध भार्या, सतत हास्या, प्रोषित भर्तृका, लोभान्विता, बहुभाषिणी, क्रीडानष्टचर्या।

४७—षोडश दुष्ट-स्त्रीणा अपलक्षणानि–पिंगाक्षी, कूप गल्ला, लम्बोष्टी खरालापी, ऊर्द्ध केशी, दीर्घ ललाटी, संहितभू, पुष्पितनखी, प्रविरल दशना, अतिदीर्घा, अतीव वामनी, अतीव स्थूला, अतीव गौरा, अतीव कृष्णा. अतीव कृशा, प्रलम्बोदरी।

४८—अष्टौ स्त्रीणां अभिसारिकाणि—भर्तु स्वैरिता, पुरुषार्थिनी, प्रणतगोष्ठी निरकुशा, विदेशवासी, पुंश्चली, पतिरीर्ष्यादोप।

४९—अष्टौ नार्यो अगम्या–स्वगोत्रजा, राजपत्नी, मित्रपत्नी, वर्णाधिका, अस्पृशा, पूजिता, कुमारी, गुरुपत्नी।

५०—अष्टविधो मूर्ख—निर्लज्ज, शठ, क्लीव, निघृण, व्यसनी, अतिलोभी, गर्वित, निष्ठुर।

५१—चतुर्विंशति-विधं नागरिक वर्त्तनम्—नगरे संस्थानं, असन्नोदक भवनं, प्रच्छन्न महानसं, गुप्तकार्य चिकित्सा स्थानं, निकटे नेपथ्यमंडप, विभक्त वास भवनं, नेपथ्योपकार प्राचुर्यं, गृहोपकरण बाहुल्य, शय्यासन रम्यत्वं, वाञ्छित परिजन, पार्श्वं प्रविशान स्थानं, मध्ये स्थान पीठ, प्रभाते व्यायाम विधानं, मध्यान्हे भोजन विधानं, नित्यमेव विद्याभ्यासन : कुलोचित विधिना वर्त्तनं। प्रदोषे गीतादि विनोद विधानं, निशाया स्वदारा सुरतं, कदाचित् गोष्ठी रम्यत्वं, कदाचित् पात्र प्रेक्षणं, कदाचित् विद्या नवनव गमनम्, सदैव ऋतु समुचितो भोग।

५२—त्रिविधं रूपं—सम्पूर्ण लक्षणावयवं, असंपूर्ण लक्षणावयवं, निर्लक्षणं।

५३—त्रिविधं स्वरूप—मुग्ध स्वभाव, मुखर, चतुर।

५४—द्वादश-विध प्रमोदोपचार—रूपस्विनीना रम्योपचारेण, भीरूणामास्वासनेन, चपलाना गांभीर्येण, पंडिताना सत्येन, प्रज्ञावतां कलाभिः, श्रृङ्गारिणा सुवेषतया, विनोदशीलाना क्रीडनेन, हीन सत्वाना कारुण्येन, शठ स्वभावानां शाठ्येन, निर्विकल्पानां सुकुमार प्रयोगेन, बालाना भक्ष प्रदानेन, धूर्ताना शाठ्येन।

५५—पञ्चविधः परिचय—प्रसिद्धि ख्यापन, दर्शनेनावर्जनम्, सभाष माधुर्यं, वाञ्छितोपचार प्रयुजनं, विकारसूचनं।

५६—दश पुरुषाः स्त्रीणां अनिष्टा भवंति—कुरूप, निर्लज्ज, अभिमानी, असंबद्ध प्रलापी, सकुचितशायी, निष्ठुर, कृपण, शौचहीन, मूर्ख, क्रोधी।

५७—दशभिः कारणैस्त्रियो विरज्यंते—अज्ञानता, अभिमान विलेपता, निष्ठुरता, दरिद्रता, अति प्रमवता, क्रूर व्यसनता, भोगहीनता, अति प्रसंगता, सौभाग्यहीनता, अनौचित्यता।

५८—त्रिभिः कामिन्यः वध्यते—अर्थतः, कामतः, सुकुमारोपचारतः।

५९—सप्तविध कामुकाना क्रीडारंभ—क्रीडा पात्राणि, भोजनाद्युपचार, विलेपनानि, धूपनानि, ताम्बूलादिना, पुष्पादिमाल्यानि, हास्यादि मर्माणि।

६० अष्टविध विदग्धाना सुरतं—आलिंगनं, चुम्बनं, धावनं, केश धारणं, रंग संवेशनं, शरीरादि कूजनं, नग्न स्पर्शनं, कुट्टनं॥

६१—नवविध सुरतावसानं—वस्त्रादि संयमनं, पार्श्वं आचमनं, तांबूलादि

ग्रहणं, फलादि भक्षणं, पान भोज्यादि विधानं, क्रीडा पात्र प्रवेशं, सुभाषित जल्पं, सानुराग प्रेक्षणं, मनोवांछित विनोदः ।

६२—नव शयन गुणाः—अनग्नशायी, मृदु गात्रशायी, प्रसारित गात्रशायी, सोम्यावयव, अनुशयन, नात्यर्थान प्रात, अशब्द सन्मुखः ।

६३—दशविध पार्थिवानां प्रमोद—

ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैर निग्रहे ।
शौर्य्ये धर्मे सुखे शौचे, प्रमोदो दशधा मतः ॥

६४—चतुर्विधः प्रबोधः—शास्त्र प्रबोध, प्रज्ञा प्रबोध, तत्त्वनिश्चय प्रबोध, स्वभाव प्रबोधः ।

६५—चतुर्विधा बुद्धि—स्वभावजाता, श्रुतोत्पादिता, कर्मजाता, पारिणामिकी ।

६६—अष्टौ बुद्धिगुणा—

शुश्रुषा श्रवण चैव, ग्रहण धारणं तथा ।
ऊहापोहो च विज्ञानं, तत्वज्ञानच धी गुणाः ॥

६७—चतुर्विध गंधर्वं अवधान गतं, स्वरगत, पद गत, तालगत ।

६८—त्रिविध गीतं—महागीत, अनुगीत, अपगीत ।

६९—षट्त्रिंशद् गीत गुणा :—सुस्वर, सुतालं, सुपदं, शुद्धं ललित, सुबधं, सुप्रमेय, सुराग, सुरसं, सम सदार्थं, सुग्रहं, श्लिष्टं, क्रमस्थं, सुमयक सुवर्णं, सुरक्त, सपूर्णं, सालंकारं, सुभाषाढ्या, सुगधस्थं, व्युत्पन्न मधुरं, स्फुटं, सुप्रमं प्रसन्न, अग्राम्यं, कविल्कंपित, समजात रौद्र गीतं, ओजः सगतं, दशन स्थितं, सुखस्थापक, हृतसंविलम्बित, मध्यं प्रमाणं ।

७०—चतुर्विधं वाद्यं—ततं, वितत, घन, शुषिरं ।

७१—षोडशधा नृत्योपचार कारस्मानि—कंपितं १ समं २, आयतं ३ रौद्रं ४ संगतं ५, प्रसन्नं ६. हसुतृप्ति ७, द्रुतं ८, मध्यं ९, विलंबितं १०, गुरुत्वं ११, प्राजलित्वं १२, सुप्रमाणं १३, कर शुद्धं १४, निर्दोषं १५ चेति ॥ मुखस्थापनं १६ ।

७२—षोडशविध वाक्य—समय, प्रतिभा, अभ्यास, विद्या, जाति, गीति, रीति, वृत्ति वात्सल्यं, पाचक, छंद, अलंकार, गुण, दोष, रसभाक, अभिनय ।

७३—दशविध वक्तृत्वं—परिभावितं, सत्यं, मधुरं, सार्थकं, परिस्फुटं, परिमितं, मनोहरं, विचित्रं, प्रसन्नं, भावानुगतं ।

७४—षटविध भाषा लक्षणं—संस्कृतं, प्राकृतं, अपभ्रंशं, पैशाचिकं, मागधं, सौरसेनं ।

७५—पंचविधं पाण्डित्यं–वक्तृत्वं, कवित्व, वादित्वं, आगमिकत्वं, सारस्वत प्रमाण।

७६—चतुर्विंशति विध वादलक्षणं–उत्पत्ति, सभापति, सत्यवादि, प्रतिवादि, पक्ष, प्रतिपक्ष, प्रमाण, प्रमेय, प्रश्न, प्रत्युत्तर, दूषण, भूषण, अर्थान्तर, उपन्यास, अनुवाद, आदेश, निर्वाह, निर्णय, निश्चय, स्थान, समता, निग्रह, जय, अजय।

७७—षट दर्शनानि-माहेश्वरं, ब्राह्मयं, सांख्यं, बौद्ध, जैनं, चार्वाकम्।

७८—अष्टविध माहेश्वरं–नैयायिक, वैशेषिक, शिवधर्म, शैव, कलामुख पाशुपत, महाव्रतिक, मुक्ति पर्यंत।

७९—दशविध ब्राह्मय–लक्षण, प्रमाण, संस्कार, कर्म, वर्त्तन, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, यति, ब्रह्म पर्यन्त।

८०—चतुर्विध सांख्यं—तत्व, प्रमाण, प्रकार, प्रभेद, प्रमोदपर्यन्त, सर्वात्मपर्यन्त।

८१—सप्त विधं जैनं–सर्वज्ञ धर्म, तत्वार्थ, प्रमाण, प्रतिमा, प्रभेद, सिद्धिपर्यन्त।

८२—दश विधं बौद्ध–आयासिकम, पर्वद, पारिगत, विहार, प्रमाण, सूत्रांतिक, वैभाषिक, योगाचार, माध्यमिक, मोक्षपर्यन्त।

८३—चतुर्विध चार्वाक–तत्वार्थ, प्रमाण, प्रभेद, प्रमोद पर्यन्त।

८४—चतुर्विंशति विधं विचारकत्व–विद्या, विनोद, विज्ञान, कला, कवित्व वक्तृत्व, गीत, वाद्य, नृत्य, देश, काल, पात्र, प्रमेय, पर्याय, जय, रस, भाव अभिनय, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकवाद, विचार पर्यन्त।

८५—दशविधं गुरुत्वं—

वंशे ज्ञाने पक्षे सत्वे शौर्ये दाने बले जये।
संताने सगुणे चेति गुरुत्वं दशधा मतं॥

८६—पंच चरित–ज्ञान चरितं, मान चरितं, दान चरित, वीरविलास चरितं, धर्मारंभ चरितं।

८७—पंचविधं पार्थिवानां पालनं–राज्यपालनं, प्रजापालनं, भूमिपालनं, धर्मपालनं, शरीर पालन।

८८—सप्तविधं उत्तमत्वं–वय, कुल, रूप, शील, पद, ज्ञान, प्रयोग पर्यंतचेति।

८९—नवविधाशक्ति–धर्मशक्ति, दानशक्ति, मंत्रशक्ति, ज्ञानशक्ति, अर्थशक्ति कामशक्ति, युद्धशक्ति, व्यायामशक्ति, भोजनशक्ति।

९०—सप्तविधा मुक्ति–शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, अभिमान, देश।

९१—अष्टविध अभिमान लक्षण–ज्ञाने, धर्मे, अर्थे, कामे, बले।

शत्रुघाते, समारंभे स्थितं च।

९२—चतुर्विध वात्सल्यं—देवानां सद्गुरूणा च, मत्राणां वल्लभे जने ।
स्नेहेन मानसस्यच्च, तद्वात्सल्यंचतुर्विधं ॥

९३—पंचविधो महोत्सवः—१ ज्ञान महोत्सव, २ अर्थ महोत्सव, ३ काम महोत्सव, ४ धर्म महोत्सव, ५ मोक्षमहोत्सव ।

९४—सप्त विधा प्राप्ति—ज्ञाने धर्मे बले कामे विज्ञाने पात्र-सग्रहे ।
महार्थे भूभुजां नित्यं, प्राप्तिः सप्तविधा मता ॥

९५—चतुर्विंशति-विध शौर्य्य—शब्द शौर्य, प्रतापशौर्य, दान, स्थान, उदय, तेज, साग्राम, प्रतिपन्न, जय, मान, ज्ञान, साहस, शरणागत, परिबोध, प्रमोद, उद्यम, अर्थ, आचार, बल, कीर्त्ति, लक्षण, गुण, ज्ञान, मान ।

९६—दशविध बल—वाक्काय बुद्धि-मन्त्रैश्च, स्थान सैन्य सुहृज्जनै ।
निद्राहारैर्, दयाश्चेति, राज्ञा दशविधो जयः ॥

९७—दशविध सग्रह—ज्ञाने पात्रे गुणे सौरे पत्नीयोगे वाल धर्मे जये गुणेषु श्रुत सग्रहः ॥

९८—पचविध प्रभुत्व—कुल प्रभुत्व, दान ज्ञान प्रभुत्व, प्रभुत्वं, स्थान प्रभुत्व, अभय प्रभुत्व । इति श्रीरत्नकोश सूत्रशत व्याख्यानं समाप्त ॥ पं० सुखनिधानमुनिनालेखि

९९—अष्टविधोजय—१ शत्रुजय, २ मानजय, ३ वादजय, ४ आहारजय, कर्मजय, ६ क्रोधजय, ७ भूमिजय, ८ यानजय ।

बृहत्ज्ञान भडार की प्रति में अधिक—

१००—अष्टविधोभोग—सुगध वनिता वस्त्र गीतं ताबूल भोजन ।
आभरणं मंदिरं चैव अष्टौ भोगा प्रकीर्त्तिता ॥

१०१—षोडश शृंगारा—आदौ मज्जन चारुचीर तिलक नेत्रांजन कुडल ।
नासामौक्तिक पुष्पमाल कुडल, शृंगार कनूपुर ।
अगे चंदनलेप कंचुकमणी क्षुद्रावली घटिका ।
ताबूलं करकंकणं चतुरता शृंगारका षोडश ॥

१०२—षडविधपरिच्छेद—आकार्य परिच्छेद, पाप, दुख, कर्म्म, भुक्ति, लोभ ।

१०३-चतुर्दश विद्या नाम—नाद, वेद, पवित, गणित, गुणित, व्याख्यानं, ग्यान, ध्यान, शस्त्र, शास्त्र, कामिनिनां चरित्र, भेषज, नाडीस, सर्व चरित्र, सर्व विद्यानां ।

१०४ चतुर्विधा गति—नरग गति, तिर्यंच गति, देव गति, मनुष्य गति ।

पाठ भेद की टिप्पणियाँ १

अतिरिक्त नाम तथा पाठान्तर—पृ० ७-(चतुर्विंशति देशा) (२०)

काशी, कर्णाट, गोला, साड्वल, लाम, पुंड्र, उद्दंड, विहार, उड्डीस लोहित, जालंधर, मरुस्थल, मारू, सपादलक्ष, टक, महाभोज, चीण, महाचीण, तुरुष्क, नायक, वरदेव, संख, सहज, चित्रकूट, दक्षिण, वौड्ड, तिलंग, द्रविड़ ।

पृ. ८ (२१) द्वात्रिंश लक्षणानि—अतिरिक्त नाम तथा पाठान्तर

तनु, वैद्य, नृत्य, रूप, जोतिर् , सर्प, वृष ।

पृ. ८, चतुर्विंशति-विध गृह— (२२)

सौध, क्रीड़ास्थान ।

पृ. ६ अष्टोतर शत मंगलानि— (२३)

जिन, रुद्र, बुध, तीर्थ, देवपुराण, तांबूल, शौचन, पठस्थान, तिलक, वेद, अश्वत्थ, उन्मत्तफल, वेणु, स्वस्तिक, तोमर, चापा, स्तुति, गोष्ठान बुद्धि, सिद्धि, विद्रुम, कुसुम, किंकिणी, आभरण, अलकतक, कुंकुम सिन्धु, रिद्धि, सिद्धि, प्राति ।

पृ. ६. स २४—

२. उचित दान, भक्तिदान

पृ. ६. सं. २५—

१. जन रंजन

पृ. ६ सं २६ —

१. वृद्धजनकीर्त्ति, वर्णकीर्ति, शौर्यकीर्त्ति,

पृ. ६ सं. २७

कंता, दौर्म्मन, स्यंक्तिता, धृति, विलक्षणता, विरक्ति, अनुरक्ति त्रास, प्रवासिक्त ।

पृ. १० सं ३०—

(१) सात्वती ।

पृ. १० सं. ३३—

संतुष्ट, क्रीडावान, सत्यप्रिय, सुजन, सुगंधर्व, महोत्तम, सुपात्र, संग्राही ।

पृ. १०. स. ३५—

१. वासक सय्या, विवाहोत्कठिता

पृ. १०. स ३६—

सुनेत्रा, स्वच्छाशया, सुखाशया, भोगिनी, विचक्षणा, पठितज्ञा, कृतज्ञा, सुगधस्त्रासा, शोभावती, विनयवती, गूढार्थमंत्रा।

पृ १०. स ३७—

द्विविधिं सौख्यं–आगिकं, मानसिकं।

पृ. १० स. ३८

विषयकारणं, मुक्तिकारणं।

पृ. ११ सं ३९.

नव विधोगात्रोपभोग—

सुगंध, अधिवास, सुखासन, सुवस्त्र, अलकार।

पृ. १०. स० ४०—

अथ द्विविधिम् शौचम्—

स्मश्रु शौचम्, मृतिका शौचम्।

पृ. १० सं० ४२—

उत्कंठा, ऊर्ध्वप्रलाप, उन्मत्त।

पृ. ११ स० ४४—

४४—अर्थनिरापेक्षणी, दर्शने प्रसन्नानभवति, तिर्यकमुखं कुरुते, अर्थं न भावयते।

४५—स्वकामजल्पनं, अग्रावलोकनं, सदाप्रसन्नता, मुद्रीकर्षणं, हृदयोत्कर्षणं केश-रचनं, पुष्पारोपणं, विलासपठनं, बालालिंगनम्, विरोचेनाम कीर्तनं।

४६—पति कलहकारिणी, जनसकुलस्थायिनी, त्यक्तलज्जा, वृद्धभार्या, चंचला, रात्रीभ्रमणशीला, कृत्रिम तपा, पाखंड लज्जाकारिणी।

४७—घर्घरालवापा, स्थूलोदरा, मिलित भ्रू।

४८—अविश्वासकारणानि–दीर्घगोष्टी, अविवेका, विवस्त्रा अतिदुष्टा, अतिकोपना।

४९—रजस्वला। प्रव्राजिका।

पृ १२ सं० ५०—

५०—अप्रस्तावज्ञ, अन्यात्पंथः, कुव्यसनी, स्वार्थवंशा, स्वमर्मप्रकाशक, कोक व्यवहार अनभिज्ञ, कुपठित, कुबुद्धि अकलाज्ञ।

५१—दोष प्रच्छादनं, सुवेशता, परचित्तज्ञावृत्ति, परिग्रहगमन परा, उदारता, शुद्धाशय, संतोषता मित्रवर्गता, पार्श्ववास, भवन-संस्थानं, प्रभुविधापना, प्रदोषात्धर्मं, गोत्राभिधानं, निशायासुरतोपचार।

५१—द्विविधं रूपं—सिन्दूरवर्ण लक्षणं, वयः संस्थानां ।
५३—सदभाव ।
५४—स्वस्वरूपेण, राज्ञामुपचारेण, भीरुणा रक्षणेन, पंडितानां काव्येन, दीनानामकारुण्येन, पंडितानां वक्रोक्त्या, मानीना नम्रत्वेन, महात्माना धर्मेण ।
५५—तिथि प्रत्याख्यापन, अनुरागपोषण, संतोषोत्पादनम्, वाञ्छित विनोदः ।
५६—कृतघ्न, अतिमानी, शौचहीन, सुरतानभिज्ञ ।
५७—सरोगता, अतिमानी, अविलोकता, अतिसंगता, अतिरक्तता ।
५८—त्रिभिः कारणैः स्त्रियो रज्यते-छंदानुवर्तनेन, सुरताप्र गल्भेन, सौभाग्येन ।
५९—पापेन ।
६०—भगानिन्द्र्यसन, सकणिचं ।
६१—इक्षुरसादि भक्षण, गीतकाभरणं, संग्रहहट्ट ।
६२—अनेकजशायी, पार्श्वशायी, निश्चजागशायी ।
६३—वैणिजये, वृद्धो ।
६४—शृङ्गाराणि काम प्रबोध, योगिनां ज्ञान, बालानां शान्त, महात्मानाम निर्णय प्रबोध ।
६५—उत्पातिका ।
६६—अवधारण, निरीक्षण ।
६७—स्वगीतं, तालगीतं । (चतुर्विधगीतं)
६८—त्रिविधं गांधर्व-तारं, मद्रं, मध्यं ।
६९—
७०—आनद्धं ।
७१—षोडशधारणमुपचारम्—सुश्रुति ।
७२—प्रतिज्ञा, अविद्या, सुविद्या, ध्वनिलक्षण, सरस ।
७३—
७५—शास्त्रसत्कार, प्रौढता ।
७६—प्रतिपत्ति, सम्भव, प्रभेद, उत्तर, अतीत, अत्यन्त, अनुत्पाद, अभेद, विस्मय, निग्रहस्थान, पराजय, जयपात्र ।
७८—ब्रह्मचर्य ।
७९—मोह, यश, कुल, मित्र ।
८०—दशविंशति तत्व ज्ञानानि, पात्र लिनतं, शिक्षाराधनं, प्राति पुरुष साधनम् ।
८१—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, बंध, मोक्ष, निर्जरा ।
८२—त्रिविधं बौद्धं—

८३—गोरववसंतान, वक्रोलि, कौलाल, ब्रह्मज्ञानी ।

८४—गुणप्रकृति, सदभाव ।

८५—ऐश्वर्य ।

८७—पंचविधं पार्थिवानां पालनं । परिवार पालनं, अर्थपालनं,

८८—प्रियालाप, अर्थभाषणं, स्वपरार्थकः, अविकथनम्, परदारवर्जनं, कृतज्ञता, परलोक चिंता ।

६०—आहार भुक्ति, शृगार भुक्ति, द्रव्य, काम, परिवार, प्रभुत्व ।

६१—अष्टविधं अपमान लक्षणं—१ शुद्ध परगुण-श्लाघा-विमुख, २ आत्म-बहुमानी, ३ असूया, ४ पर निंदा, ५ परविनय विकल ६ कठोर भाषी, आत्म प्रशसाप्रिय ।

६२—मित्राणां, मातृपितृणां, प्रतिस्नेहन, मानसंशय, वात्सल्यं ।

६४—दान, भोमेविज्ञाने । सर्वज्ञत्वे, नरेन्द्रत्वे ।

६५—शास्त्र, उदात्त, कुल, विवेक, उद्भट, विद्या, सौभाग्य, वास, दान, तप, वाद, बुद्धि, वाक, मान, सत्य ।

६६—धैर्य, बुद्धि, अवधारण, अभ्यास, शरीर, दैव, मंत्र, साहस, दातृ, परिवार ।

६७—शास्त्र, धर्म, सत्पुरुष, धन, स्त्री, चतुष्पद, वाहन, कला, पात्र, सुभाषित, उत्तम संग्रह ।

६८—नागरिक प्रभुत्वं, डिम्भ, इद्रिय, दर्शन, मानप्रभुत्वं ।

परिशिष्ट (२)

सभा-शृंगारादि वर्णन-संग्रह

यावन-परिपाट्यनुकृत्या

राजरीति-निरूपण नाम शतकम्

हजूर के अहल खिदमत कारखाने परगनाती ओधादार के लक्षण

गोपीवल्लभ पादाब्जं द्वंद्वमाधाय चेतसि ।
वच्मि राजविधि म्लेच्छपरिभाषानुकल्पितम् ॥ १ ॥
क्वचिद्रूढे क्वचित्कोशात्क्वचित्स्वानुभवात् पुनः
नाम लक्षण संस्थेयमधिकाराधिकारिणाम् ॥ २ ॥
आज्ञा भवेद्यदायत्ता हस्तलेखश्च भूपतेः
जानीहि तं प्रतिनिधिं राज्य सर्वस्वधूर्वहं ॥ ३ ॥

वकील मुतलक नायब मुसाहिब

आय-द्वाराधिकाराः स्युर्यदायत्ता महीभुजः
अमात्यं मन्त्रिणं विधि प्रधानं सचिवत्वत ॥ ४ ॥

वजीर प्रधान दीवान

भटानामग्रयायित्वं वेतन-ह्रास वृद्धयः
परिवृत्तिश्च यत्तंत्रा सेनापतिममुं विदुः ॥ ५ ॥ =बकसी
कार्यापेक्षाणि वस्तूनि शालाकृत्यानि भूपतेः
यदायत्तानि सर्वाणि शालापतिममुं विदुः ॥ ६ ॥

मीरसामान खानसामान कोठारी

संदेश-कर्म यः कुर्याद्राज्ञः प्रतिनृपेषु वै
भर्त्रिष्ट-साधनोद्युक्त तं दूतं विबुधा विदुः ॥ ७ ॥

एलची वकील

पत्राणि प्रति-पत्राणि लिखेद्योहि नृपाज्ञया
सुलेखकं विजानीयाद्राज मंत्र-निकेतनम् ॥ ८ ॥ =मुनशी

नृपे निवेद्य-वृत्तानां निष्कारण-निवेदकः
वैत्रिवर्गस्य योध्यक्ष स विज्ञापक इष्यते ॥ ९ ॥ =अरजवेगी
यदधीनानि कर्माणि पुण्य-हेतूनि भूपतेः
दानाध्यक्षं विजानीयाच्छाति-कर्म पुरोधसं ॥१०॥ =सदर
योवरोधस्य कृत्यानि गुह्यादीनि विचेष्टते
महत्तरं विजानीयात्त प्रतीत जितेन्द्रियम् ॥ ११ ॥ =नाजिर
अग्नि-यंत्राणि सर्वाणि तन्नियुक्ता भटादयः
यदायत्ता भवेयुः सोनलाध्यक्ष' प्रकीर्त्तितः ॥१२॥
=मीर आतस तोपखाने का दारोगा
नदी सरस्तडागादिष्वपारोधश्च मोचनम्
नावादीना च यत्तत्रं जलाध्यक्ष. प्रकीर्त्तितः ॥१३॥
दुर्ग-मन्दिर-वाप्यादि-संस्कृतौ निर्मतौ च य.
नियुक्तो वास्तुकः सोयं शिल्पशास्त्रविशारदः ॥१४॥ =मीर इमारत्
अनाथ वा सनाथ वा गृहाद्य यन्नियोगतः
गृह्यते दीयते चापि स आयतनिकः स्मृतः ॥१५॥ =नजूल का दरोगा
आराम वाटिकादीनां संस्कारं यः प्रवर्त्तयेत्
उद्यानपालो विज्ञेयः स मालाकार-नायकः ॥१६॥ =बागात का दारोगा
खड्ग-खेटासि-तूणीरश्चापि कुंतादित चराः
मंगलानि च सर्वाणि शस्त्राध्यक्ष-नियोगतः ॥१७॥ = कोरवेगी,
= सिलाहखाने का दारोगा

जल-स्थल-प्रचाराणा मृगया प्राणधारिणा
यत्-तत्रा तन्नियुक्ताश्च वैतसिक इति स्मृतः ॥१८॥
= करावल वेगी, शिकारखाने का दारोगा
विहगानां विचित्राणां मृगया प्राणधारिणा ।
यत्तात्रा तन्नियुक्ताश्च विहगाध्यक्ष इष्यते ॥१९॥ = कोशवेगी
यदधीनानि वित्तानि श्रीगृहेषु महीभुजः
भाण्डागारिणमनं तु निधिपालमवेहि वा ॥२०॥ = खजानची, भंडारी
चारानीतो प्रवृत्तियस्तदध्यक्षो निवेदयत्
प्रवृत्ति-वादुको-राज्ञि प्रत्यनीकादि-सम्भवां ॥२१॥ = हरकारों का दरोगा
जनानां यो विसवाद, प्रपन्नाना नृपान्तिकं
विवेचयेत्सुनीतिज्ञो न्यायाध्यक्षः प्रकीर्त्तितः ॥२२॥ =अदालत का दरोगा

चौर-जारादि दुष्कृत्यकारिणां निग्रहे परः
पुररक्षा-समादिष्टः स वै नगर-गौप्तिकः ॥२३॥ = कोटवाल
पुरस्योपांत सीमानं रक्षयेद्योहि विघ्नतः
सीमा-रक्षकमेनं तु प्रवदंति विपश्चितः ॥२४॥ = फौजदार
आचार-व्यवहारेषु प्रायश्चित्तेषु यो जनान्
प्रवर्त्तयेन्मान्यतमो धर्माध्यक्षः प्रकीर्त्तितः ॥२५॥ = काजी
धर्माध्यक्ष-वचः श्रुत्वा श्रुति-स्मृति निरूपितं
देशकालोचितं दंडमादिशेत्स प्रवर्त्तकः ॥२६॥ = मुफती
यो हि कूट-तुला-मान-सुरा-द्यूत-पणांगनाः
वहिर्दृश्याः निराकुर्यात्तीति दृश्वा स कीर्त्यते ॥२७॥ = मुहतसिब
दुर्गाणामति-दुर्गाणां भवनानां च भूपतेः
रक्षा-विधि-समादिष्टो दुर्गपालः प्रकीर्त्तितः ॥२८॥ = किलादार
स्कंधावार-निवेशं वा पण्य-श्रेणी निवेशनं
चमूनां चापि निर्याणं कुर्यात्स स्कध-याचिकः ॥ २९ ॥ = मीरमंजिल
स्थाने याने च राजोये जनान् सीम्नि नियोजयेत्
सोयं पथकराध्यक्षः कथ्यते नीति-कौविदैः ॥३०॥ = मीरतुजक
भटादीनां गणो यस्य साहचार्ये नियुज्यते
राज्ञा स्वाथवृत्तिस्तं ब्रवीमो गण-नायकम् ॥३१॥ = रिसालेदार
चतुर्विधं बलं यस्य स्वाधीनं दंडनायकः
इत्यादयो हि बहवो मध्य-पर्षद्-गता जनाः ॥३२॥ = अमीरठाकुर
पीठ-मर्दा अंग-रक्षाः किंकराश्चेटकास्तथा
विदूषका अमी अंते-वासिनोभ्यंतराश्रयाः ॥३३॥
वेत्र-शस्त्र-भृतो ये च शाला सु परिचारकाः
बाह्याधिकारिणो ये च ते बाह्यस्थाः प्रकीर्त्तिता ॥३४॥

अथ शाला-भेदाः

मंचाः संस्तरणाद्यं च यत्र तत्परिचारकाः
शय्यागारं विनिर्दिष्टं राजरीति-विशारदैः ॥३५॥=मुखसेजखाना १
अभ्यंगनोद्वर्तनानि सचरोपस्करं जलं
यत्र तन्मज्जन-गृहं राजरीतिज्ञ भाषया ॥३६॥=गुसलखाना, हम्माम २
इष्टदेव-प्रतिकृतिः पूजा-भांडानि मालिकाः

विष्टराद्यं यत्रास्ते तद्देवायतनं विदुः ॥३७॥=तसबीहखाना ३
नाना ग्रन्थ सम पृष्ठैर्वेष्टनैर्बंधनैर्गुणै.
पीठै. फलक कर्त्तर्या ध्रियते पुस्तकालये ॥३८॥=किताबखाना ४
देव-भूपादि-चित्राणि रेखा-वर्ण-कृतानि वा
ध्रियंते शिल्पिनश्चैषा चित्रागारं तदुच्यते ॥३९॥=तसबीरखाना ५
ओषध्यो विविधा यत्रावलेहाद्याश्च पुष्टये
भैषज्य-गृहमाख्यातं संभिषक्परिचारकं ॥४०॥ =दवाईखाना ६
मृद्वी-दाडिम-खर्जूर-नारंगाम्र-फलादयः
संचीयंते च यत्नेन फलागारे नियोगिभिः ॥४१॥=मेवाखाना ७
खातकोष्टक-पल्यादौ ध्रियंते धान्य-राशयः
कोष्ठागारं तदेवोक्तं राजनीति-विशारदैः ॥४२॥=अबार कोठार जखीरा ८
धान्य-पण्येन्धनाद्य तु यथापेक्ष प्रगृह्यते
यतौ महौषधी शाला बहुस्थानेषु कल्पिता ॥४३॥=मोदीखाना ९
धात्वादि-मय-भाडानि पाक यंत्रयानु यन्तवै
ध्रियंते कुप्यशाला सा रक्षकैमाजिकै· सह ॥४४॥=रिकाबखाना १०
निर्मायते च भाडानि सस्कृते च शिल्पिभिः
कास्यागारं तु तत्प्रोक्तं राजरीति-विशारदैः ॥४५॥ =ठठेरखाना ११
पेयं लेह्य चोष्यं खाद्यमन्न गोरसः
व्यजनं पिशितं त्रेधा सस्क्रियेत महानसे ॥४६॥=बबर्चीखाना, रसौड़ा १२
हिमं जल विविधं तद्भाण्डं धातु मृन्मयं
कहारकै रक्षकैश्च सगृह्येत पयोगृहे ॥४७॥=आबदारखाना, पाणेरो १३
पत्र पूग-लवंगैला कर्पूराद्यास्य-शुद्धये
रक्ष्यते तन्नियोगामैस्ताबूल-गृहमीरितं ॥४८॥ = तंबोल खाना १४
दीन दुर्बल रंकार्त्त-भिक्षु पग्वंधरोगिपु ।
दीयते कृपया भक्त स प्रतिश्रय ईरितः ॥४९॥=बिलगोरखाना १५
यत्र वस्त्रादि मूल्यानि निर्णीयते नियोगिभिः
मूल्यकारैश्च विक्रेता क्रयशाला प्रकीर्त्तिता ॥५०॥=इबतियाखाना १६
यत्र वस्त्राणि छिद्यंते सीव्यंते चापि शिल्पिभिः
सीवनागारमेतत्तु सूचीवर-समन्वितं ॥५१॥=किरकिराफखाना १७
रेखाकित-प्रगुणितं धौतं रक्तं च धूपितम्
वास सुगंधित सज्जं नेपथ्यागार इष्यते ॥५२॥=तोशकखाना, कपडदारा १८

पाटीरागुरु-काश्मीर कस्तूरी-प्रभृतीनि वै
निस्यंदाश्च प्रसूतानां सुगंधागार ईरिता ॥५३॥=खुशबोईखाना, सोंधेखाना १६
वर्णा नाना-विधायत्र चित्र-मुद्राश्च शिल्पिनः
संस्कारार्थं च वस्त्रादेर वर्णागारं तदिष्यते ॥ ५४ ॥ = रंगखाना २०
हिरण्य घटना यत्र जटना रत्न-निर्मिता
तत्कलाद-गृहं प्रोक्तं राजरीति-विशारदैः ॥ ५५ ॥=जरगरखाना २१
रत्नमुक्ता-मणि शिला-प्रवालस्फटिकादिकं
भिन्नं युक्तं च धार्येत रत्नागार तदीरितं ॥ ५६ ॥=जवाहिरखाना २२
शस्त्राण्यस्त्राणि वा यत्र कवचावरणानि वा
ध्रियंते स प्रहरण कोशः सुधीभिरीरितः ॥५७॥=कोरखाना, सिलहखाना २३
तूलिकास्तरणा चैवोपधानं शिविरादिकं
यत्र तत्सास्तर गृहं कथ्यते नीति-कोविदैः ॥ ५८ ॥=फराशखाना २४
हिरण्यानि सुवर्णानि धृतानि व्यापृतानि वा
आये व्यये प्रयुक्तानि श्रीगृहं तत्प्रकीर्त्तितं ॥५९॥=खजाना, भंडार २
सद्यो दानोपयोगीनि कर्षाणि किल भूपतेः
ध्रियंते दान कोशः स विज्ञेयो नीतिकोविदैः ॥ ६० ॥ = बिहला २६
मंदुरात्वश्वशाला स्यात् पलाणो पक्खरैः समं
शिक्षकैः शालिहोत्रज्ञैः पटकैर्धारकैर्युता ॥६१॥=अस्तबल, तबेला २७
गज-शाला तु चतुरं कुटी कुडादि शालिनी
यंतृभिः पालकाप्यज्ञैः कशाकुंतांदमृद्गणैः ॥६२॥=फीलखाना २८
संदानिन्युष्ट्र शाला च यान-शाला च कीर्त्तिता
पालकागारमेतत्तु यत्र स्याच्छिबिकादिक ॥६३॥
=गावखाना २९, शुतरखाना ३०, रथखाना ३१, पालकीखाना ३२
दारु-निर्माण-साध्यानि क्रियन्ते यत्र शिल्पिभिः
दारुकर्मालयं विद्धि तदावेशनमुच्यते ॥६४॥=खातिमबंदखाना ३३ ध
वसा-मदन-तूलानां वृत्तयो दीप वृष्टयः
स्थाली-पंजर पात्राद्यैरन्वितं दीपकालयं ॥६५॥= मै चिरागखाना ३४
एकद्वित्रि-चतुः-पंच-दश-विंशति-शाखिकाः
अभ्रकांबर-वृत्याढ्या यत्र-तज्ज्योतिरालयं ॥६६॥=मसालखाना ३५
आय-व्ययादि-लेखाः स्युर्मशीपात्राणि लेखिनी
लेखकाः बंधका यत्र लेखशाला प्रकीर्त्तिता ॥६७॥=दफतरखाना ३६

मृगाश्चित्रकाश्चापि लुलाया मृगया कृते
भवंति मृगयागारं वैतंसिकगणैर्युतं ॥६८॥= शिकारखाना ३७
वज्र तुंडा लोह-तुडाः श्येना उपरिचारिणः
धार्यंते मृगया हेतोस्तद्धि शाकुनिकालय ॥६९॥=कोशखाना
इत्यादयो ह्यनेके स्युरागाराइह भूभुजा
शालात्वावश्यकी प्रोक्ता क्रीडार्थं मुपशालिकाः ॥७०॥=
उद्देशकः स्थापनिको लेखकोधिकृतास्त्रयः
प्रतिशालामवश्यं स्युरपरे मूल्य कृन्मुखा ॥७१॥
नृपाज्ञतं दिशेत्कार्यं शाला-परिजनेपु यः
उद्देशकः स तस्याग्रे लेखको यो लिखेत्स्वयम् ॥७२॥ =दारोगा, मुश्रिफ
संगृहीयात्स्थापनिकैः (तहवीलदार) मूल्यं कुर्यात् स मूल्यकृत् (मुकीम)
तौलिको रत्नमानानि (वजन कश) सपादनपरश्चरा ॥७३॥ =सरबराहकार
शालापतेरधीनाः स्युः सर्वशाला हि भूभृता
कौत्रिकापणमेतत्तु शाला नाम कस्मृतम् ॥७४॥=कारखाना
श्रेणयः पुर-वास्तव्याः शालायत्ता महीभुजः
नियतैक-शिल्प-निरतास्ते भक्त भृति वेतनैः ॥७५॥
कुर्यादनियता वृत्तिं श्रमसाध्यांतु कर्मकृत्
काहारा भारवाहाश्च तृण-काष्ठ फलाहराः ॥७६॥
क्रय-विक्रय-वृत्तिर्यो व्यागरी कीर्त्यते जनैः ।
द्रव्यादान-निसर्गाभ्यां वृत्तिमान् व्यवहारिकः ॥७७॥
क्रय विक्रय-शीलानां मध्यस्थो मूल्य-साधक.
गणिम धरिमं मेयं पारीक्ष्यं पण्यमुच्यते ॥७८॥
सख्या ग्राह्यं तु गणिमं नालिकेरादिकं यथा ।
धरिमं तुलया देयं कर्पूरैलादि कीर्त्यते ॥ ७९ ॥
हस्तागुलादिमानेन मेयं वस्त्रादिकं भवेत् ।
तुरंगादि पारीक्ष्यं तुला-मानादि तत्र न ॥ ८० ॥

अथ देश विभागस्तदधिपाश्च कथ्यन्ते

समुद्र गिरिपर्य्यन्त-चक्रीं चक्री तदीश्वरः
महास्तस्य विभागः स्याद्राष्ट्रं जनपदं च तत् ॥८१॥=सूबा
तुरंग - चमूचंचद्राजधानी - समन्वितम्
राष्ट्रस्याप्यशभूतं तन्मण्डलं मण्डलेशितुः ॥८२॥ =सिरकार

मडलाशस्तु प्रगणं बहु-ग्रामोपवेष्टितम्
तस्याधिपः स्वल्प-बलो भवेत्सामंत राडिति ॥८३॥ =परगना
कृषिक्षेत्र-युतं ग्रामः (मौजे) माकरो लवणादि-भूः (मादन)
वर्णैश्चतुर्भिः नगरं शैल-प्राकार-वेष्टितम् ॥८४॥ =बलदै
खेटं तु धूलि प्राकारं पुरमुद्धासि-कर्वटम्
जल-स्थल-पथावाप्यं तद्द्रोणामुखमिष्यते ॥८५॥ =बंदर
परितः सार्थ-गव्यूत-ग्रामादि-परिवर्जितम्
मडंबं कीर्त्यते सुज्ञै रगम्यं काननैर्घनैः ॥८६॥
विचित्रिं पण्यमागच्छेद्यत्र तत्पत्तनं मतं
अध्वन्यहेतु-निर्माणं सन्निवेशाख्यमुच्यते ॥८७॥
चौर्यादेर्वसतिः पल्ली तापसानां किलाश्रमः
निगमो वणिजामेव ब्रह्मवासो द्विजन्मनां ॥८८॥
क्षुद्रग्रामं भवेद्वासोशिका द्वित्रिगृहं हि तत्
तृणाकीर्णोपान्त-भूमिः गोकुलं धेनु-तृप्तिकृत् ॥८९॥
शिल्पिनः कर्मकाराश्च, व्यापारी व्यवहारिणः
चतुरंग-बलो राजा यत्र तद्रंगमुच्यते ॥९०॥ =ड्यार
चक्री चक्राधिपः सम्राड्राष्ट्रपालः प्रकीर्त्तितः
मण्डलेशो महाराज. सामंतो विषयाधिपः ॥९१॥
ग्रामाणिकतिविद्यस्य वशेसौ भूमिकः स्मृतः
ग्रामणिर्ग्राम-मुख्य· स्याद् (चौधरी) रीतिज्ञो देश पण्डित· ॥९२॥=कानूगो
राजवेतन-दानाशान् ग्रामार्णि दश वार्षिकीं
लिखित्वा धारयेद्यस्तु लेख-संग्राहको मतः ॥९३॥ =मजमूअेदार

॥ अथ प्रगणाधिकारिणः ॥

सपन्नां कृषिमालोक्य प्रजाया उचितां दशां
गव्याशस्य विनिश्चेता कथितो व्यावसायिकः ॥९४॥ =अमीन
नेन व्यवसित द्रव्यमादद्यात्रः प्रजा-जनात्
बलात्सौकर्य्य वापि करोटीरक इष्यते ॥९५॥ =करोडी
निरुद्ध - वेतन - ग्राम - भोगमादाय भूपतौ
न माक्षिकं प्रेषयेद्या निरोधक इतोष्यते ॥९६॥ =कोतल करोडी
गज द्रव्यं प्रजादत्तमाददीत परीक्ष्य यः
धनिके निक्षिपेद्यश्चकथितः प्राप्तधारकः ॥९७॥ =पोतैदार

तेनोपकल्पितं द्रव्य व्ययी कुर्याद्यथोचितम्
शेषं नृपे प्रदिशुयाद्धनिकोसौ प्रकीर्त्तितः ॥६८॥ =खजानची
धनाध्यक्षो धनं रक्षेत् (=खजाने का दारोगा) तल्लिखेद्धन-लेखकः
(खजाने का मुश्रिफ)

प्रवर्त्तको भटाना तु सेनानी समुदीरितः ॥६६॥ =बखशी
(वृत्ति — लेखको वृत्तं लिखेद् ग्रामाधिकारिणा । = बकायै निगार
छिद्रमर्माणि तेषा तु विलिखेद्गुप्त लेखकः ॥१००॥=खुफियौनवीश
शुल्काध्यक्षो (सायर का दारोगा) लेखकश्च (सायर का मुश्रिफ)

धनिको (तहसीलदार) मीत्रयो जना

शुल्काध्व-करमादद्यात्लिलखेद्रक्षेत्पृथक् पृथक् ॥१०१॥
चौरादेः ग्राम गुप्त्यर्थं ग्रामागौप्तिक इष्यते । =कोटवाल
कृषि-गोप्ता कृषेर्भक्षतॄन् वारये कर्षकादिकान् ॥१०२॥ =शहनै
सीमागौप्तिक आरक्षेद्दीर्घां प्रगण-भूमिकाम् =फौजदार
धर्माध्यक्षस्तु ग्रामात्त द्रव्य-लेखादि-साक्षिक. ॥१०३॥ =काजी
राज्याश ग्रहणायुक्त भट लाभान् लिखेत्तु यः
आदेश-लेखकस्तेषां वेतनेषु च्छिन्नत्ति यः ॥१०४॥=इतलायकनवीस
इत्यादयोधिकाराः स्युः प्रायशश्चक्रवर्त्तिनाम्
संपत्तेरनुसारेण त्वन्येषा विद्धि भूभुजाम् ॥१०५॥
एषा पद्धतिराख्याता राज-रीति-बुभुत्सया
गभीराद्राज-सेवाब्धेर्द्रोण पाका च सिक्थवत् ॥१०६॥

इति यावन परिपाट्यनुकृत्या राजरीति-निरूपण नाम शतकं
समाप्तम् ॥ पं॰ मोतीचद्रकस्य

(प्रति—जैनभवन, कलकत्ता)

(२) छत्तीस कारखांना रा नाम पातशाही में ॥

१ तालबखांनो, जठे कागद रहे। २ दफतर खांनो, जठे नवसंदा रहै। ३ तंबोलदार खानो, जठे पान रहै। ४ अबदरखांनो, जठे पाणी रहै। ५ जुहर खानो, जठे लाल हीरा रहै। ६ पीलखांनो, जठे हाथी रहै। ७ फरासखांनों, जठे तंबू डेरा रहै। ८ तउसाखांनो, जठे घोड़ा रहै। ९ सराबखांनो, जठे दारू रहै। १० अबारतखानो, जठे मेहलाई रहै। ११ ईलम खांनो, जठे तोग भंडा रहे। १२ मवेशी खांनो, जठे गोरू ढोर रहै। १३ आदिदासति खांनो, जठे सारी वस्तु रहै। १४ सराई महरुत खांनो, जठे औरतां रहै। १५ अत्राईस खानो, जहा सूघो अत्तर रहै। १६ नसटदार खानो, जहां न्हावण रा वासण रहै। १७ जमदार खांनो, जठे कपड़ो रहै। १८ सुत्र खांनो, जठे ऊंठ रहै। १९ सिलह-खांनो, जठे टोप बगतर रहै। २० खोवात खानो, जठे दरजी रहै। २१ सीकारी खानो, जठे सिकारी रहै। २२ किसति खांनों, जठे नाव डुंडा रहै। २३ तबीब खानो, जठे वेदनाइता रहै। २४ दारुलहर खानों, जठे गनी रहै। २५ सुतलब खानो, जठे रसोई रहै। २६ खजानदार खानो, जठे रुपिया रहै। २७ रकेबदार खानो, जठे जीण लगाम रहै। २८ पायगा खानो, जठे घोड़ां रा चरवादार रहे। २९ सरम खानो, जठे रुसनाई होवे। ३० कितात्र खानो, जठे पोथी पाना रहै। ३१ मेवा खानों, जठे मेवा मिठाई रहै। ३२ गोदाम खानो, जठे गाडी बैली रहै। ३३ अबारत खानो, जठे धान सारा रहै। ३४ दरी खांनो, जठे कचेड़ी भरीजे। ३५ महबूत खानो, जठे छोटा बंदीवान रहै। ३६ कारखानां रा नाम इति।

परिशिष्ट (३)

सभा शृंगारादि वर्णन संग्रहे

(१) देश नामानि

१ अंग देश
२ बंग देश
३ कलिंग देश
४ तिलंग देश
५ राट्ट देश
६ लाट्ट देश
७ कर्णाट देश
८ मेदपाट देश
६ वैराट देश
१० गौरु देश
११ चौरु देश
१२ द्राविरु देश
१३ महाराष्ट्र देश
१४ सौराष्ट्र देश
१५ कास्मीर देश
१६ कीर देश
१७ महाकीर देश
१८ मगध देश
१६ सूरसेनु देश
२० कावेर देश
२१ कम्बोज देश
२२ कमल देश
३ उत्कल देश
२४ करहाट देश
२५ कुरु देश
२६ काण देश
२७ कच्छ देश
२८ कौसिक देश
२६ सक देश
३० चयानक देश
३१ कौसिक देश
३२ ... .
३३ कारूत देश
३४ कायूत देश
३५ कछ देश
३६ महाकछ देश
३७ भोट देश
३८ महात्रोत्र देश
३६ कीटिक देश
४० केकि देश
४१ कोल्लगिरि देश
४२ कामरूप देश
४३ कुक्कुण देश
४४ कुतल देश
४५ कनकूट देश
४६ करकट देश
४७ केरल देश
४८ खश देश

४९ खर्घं देश
५० खेट देश
५१ विल्लर देश
५२ वेदि देश
५३ जालंधर देश
५४ टेकण टक
५५ मोडियाग देश
५६ कहाल देश
५७ तुग देश
५८ लायक देश
५९ तोशक देश
६० दशार्ण देश
६१ दण्डक देश
६२ देशसभ देश
६३ नेपाल देश
६४ नर्तक देश
६५ पचाल देश
६६ पल्लक देश
६७ पूंड देश
६८ पाडप देश
६९ प्रत्यग्र देश
७० अंबुद देश
७१ वसु देश
७२ गंभीर देश
७३ महिष्मक देश
७४ महोदय देश
७५ मुरण्ड देश
७६ मुरल देश
७७ मरुस्थल देश
७८ मुग्दर देश
७९ मंगल देश
८० मल्लवर्त्त देश
८१ पवन देश
८२ आराम देश
८३ राढक देश
८४ ब्रह्मोत्तर
८५ ब्रह्मावर्त्त देश
८६ ब्रह्मण देश
८७ वाहक देश
८८ विदेह देश
८९ वनवास देश
९० वनापुछ देश
९१ वाल्होक देश
९२ वल्लव देश
९३ अवन्ति देश
९४ वन्हि देश
९५ सिंहल देश
९६ सुहम देश
९७ सूपर देश
९८ सुहड देश
९९ अस्मक देश
१०० हूण देश
१०१ हूर्मक देश
१०२ हूर्मज देश
१०३ हंस देश
१०४ हूहूक देश
१०५ हेरक देश
१०६ वीण देश
१०७ महावीण देश
१०८ भट्टीय देश
१०९ गोप्य देश
११० गाडक देश
१११ गुजरात देश

११२ पारसकुल देश	११६ नीलावर देश
११३ शवालम देश	१२० गगापार देश
११४ कोरव देश	१२१ सजाण देश
११५ शाकसरि देश	१२२ कनकगिरि देश
११६ कनउज देश	१२३ नवसारि देश
११७ आदन देश	१२४ भात्रिरि देश
११= उचीविस देश	एवं देश सख्या

(प्रति पाटोदी मंदिर जयपुर गुटका न० १=५)

(२) चतुरशोतिर्देशाः

गौड, कान्यकुब्ज, कोल्लाक, कलिंग, अग, वंग, कुरग, आचाल्य (?) कामाख्या, ओड्र, पुंड्र, उडीश, मालव, लोहित, पश्चिम, काछ, वालभ, सौराष्ट्र, कुंकण, लाट, श्रीमाल, अर्बुद, मेदपाट,मरु वरेन्द्र, यमुना, गंगा तीर, अन्तर्वेदि, मागध, मध्य कुरु, डाहल, कामरूप, कांची, अवती, पापातक, किरात, सौवीर, औसीर, वाकाण, उत्तरापथ, गूर्जर, सिंधु, केकाण, नेपाल, टक्क, तुरक, ताइकार, बर्बर, जर्जर, कीर. काश्मीर, हिमालय, लोह पुरुष, श्रीराष्ट्र, दक्षिणापथ, सिंघल, चौड, कौशल, पाड्ढ, अध्र, विंध्य, कर्णाट, द्रविड, श्रीपर्वत, विदर्भ, धाराउर, लाजी, तापी, महाराष्ट्र, आभीर, नर्मदा तट। दी (द्वी) पदेशाश्चेति। प० ६१ = हीरुयाणी इत्यादि पञ्च। पत्तनादि द्वादशक। मातरादि चतुर्विंशतिः। बडू इत्यादि षट्त्रिंशत। भालिज्जादि चत्वारिंशत। हर्षपुरादि द्विपञ्चाशत। श्रीनार प्रभृति षट्पञ्चाशत्। जंबूशर प्रभृति षष्टिः। प (व ?) डवाण प्रभृति षट्सप्तति:॥ हर्भावती प्रभृति चतुरशीतिः। पेटलापद्र प्रभृति चतुरुत्तरं शतं। ष (ख) दिरात्लुका प्रभृति दशोत्तरशत। भोगपुर प्रभृति षोडशोत्तरं शतं। धवलकक्कक प्रभृति पंचशतानि। माहड वासाद्यं अधष्टिमशतं। कौंकण [प्रभृति] चतुर्दशाधिकानि चतुरदशशतानि। चंद्रावती प्रभृति अष्टादशशतानि। द्वाविंशति शतानि मही तट। नव सहस्राणि सुराष्ट्रासु। एक विंशतिः सहस्राणि लाट देशः। सतति सहस्राणि गूर्जरो देशः। परितश्च। अहूट लक्षाणि ब्राह्मण पाटक। नव लक्षाणि डाहलाः। अष्टादश लक्षाणि द्वि नवत्यधिकानि मालवो देश। षट्त्रिशल्लक्षाणि कन्यकुब्जः। अनंतं उत्तरापथं दक्षिणापथं चेति।

(काव्यशिक्षा—विनयचद्र कृत। पाटण भ० सू० पृ० ४=)

परिशिष्ट नं० ४

त्रिशला शोकाधिकार

यदा कालि जगंन्नाथु माय-तणी अनुकंपाकरी थिउ संलीन तनु।
यत्कारि दुक्खि पूरीवा लागुं राग्नी त्रिशला तणुं मनु ॥ १
अहो ! आ किसिउ अकालि उत्पात,
हुसिइ किसिंउ वज्रपात ॥ २
अहो सखी ! माहरइ गर्भि पामिउ विलयु,
हुसिइ किसिंउ हिवडा जि विश्व प्रलय ॥ ३
हिव एउ माहरइ मस्तकि जे अछइं मउड,
एउ प्रत्यक्ष भउड ॥ ४
एउ हार, साक्षात सहार ॥ ५
बाहु वल्लरी तणां जे अछइ वलय
ते दुःख तणां दीसइं निलय ॥ ६
एउ अपूर्व पट्ट-दकूलु, ते देखतां संताप तणूं मूलु ॥ ७
एउ अछइ सर्वांगीण शृंगार ते देखता संपूर्ण अंगार ॥ ८
दैव ! मइं किसिउ कीधउं, पाछिलइ भवि कुणइं तणा छोरू तु विछोह
कइ नीपजाविउ कुणइ संत रहइं वंच द्रोह
जेह कारण विफल हुइ छइहरु मोह ॥ ९
मइ किसिउ कीधउं पापु
जेह कारण दैविहं पाडिउ एवउ संतापु ॥ १०
मइं जाणिउं हतूं हसिइ सुलखयण कमारु
थासिइ विश्व रइं आधार ॥ ११
जाणिउं हतूं पुत्र मांडिसिइ आडउ, मेलसिइ पाडु (पत्र १ क) ॥ १२
जाणिउं हतूं आविसिइ जिवारइं माहरइ घरि
तिवारइं हूं थासि पुत्रवंती नइ धुरि ॥ १३
माहरउ जायु थासिइ मोटउ राउ, देसि वयरी तणि मस्तकि पाउ ॥ १४
तउ पापी दैविइं भागी सवे आस, पडिउ सम-काल दुःख-तणउ पास ॥ १५
भागी सवलीइ रली, संताप श्रेणी ऊछली
आम वेलि जई वली
माहरइ मनि सुख तणी वात जि टली ॥ १६
आसा तरुयर मुहुरीउ जाम फलेवा लग्ग
विहि कुंजरि उम्मूलीय एय कुसंविहं भग्ग ॥ १७

कय सरोवर पाली, बंध तु मईं जि टाळी, किसिंउ दव प्रनाळी ॥ १८
जीवडा कोडि बाली, कप मनि दीधी गाळी, आल दीधउं शुद्ध बाळी
कइ लहीय विचालि, बाळ लीधउं ऊदाली ॥ १९
सखि ! न गमइ गायु, चिंत सोकिइं कषायु
रुचइं नहि निवायु, ताप दिइ फूल लायु
असुख सिइरि धायु, हीयडलइ डीन्न जायु
किसिउं मइं कमायु, दैवि ज इम नीपायुं ॥ २०

[२]

इसिउं राज्ञी तणउं स्वरूप, सामलिउं सिद्धार्थ राइ विरूप ॥ २०
दासी ना वचन तु तत्काल ऊपनु मस्तकि चाटक
विसर्जिउ बित्रीस बद्ध नाटक ॥ २१
जे हूंता बह्नया, ते थया कह्नया ॥ २२
जे गीत गान (पत्र १ ख) करता गंधर्व
तेह तणा गरुया गर्व ॥ २३
राज भवनि जीणइ रज्जीइ चीत
ते एकू न सामलीइ गीत ॥ २४
जीणइ ऊपजइ मन रहइं चित्र
ते न वाजइं वाजित्र ॥ २५
जे हूंता पंडित, ते थिया दुख मंडित ॥ २६
जे राय रहइ अवस्य कृत्य, ते न दीसइ नर्तकी नृत्य ॥ २७
जेहे विद्वासे धूणीइं मस्तक, ते न वाचइं पुस्तक ॥ २८
जे सामळना थईइ इराण, ते न वाचीइ पुराण ॥ २९
जे जाणइ काव्य नु अवसर
तेहे कवीश्वरे मूकिउ महाकाव्य नु प्रसार ॥ ३०
जे सामळना फीटइ व्यथा, ते एकू न सामलइ कथा ॥ ३१
श्रीहणे बोले मोतीरिया दीजइ सुवर्ण मइ त्राट
ते कलिरव न करइ भाट ॥ ३२
जे हूंता चाचरीया, ते थया लासरीया ॥ ३३
जे लोक रइ करावइ जुहार, ते हूया निसचला प्रतिहार ॥ ३४

जेहे निरंतर जीभ वावरी, ते मौन करी रहिया टावरी ॥ ३५
जे करता नगर नी करणवार, ते बइसी रहिया तलार ॥ ३६
जेहे मनि ऊपजइ प्रमोद. ते एकू न दीसइं विनोद ॥ ३७
जे उलगइं आव्या राय, ते सवे दीसइ विच्छाय ॥ ३८
जे सभा बइसता राणा, ते सवे मनि उल्हाणा ॥ ३६
जे राज धुरंधर प्रधान, ते दीसइं दुख तणां निधान ॥ ४०
ते तिहां बइठा छइ सेठि, ते जोइवा लागा नीची द्रेठि ॥ ४१
जे भला भंडारी, तेहनी मुख छाया (पत्र २ क) अंधारी ॥ ४२
जे गाय नइं अंगरक्ख, ते थिया कुमक्ख ॥ ४३
आकाश छनइं सूरि, भेदीवा लागउं दुःखावकार तणइ पूरि ॥ ४४

[३]

तउ अनाथ तणु नाथ, जोयइं जगन्नाथ ॥ ४५
ज्ञान तणी द्रिटिइं
देखइ राज भवनि संपूर्ण दुखोदधि तणी सृष्टि ॥ ४६
अरे ! आ शांति करता ऊठिउ वेताल ॥ ३७
पडिउं माहरउं साहमूं संताप तणउँ जाल
तु जगन्नाथि आगुलि तणइ स्तदि करी
माता तणी असमाधि हरी ॥ ४८
गिउ अनल्प, दुःख तणउ संकल्प ॥ ४६
फीटी मन तणी आधि, ऊपनी समाधि ॥ ५०
वाजिवा ला [गा] मागलिक तणा मृदंग
राज भवन माहि सपूर्ण आणंद ॥ ५१
(मुनि जिनविजयजी संग्रह, भारतीय विद्याभवन, बम्बई)